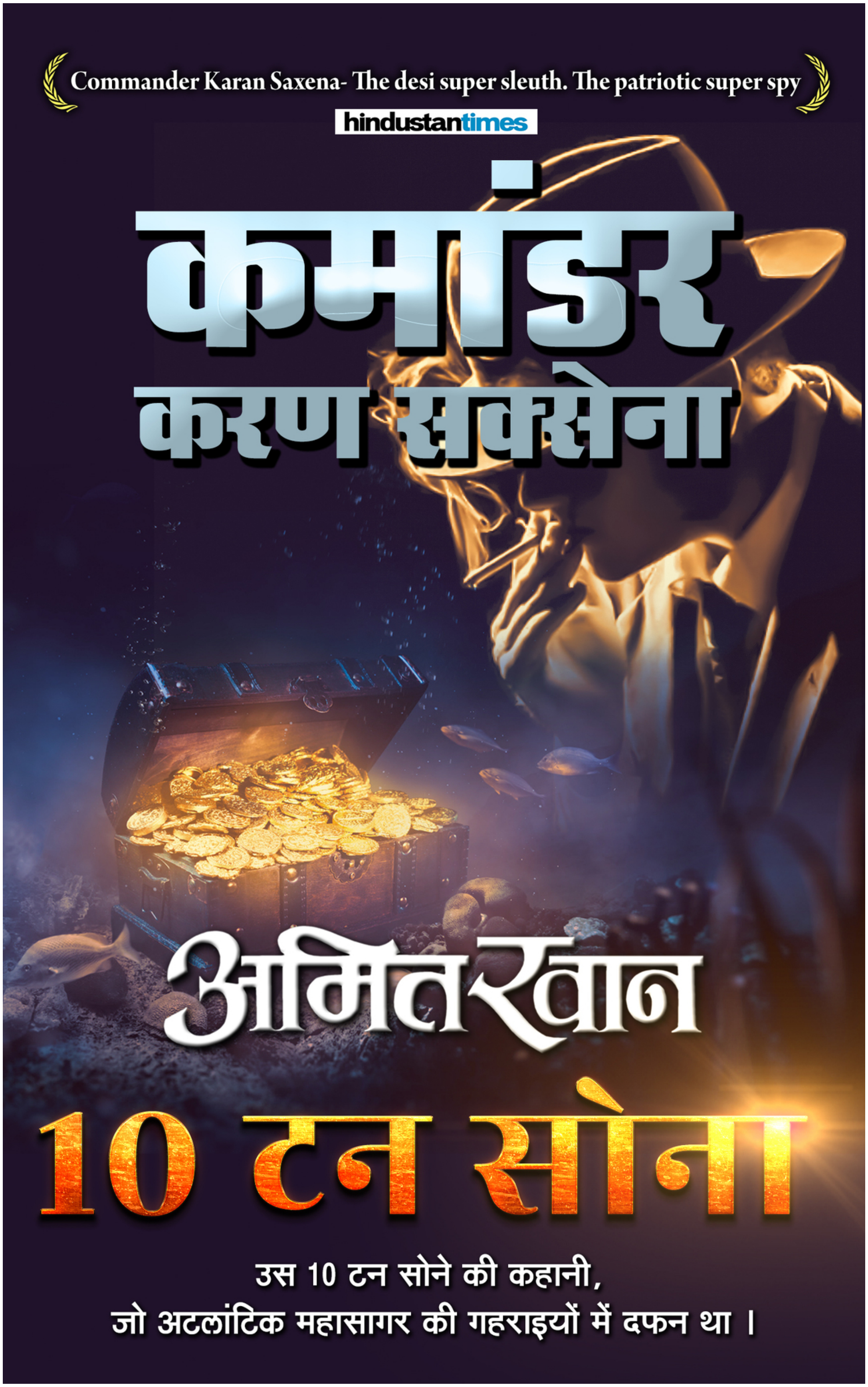

Commander Karan Saxena- The desi super sleuth. The patriotic super spy
hindustantimes
कमांडर
करण सक्सेना
अमित खान
10 टन सोना
उस 10 टन सोने की कहानी,
जो अटलांटिक महासागर की गहराइयों में दफन था ।


Commander Karan Saxena- The desi super sleuth. The patriotic super spy
hindustantimes
कमांडर
करण सक्सेना
अमित खान
10 टन सोना
उस 10 टन सोने की कहानी,
जो अटलांटिक महासागर की गहराइयों में दफन था।

वह 10 टन सोना था, जो अमरीका में रह रहे एन.आई.आर. बलदेव राज दीवान की बरसों की मेहनत की कमाई थी । दीवान की उस दौलत का कोई वारिस नहीं था । जाहिर था- बलदेव राज दीवान की मौत के बाद उसकी उस अकूत संपत्ति पर अमरीकन सरकार का कब्ज़ा हो जाता । बस यही बलदेव राज दीवान नहीं चाहता था । उसकी इच्छा थी कि उसकी बरसों की मेहनत की वो कमाई उसके 130 करोड़ हिन्दुस्तानी भाई-बहनों के काम आये । इसीलिये उसने अमरीका में अपनी सारी धन-संपत्ति बेचकर उसे प्योर गोल्ड में कन्वर्ट कर दी ।

लेकिन गैरकानूनी तौर पर उस 10 टन सोने को अमरीका से हिन्दुस्तान लेकर आने में सबकी तौबा बुल गयी । सबसे पहले 6 हिन्दुस्तानी जासूस थे, जो उस सोने को निकालने के लिये अमरीका भेजे गये, लेकिन वह सबके सब अमरीकन पुलिस की निगाह में आ गये और वहाँ बुरी तरह फँस गये । अब वह भूखे-प्यासे थे और सबकी जान अब खतरे में थी ।

तब यह मिशन सौंपा गया कमांडर करण सक्सेना को । कमांडर, जिसे उन जासूसों को भी अमरीका से रेस्क्यू कराना था और वह 10 टन सोना भी लेकर हिन्दुस्तान आना था ।

<u>10 टन सोना</u>

अमित खान

दिल की धडकनों को थाम दे, भीषण प्रकम्पन्न पैदा कर दे, ऐसे विलक्षण मूड में "कमांडर करण सक्सेना सीरीज़" का एक बेहद तेजरफ्तार, बेहद सस्पेंफुल उपन्यास ।

"अमित खान" की लौह-लेखनी फिर अपने तूफानी अंदाज़ में ।

10 टन सोना

"जानते हो ।" वह पोपले मुंह वाला अंग्रेज बूढ़ा जोर-जोर से खांसता हुआ बोला- "अगर मुझे घंटे भर के लिए भी जवानी वापस मिल जाये, तो मै सबसे पहला काम क्या करूँगा ?"

"क्या करोगे ?"

“मैं रुखसाना सुलतान के ऊपर चढ़ दौडूंगा और फिर तब तक उसे कब्जाए रखूँगा, जब तक उस साली की आठ-दस मर्तबा पुड़िया न बांध दूँ ।”

होटल के पूरे रिक्रियेशन हॉल में हंसी का जोरदार फव्वारा छूट पड़ा ।

“पुड़िया !” एक दिलफैंक अंग्रेज नौजवान ने बूढ़े की तरफ देखते हुए बात का पूरा लुफ्त उठाया- “वो भी आठ- दस मर्तबा !”

“इससे कम मर्तबा पुड़िया बांधने का तो सवाल ही नही है ।” बूढा पूरी संजीदगी के बोला- “जिन्दगी में कभी-कभार तो कोई ढंग का डिश चखने को मिले और उसे भी यूँ ही सस्ते में छोड़ दो, तो क्या फायदा !”

“बूढ़े बाबा, रुखसाना सुलतान तुम्हारी बेटी की उम्र की है, कुछ तो शर्म करो ।” दूर बैठे एक और आदमी ने हंस कर कहा ।

“तो क्या हुआ, अगर वो मेरी बेटी की उम्र की है ? है तो वो जवान लड़की ?”

“हाँ, जवान तो है ।”

“ऊपर से उसका हुस्न जगमग-जगमग चमक रहा है । ऐसे में कोई उसके हुस्न के हुक्के को गुड़गुड़ाने वाला भी तो चाहिए ।”

“क्या बात कही है ।”

सब फिर ठठाकर हँसे ।

कमांडर करण सक्सेना उस समय न्यूयार्क में था ।

वह उन सब अंग्रेजो के बीच ‘शेरटन होटल’ के ही उस रिक्रियेशन हॉल में बैठा था, जहाँ बस थोड़ी देर बाद ही सामने डांसिंग फ्लोर पर “रुखसाना सुलतान” का कैबरे डांस शुरू होने वाला था ।

रुखसाना सुलतान न्यूयार्क की एक बहुत ही पापुलर कैबरे डांसर थी ।

“कुछ भी है, वैसे लड़की है बहुत खुबसूरत !” एक और अंग्रेज नौजवान बड़े मुदित भाव से बोला- “मैंने तो अपनी पूरी जिन्दगी में ऐसी खूबसूरत औरत नही देखी । वैसे मेरा यह मानना है की हर औरत खूबसूरत होती है, क्योकि हर औरत को इस्तेमाल करने का तरीका एक जैसा है, लेकिन मेरे भाई ! रुखसाना सुलतान की बात ही जुदा है । उसे देखते ही नसों में दौड़ रहा खून भभकने लगता है । लार घुटनों-घुटनों तक टपकने लगती है । उसके बारे में सिर्फ यह कह देना ही पर्याप्त नही है कि वह खूबसूरत है, बल्कि वह बेइंतिहा खूबसूरत है और सच बात तो यह है, बेइंतिहा खूबसूरत औरते भी हजारों, लाखों होती हैं, मगर रुखसाना सुलतान उनमें सिर्फ एक है । मोनालिसा की पेंटिंग से भी कहीं ज्यादा खूबसूरत । मलिका क्लियोपैट्रा से भी कही ज्यादा हसीन और ताजमहल से कही ज्यादा आलीशान ।”

उन लोगो की बाते सुनकर कमांडर होंठो-ही-होंठो में मुस्कुराया ।

उस हॉल में जगह-जगह रुखसाना सुलतान की फ्रेम में जड़ी हुई तस्वीरे लगी थी ।

इसमें कोई शक नही रुकसाना सुल्तान बहुत खूबसूरत थी ।

वो बहुत खूबसूरत थी ।

कमांडर सोचने लगा, औरत भी खुदा ने क्या लाजबाब चीज़ बनायीं है ।

खासतौर पर अगर वो कोई ऐसी औरत हो, जो आपको आसानी से हासिल न हो सकती हो, तब तो वो हर हाल में मलिका क्लियोपैट्रा से भी कहीं ज्यादा खूबसूरत है । ताजमहल से भी कही ज्यादा आलीशान है । यूँ तो बीवी भी एक औरत ही होती है, मगर उसका रुतबा आपकी जिन्दगी में ताजमहल जैसा बुलंद किसी हाल में नही हो सकता, क्योकि उसका जनाना जिस्म कारपोरेशन की सड़क की तरह इस्तेमाल करने के लिए आपको हरदम हासिल है ।

जिस्मानी रिश्तो के सम्बन्ध में कुछ ऐसा ही उन्नीस-इक्कीस नजरिया बीवी का भी है ।

जब उसके दो-तीन बच्चे हो जाते है, जब उसके जिस्म की सारी स्प्रिंगे ढीली पड़ जाती है, नट-बोल्ट ढीले पड़ जाते है, तब मर्द उसे अपना यार नही, बल्कि सिर्फ अपने बच्चो का बाप ज्यादा लगने लगता है । तब वो अपना जनाना जिस्म बिस्तर पर मर्द के सामने इस तरह बेजार होकर परोसती है, जैसे सिर्फ अपनी ड्यूटी पूरी कर रही हो । तब उसे पूरे खेल में वो भावनात्मक रूप से मर्द के साथ शरीक नही होती ।

यही फर्क है, बीवी में और बाजारू औरत में !

इसीलिए बाजारू औरत मोनालिसा हो सकती है ! मलिका क्लियोपैट्रा हो सकती है ! महारानी पदमिनी हो सकती है ! कुछ भी हो सकती है !

कमांडर ने अपनी रिस्टवाच देखी !

रुखसाना सुल्तान का कैबरे डांस किसी भी पल शुरू होने वाला था ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना एक बार फिर बड़े खतरनाक मिशन पर था ।

कमांडर, जिससे आप सब लोग परिचित ही हैं ।

छ: फुट से भी लम्बा कद ।

खूबसूरत व्यक्तित्व !

इसके अलावा हमेशा काला ओवरकोट और लम्बा गोल क्लेंसी हैट पहनने का शौक़ीन !

प्वाइंट 38 कैलिबर की एक कोल्ट रिवाल्वर वह हमेशा अपने क्लेंसी हैट की ग्लिप में छिपाकर रखता है । इमरजेंसी के समय वह हैट की ग्लिप में छिपी रिवाल्वर कमांडर के काफी काम आती है, वह अपने दिमाग की मांसपेशियों को जरा भी हरकत देता है, तो ग्लिप में फंसी रिवाल्वर खुद-ब-खुद हैट में से निकलकर उसके हाथ में पहुँच जाती है । इसके अलावा वह दूसरी रिवाल्वर अपने ओवरकोट की जेब में रखता है ।

रिवाल्वर हाथ में आते ही उसकी उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमती है, वह 'जगलरी' करता है ।

कमांडर !

एक बेहद जांबाज अंतर्राष्ट्रीय स्तर का जासूस !

□□□

सिर्फ चौबीस घंटे पहले की बात है ।

कमांडर करण सक्सेना को बहुत आनन-फानन मुंबई के रॉ हैडकवार्टर में बुलाया गया ।

"आओ करण !" गंगाधर महंत उसे लेकर सीधे फिल्म रूम में पहुंचे- "तुमने फ़ौरन न्यूयार्क के लिए रवाना होना है ।"

"न्यूयार्क !" कमांडर जोर से चिहुंका- "लेकिन क्यों ?"

"वहाँ हमारे चार बहुत खास आदमियों की जान खतरे में है । वो वहाँ फंसे हुए हैं, अगर उन्हें फ़ौरन मदद मुहैया न करायी गयी, तो कुछ भी हो सकता है ।"

"आखिर माज़रा क्या है ?"

"बैठो ।" गंगाधर महंत बोले-"मैं तुम्हें सब कुछ विस्तार से समझाता हूँ ।"

कमांडर करण सक्सेना फिल्म रूम की एक कुर्सी पर बैठ गया ।

फिल्म रूम में उन दोनों के अलावा कोई न था । सिर्फ प्रोजेक्टर-रूम में एक आदमी मौजूद था, जो कोई फिल्म दिखाने की तैयारी कर रहा था ।

जल्द ही उन दोनों के सामने मौजूद पैतीस मिलीमीटर का पर्दा चमक उठा और उस पर एक लगभग पैतालीस बर्षीय बड़े रौबदार आदमी की तस्वीर नज़र आने लगी । उसका चेहरा लाल-सुर्ख था । आँखे हल्की भूरी थी और गले में काफी सारी सोने की चेन पड़ी थीं, जो उसके रईसाना व्यक्तित्व को दर्शा रही थी । इसके अलावा उसकी दायीं कलाई में एक 'मेल ब्रेसलेट' भी पड़ा हुआ था ।

"यह कौन है ?"

"इस आदमी का नाम बलदेव राज दीवान है ।" गंगाधर महंत हवाना सिगार का कश लगाते हुए बोले ।

कमांडर की निगाह स्क्रीन पर जाकर ठहर गयी ।

"सारे सिलसिले की शुरुआत इसी बलदेव राज दीवान से होती है ।" गंगाधर महंत बोले- "दरअसल यह बलदेव राज दीवान आज से कोई बीस साल पहले व्यापार करने के सिलसिले में अकेला भारत से अमरीका गया था । वहाँ उसने बहुत छोटे पैमाने से प्लास्टिक के खिलौने बनाने का कारोबार शुरू किया और अपने कारोबार में खूब दिल खोलकर मेहनत की । देखते-ही- देखते उसका कारोबार चमक उठा और बलदेव राज दीवान कई करोड़ डॉलर का आदमी बन गया । खिलौने बनाने के मामले में वह पूरे अमरीका के अन्दर 'टॉय किंग' कहा जाने लगा, लेकिन सारी ऐशो-इशरत के बावजूद बलदेव राज दीवान ने शादी नही की । इसके पीछे भी एक खास वजह थी, कभी बलदेव राज दीवान ने एक लड़की से सच्ची मोहब्बत की थी, जिसने उसे दौलत की वजह से ही ठुकरा दिया था, क्योकि तब बलदेव राज दीवान कंगला था । पैसे-पैसे का मोहताज था । बस तभी बलदेव राज दीवान के ऊपर दौलत कमाने का ऐसा जुनून सवार हुआ कि वो भारत छोड़कर अमेरिका में जा बसा और वहाँ उसने इतनी दौलत इक्कठी करके दिखाई कि अगर वो

चाहता, तो उस लड़की को तथा उसके पति को कम से कम हज़ार मर्तबा खरीद सकता था, लेकिन उसने ऐसी कोई कोशिश नही की । अमेरिका में उसके आगे-पीछे हरदम लड़कियों का मेला सा लगा रहता था, जो उससे शादी करने की तमन्नाई थी, मगर बलदेव राज दीवान ने दिल के दरवाजे किसी के लिए नही खोले । अलबत्ता एक गलती उससे जरुर हुई ।''

''क्या ?''

''उस दरम्यान वो कई लड़कियों के साथ जिस्मानी ताल्लुकात कायम कर बैठा ।''

''ओह ।'' कमांडर की आवाज़ में हैरानी के भाव तैरे ।

''और अपनी इस गलती की बलदेव राज दीवान को बहुत भयंकर सजा भी भुगतनी पड़ी ।''

''कैसी सजा ?''

''उसे एड्स हो गया और एड्स भी इतना खतरनाक हुआ कि उसके बचने की कोई गुंजाइश न रही । तब बलदेव राज दीवान के सामने एक मुश्किल आई । उसने सोचा- उसके बाद उसकी उस अकूत धन-संपदा का वारिस कौन होगा, जो उसने अपने गाढ़े खून-पसीने से अमरीका में इकठ्ठा की थी । उसके बाद अमरीका सरकार उस पर कब्ज़ा कर लेती, परन्तु बलदेव राज दीवान यह नही चाहता था । उसकी ख्वाहिश थी कि वो दौलत भारत सरकार के काम आये । तब उसने अमरीका में ही भारत के विदेश मंत्री से बात की- जिससे उसके दोस्ताना सम्बन्ध थे । उसने अपनी सारी दौलत भारत पहुँचाने का एक बड़ा नायाब फार्मूला भारतीय विदेश मंत्री के सामने रखा ।''

''क्या ?''

कमांडर की निगाहें अभी भी सामने पर्दे पर चमक रहे बलदेव राज दीवान के चित्र पर टिकी थीं ।

''उसने भारतीय विदेश मंत्री से कहा कि वो धीरे-धीरे अपनी सारी जायदाद बेचकर 'प्योर गोल्ड' में परिवर्तित कर लेता है और फिर उस सोने को अपने प्लास्टिक के खिलौनों में भरकर चुपचाप भारत भेज देगा । इसके अलावा बलदेव राज दीवान ने एक बात और भारतीय विदेश मंत्री से कही कि जब तक सारा सोना भारत न पहुँच जाये, तब तक वो यह बात किसी को न बताये । यहाँ तक कि भारत के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को भी नही, क्योकि अगर किसी वजह से यह बात लीक हो गयी, तो अमरीका सरकार फ़ौरन उस सोने को जब्त कर लेगी और फिर संभव है कि उसे भी अपनी जिंदगी के आखिरी क्षण अमरीका की ही किसी जेल में एड़िया रगड़ते हुए गुजारने पड़े । क्योकि यह पूरी तरह गैरक़ानूनी काम था । बहरहाल भारतीय विदेश मंत्री उस पूरे प्रकरण में बलदेव राज दीवान का साथ देने को तैयार हो गया ।''

''उसके बाद क्या हुआ ?''

''उसके बाद सारी प्रक्रियायें आनन-फानन ढंग से अंजाम दी गयी । जैसे बलदेव राज दीवान ने न्यूयार्क में अपनी जितनी भी प्रापर्टी थी, वह सब बेच डाली और उसके बदले में सोना खरीद लिया । तुम्हें सुनकर सख्त हैरानी होगी कि उसकी कुल प्रापर्टी के एवज में 10 टन सोना आया ।''

“10 टन !”

कमांडर के नेत्र वास्तव में ही फटे-के-फटे रह गये ।

“बिलकुल ।” गंगाधर महंत बोले- “उसके बाद बलदेव राज दीवान ने उस तमाम सोने को प्लास्टिक के काफी सारे खिलौनों के अन्दर भरा और फिर गुप्त रूप से भारत के विदेश मंत्री तक यह सूचना पंहुचा दी कि घौसला तैयार है, पक्षी भेज दो । विदेश मंत्री ने फ़ौरन अपने चार बहुत ख़ास आदमी 10 टन सोना लाने के लिए अमरीका भेज दिए । उन चारों आदमियों ने न्यूयार्क पहुँचने के बाद खिलौनों से भरी सारी पेटियां ‘सिल्वर स्टार’ नामक पानी के जहाज में लदवायी और फिर उस 10 टन सोने को लेकर भारत के लिए रवाना हो गये । जैसे ही वो जहाज सोना लेकर न्यूयार्क के बंदरगाह से चला, तभी ‘अपशकुन’ से भरी हुई कई अलग-अलग घटनाये घटी ।”

“कैसी घटनायें ?”

“जैसे जिस दिन ‘सिल्वर स्टार’ नाम का वो यात्रीवाहक जहाज बंदरगाह से रवाना हुआ, उसी दिन न्यूयार्क में बलदेव राज दीवान का निधन हो गया । इसके अलावा उस जहाज को अभी बंदरगाह से रवाना हुए मुश्किल से छ: घंटे भी न गुज़रे होंगे कि वो जहाज भी समुन्द्र में डूब गया और उसमें मौजूद तमाम लोग मारे गये और भारतीय विदेश मंत्री के साथ तो एक और भी ज्यादा हौलनाक वाक्या पेश आया । विदेश मंत्री दिल्ली के ‘विज्ञान भवन’ में एक मीटिंग को संबोधित कर रहे थे, जब उन्हें ‘सिल्वर स्टार’ के समुन्द्र में डूब जाने का समाचार प्राप्त हुआ और तभी कुछ खतरनाक आतंकवादियो ने वही ‘विज्ञान भवन’ के अन्दर उनके ऊपर स्टेनगन से गोलियां बरसा दी । उसमें विदेश मंत्री की मौत तो न हुई, अलबत्ता वह ‘कोमा’ में जरुर चले गये । कुल मिलाकर जो-जो व्यक्ति उस 10 टन सोने से सम्बंधित थे, या फिर जिस जिसको उस 10 टन सोने के बारे में मालूम था, वह किसी-न-किसी रूप में हताहत हो गया । जैसे जिसका सोना था, वह जिन्दा नही रहा । जो जहाज में सोने को लेकर आ रहे थे, वह सब मारे गये । इसी तरह जो विदेश मंत्री सोने के आस्तित्व की जानकारी रखते थे, वह कोमा में चले गये । यानी उस जहाज में 10 टन सोना भी था, इसकी जानकारी भी किसी को न हो सकी । उस जहाज के डूबने के साथ ही 10 टन सोने का रहस्य भी समुन्द्र में ही दफ़न होकर रह गया ।”

“फिर 10 टन सोने का यह रहस्य किस प्रकार खुला ?”

“दरअसल ‘सिल्वर स्टार’ नामक उस जहाज को डूबे हुए आज छ: महीने से भी ज्यादा समय गुज़र चुका है।” गंगाधर महंत बोले ।

“यानि यह तमाम घटनाये छ: महीने पहले की है ?”

“हाँ । जैसाकि मैंने बताया कि विदेश मंत्री कोमा में चले गये थे । वह पूरे पांच महीने तक कोमा में रहे और कोई एक महीने पहले उनकी बेहोशी टूटी । होश में आने के बाद उन्हें सबसे पहले ‘सिल्वर स्टार’ का ख्याल आया । उन्होंने फ़ौरन प्रधानमंत्री के सामने यह रह्स्योद्भघाटन किया कि जो जहाज डूब गया था, उसमे बलदेव राज दीवान की जीवन भर की गाढ़ी कमाई मौजूद थी और उन्होंने प्रधानमंत्री को यह भी बताया, बलदेव राज दीवान की यह आखिरी इच्छा थी कि वो सारी दौलत भारत सरकार के ‘गरीबी उन्मूलन’ कार्यक्रमों

में काम आये । उस रहस्योद्घटन के होते ही भारत सरकार के बीच हड़कम्प मच गया । भारत सरकार के लिए 10 टन सोने का इतना महत्व नही था, जितना महत्व बलदेव राज दीवान की अंतिम इच्छा का था । फ़ौरन महीना भर पहले छ: बहुत कुशल जासूसों का दल गुपचुप तौर पर अमरीका रवाना किया गया, जिसका मिशन समुन्द्र में से 10 टन सोना निकालकर किसी तरह हिंदुस्तान पहुचाना था ।"

"फिर क्या वह लोग कामयाब हुए ?"

"अगर वह दल कामयाब हो जाता," गंगाधर महंत ने 'हवाना सिगार का एक कश लगाया- "तो फिर तुम्हें यहाँ बुलाकर यह सारी कहानी सुनाने की जरुरत ही क्या थी ।"

"वह लोग कामयाब क्यों नहीं हुए ?"

"दरअसल उनके न्यूयार्क पहुँचते ही न जाने कैसे यह बात अमरीका पुलिस को पता चल गयी कि कुछ भारतीय जासूस किसी ख़ास मिशन को अंजाम देने अमरीका आये हुए है । फ़ौरन अमरीकन पुलिस उन जासूसों के पीछे हाथ धोकर पड़ गयी । आज की तारीख में यह हालात है कि उनमे से दो जासूस मारे भी जा चुके है और बाकि अपनी जान बचाने के लिए न्यूयार्क में कहीं छिपे हुए हैं । वो जबरदस्त दहशत में है । उनके भूखे-प्यासे मरने की नौबत है और फ़िलहाल मिशन को तो वह लोग लगभग बिलकुल भूल चुके है ।"

फिर सामने पर्दे पर एक एक करके उन सभी छ: जासूसों की तस्वीरे दिखाई गयी, जिन्हें समुन्द्र में से 10 टन सोना निकालने के लिए न्यूयार्क भेजा गया था ।

गंगाधर महंत ने उन सब जासूसों के नाम भी कमांडर को बताये ।

दिलीप मेहरा ।

पवन मल्होत्रा ।

गंजा उस्मान ।

जगदीश नरूला ।

अनिल मोटा ।

अनुपमा जोशी ।

अनुपमा जोशी इनमे लड़की थी और दिलीप मेहरा उस पूरे दल का 'लीडर' था ।

कमांडर ने पर्दे पर दिखाई जाने वाली एक-एक तस्वीर को काफी गौर से देखा।

"एक सवाल मै और पूछना चाहूँगा चीफ !" कमांडर बोला ।

"पूछो ।"

"जब अमरीकन पुलिस का उनके ऊपर इस कदर खौफ हावी है कि वो डरकर किसी गुमनाम जगह छिपे हुए हैं और उनके भूखे-प्यासे मरने की नौबत है, तो फिर अमरीकन पुलिस से छिपकर उन्होंने यह खबर भी भारत तक किस तरह पहुचाई ?"

"अच्छा सवाल है, इसका जबाव भी मैं तुम्हें देता हूँ ।"

गंगाधर महंत ने प्रोजेक्टर-रूम की तरफ हाथ से कुछ इशारा किया ।

पर्दे पर जहाँ मोटे की तस्वीर नज़र आ रही थी, वहाँ अब एक बहुत खूबसूरत लड़की की तस्वीर नज़र आने लगी ।

"यह कौन है ?"

"इसका नाम रुखसाना सुलतान है ।" गंगाधर महंत ने 'हवाना सिगार' का एक कश और लगाया- "यह न्यूयार्क के 'शेरटन होटल' की बेहद मशहूर कैबरे डांसर है । सबसे बड़ी बात ये है कि रुखसाना सुलतान एक भारतीय लड़की है और वह कोई मामूली कैबरे डांसर नहीं । 'शेरटन ग्रुप' के बेशुमार होटल जहाँ पूरी दुनिया में बने हुए हैं, वहीं इस होटल ग्रुप का मैनेजिंग डिपार्टमेंट इस बात पर गर्व करता है कि रुखसाना सुलतान जैसी अजीमुश्शान शख्सियत की मालिक औरत उनकी होटल श्रंखला से जुड़ी हुई है । बहरहाल रुखसाना सुलतान का जिक्र इस वक़्त यहाँ इसलिए किया जा रहा है, क्योकि अमरीकन पुलिस के डर से इधर-उधर छिपते फिर रहे भारतीय जासूसों में से एक जासूस पिछले दिनों किसी तरह रुखसाना सुलतान से उसके घर पर जाकर मिला और उससे मदद मांगी ।"

"कैसी मदद ?"

"उसने रुखसाना सुलतान से कहा कि वो किसी प्रकार उनकी मौजूदा दयनीय हालत की खबर भारत सरकार तक पहुंचा दे । हालाँकि उस जासूस ने एक कैबरे डांसर को इतनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपकर बहुत बड़ा रिस्क लिया । परन्तु शायद उस वक़्त जासूस के सामने दूसरा कोई रास्ता न था । बहरहाल इस पूरे प्रकरण में रुखसाना सुलतान की दिल खोलकर तारीफ करनी होगी, उसने अपनी मातृभूमि के प्रति वफ़ादारी निभाई और 'होटल ग्रुप' के मैनेजिंग डिपार्टमेंट से मिलकर बहुत आनन-फानन अपना एक डांस प्रोग्राम दिल्ली के शेरटन होटल में आयोजित कर लिया । दिल्ली पहुँचते ही रुखसाना सुलतान ने सबसे पहला काम ये किया कि भारत सरकार को उस दल की मौजूदा स्थिति के बारे में रिपोर्ट दी । कुल मिलाकर वह जासूस आज की तारीख में न्यूयार्क के अन्दर किस जगह छिपे हुए है, यह बात सिर्फ रुखसाना सुलतान जानती है । अब तुमने न्यूयार्क जाकर उन जासूसों की मदद करनी होगी और अगर हो सके, तो समुन्द्र में से 10 टन सोना निकालकर भी वापस हिंदुस्तान लाना होगा । न्यूयार्क जाने के लिए तुम्हारा पासपोर्ट तैयार है । टिकट तैयार है । कल सुबह ही तुम न्यूयार्क के लिए रवाना हो रहे हो । मिशन से सम्बंधित कोई और सवाल पूछना चाहते हो, तो पूछ सकते हो ।"

कमांडर ने अपना ओवरकोट दुरुस्त किया ।

"यानि न्यूयार्क पहुँचने के बाद मुझे सबसे पहले रुखसाना सुलतान से मुलाकात करनी है ?"

"बिलकुल ! रुखसाना सुलतान ही तुम्हें जासूसों तक लेकर जाएगी ।"

"जहाज समुन्द्र में किस जगह डूबा था ?"

"इस सम्बन्ध में तमाम जानकारी तुम्हें जासूसों से मिलने के बाद प्राप्त होगी ।"

"ठीक है ।" कमांडर कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया- "मैं मिशन पर जाने के लिए तैयार हूँ ।"

□□□

जैसे ही रात के दस बजे, तभी रिक्रियेशन हाल का माहौल और भी ज्यादा गरम हो गया ।

"रुखसाना सुलतान !"

"रुखसाना सुलतान !!"

"रुखसाना सुलतान !!!"

हॉल में बैठे लगभग तमाम अंग्रेज अपनी-अपनी कुर्सियां छोड़कर खड़े हो गये और चीख-चीखकर रुखसाना सुलतान का नाम पुकारने लगे ।

तभी पूरे रिक्रियेशन हॉल की लाइट एकदम भक्क से गुल हो गयी और सामने डांसिंग फ्लोर पर सिर्फ जीरो वाट का एक हरा बल्ब जलता हुआ नज़र आने लगा ।

"कमबख्त स्टेज पर पेश भी कैसे हंगामाखेज ढंग से होती है !" वही अंग्रेज बुढा एकाएक बहुत बुरी तरह कलपकर बोला-"अब सीधे आसमान में से परियो की तरह उतरेगी ।"

बूढ़े की बात सुनकर कमांडर के होठो पर मुस्कान तैर गयी ।

हॉल का नज़ारा वाकई बहुत दिलकश था ।

फ़ौरन सामने स्टेज पर एक हिंडोला सा तैरता हुआ नजर आने लगा, जो सचमुच ऊपर से नीचे की तरफ उतर रहा था और उसमें बैठी रुखसाना सुलतान हलके गुलाबी रंग के कपड़ो में वाकई कोई परी नजर आ रही थी ।

हिंडोला नीचे स्टेज पर आकर टिक गया और फ़ौरन उसमे से रुखसाना सुलतान नीचे कूद पड़ी ।

नीचे कूदते ही उसने अपनी ड्रेस उतारी और उसे पब्लिक के बीच उछाल दिया ।

हॉल में मानो जबरदस्त भूकंप आ गया ।

सब पागलों की तरह उस ड्रेस की तरफ झपटे । उनमें आपस में में छिना-झपटी मची । सैकंडो में उस पूरी ड्रेस की चिंदिया बिखर गयीं ।

रुखसाना सुलतान माइक पर हंसी ।

उसकी हंसी ऐसी थी, जैसे एक साथ ढेर सारे तांबे के सिक्के खनखना उठे हों ।

"हैलो फ्रेंड्स !" रुखसाना सुलतान ने अपना हाथ जोर-जोर से भीड़ की तरफ हिलाया ।

"हैलो !"

सब चिल्ला उठे ।

रुखसाना सुलतान उस वक़्त सिर्फ ब्रा और पैंटी में थी ।

"बताओ, आप लोग क्या सुनना पसंद करेंगे ?"

"हम सुनने नहीं बल्कि सिर्फ तुम्हारा डांस देखने आये हैं बेबी, डांस !"

रुखसाना सुलतान फिर बड़े खनकदार ढंग से हंसी ।

फ़ौरन हॉल में बहुत तेज आवाज़ में आर्केस्ट्रा बजने लगा और डांसिंग फ्लोर की रंग-बिरंगी काफी सारी लाइटें जल उठी ।

तुरन्त ही रुखसाना सुलतान का कैबरे डांस शुरू हो गया ।

जैसी वो औरत लाजबाव थी, वैसी ही वो लाजबाव डांसर थी ।

उसका एक-एक स्टेप कयामत ढाने वाला था । उसकी कमर ऐसे हिचकने खा रही थी, जैसे वो हाड़-मांस की न होकर रबड़ की बनी हो ।

वाकई खूबसूरत औरत का सिर्फ चेहरा ही खूबसूरत नही होता बल्कि उसकी हर चीज़ खूबसूरत होती है । हर अदा खूबसूरत होती है ।

काफी देर तक रुखसाना सुलतान का वो डांस प्रोग्राम चलता रहा ।

हॉल में मादक सिसकारियां गूंजती रहीं ।

फिर रुखसाना सुलतान जिस तरह हिंडोले में बैठकर स्टेज पर नमूदार हुई थी, उसी तरह हिंडोले में बैठकर वापस चली गयी।

□□□

रुखसाना सुलतान उस समय मेकअप रूम में थी ।

उसने टाइट जींस पहनी हुई थी और ऊपर से शार्टीज डाल ली थी ।

तभी दरवाजा खटखटाया गया ।

“कौन है ?” रुखसाना सुलतान अपनी शार्टीज के अन्दर हाथ डालकर ब्रा के कप थोड़े दुरुस्त करते हुए बोली ।

“मैं आपसे मिलना चाहता हूँ मैडम !”

“अन्दर आ जाओ ।”

तुरंत मेकअप रूम का दरवाजा खुला और कमांडर ने अन्दर कदम रखा ।

रुखसाना सुलतान का हाथ अभी भी अपनी शार्टीज के अन्दर था और फ़िलहाल वो अपनी ब्रा के स्टेप आगे खींच रही थी ।

“स…सॉरी मैडम !” कमांडर बोला- “मैं फिर आ जाऊंगा ।”

“नहीं, कोई बात नही ।” वह मुस्कुराई- “मेरे पास छिपाने लायक कुछ नहीं है । दरअसल ब्रेजरी थोड़ा तंग कर रही है, ऐसा लगता है, मेरा साइज़ कुछ बढ़ गया है ।”

वह बात बात कहकर रुखसाना सुलतान के चेहरे पर और भी ज्यादा शरारतपूर्ण मुस्कान उभर आयी ।

कमांडर मुस्कुराया ।

वह बातें भी दिलचस्प करती थी ।

“बैठो ।”

कमांडर वहीं मौजूद एक कुर्सी पर बैठ गया ।

“कहो, क्या काम है ?”

“मैं सोच रहा हूँ मैडम, अगर इस बार पूरे बाग़ में गुलाब की पौध लगा दी जाये, तो कैसा रहे ?”

“गुलाब की पौध!”

रुखसाना सुलतान एकाएक हकबकाकर कमांडर करण सक्सेना की तरफ देखने लगी ।

“या फिर अगर आप कहे मैडम, तो किसी दूसरी किस्म की पौध भी लगायी जा सकती है ।”

“तुम… तुम हिंदुस्तान से कब आये ?” रुखसाना सुलतान की आँखे बहुत भौचक्के अंदाज में कमांडर पर टिक गयीं ।

“बस आज ही ।”

“तुम्हारा नाम ?”

“कमांडर ।”

“वैरी गुड !” रुखसाना सुलतान की सारी चंचलता हवा हो चुकी थी- “मैं पिछले दो-तीन रोज से तुम्हारा बड़ी बेसब्री के साथ इंतज़ार कर रही हूँ । यहाँ के हालात ठीक नहीं हैं । जासूसों की जान जहाँ बहुत ज्यादा जोखिम में हैं, वहीं अब मैं भी खतरा महसूस कर रही हूँ ।”

“कैसा खतरा ?” कमांडर के नेत्र सिकुड़ गये ।

“मुझे पिछले दो रोज से ऐसा महसूस हो रहा है ।” रुखसाना सुलतान बहुत धीमी आवाज़ में फुसफुसायी-“जैसे कोई लगातार मेरा पीछा कर रहा हो, मेरी एक-एक गतिविधि पर नजर रखे हो ।”

“क..क्या कह रही हो तुम ?” कमांडर के मुहँ से तेज सिसकारी छुटी- “कौन है वो आदमी ?”

“अभी तक मैंने उसकी शक्ल नही देखी है । परन्तु अहसास मुझे लगातार हो रहा है, जैसे कोई बुरी तरह मेरे पीछे पड़ा हुआ हो ।”

कमांडर के चेहरे पर चिंता की लकीरे उभर आयीं ।

अगर वो बात सच थी, तो वाकई बहुत खतरनाक मामला था ।

“क्या आज होटल में आते समय भी तुम्हें ऐसा महसूस हुआ था कि कोई तुम्हारा पीछा कर रहा है ?”

“रास्ते में तो मुझे ऐसा कुछ महसूस नही हुआ था ।” रुखसाना सुलतान बोली- “मगर होटल में आने के बाद मुझे ऐसा जरुर महसूस हुआ, जैसे दो आँखे टकटकी बांधकर मुझे ही घूर रही हो ।”

“यह तुम्हारा वहम भी तो हो सकता है ?”

“नहीं, वहम नहीं है ।” रुखसाना सुलतान बहुत दृढ़तापूर्वक बोली- “जिन्दगी में पहले कभी मैंने अपने आसपास इतना सस्पैंस से भरा माहौल महसूस नही किया । इतना ही नही, अक्सर मेरे फ्लैट की कॉलबेल भी चीख उठती है, मैं दरवाजा खोलती हूँ, तो बाहर कोई नही होता । यही हालत पिछले दो रोज से मेरे टेलीफोन की है । उसकी घंटी बजने लगती है । मैं रिसीवर उठाती हूँ, तो दूसरी ओर से कोई नहीं बोलता है । वह सिर्फ रिसीवर अपने हाथ में लिए बैठा रहता है । काफी-काफी देर तक बैठा रहता है ।”

“बड़ा अजीब मामला है ।”

“अजीब भी और बहुत ज्यादा दहशत से भरा भी ।” उन बातों को बयान करते-करते रुखसाना सुलतान के चेहरे पर खौफ के भाव तैर गये ।

जबकि कमांडर ने एक ‘डनहिल’ सुलगा ली और वह उसके छोटे-छोटे कश लगाने लगा ।

“क्या लोगे ?” रुखसाना सुलतान बोली ।

"मैं समझता हूँ, फ़िलहाल हमे औपचारिकता में पड़ने के बजाय ज्यादा से ज्यादा काम की बात करनी चाहिए । जासूस दल के सदस्य यहाँ न्यूयार्क में किस जगह छिपे हुए है ?"

"उस सिलसिले में तुम्हें सब मालूम हो जायेगा, पहले मैं तुम्हारे लिए कुछ लाती हूँ ।"

उस मेकअप रूम में तमाम सुविधाएँ उपलब्ध थीं । वहीं एक छोटा सा बार काउंटर भी बना हुआ था, जिसके पीछे स्कॉच की अलमारी में तरह-तरह की कीमती शराबें रखी हुई थीं ।

रुखसाना सुलतान उसी बार काउंटर की तरफ बढ़ गयी । अभी उसने अलमारी में रखी एक शराब की बोतल उठाने के लिए हाथ बढाया ही था, तभी एकाएक वही रखे टेलीफोन की बहुत जोर-जोर से घंटी बजने लगी ।

कमांडर और रुखसाना सुलतान, दोनों के दिमाग पर न जाने क्यों बिजली सी गडगडाकर गिरी ।

उस क्षण टेलीफोन की घंटी का बजना उन्हें बहुत रहस्यमयी लगा ।

□□□

रुखसाना सुलतान ने चील की तरह झपटकर टेलीफोन का रिसीवर उठाया ।

"हैलो !" वो चिल्लाई- "हैलो !"

दूसरी तरफ ख़ामोशी !

सन्नाटा !

किसी ने टेलीफोन का रिसीवर तो उठा रखा था, मगर वो बोल कुछ नहीं रहा था ।

"जरुर वही है ।" रुखसाना सुलतान बदहवास की तरह कमांडर की तरफ पलट कर बोली- "जरुर वही है ।"

कमांडर ने अब रुखसाना सुलतान के हाथ से रिसीवर झपट लिया।

"हैलो !" कमांडर माउथपीस पर चिल्लाया- "कौन हो तुम ? तुम कुछ बोल क्यों नही रहे ?"

पहले जैसा ही सन्नाटा !

खामोशी !

"तुम कुछ जवाब क्यों नहीं देते ?"

दूसरी तरफ से अब बहुत धीमी आवाज़ के साथ रिसीवर रख दिया गया ।

माहौल इतना सस्पैंसफुल बन गया था कि कमांडर करण सक्सेना के माथे पर भी पसीने की नन्ही-नन्ही बूंदे चुहचुहा आयीं।

"क्या हुआ ?" रुखसाना सुलतान बोली ।

"कुछ नही, उसने लाइन काट दी है ।"

"ओह !"

रुखसाना सुलतान धम्म से वहीं एक कुर्सी पर बैठ गयी । इतनी ही देर में उसके हाथ पांव ठन्डे पड़ चुके थे ।

"पिछले दो दिन से यही हालत है, मेरे ऊपर हर पल दहशत सवार रहती है ।"

कमांडर भी टेलीफोन का रिसीवर रखकर रुखसाना सुलतान की तरफ घूमा ।

"लेकिन यह आदमी कौन हो सकता है ?" कमांडर ने 'डनहिल' का कश लगाया ।

"कुछ कहा नही जा सकता, कौन है । मगर एक बात तय है ।"

"क्या?"

"यह आदमी जो भी है, जासूसों वाले इसी पूरे प्रकरण से सम्बंधित है, क्योकि जब से मैं भारत से लौटी हूँ, तभी से मेरे साथ इस तरह की घटनाये घटनी शुरू हुई हैं ।"

"पहले कभी ऐसा नहीं हुआ ?"

"नहीं, सवाल ही नही उठता ।"

कमांडर भी गहरी साँस लेता हुआ वही सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया और उसने सिगरेट की राख ऐश-ट्रे में झाड़ी ।

तभी एक और ज्यादा हौलनाक घटना घटी ।

धांय !

एकाएक गोली चलने की बहुत भीषण आवाज हुई ।

रुखसाना सुलतान इस तरह डकरा उठी- मानो किसी ने बकरे की गर्दन पर छुरी फेर दी हो । गोली मेकअप रूम की खिड़की की तरफ से चलायी गयी थी ।

"कौन है ?" कमांडर झपटकर कुर्सी से खड़ा हो गया- "कौन है वहाँ ?"

फ़ौरन बाहर गलियारे में किसी के बड़ी तेजी के साथ दौड़ने की आवाज आयी ।

कमांडर करण सक्सेना झपटकर मेकअप रूम से बाहर निकला और गलियारे में दौड़ा ।

वहाँ कोई न था ।

मगर दूर से किसी के बहुत बेतहाशा दौड़ने की आवाज आ रही थी ।

कोई लंगड़ा-लंगड़ाकर दौड़ रहा था ।

कमांडर अद्वितीय फुर्ती से उसी दिशा में दौड़ा ।

□□□

गोली चलने की आवाज ने पूरे होटल के अन्दर तहलका मचाकर रख दिया ।

सबके बीच हडकम्प-सा मचा ।

"गोली चलने की आवाज मेकअप रूम की तरफ से आयी थी ।" एक बेयरा भयभीत होकर बोला ।

"कोई चिल्लाया भी !"

"चिल्लाने की आवाज शायद रुखसाना सुलतान की थी ।"

"माई गॉड !" होटल का मैनेजर थर- थर कांपा- " कहीं रुखसाना सुलतान को कुछ न हो गया हो, जल्दी से सब दौड़कर उसे देखो ।"

बहुत सारे लोग तुरंत मेकअप रूम की तरफ झपटे ।

उधर कमांडर आनन-फानन गलियारे में दौड़ा जा रहा था ।

आगे जाकर वो गलियारा कई सारे गलियारों में विभक्त हो गया था। बायीं तरफ के गलियारे में से अभी भी किसी के बेतहाशा लंगड़ा कर भागने की आवाज़ आ रही थी ।

"कौन है ?" कमांडर गला फाड़कर चिल्लाया-"कौन है वहाँ, रुक जाओ !"

कमांडर धड़धड़ाता हुआ बायीं तरफ के गलियारे में दाखिल हुआ ।

फ़ौरन दौड़ने की आवाज़ आनी बंद हो गयी ।

पूरे गलियारे में सन्नाटा था ।

गहरा सन्नाटा !

दोनों तरफ कई सारे कमरे बने थे ।

"कमाल है, यह एकाएक कहाँ गायब हो गया ?"

कमांडर की निगाह उस सुनसान गलियारे में कई मर्तबा दौड़ गयी ।

तभी उसने कुछ कदमो की आहट सुनी । कोई लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ उसी तरफ चला आ रहा था ।

कमांडर फ़ौरन दीवार की ओट में हो गया और उसका हाथ अपने ओवरकोट की उस जेब में रेंग गया, जिसमे कोल्ट रिवाल्वर पड़ी हुई थी ।

तुरंत उसकी ऊँगली रिवाल्वर के ट्रेगर पर जाकर कस गयी ।

तभी उसे होटल का बेयरा दिखाई दिया, जो सामने से चला आ रहा था। जरुर कदमो की वह आवाज उसी की थी ।

"तुमने अभी-अभी गलियारे में किसी को भागते देखा था ?" कमांडर दीवार की ओट में से निकलकर बाहर आ गया ।

"नहीं तो ! बेयरा चौंका- " क्यों, क्या बात है ?"

"कोई रुखसाना सुलतान को गोली मारकर इसी तरफ भागा है ।"

"हे जीसस, किसी ने रुखसाना सुलतान को गोली मार दी !" बेयरे के हाथ में से ट्रे झनझना कर नीचे जा पड़ी। वह बदहवासो की तरह रुखसाना सुलतान के मेकअप रूम की तरफ भागा ।

जबकि कमांडर ने एक- एक करके गलियारे में मौजूद तमाम कमरों की तलाशी लेनी शुरू की ।

मगर आततायी उसे कहीं न दिखाई दिया ।

कमांडर ने आसपास के दूसरे गलियारों में भी जाकर उसे देखा, मगर वो गधे के सिर से सिंग की तरह नदारद हो चुका था।

□□□

कमांडर वापस मेकअप रूप के नजदीक पहुंचा ।

वहाँ काफी सारी भीड़ जमा थी और हंगामे जैसा आलम था। एम्बुलेंस बुलाई तक चुकी थी, इसके अलावा बहुत आनन-फानन रुखसाना सुलतान को हॉस्पिटल ले जाये जाने की तैयारियां हो रही थी ।

कमांडर भीड़ चीरता हुआ रुखसाना सुलतान के करीब पंहुचा ।

वो बेहोश थी और बुरी तरह ख़ून से लथपथ थी ।

"शुक्र है, जो गोली सिर्फ कंधे में लगी है ।" होटल का मैनेजर कह रहा था- "अगर किसी और जगह लगती, तो शायद यह अब तक मर भी चुकी होती ।"

"लेकिन इसे गोली मारी किसने ?"

"मालूम नहीं, किसने मारी । जब गोली की आवाज सुनकर सब यहाँ पहुचे, तो यहाँ कोई भी न था ।"

तभी दो आदमी स्ट्रेचर लेकर दौड़ते हुए उसी तरफ आये ।

"हटो, हटो ! रास्ते से हटो !"

भीड़ 'काई' की तरह फटती चली गयी ।

उन्होंने स्ट्रेचर रुखसाना सुलतान के खून से लथपथ जिस्म के पास रखी और फिर आनन-फानन उसे उठाकर स्ट्रेचर पर रखने लगे ।

पलक झपकते ही वह रुखसाना सुलतान को वहाँ से लेकर जा चुके थे ।

होटल का मैजेजर भी दौड़ता हुआ उन्ही के साथ ही साथ गया ।

"कमाल है ।" एक बेयरा कह रहा था- "हमारे होटल में पहले कभी ऐसी घटना नही घटी ।"

"सबसे ज्यादा हैरानी की बात तो ये है ।" दूसरा बेयरा बोला-"रुखसाना सुलतान को भला किसी ने गोली क्यों मारी, उससे किसी की क्या दुश्मनी हो सकती है ?"

"समझ नही आता, क्या चक्कर है !"

कमांडर भी स्तब्ध मुद्रा में अपनी जगह खड़ा था ।

उसने एक और 'डनहिल' निकाल कर सुलगा की तथा उसके छोटे-छोटे कश लगाने लगा ।

माज़रा उसके भी कुछ समझ में नही आ रहा था ।

□□□

रुखसाना सुलतान उस समय अपने फ्लैट पर थी ।

मुश्किल से पांच मिनट पहले ही वो हॉस्पिटल से वहाँ आयी थी और अब बैड पर लेटी थी ।

उसके कंधे में से गोली निकाली तक चुकी थी । इसके अलावा मैनेजर के साथ-साथ होटल स्टाफ के कई और आदमी भी वहाँ जमा थे ।एक पुलिस कप्तान भी अपने दो सार्जेंटो के साथ वहाँ उपस्थित था ।

“जिस आदमी ने तुम्हें गोली मारी,” पुलिस कप्तान उसके नजदीक बैठा सवाल कर रहा था-“ तुमने उसकी सूरत देखी थी ?”

“नही, मैंने उसकी एक झलक भी नही देखी ।” रुखसाना सुलतान के चेहरे पर अभी भी पीड़ा के निशान थे “गोली तो बस खिड़की की तरफ से एकदम से चली थी और गोली चलाते हो वो आततायी भाग खड़ा हुआ ।”

“यानि तुम उसकी सूरत नहीं देख पायीं ?”

“सूरत क्या, मुझे तो उसके कपड़ो की एक झलक भी देखने को नही मिली ।”

“किसी ऐसे आदमी का नाम बता सकती हो, जिसके ऊपर तुम्हें शक हो ?”

रुखसाना सुलतान की गर्दन इनकार में हिली ।

“यानि तुम्हें ऐसे किसी आदमी पर शक भी नही ।” पुलिस कप्तान की आँखों में घोर आश्चर्य के भाव तैरे- “जो तुम्हारी जान लेने की कोशिश कर सकता है ?”

“नही ।”

“बड़े कमाल की बात है ! और मुझे पता चला है , तुम्हारे ऊपर हुआ यह इस तरह का पहला हमला है ।”

“जी हाँ ।”

“पहले कभी किसी और तरह की घटना घटी है? किसी ने आपको धमकी दी हो ? डराने की कोशिश की हो? या फिर आपके साथ कोई और दहशतनाक वाक्या पेश आया हो ?”

रुखसाना सुलतान ने पुनः इंकार में गर्दन दिला दी ।

वह ऐसी कोई बात अपनी ज़ुबान से नही निकालना चाहती थी, जिससे भारतीय जासूसों के दल का रहस्य उजागर हो ।

पुलिस कप्तान की आँखों में अब कुछ शक के भाव उभर आये ।

“यानि यह हमला खुद आपके लिए भी एक पहेली ही है मिस रुखसाना ?”

“जी हाँ ।”

“ठीक है ।” पुलिस कप्तान गहरी साँस लेकर अपने स्थान से उठ खड़ा हुआ- “तो फिर मैं चलता हूँ, लेकिन जाने से पहले मैं एक बात जरुर कहना चाहूँगा, अगर मेरे जाने के बाद आपको कोई ऐसी बात याद आ जाये, जिससे आततायी तक पहुचने में कानून को मदद मिलती हो तो मुझे फ़ौरन इनफार्मेशन दें ।

“जरुर ।”

“यह मेरा पर्सनल टेलीफोन नम्बर है ।” पुलिस कप्तान ने अपनी जेब से एक कार्ड निकाल कर रुखसाना सुलतान की तरफ बढाया- “ आप कभी भी इस नम्बर पर मुझसे बात कर सकती है ।”

रुखसाना सुलतान ने कार्ड ले लिया ।

“गुड नाईट !”

“गुड नाईट कैप्टन !”

पुलिस कप्तान अपने दोनों कांस्टेबलो के साथ वहाँ से चला गया ।

पुलिस कप्तान के जाते ही वहाँ एक और आदमी ने कदम रखा । वह छ: फुट से भी निकलते हुए कद का मालिक था और उसका व्यक्तित्व सांड जैसा भीमकाय था । उसने चमड़े की काली जैकिट और काली जींस पैंट पहनी हुई थी । सिर बिलकुल गंजा सफाचट था और उसके दायें कंधे पर शोल्डर होलेस्टर पड़ा था- जिसमें पॉइंट अड़तालीस कैलिबर की एक स्मिथ एंड वैसन रिवाल्वर फिट थी ।

कुल मिलाकर वह आदमी कोई बहुत खतरनाक कमांडो नजर आ रहा था ।

"इनसे मिलो रुखसाना !" होटल का मैनेजेर उसे देखते ही बोला- " ये हैं मिस्टर बॉब !"

"हैलो मैडम !" बॉब नाम का वो खतरनाक आदमी रुखसाना सुलतान के नजदीक आकर खड़ा हो गया और बहुत धीरे से मुस्कुराया ।

"हैलो !"

न जाने क्यों उस आदमी को देखकर रुखसाना सुलतान के शारीर में खौफ की सिहरन दौड़ी ।

"मिस्टर बॉब आज से तुम्हारे बॉडीगार्ड होंगे और हमेशा तुम्हारे साथ साये की तरह चिपके रहेंगे ।"

"लेकिन मुझे बॉडीगार्ड की क्या जरुरत है ?" रुखसाना सुलतान बॉडीगार्ड के नाम से बुरी तरह हड़बड़ाई ।

"जरुरत है मैडम ! यह हमारे होटल ग्रुप की मैनेजमेंट कमेटी का फैसला है कि मिस्टर बॉब चौबीसों घंटे तुम्हारे साथ रहे । हमारी मैनेजमेंट कमेटी नही चाहती कि तुम्हें मार डालने का जो एक प्रयास नाकाम हो गया है, वह दूसरी बार में कामयाब हो जाये ।

"लेकिन ।"

"डोंट वरी मैडम !" बॉब के होंठो पर किसी मासूम बच्चे जैसी मुस्कान पैदा हुई- "मेरे कारण आपको कोई परेशानी नहीं होगी । मैं बाहर वाले कमरे में पड़ा रहूँगा ।"

"ऐसी कोई बात नही है, लेकिन मैं समझ नही पा रही हूँ कि मुझे आखिर किसी बॉडीगार्ड की क्या जरुरत है?"

"आपको जरुरत है मैडम !" बॉब ने अपने सिर पर हाथ फिराया- "यह बात आपसे बेहतर हम समझते है और वैसे भी हम सब लोग आपके शुभचिन्तक हैं, इसलिए फ़िलहाल आप अपनी चिंता करनी छोड़ दें ।"

□□□

रुखसाना सुलतान एकाएक बहुत फिक्रमंद हो उठी थी । वो समझ नहीं पा रही थी, मानो किसी ने उसे मजबूत सलाखों के पीछे कैद कर दिया हो ।

रात के उस समय सवा बारह बज रहे थे, जब एकाएक टेलीफोन की घंटी बहुत भीषण क्रदन करते हुए चिल्ला उठी ।

रुखसाना सुलतान ने बिस्तर के खड़े होने का प्रयास किया ।

"आप लेटी रहिये मैडम !" बॉब फ़ौरन भागा भागा अन्दर आया- "मैं देखता हूँ, किसका फोन है ।"

बॉब ने आगे बढ़कर रिसीवर उठाया ।

"हैलो !" बॉब थोड़े उच्च स्वर में बोला ।

शांति !

गहरी शांति !

"हैलो !" बॉब कुछ और तेज आवाज़ में बोला- "हैलो !" फिर पहले जैसी ख़ामोशी !

रुखसाना सुलतान, जो बिस्तर पर इत्मिनान से लेटी हुई थी वह भी अब चौकी ।

"क्या बात है, किसका फोन है ?"

"मालूम नहीं, किसका फोन है । कोई कुछ बोल ही नही रहा ।"

तभी दूसरी तरफ से लाइन कट गयी ।

"लो, अब फोन भी डिस्कनेकट हो गया ।"

बॉब ने रिसीवर वापस क्रेडिल पर रखा ।

"किसका फोन हो सकता है मैडम ?"

"मालूम नही, किसका फोन है ?" रुखसाना सुलतान बोली- "जरुर कोई पागल होगा ।"

"ठीक है मैडम ! रात काफी हो चुकी है, अब आप आराम करें । मैं भी चलकर सोता हूँ । गुड नाईट !"

"गुड नाईट !"

बॉब वापस बाहर वाले कमरे में चला गया ।

रुखसाना सुलतान ने भी आँखे मूंद लीं ।

मगर उस एकाएक बजी टेलीफोन की घंटी ने उसके दिल में घबराहट पैदा कर दी थी ।

□□□

दस मिनट भी न गुज़रे होंगे, तभी टेलीफोन की घंटी पुनः बहुत जोर से भीषण क्रदन करते हुए चीखी ।

बॉब पहले की तरह ही भागा- भागा वहाँ आया ।

"पता नही कौन बद्जात आदमी इतनी रात को तंग कर रहा है ।"

बॉब ने झपट कर टेलीफोन का रिसीवर उठाया ।

"हैलो !" वह ऊँची आवाज़ में बोला ।

फिर पहले जैसी खामोशी ।

"हैलो !" वह गला फाड़कर चिल्लाया- "कौन है भाई? तुम कुछ बोलते क्यों नही ?"

सन्नाटा !

“जहन्नुम में जा ! न हरामजादा सोता है, न सोने देता है ।”
बॉब ने भड़ाक से रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया ।
फिर वह गुस्से में भुनभुनाता हुआ बाहर वाले कमरे में चला गया ।
रुखसाना सुलतान, जो आँखे बंद किये पड़ी थी । बॉब के जाते ही उसने फ़ौरन भक्क से अपनी आँखे खोल दी । उसका शरीर पसीने में लथपथ था ।
उस क्षण न जाने क्यों उसे वो टेलीफोन इंस्ट्रूमेंट ऐसा लगा, जैसे उसके कमरे में कोई टाइम-बम रखा हो ।
कुछ देर रुखसाना सुलतान आँखे गड़ाये उस टेलीफोन को घूरती रही, फिर उसने एक चाल चली । वो बहुत दबे पांव बिस्तर छोड़कर खड़ी हुई और टेलीफोन इंस्ट्रूमेंट के नजदीक पहुंची । उसने टेलीफोन उठाया और उसे पलटा। टेलीफोन के नीचे ‘बटन’ जैसे आकार की दो डाइलिंग नाब लगी हुई थी । उनमें से एक नाब से टेलीफोन पर सुनाई देने वाली आवाज़ को कम- ज्यादा किया जा सकता था, जबकि दूसरी नाब से ‘घंटी’ की आवाज कम ज्यादा होती थी ।
रुखसाना सुलतान ने घंटी वाली नाब को पकड़ कर उसे विपरीत दिशा में घूमा दिया ।
अब अगर टेलीफोन की घंटी बजी, तो घंटी की आवाज़ बहुत कम होनी थी ।
फिर रुखसाना सुलतान ने टेलीफोन इंस्ट्रूमेंट टेबल से उठाकर अपने बिस्तर पर ले जाकर रख लिया । बिस्तर वैसे भी घंटी की आवाज़ को अपने में अब्जर्ब करता है ।
उसके बाद वो बेचैनी से घंटी बजने का इंतज़ार करने लगी ।

□□□

काफी देर हो गयी, परन्तु फिर घंटी न बजी ।
इंतज़ार करते करते रुखसाना सुलतान अब थक चुकी थी । उसके कंधे में हल्का हल्का दर्द अभी भी था, जिसकी वजह से उसकी तबियत सोने के लिए कर रही थी ।
रुखसाना सुलतान ने आँखे मूंद लीं ।
तभी टेलीफोन की घंटी ‘पिक-पिक’ करती हुई बहुत धीमी आवाज़ में फिर बजी ।
रुखसाना सुलतान ने फौरन चील की तरह झपट कर रिसीवर उठाया ।
“हैलो !” वो धीमें स्वर में बोली ।
ख़ामोशी ।
“कौन हो तुम?” वह गुर्रायी- “तुम कुछ बोलते क्यों नही ?”
“ मैं कमांडर बोल रहा हूँ ।” फ़ौरन दूसरी तरफ से ‘कमांडर ’ की बहुत साफ़ आवाज़ सुनाई दी ।
“तौबा !” रुखसाना सुलतान के मुहं से तेज़ सिसकारी छुटी- “मुझे इसी बात का डर था कि कहीं यह तुम्हारा फोन न हो ।”
“लेकिन वह आदमी कौन है, जो बार-बार टेलीफोन उठा रहा था ?”

“वह बॉब है । उसे आज ही हमारे ‘होटल ग्रुप’ की मैनेजमेंट कमेटी ने मेरा बॉडीगार्ड नियुक्त किया है । वह अब चौबीस घंटे मेरे साथ रहेगा ।

“ चौबीस घंटे ।” कमांडर चौंका- “तो फिर भारतीय जासूसों के उस दल से मेरी मुलाक़ात कैसे होगी, जिन्हें फ़ौरन मेरी मदद की आवश्यकता है ?”

“उनसे भी मुलाक़ात होगी । तुम एक काम करो कमांडर, कल सुबह ठीक नौ बजे तुम मेरे फ्लैट पर पहुँचो ।”

“लेकिन बॉब !”

“बॉब को मैं खुद संभाल लूंगी । तुम बॉब को अपना नाम मोहम्मद मुश्ताक बताना और उससे कहना कि तुम मेरे दोस्त हो ।”

“मोहम्मद मुश्ताक !”

“ हाँ ।”

“ठीक है ।”

“ सुबह नौ बजे मैं तुम्हारा बेसब्री के साथ इंतज़ार करूँगी ।”

“ मैं जरुर पहुंचुगा ।”

“बाय ।”

रुखसाना सुलतान ने रिसीवर रख दिया ।

फिर उसने घंटी नाब घुमाकर उसकी फुल आवाज कर दी और टेलीफोन इंस्ट्रूमेंट वापस टेबिल पर रख आयी।

□□□

सुबह रुखसाना सुलतान की काफी जल्दी आँख खुल गयी थी ।

उठते ही वो सारे काम जल्दी- जल्दी निपटाने लगी । उसके कंधे का जख्म अब बहुत ठीक था ।

बॉब उससे और भी ज्यादा पहले उठ चुका था और अब तक फ्रेश भी हो गया था ।

“बॉब !” रुखसाना सुलतान बॉब को आवाज देती हुई बाहर वाले कमरे में पहुंची- ‘बॉब !’

बॉब, जो बाहर वाले कमरे में एक इजी चेयर पर लेटा फ़िल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहा था, तुरंत चौकन्ना होकर उठा ।

“यस मैडम !”

“अभी थोड़ी देर बाद मेरा एक दोस्त यहाँ आएगा, उसे अन्दर आने देना ।”

“क्या नाम है उसका ?”

“मौहम्मद मुश्ताक !”

“ठीक है मैडम !”

रुखसाना सुलतान वापस अन्दर कमरे में आ गयी । फिर वो बाथरूम की तरफ बढ़ी ।

बाथरूम में पहुँच कर उसने एक-एक करके तमाम कपड़े उतारने शुरू किये ।

शीघ्र ही वो सिर्फ ब्रा और पैंटी में थी ।

उसने बाथरूम में ही लगे एक आदमकद आईने में अपना रूप निहारा ।

वो सचमुच अनिंग्ध सौन्दर्य की स्वामिनी थी ।

उसके यौवन कलश ऐसे थे कि उन्हें देखकर खुद वो कई मर्तबा मोहित हो चुकी थी ।

बेचारे मर्दों का तो देखकर हाल ही न जाने क्या होता होगा !

शायद इसीलिए शहर भर के मर्द उसके इस कदर दीवाने थे । इसीलिए रोजाना शाम को उसका कैबरे देखने के लिए इतनी भीड़ जुटती थी । नौजवान तो उसके अर्धनग्न शरीर को देखकर अक्सर अभिसार की कल्पना करने लगते थे ।

अलबत्ता रुखसाना सुलतान अपने उस अनिंग्ध सौन्दर्य को बरकरार रखने के लिए मेहनत भी बहुत करती थी।

डाइटिंग पर बड़ा ध्यान देती थी ।

मेडिटेशन करती थी ।

स्तनों में कसावट बरकरार रखने के लिए कई बार इंजेक्शन ले चुकी थी ।

इसके अलावा अपनी मध्यस्थली को भी रूपवान बनाये रखने के लिए कई तरह के आसन करती थी ।

इसीलिए पूरे न्यूयार्क में उसकी जय-जय थी ।

इसलिए मर्द उसे देखते ही बुरी तरह लट्टू हो जाते थे ।

रुखसाना सुलतान ने आदमकद आईने के सामने खड़े-खड़े अपने कंधे के जख्म को देखा, जिस पर काफी चौड़ा टेप चिपका हुआ था । हालाँकि जख्म की वजह से डॉक्टर ने उसे न नहाने की सख्त ताकीद की थी, लेकिन फिर भी रुखसाना सुलतान कंधे से नीचे-नीचे स्नान करना चाहती थी ।

उसने बाथटब के ऊपर लगा नल खोल दिया ।

फ़ौरन बड़ी तेज़ी के साथ बाथटब में पानी भरने लगा ।

फिर उसने दोबारा आदमकद आईने के सामने खड़े होकर अपनी ब्रा का हुक खोला ।

हुक सामने की तरफ ही दोनों कप के बीच में लगा हुआ था । हुक खोलते ही उसके ब्रा के कप इधर-उधर जा पड़े और उसके दूधिया उरोज बड़े ही दिलकश अंदाज में नमूदार हो उठे ।

फिर रुखसाना सुलतान ने अपनी पैंटी भी उतारी ।

अब वो पूर्णतया निर्बस्त्र खड़ी थी ।

तब तक बाथटब भी पूरी तरह भर चुका था । उसी क्षण रुखसाना सुलतान को ऐसा अहसास हुआ, जैसे कोई दरवाजे की झिरी में से उसे निहार रहा है ।

रुखसाना सुलतान की आँखे फ़ौरन झिरी पर जाकर अटक गयीं ।

तुरंत उसके शरीर में आतंक की तेज लहर दौड़ी । वहाँ सचमुच कोई था ।

किसी की आँख चमक रही थी ।
रुखसाना सुलतान ने झपट कर अपने कपड़े नग्न शरीर पर ढक लिए ।
“कौन है ?” वो चिल्लाई- “कौन है बाहर ?”
रहस्यमयी आँख अभी भी झिरी पर टिकी थी ।
वो बॉब की आँखे नही थी ।
बॉब की आँखे को काफी छोटी- छोटी थी ।
“बॉब !” वो गला फाड़कर अपनी पूरी ताकत से चिल्ला उठी- “बॉब ! कहाँ हो तुम कौन है बाहर ?”
पहले जैसी ख़ामोशी !
आँखे अब धीरे-धीरे झिरी से पीछे हटने लगी थी ।
फिर बाहर वाले कमरे में ऐसी आवाज होने लगी- जैसे कोई लंगड़ा कर चल रहा हो ।
रुखसाना सुलतान के सभी मसानो ने एक साथ ढेर सारा पसीना उगल दिया । पिछले दो रोज में किसी के लंगड़ा कर चलने की वह आवाज़ वो कई मर्तबा सुन चुकी थी ।
“कौन है?” वो पुनः गला फाड़कर चिल्लाई ।
साथ ही वो बहुत आनन- फानन कपड़े पहनने लगी । कपड़े पहनते ही वो दरवाजा खोलकर अदितीय फुर्ती से बाहर निकली । उसे यह बात बहुत हैरान कर रही थी की बॉब के होते हुए कोई उसके फ्लैट में घुस आया था ।
हाल कमरे में अब कोई न था ।
“बॉब !” रुखसाना सुलतान फिर बहुत जोर से चीखी- “ बॉब !”
ख़ामोशी !
बॉब की आवाज़ नहीं आ रही थी ।
रुखसाना सुलतान फर्श रौंदती हुई धड़धड़ाती हुए बॉब के कमरे में पहुंची ।
वहाँ पहुँचते ही उसके कंठ से बहुत हृदय विदारक चीख निकल गयी । सामने इजी चेयर पर बॉब की खून में लथपथ लाश पड़ी थी । किसी ने उसके ठीक दिल में गोली मारी थी और अभी भी उसके दिल वाले सुराख़ में से खून निकल कर कुर्सी से नीचे गिर रहा था । वहीं वो फ़िल्मी पत्रिका भी पड़ी थी, जो थोड़ी देर पहले तक उसके हाथ में थी।

□□□

दहशत के कारण रुखसाना सुलतान का बुरा हाल हो गया ।
वो झपट कर दरवाजे के नजदीक पहुंची, तो यह देखकर भौचक्की रह गयी की दरवाजा भी किसी ने अन्दर से लॉक कर दिया था ।
तभी उसे बॉब से स्मिथ एंड वैसन रिवाल्वर की याद आयी जो उसके शोल्डर होलेस्टर में फिट था ।
रुखसाना सुलतान वापस झपट कर बॉब की लाश के करीब पहुंची ।

लेकिन रिवाल्वर भी अब उसके होलेस्टर में से नदारद था ।

कौन था ?

कौन अन्दर घुस आया था ?

रुखसाना सुलतान का दिल जोर-जोर धड़कने लगा ।

तभी उसे टेलीफोन की याद आयी ।

उसे टेलीफोन के द्वारा जल्द-से-जल्द किसी की मदद हासिल करनी चाहिए थी ।

वो दौड़कर टेलीफोन के नजदीक पहुंची ।

उसने झपट कर रिसीवर उठाया ।

अगले ही पल उसके शरीर से और भी ज्यादा तेजी के साथ पसीने की धाराये छुट पड़ीं ।

फोन भी डैड था ।

किसी ने जरुर उसकी वायर काट डाली थीं ।

रुखसाना सुलतान ने अपने शुष्क होंठो पर जुबान फिराई ।

मौत उसे बिलकुल अपने सिर पर मंडराती महसूस होने लगी ।

तभी उसे फ्लैट में से दोबारा किसी के लंगड़ा कर चलने की आवाज़ सुनाई आने लगी ।

कोई दूसरे कमरे में था और अब धीरे धीरे चलता हुआ उसी तरफ आ रहा था ।

फिर आगन्तुक को जोर से खांसी का ठसका भी उठा ।

ऐसा लगा, जैसे उसके गले में जोर-जोर से घरघराहट हो रही हो ।

रुखसाना सुलतान तेज़ी से दरवाजे की तरफ झपटी और उसने कमरे का दरवाज़ा अन्दर से बंद कर देना चाहा।

मगर वो दोनों पट बंद कर पाती, उससे पहले ही आततायी ने झपट कर अपनी एक टांग दोनों पटो के बीच में फंसा दी ।

रुखसाना सुलतान के हलक से वीभत्स चीख निकल गयी । तभी आततायी की दूसरी लात बड़े प्रचंड बेग से दरवाजे पर पड़ी- रुखसाना सुलतान उछल कर दूर जा गिरी ।

□□□

ठीक नौ बजे एक टैक्सी रुखसाना सुलतान के फ्लैट के नीचे आकर रुकी तथा फिर उसमे से कमांडर उतरा ।

वो जासूसी दल के उन सदस्यों को लेकर बहुत चिंतित था, जो कहीं फंसे हुए थे । वह जितना जल्द-से-जल्द उन तक पहुँच जाना चाहता था, उतनी ही उसके रास्ते में रूकावटे पैदा हो रही थीं ।

वह सब न जाने कहाँ थे !

किस हाल में थे !

वह सारे सवाल कमांडर का बहुत परेशान कर रहे थे ।

कमांडर ने टैक्सी का भाडा चुकाया और फिर सीढ़ियां चढ़ता हुआ ऊपर पहुंचा ।

जल्द की वो रुखसाना सुलतान के फ्लैट के सामने खड़ा था । उसने कॉलबेल बजायी ।

अन्दर तोते के टर्राने जैसी आवाज़ गूंजी ।

कमांडर ने 'डनहिल' निकाल कर होंठो से लगा ली तथा फिर उसे लाइटर से सुलगाया ।

अन्दर से उसे कोई रेस्पांस न मिला ।

कमांडर ने दोबारा कॉलबेल बजायी ।

पुनः तोते के टर्राने जैसी आवाज़ हुई, मगर फ्लैट में पहले जैसी ही घोर शांति व्याप्त रही । अब कमांडर की हैरानी बढ़ी ।

दरवाजा क्यों नही खोला जा रहा था ?

क्या माज़रा था ?

उसने दरवाजे के पट अन्दर की तरफ धकेले, तो यह देखकर वो और भी ज्यादा हैरान रह गया कि दरवाजा खुला था ।

कमांडर 'डनहिल' के कश लगाता हुआ अंदर दाखिल हुआ ।

ख़ामोशी !

सन्नाटा !

"मिस रुखसाना !"

फिर पहले जैसी खामोशी !

"अजीब चक्कर है ।"

कमांडर करण सक्सेना झुझलाया हुआ जैसे ही कमरे में दाखिल हुआ- फ़ौरन ही उसे सामने बॉब की खून में लथपथ लाश पड़ी नजर आयी ।

लाश देखते ही एक क्षण के लिए तो कमांडर भी सकपका उठा ।

सिगरेट के कश लगाना वो बिलकुल भूल गया ।

"रुखसाना !" वो तेजी से अन्दर की तरफ झपटा- " रुखसाना !"

कमांडर दौड़ते हुआ जैसे ही अंदर वाले कमरे में पहुंचा, तो उसके नेत्र और भी ज्यादा दहशत से उबल पड़े ।

वहाँ फर्श पर रुखसाना सुलतान की भी खून में लथपथ लाश पड़ी थी ।

सबसे बड़ी बात ये थी, उसके भी ठीक दिल में गोली मारी गयी थी, और फिलहाल उसके शव के आसपास खून का एक बड़ा तालाब सा बन गया था ।

इसके अलावा कमांडर ने वहाँ एक और बड़ा अजीब मंजर देखा । रुखसाना सुलतान ने मरने से पहले अपने ही खून में उँगलियाँ डुबोकर फर्श पर कुछ नम्बर लिख दिए थे, वह नम्बर सात डिजिट में थे ।

३२३६५२८

सबसे बड़ी बात ये है कि वो सभी नम्बर 'हिंदी' में लिखे गये थे, ताकि हर कोई उन्हें न समझ सके । कमांडर जानता था, न्यूयार्क के टेलीफोन नम्बर भी सात डिजिट में थे । इस

लिजाह से वह जरुर कोई टेलीफोन नम्बर ही होना चाहिए था, जो रुखसाना सुलतान ने मरने से पहले खासतौर पर कमांडर के लिए छोड़ा था ।

कमांडर ने वह नम्बर नोट कर लिया और फिर फर्श पर लिखे उन नम्बरों को आनन-फानन मिटा डाला, जो रुखसाना सुलतान ने खून से लिखे थे ।

अब फर्श को देखकर कोई भी इस बात का अनुमान नही लगा सकता था कि वहाँ से कोई चीज़ साफ़ भी की गयी है ।

फिर वह जिस तरह खामोशी से फ्लैट में दाखिल हुआ था, उसी तरह बाहर निकल गया ।

रुखसाना सुलतान की मौत का उसे बहुत अफ़सोस था ।

अप्सरा जैसी वो सुन्दर औरत खामखाह उस मिशन की भेंट चढ़ गयी थी ।

कमांडर सीढिया उतरता हुआ नीचे पहुंचा ।

थोड़ी ही दूर एक पब्लिक टेलीफोन बूथ बना हुआ था ।

वह लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ टेलीफोन बूथ के नजदीक पहुंचा और उसमे जाकर बंद हो गया । फिर उसने पुलिस हैडकवार्टर का टेलीफोन नम्बर डायल किया ।

तुरंत दूसरी तरफ घंटी जाने लगी ।

"हैलो ।" शीघ्र ही दूसरी तरफ से किसी पुलिसकर्मी की भरी-भरकम आवाज़ उसके कानो में पड़ी- "न्यूयार्क पुलिस हैडकवार्टर !"

"मैंने आपको एक बहुत अर्जेंट सूचना देनी है सर !" कमांडर अपनी आवाज़ में घबराहट का पुट पैदा करता हुआ बोला ।

"कैसी सूचना ?"

"मैं ग्राहम रोड की ब्लूक्रॉस सोसाइटी के पास से बोल रहा हूँ । यहाँ सोसाइटी के एक फ्लैट में दो खून हो गये हैं, आप लोग जितना जल्द-से-जल्द हो सके, यहाँ पहुंचे । क्विक ! खून बस थोड़ी ही देर पहले हुए है ।"

"ख...खून हो गये हैं ।" पुलिसकर्मी हडबडा उठा- " कौन से फ्लैट में ?"

"तीन सौ छब्बीस नम्बर में ।"

"लेकिन तुम कौन बोल रहे हो ?"

"मैं इब्राहीम लिंकन बोल रहा हूँ , अमरीका का भूतपूर्व राष्ट्रपति !"

"यह क्या मजाक है ?"

कमांडर ने रिसीवर वापस हुक पर लटका दिया ।

फिर वो तुरंत ही उस पब्लिक टेलीफोन बूथ से बाहर निकल आया ।

वो जानता था, अमरीकन पुलिस कम-से- कम इस मामले में बहुत अलर्ट है । अब तक हैडकवार्टर में मालूम भी चल गया होगा कि वो फोन किस पब्लिक बूथ से किया गया था ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ थोड़ा आगे पहुंचा ।

मुश्किल से फर्लांग भर की दूरी पर एक और पब्लिक टेलीफोन बूथ बना हुआ था। कमांडर उस बूथ में पहुंचा और वहाँ से उसने वो टेलीफोन नम्बर डायल किया, जो रुखसाना सुलतान ने छोड़ा था ।

फ़ौरन ही दूसरी तरफ घंटी जाने लगी ।

हालाँकि कमांडर नही जानता था कि वो किस जगह का टेलीफोन नम्बर है और अभी तो इस बात की भी कोई गारंटी नही थी कि वो कोई टेलीफोन नम्बर ही था । अलबत्ता कमांडर को इस बात का एहसास जरुर था की सात नम्बरों को वो डिजिट जासूसी दल के सदस्यों तक पहुचने का एक सशक्त माध्यम होनी चाहिए ।

दूसरी तरफ काफी देर तक घंटी बजती रही ।

"हैलो !" फिर किसी बहुत उनीदी सी आवाज रिसीवर पर उभरी ।

"मुझे दिलीप मेहरा से बात करनी है ।" कमांडर बोला ।

उसने वो शब्द विशुद्ध हिंदी भाषा में कहे ।

"रांग नम्बर !"

फ़ौरन लाइन काट दी गयी ।

कमांडर हक्का- बक्का रह गया ।

एक बात वो तुरंत भांप गया, टेलीफोन की घंटी बिलकुल सही जगह बजी थी और जिस आदमी ने टेलीफोन रिसीव किया था, वह भी जरुर कोई हिन्दुस्तानी था, क्योकि कोई हिन्दुस्तानी ही हिंदी भाषा में किये सवाल का इतनी तत्परता के साथ जबाव दे सकता था ।

कमांडर ने दोबारा वह नम्बर डायल किया ।

फिर पहले की तरह घंटी जाने लगी ।

इस बार पहले से कहीं ज्यादा जल्दी टेलीफोन उठाया गया ।

"हैलो !"

इस मर्तबा आवाज़ बदली हुई थी । लगता था, किसी दूसरे आदमी ने टेलीफोन उठाया था ।

"देखिये, मेरी दिलीप मेहरा से बात करनी बहुत ज्यादा जरुरी है ।" कमांडर बड़े तत्पर भाव से बोला- "मैं हिंदुस्तान से सिर्फ उन्हीं से मिलने के वास्ते इधर न्यूयार्क आया हूँ ।"

"हिंदुस्तान से !" दूसरी तरफ से भी अब विशुद्ध हिंदी भाषा का ही प्रयोग किया गया ।

"हाँ !"

एकाएक गहन ख़ामोशी छा गयी ।

"क्या हुआ, तुम खामोश क्यों हो गये ?"

"नाम क्या है तुम्हारा ?"

"तुम मुझे अपने पूरे दल का मददगार समझो, जो तुम्हें संकट से निकालने आया है ।"

“तुम्हें हमारा नम्बर किसने दिया ?”

“रुखसाना सुलतान ने ।”

“ठीक है ।” वह पुनः हिंदी भाषा में ही बोला-“ तुम आज रात ठीक 10 बजे रॉकविले पहुँचो और वहाँ कैथोलिक चर्च के सामने चहलकदमी करो । तुम्हें पहचानने का तरीका क्या है ?”

“मैं काला लम्बा ओवरकोट और काला क्लेंसी हैट पहने हुए होऊंगा ।”

“ओ०के० !”

तुरंत भड़ाक से पहले की तरह ही रिसीवर पटक दिया गया ।

कमांडर भी उससे कुछ पूछना चाहता था, मगर उसकी बात अधूरी ही रह गयी ।

उसके बात पुनः फोन करना उसे मुनासिब न लगा ।

वो ख़ामोशी के साथ पब्लिक टेलीफोन बूथ से बाहर निकल आया । तब तक आसपास का सारा वातावरण पुलिस सायरन की तेज आवाज़ से गूंज उठा था और देखते ही देखते कई पुलिस पेट्रोलिंग कारे ब्लूक्रॉस सोसाइटी के विशाल प्रांगण में आकर रुकीं ।

रात के ठीक 10 बजे कमांडर करण सक्सेना रॉकबिले स्ट्रीट में था ।

वह न्यूयार्क के बेहद प्रसिद्धतम बाजारों में से एक था और उसकी गिनती शाही ठाठ- बात वाले बाजारों में होती थी । रात के ठीक आठ बजे ही वह पूरा बाजार बंद हो जाता था, न्योन साईन जल उठते थे और रंग बिरंगे स्ट्रीट लैम्पो का प्रकाश वहाँ सड़क पर अद्भुत छठा बिखेरने लगता था ।

उसी बाज़ार के बीचो- बीच कैथोलिक चर्च बना था ।

चर्च की इमारत भी बड़ी सुन्दर थी और उसे देखकर मन में आध्यात्मित शांति का भाव जन्म लेता था ।

कमांडर ने ‘डनहिल’ सुलगा ली और वह उसके छोटे-छोटे कश लगाता हुआ चर्च के सामने इधर से उधर टहलने लगा ।

दूसरा हाथ उसका जेब में था और कोल्ट रिवाल्वर के गिर्द कसा हुआ था ।

कमांडर काफी देर तक वहाँ चहलकदमी करता रहा ।

तभी एक खटारा सी मोरिस माईनर कार कमांडर के नजदीक आकर रुकी ।

उसकी ड्राइविंग सीट पर लगभग पैंतीस-छत्तीस साल का एक बहुत मोटा आदमी बैठा था । उसका पेट बहुत विशालकाय था, मगर चेहरे पर बच्चो जैसी मासूमियत थी ।

कमांडर उसे देखते ही पहचान गया ।

बो ‘अनिल मोटा’ था ।

‘क...कमांडर आप।’ अनिल मोटे ने भी कमांडर करण सक्सेना को देखते ही पहचाना ।

“यस !”

“मैं अपनी आँखों पर यकीन नहीं कर पा रहा हूँ कमांडर !” अनिल मोटा बहुत प्रफुल्लित मुद्रा में बोला- “कि भारत सरकार ने आपको हमारी मदद के लिये यहाँ भेजा है ।”

"अब मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ ।" कमांडर ने 'डनहिल' डीके अंतिम कश लगाने के बाद उसे दूर सड़क पर उछाल दिया- "इसीलिए शक की यहाँ कहीं कोई गुंजाईश नही बची है ।"

"आपने बिलकुल ठीक कहा । आइये, अन्दर आइये कमांडर !"

अनिल मोटे ने कार का पिछला दरवाजा करण सक्सेना के वास्ते ससम्मान खोल दिया ।

कमांडर पिछली सीट पर जा बैठा और उसने दरवाजा बंद किया ।

फ़ौरन कार न्यूयार्क की सड़क पर तूफ़ान गति से दौड़ने लगी ।

अनिल मोटा उस समय बहुत खुश नजर आ रहा था ।

इस बात ने ही उसके अन्दर दोगुना जोश भर दिया था कि कमांडर जैसा आदमी उनका मददगार बनकर वहाँ पंहुचा है ।

"दिलीप साहब आपको देखकर बहुत खुश होंगे ।" अनिल मोटा बोला ।

"वो इस वक़्त कहाँ है ?"

"मैं उन्ही के पास आपको लेकर जा रहा हूँ ।"

अनिल मोटे ने कार की 'डोम लाइट' बंद कर दी ।

जिससे कार के अन्दर घुप्प अँधेरा छा गया ।

"लाइट क्यों बंद कर दी ?'

"शहर भर की पुलिस हमारे पीछे हाथ धोकर पड़ी हुई है ।" अनिल मोटा बोला- " इसीलिए खुद को छिपाकर रखने के लिये अँधेरा करना जरुरी है । मैं यहाँ तक भी अपनी जान हथेली पर रखकर आया हूँ ।"

"ओह !"

कार सड़क पर दौड़ती रही ।

"रुखसाना सुलतान के बारे में कुछ मालूम है ?"

"क्यों ?" अनिल मोटा कार चलाते-चलाते बोला- " क्या हो गया उसे ?"

"किसी ने आज सुबह उसे गोली मार दी । उसे भी और उसके बॉडीगार्ड को भी ।"

"क्या कह रहे हो ?" अनिल मोटे के मुहँ से तीव्र सिसकारी छूटी ।

कार लड़खड़ाई ।

जिसे अनिल मोटे ने फ़ौरन संभाला ।

"क्या वाकई ?"

"मैंने खुद लाश अपनी आँखों से देखी ।"

"हे भगवान !" अनिल मोटे ने जोर-जोर से गर्दन हिलाई और दोनों हाथो से अपने कानो को छुआ- "जरुर यह सब उसी हरामजादे का किया-धरा है, उसी ने अब रुखसाना सुलतान को भी मार डाला है ।"

"किसने ?"

"उदय प्रताप ने !"

कमांडर के नेत्र सिकुड़ गए ।

"यह उदय प्रताप कौन है ?"

"यही सारे फसाद की जड़ है ।" अनिल मोटा गुर्राया- "इसी की वजह से हमारे ऊपर यह मुसीबतों का पहाड़ टूटा है ।"

कमांडर करण सक्सेना को वह एक नई जानकारी मिल रही थी ।

वरना उसे खबर भी न थी, उदय प्रताप नाम का भी कोई आदमी इस पूरे प्रकरण से सम्बंधित है ।

"आप पहले ठिकाने पर पहुँच जाओ।" अनिल मोटा बोला- "फिर खुद दिलीप साहब (दिलीप मेहरा) आपको इस उदय प्रताप की करतूतों के बारे में बताएँगे। तब आपको मालूम होगा, यह सारा खेल किसका रचा हुआ है । किसने हम सबकी जान यहाँ सांसत में फंसाई है ।"

कमांडर ने चुप्पी साध ली ।

वह खटारा-सी मोरिस माईनर अब रॉकबिले स्ट्रीट के इलाके से निकल कर मेटकोफ़ रोड पर दौड़ने लगी थी ।

तभी कार चलाते- चलाते अनिल मोटा चौंका ।

"क्या हुआ ?"

"लगता है, कोई हमारा पीछा कर रहा हैं ।

कमांडर सन्न रह गया ।

उसने साइड मिरर में देखा, सचमुच एक काली कार उनके पीछे थी ।

उस कार के शीशे भी गहरे रंग के थे, जिससे यह भी मालूम नहीं हो रहा था कि उसमे कुल कितने आदमी सवार हैं ।

"अब क्या करोगे ?"

"देखते रहो, मैं क्या करता हूँ कमांडर !" अनिल मोटा बोला- "ऐसे खुराफातियों से निपटने के हथकंडे मैं अच्छी तरह जानता हूँ ।"

एकाएक अनिल मोटे ने अपनी कार की रफ़्तार तेज कर दी ।

काली कार की रफ़्तार भी तेज होती, उससे पहले ही अनिल मोटे ने एक दूसरा कदम उठाया ।

उसने बिना सिग्नल दिये, तूफानी रफ़्तार से ही दौड़ते हुए अपनी कार एक पतली सी सड़क पर मोड़ दी । कार बिलकुल गोली की तरह एक दूसरी कार की बगल से से गुजरी तथा एक अन्य कैडिलॉक कार से उसका भीषण एक्सीडेंट होते-होते बचा और वह सर्राटे के साथ आगे बढ़ गयी ।

थोड़ा आगे ले जाकर अनिल मोटे ने फिर कार को दांयी तरफ मोड़ा ।

वह सचमुच कुशल ड्राइवर था ।

कार तोप से छुटे गोले की भांति पुनः झटके के साथ आगे भागी । वह अब मेन रोड थी ।

सामने ही एक 'नाईट क्लब' का काफी बड़ा न्योन साईन चमक रहा था और उसकी दो- मंजिली इमारत रौशनी में नहाई हुई थी ।

काली कार का अब कुछ पता नहीं था ।

वह काफी पीछे रह गयी थी ।

तभी एकाएक अनिल मोटे ने अपनी पूरी ताकत से ब्रेक पैडिल दबा दिया । कार के ब्रेको की चरमराहट और टायरो के घिसटने की आवाज़ आसपास के सारे वातावरण में फ़ैल गयी ।

"कमांडर, जल्दी!" अनिल मोटा चिल्ला उठा- "जल्दी भागो ।"

वह शब्द कहते कहते अनिल मोटे ने कार का ड्राइविंग डोर खोल लिया और नीचे छलांग लगा दी । फिर वह नाईट क्लब के अंदर की तरफ झपटा ।

कमांडर भी उसके पीछे-पीछे दौड़ा ।

पलक झपकते ही वह दोनों 'नाईट क्लब' में थे । उस वक़्त क्लब में अच्छी-खासी गहमा-गहमी का आलम था, मगर वह दोनों एक सैकिंड के लिये भी वहाँ न रुके और लम्बे-लम्बे डग रखते हुए क्लब के पिछले दरवाजे की तरफ बढ़ गए ।

तब कमांडर को मालूम हुआ, उस 'नाईट क्लब' का आगे- पीछे दोनों तरफ से रास्ता था ।

शीघ्र ही वह पिछली सड़क पर थे ।

"तुम्हारा कार का क्या होगा ।"

"वह मेरी कार नहीं है ।" अनिल मोटे बोला- "थोड़ी देर पहले ही मैंने उसे पार्किंग में से चुराया था, अब उसे वापस फ़्लाइंग स्क्वाड की कोई गाड़ी उठाकर ले जाएगी ।"

"ओह !"

वह दोनों टैक्सी स्टैंड की तरफ बढे ।

आनन-फानन एक टैक्सी में सवार हुए । अनिल मोटे ने टैक्सी ड्राइवर को धीरे से कुछ कहा- जो कि कमांडर की समझ में नही आया ।

ड्राइवर ने फ़ौरन टैक्सी आगे बढ़ा दी ।

टैक्सी न्यूयार्क से बाहर जाने वाली सड़क पर दौड़ी जा रही थी ।

उन्होंने पलट कर देखा, काली कार का दूर-दूर तक कहीं कुछ पता न था ।

वह उसे धोखा देने में कामयाब हो गये थे ।

□□□

टैक्सी एक बहुत निर्जन इलाके में पहुंच कर रूकी ।

वह न्यूयार्क शहर के बिल्कुल बाहर हाइवे के नजदीक बनी एक काफी बड़ी बस्ती थी, जहां धनाढ्य लोगों के फार्महाउस बने हुए थे या फिर बड़े-बड़े कॉटेज थे ।

उस वक्त वहाँ दूर-दूर तक सन्नाटा फैला था ।

"क्या हम अपनी मंजिल पर पहुंच गये है ?" कमांडर बोला ।

"हां ।"

दोनों टैक्सी से बाहर निकल आये ।

अनिल मोटे ने टैक्सी का किराया अदा किया और उसके बाद भी वो कमांडर के साथ तब तक वहीं खड़ा रहा, जब तक टैक्सी बैक होकर वापस शहर की तरफ न चली गयी ।

"यहां एक-एक कदम बहुत सावधानी के साथ उठाना पड़ रहा है ।" अनिल मोटा बोला-"आओ, अब चलते है ।"

वह दोनों सड़क पर पैदल ही आगे की तरफ बढ़े ।

सड़क काफी चौड़ी थी ।

इसके अलावा वहाँ रोशनी का भी उपयुक्त इंतजाम न था । काफी-काफी दूर वहाँ रोड लैम्प लगे हुए थे, जिनका धूल-धूसिर प्रकाश पूरे क्षेत्र में फैला था ।

जल्द ही वो एक काफी बड़े कॉटेज के सामने पहुंच कर रूक गये ।

अनिल मोटे ने बड़े ही सांकेतिक ढंग से दो बार कॉलबैल बजायी ।

फौरन ही दरवाजा खोला गया ।

दरवाजा एक लम्बे कद की छरहरे बदन वाली बड़ी खूबसूरत सी लड़की ने खोला, जिसे कमांडर ने फौरन पहचाना। वह अनुपमा जोशी थी ।

"बड़ी देर लगा दी?" अनुपमा जोशी बोली ।

"हां, थोड़ी मुश्किल में फंस गये थे।" अनिल मोटा बोला- "बस खुदा-खुदा करके ही हम किसी तरह यहां पहुंचे हैं । दिलीप साहब सो तो नहीं गये ?"

"नहीं, वो अभी जाग रहें हैं ।"

अनिल मोटा, कमांडर के साथ कॉटेज में अंदर की तरफ बढ़ा ।

कॉटेज वाकई बड़े ऐश्वर्यशाली ढंग से सजा हुआ था । जगह-जगह बुक शेल्क बने हुए थे, जिनमें बड़ी तादाद में किताबें भरी थीं । इसके अलावा कॉटेज में जगह-जगह शेक्सपीयर, टैगोर और पुश्किन जैसे महान लेखको के चित्र भी दीवार पर सुसज्जित थे ।

एक काफी लम्बा कॉरीडोर पार करके वह दोंनो एक बड़े हॉल कमरे में पहुंचे । पूरे कमरे में टयूब लाइट की रोशनी फैली थी ।

सामने ही सागवान की एक लकड़ी वाली कुर्सी पर लगभग चालीस वर्ष का एक अधेड़ व्यक्ति बैठा था, जो देहयष्टि में काफी तन्दुरूस्त नजर आ रहा था । इसके अलावा उसकी आंखो पर आई साइड का एक ऐनक भी चढ़ा था । वह दिलीप मेहरा था ।

दिलीप मेहरा के बिल्कुल बराबर वाली कुर्सी पर ही एक अन्य आदमी बैठा था ।

उसकी उम्र मुश्किल से तीन-बत्तीस साल थी । रंग साफ था। बाल घुंघराले थे और वह टाइट जीन्स तथा बंद गले की जैकेट पहने था । वह जगदीश नरूला था ।

कमांडर को उन सभी ने एकदम से पहचाना ।

''कमाण्डर आप !'' सबसे पहले दिलीप मेहरा भौचक्कें स्वर में बोला- ''आप वह शख्स हैं, जिसे हमारी मदद के लिये न्यूयार्क भेजा गया है ?''

''जी हां ।'' कमांडर गम्भीरतापूर्वक बोला ।

वह दोनों अब अपनी-अपनी कुर्सियां छोड़कर खड़े हो गये ।

कमांडर करण सक्सेना को देखकर उन सभी के चेहरे चमकने लगे थे ।

''प्लीज बी सीटेड कमाण्डर !''

कमांडर वहीं पड़ी एक अन्य कुर्सी पर बैठ गया ।

उसके साथ-ही-साथ वह चारों भी अलग-अलग कुर्सियां पर विराजमान हुए ।

आपको तथा आपके कारनामों से तो हम सब लोग पहले से ही वाकिफ है। ''दिलीप मेहरा अपना ऐनक दुरूस्त करता हुआ बोला- ''लेकिन हम चारों का परिचय मैं आपको देता हूं ।''

''उसकी कोई जरूरत नहीं।'' कमांडर 'डनहिल' सुलगाता हुआ बोला- ''जितना आप लोग मुझे जानते हैं, उतना ही मैं आप चारों से भी वाफिक हूं । आप दिलीप मेहरा हैं ।'' कमांडर ने दिलीप मेहरा की तरफ देखते हुए कहा- ''और कभी आपको इस पूरे जासूसी दल का लीडर नियुक्त करके न्यूयार्क भेजा गया था । क्या मैं ठीक कह रहा हूं ?''

''करैक्ट !''

''और आप जगदीश नरूला !'' कमांडर ने जगदीश नरूला की तरफ देखा- ''आप अनुपमा जोशी ! और आप मिस्टर अनिल रोहतगी ! अनिल रोहतगी, जो अपने उपनाम 'अनिल मोटा' के नाम से कहीं ज्यादा प्रसिद्ध हैं ।''

चारों अब बहुत प्रभावित निगाहों से कमांडर की तरफ देखने लगे ।

''जबकि मिस्टर पवन मल्होत्रा और उस्मान भाई (गंजा उस्मान) यहां नजर नहीं आ रहें हैं ।''

''वह दोनों इस दुनिया से कूच कर चुके हैं ।''

''कब ?''

''सिर्फ कुछ दिन पहले की ही बात है ।''

''क्या उन्हें अमरीकन पुलिस ने मार गिराया था ?''

''नहीं ।'' दिलीप मेहरा की गर्दन इंकार में हिली- ''हमारी आज की मौजूदा दुश्वारियों की जिम्मेदार अमरीकन पुलिस इतनी नहीं है, जितना उदय प्रताप है ।''

''यह उदय प्रताप कौन है ?'' कमांडर ने 'डलहिल' की राख एश-ट्रे में झाड़ी- ''थोड़ी देर पहले मिस्टर अनिल भी इसी उदय प्रताप का जिक्र कर रहे थे ।''

‘‘क्या आपको केस सौंपते हुए उदय प्रताप के बारे में कुछ नहीं बताया गया ?’’

‘‘नहीं ।’’

‘‘अश्चर्य है !’’ दिलीप मेहरा के चेहरे पर कुछ हैरानी के भाव तैरे- ‘‘दरअसल इसी उदय प्रताप की वजह से हमारी तमाम मेहनत पर पानी फिरा है, हमारा यह पूरा मिशन फ्लॉप होने के पीछे एकमात्र, कारण ही उदय प्रताप है ।’’

‘‘दिलीप साहब !’’ एकाएक अनिल मोटा, दिलीप मेहरा की बात बीच में ही काटकर बोला- ‘‘आपको मुझे एक बहुत अफसोस-जनक खबर और देनी है, जिसे मैं भूल ही गया था ।’’

‘‘क्या ?’’

‘‘उस दुष्ट उदय प्रताप ने रूखसाना सुलतान की भी हत्या कर दी है ।’’

‘‘क्या कह रहे हो ?’’

‘‘यह सच है ।’’ कमांडर ही बोला- ‘‘मैंने खुद आज सुबह रूखसाना सुलतान की लाश उसके फ्लैट में देखी ।’’

‘‘माई गॉड ! आखिर उस आततायी ने उस मासूम-सी लड़की को भी अपने कहर का निशाना बना डाला !’’

सबके चेहरे एकाएक राख की तरह सफेद झक्क पड़ गये ।

□□□

वह सब काफी देर तक अपनी अपनी कुर्सियो पर सन्न् सी अवस्था में बैठे रहे ।

उस खबर ने वाकई उन्हें गमजदा कर दिया ।

‘‘आप लोग मुझे मिशन के बारे में बिल्कुल शुरू से बतायें ।’’ कमांडर बोला- ‘‘कि किस-किस तरह आपके साथ यह तमाम घटनायें घटीं ।’’

‘‘दरअसल हम कुल छः आदमी थे ।’’ दिलीप मेहरा बोला- ‘‘जिन्हें अटलंटिक महासागर के अंदर डूबे जहाज में से 10 टन सोना निकालने के लिये यहां भेजा गया था । हमें अटलंटिक महासागर के बारे में कोई जानकारी नहीं थी और न ही यह पता था कि 10 टन सोना अथाह समुद्र ही गहराइयों में से किस तरह निकाला जायेगा । हमें सिर्फ एक बात बतायी गयी थी ।’’

‘‘क्या ?’’

‘‘हमसें कहा गया था,‘‘दिलीप मेहरा बोला-‘‘कि न्यूयार्क पहुंचने के बाद उदय प्रताप नाम का आदमी कदम-कदम पर हमारी हैल्प करेगा । दरअसल उदय प्रताप एक हिन्दुस्तानी आदमी था, जो पिछले काफी समय से इधर न्यूयार्क में रह रहा था । उसने यहां इलैक्ट्रानिक आइटम की इधर-से-उधर सप्लाई करने में बड़ा मोटा धन कमाया था । इसके अलावा वो कुछ ऐसे गैरकानूनी काम भी करता था । जिससे अमरीका की अर्थव्यवस्था को

चोट पहुंचती हो और भारत सरकार का फायदा होता हो। बहरहाल न्यूयार्क पहुंचने के बाद हम सब उदय प्रताप से मिले। उदय प्रताप तक मिशन से सम्बन्धित जानकारी पहले ही पहुंच चुकी थी। वह फौरन हमारी मदद करने के लिये तैयार हो गया।"

"उसने किस तरह मदद की ?" कमांडर ने 'डनहिल' का एक कश और लगाया।

जैसे सबसे पहले तो उसने हमें अपने उस हाइडोन में शरण दी, जिसका प्रयोग वह अपने गुप्त अड्डे के तौर पर करता था, फिर वो मुझे अपने एक अमरीकी दोस्त के पास लेकर गया। वो जहाज का रिटायर्ड कैप्टन था और उसने अमरीका की एक बड़ी शिपिंग कम्पनी में कई वर्षो तक नेवीगेटर कप्तान की नौकरी की थी। इस लिहाज से उसे अटलांटिक महासागर का भौगोलिक ज्ञान बड़ा अच्छा था। उदय प्रताप ने उससे अटलांटिक महासागर के उस हिस्से का नक्शा तैयार कराया, जहां 'सिल्वर स्टार' नामक वो पानी का जहाज डूबा था। नक्शा तैयार कराने की एक बड़ी सॉलिड वजह भी उदय प्रताप ने उस कप्तान को बतायी। दरअसल उसने मेरा परिचय कप्तान से एक साइंटिस्ट के तौर पर कराया था, और कहा था कि मैं डूबे हुए जहाज में जाकर कुछ रिसर्च करना चाहता हूं। बहरहाल नक्शा बनकर तैयार हुआ। नक्शा मेरे पास था और उसे मैंने उदय प्रताप के सामने ही हाइडोन की एक अलमारी में छिपाकर रखा था। इसके अलावा कप्तान से उस सारे सामान की लिस्ट भी तैयार करायी गयी, जो अटलांटिक महासागर की तल तक पहुंचने में और जहाज के अंदर खोजबीन करने के दौरान काम आना था। बस उसके बाद ही यहां खोजबीन खतरनाक घटनाओं का सिलसिला शुरू हो गया।"

"किस तरह ?"

"जैसे अगले दिन ही बड़े करिश्माई ढंग से अलमारी में से वह नक्शा तथा सामान की पूरी लिस्ट गायब हो गयी।"

"वह किसने गायब की ?"

"यह एकाएक मालूम ही न हो सका। लिस्ट गायब होने के बाद उसी दिन, रात को उस नवीगेटर कप्तान के मरने की भी सूचना प्राप्त हुई। कप्तान उस समय अपनी कोठी के बाहर कार में से निकल रहा था, जब किसी ने उसके पेट में चाकू घोंपकर मार डाला और उसका सारा सामान लूटकर भाग खड़ा हुआ। हालांकि पुलिस ने उसे डाकाजनी की संज्ञा दी, मगर मुझे तभी अहसास हुआ था कि वह कोई मामूली वारदात नहीं है। उस रात उदय प्रताप उस नवीगेटर कप्तान की मौत की छानबीन करने हाइडोन से गया, तो फिर उसकी भी कभी वापसी नहीं हुई। इसके अलावा सबसे खतरनाक घटना अगले दिन घटी।"

कमांडर करण सक्सेना ने 'डनहिल' का एक कश और लगाया।

"न जाने कैसे अमरीकन पुलिस को इस बात की भनक लग गयी" दिलीप मेहरा बोला- "कि छः भारतीय जासूस जाली पासपोर्ट पर किसी खास मिशन के सिलसिले में अमरीका आये हुए हैं और अब वो यहां एक खास षड्यंत्र को जन्म देने में जुटे हुए हैं। इतना

ही नहीं, अमरीकन पुलिस को बड़े ही आश्चर्यजनक ढंग से हमारे फोटो भी हाथ लग गये और यह भी पता चल गया कि हम शहर में किस जगह छिपे हुए थे। पुलिस ने फौरन अपने पूरे लाव-लश्कर के साथ हाइडोन पर छापा मारा, जहां से हम सब बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाकर भाग सके और पुलिस के फंदे में फंसने से बस बाल-बाल बचे। उसके बाद हमने यहां शरण ली ।''

''यह किसका कॉटेज है ?''

''यह अमरीका के एक बहुत प्रसिद्ध जासूसी उपन्यसकार विक्सर डेरमोट का कॉटेज है । वो बस यहां तभी आता है, जब उसने किसी उपन्यास की रचना करनी होती है । बाकी समय यह कॉटेज बिलकुल खाली पड़ा रहता है, जैसा कि अब पड़ा हुआ है ।''

''क्या फिर तुम्हारी उदय प्रताप से कभी मुलाकात हुई ?''

''कभी नहीं हुई ।'' दिलीप मेहरा बोला- ''उस रात वह एक बार जो गायब हुआ, तो फिर कभी वापस नहीं लौटा । तब हमारी समझ में यह बात आयी कि यह तमाम प्रपंच उदय प्रताप का ही रचा हुआ था । 10 टन सोने को देखकर जरूर उसके मुंह में पानी आ गया था और उसकी नीयत मैली हो गयी थी । उसी ने अलमारी में से नक्शा तथा सामान की लिस्ट चुराई । उसी ने इस राज को मुकम्मल तौर पर राज बनाये रखने के लिये नेवीगेटर कप्तान की हत्या की और हम सबके बारे में पुलिस तक सूचना पहुंचाई, ताकि हम उसके कार्य-कलापों में विघ्न न पहुंचा सकें ।''

''बहुत गहरा षड्यंत्र रचा उदय प्रताप ने ?'' कमांडर ने नेत्र फैलाये ।

''उसने बिलकुल आस्तीन के सांप वाली कहावत को चरितार्थ किया कमाण्डर !''

''ओह !''

''बहरहाल उसके बाद हम सबने मिलकर कसम खायी,'' दिलीप मेहरा ने अपना ऐनक पुनः दुरूस्त किया और उसके चेहरे पर कठोर भाव उभरे- ''कि हम लोग उदय प्रताप को उसकी इस गद्दारी की सजा जरूर देंगे, चाहे इस प्रयास में हम सब लोग यहीं क्यों न मारे जायें । हमें अपनी मौत की परवाह नहीं होगी, लेकिन मरने से पहले हमारी गोली उस गद्दार को अपना निशाना जरूर बनायेगी । सबसे पहले पवन मल्होत्रा ने उदय प्रताप को तलाश करने की ठानी । वह कुछ ऐसे ठिकाने जानता था, जहां से उदय प्रताप के बारे में जानकारी हासिल हो सकती है । पवन मल्होत्रा उसे ढूढने के लिये गया था, मगर उसका अंजाम बुरा हुआ । अगले दिन ही पवन मल्होत्रा की लाश समुद्र में तैरती पाई गयी । पुलिस ने यह समझा कि पवन मल्होत्रा ने अमरीकन पुलिस से घबरा कर आत्महत्या कर ली थी, मगर वास्तविकता सिर्फ हमें मालूम थी । वो आत्महत्या नहीं थी, जरूर उसे उदय प्रताप ने मारा था ।''

''और गंजे उस्मान का क्या हुआ ?'' कमांडर करण सक्सेना ने 'डनहिल' का टोटा एश ट्रे में रगड़ कर बुझाया ।

‘‘गंजा उस्मान भी उदय प्रताप के ही हाथो मारा गया ।’’

‘‘कैसे ?’’

जगदीश नरूला, अनिल मोटा और अनुपमा जोशी, वह सब उस वक्त बिलकुल खामोश बैठे थे ।

‘‘दरअसल पवन मल्होत्रा की मौत के कुछेक दिन तक तो हम सब शान्त रहें थे । फिर गंजे उस्मान के अंदर इस बात का हुड़क उठी कि हम कॉटेज में बंद रहकर खामख्वाह अपना वक्त बर्बाद कर रहे थे, बल्कि हमें फौरन से भी पेश्तर उदय प्रताप को तलाश करके उससे नक्शा हासिल करना चाहिये था । वरन वह दिन दूर नही था, जब हम कॉटेज में मक्खी मारते रह जाने थे और उदय प्रताप अटलांटिक महासागर में से 10 टन सोना निकाल कर किसी दूसरे देश में फरार भी हो जाता । गंजा उस्मान बात बिलकुल ठीक कह रहा था, मगर अभी हमें से कोई भी पवन मेल्होत्रा की मौत को नहीं भुला पाया था, इसलिये हमने गंजे उस्मान को उस दिशा में कोई कदम उठाने से रोका । गंजे उस्मान ने तब तो हां कर दी, मगर वो माना नहीं। सुबह जब हम सब सोकर उठे, तो वह कॉटेज में नहीं था । अलबत्ता उसका लिखा हुआ एक नोट हमें जरूर मिला। जिस पर लिखा था, दिलीप साहब, मुझे बेहद अफसोस है कि मैं आपके आदेश की अवहेलना करके जा रहा हूं । अब मैं तभी वापस आऊंगा, जब मेरे पास उदय प्रताप से सम्बन्धित कोई सॉलिड न्यूज होगी, आपका अपना गंजा उस्मान !’’

‘‘फिर क्या हुआ ?’’

‘‘दो दिन तक तो गंजे उस्मान का कुछ पता न चला । तीसरे दिन उससे सम्बन्धित एक खबर मिली ।’’

‘‘क्या ?’’

‘‘उसका शरीर रेलवे लाइन की पटरियों पर बुरी तरह कटा हुआ पाया गया। पुलिस ने उसे साधारण दुर्घटना कहा, मगर हम जानते थे, उसके पीछे भी हर हाल में उदय प्रताप का ही हाथ था ।’’

‘‘ओह !’’

‘‘अब स्थिति ये है कमाण्डर !’’दिलीप मेहरा बोला- ‘‘कि ‘सिल्वर स्टार’ जहाज तक पहुंचने का नक्शा और सामान की पूरी लिस्ट उदय प्रताप के पास है, जबकि उदय प्रताप कहां है, इस सम्बन्ध में हमें कुछ मालूम नहीं । बिना उस नक्शे के हम इतने विशाल अटलांटिक महासागर में से 10 टन सोना किसी हाल में नही निकाल सकते, क्योंकि इतने विशाल समुद्र में उस डूबे हुए जहाज को तलाश करना कोई आसान काम नहीं होगा । इसके अलावा यह काम मौजूदा हालात मे इसलिये भी मुमकिन नहीं है, क्योंकि अमरीकन पुलिस हाथ धोकर हमारे पीछे पड़ी है । अखबारो में आये दिन हमारी तस्वीरें छपती रहती हैं । यहां टेलीविजन पर फरार अपराधियों का एक अलग प्रोग्राम है, उस प्रोग्राम में कई

मर्तबा हमारी तस्वीरें दिखाई जा चुकी है । इसके अलावा अमरीकन सरकार ने अभी दो रोज पहले ही हम चारों की गिरफ्तारी पर एक लाख डॉलर का इनाम घोषित किया है ।''

''यानि पुलिस तुम लोगो को तलाश करने के तमाम हथकण्डे इस्तेमाल कर रही है ।''

''बिल्कुल ।''

तभी अनुपमा जोशी वहाँ से उठकर चली गयी और बुक शेल्फ पर रखे कुछ अखबार लेकर लौटी ।

कमांडर ने वो अखबार देखे ।

उन तमाम अखबारो में उन चारो की बड़ी-बड़ी तस्वीरें छपी थी और इनाम से सम्बन्धित घोषणा भी थी ।

''यह तो सचमुच तुम लोगो के लिये बड़ी संकटपूर्ण स्थिति है ।'' कमांडर भी अब चिन्तित नजर आने लगा ।

''सच बात तो ये है कमाण्डर ।'' जगदीश नरूला बोला- ''पुलिस की इन्ही गतिविधियों के कारण हम बुरी तरह फंसे हुए हैं । हम लोग चाहकर भी उदय प्रताप को तलाश नहीं कर पा रहें है, क्योंकि इस कॉटेज से कदम बाहर निकालते ही हमारे सिर पर पुलिस का खतरा मंडराने लगता है । इसीलिये हमें अब एक ऐसे सहयोगी की जरूरत महसूस हो रही थी, जो उदय प्रताप को खत्म करने में तथा उससे नक्शा हासिल करने में हमारी भरपूर मदद कर सकें । इसीलिये अनिल (अनिल मोटा), कैबरे डांसर रूखसाना सुलतान से जाकर मिला था और उसके जरिये भारत सरकार तक अपनी मौजूदा दुश्वारियो की खबर पहुंचाई थी । बहरहाल हमें सबसे ज्यादा खुशी इस बात की है कि भारत सरकार ने आप जैसे आदमी को हमारा मददगार चुनकर यहां भेजा ।''

''यानि फिलहाल हम लोगों का सबसे पहला काम उदय प्रताप तक पहुंचना हैं ।'' कमांडर बोला- ''और उससे नक्शा हासिल करना है ।''

''करैक्ट !''

'' उदय प्रताप की कोई तस्वीर आप लोगो के पास है ?''

''नहीं ।'' अनिल मोटे की गर्दन इंकार में हिली- ''उसकी कोई तस्वीर हम लोगो के पास नहीं है ।''

''फिर मैं उसे पहचानूंगा कैसे ?''

'' कमाण्डर !'' दिलीप मेहरा बोला- ''उदय प्रताप को पहचानना कोई बड़ी बात नहीं है । उसकी शख्सियत ही ऐसी है कि उसे बिना तस्वीर के भी हजारो-लाखो के बीच में अलग से पहचाना जा सकता है ।''

''कैसे ?''

‘‘जैसे उसका कद छोटा है । रंग सांवला है और गाल पर चाकू का एक बड़ा गहरा सा निशान है । इसके अलावा उदय प्रताप ‘अस्थमा’ (दमा) का भी बड़ा जबरदस्त रोगी है । मुश्किल से दो-दो मिनट बाद ही उसे खांसी का बड़ा तेज झटका उठता है और उसकी सांसे लम्बी चलने लगती हैं । उसकी हालत एकाएक इतनी बुरी हो जाती है कि अगर वो फौरन ही दवाई न खाये या ‘असथलिन’ इन्हेलर से अपने मुंह में गैस स्प्रे न करें, तो दम घुटने से उसकी मौत भी हो सकती है । इसके अलावा उसकी दायीं टांग मे भी थोड़ा नुक्स है । वो लगड़ा कर चलता है ।’’

‘लंगड़ा कर चलता है !’’ कमांडर के दिमाग में एकाएक चिंगारियां सी छूटीं ।

‘‘हां, कभी उसके घुटने में एक गोली लग गयी थी, तभी से उसकी टांग मे यह नुक्स पैदा हो गया ।’’

कमांडर को अब यह समझते देर न लगी कि रूखसाना सुलतान को मारने वाला यकीनन उदय प्रताप ही था ।

क्योंकि उसने होटल मे जो भागते हुए कदमों की पद्चाप सुनी थी, वो आदमी लंगड़ा-लगड़ा कर ही भाग रहा था ।

‘‘क्या सोचने लगे कमाण्डर ?’’

‘‘कुछ नहीं ।’’ कमांडर मानो नींद से जागा- ‘‘कुछ नहीं ।’’

तभी अनुपमा जोशी अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ी हुई ।

‘‘तुम कहां जा रही हो ?’’ जगदीश नरूला ने पूछा ।

‘‘मैं आप सब लोगों के लिये चाय बनाकर लाती हूं ।’’

‘‘नहीं, चाय रहने दो।’’ कमांडर ने अपना क्लेंसी हैट दुरूस्त किया-‘‘ रात काफी हो चुकी है, हमें अब बस चलकर सोना चाहिये ।’’

‘‘हां।’’ दिलीप मेहरा भी बोला- ‘‘चाय रहने दो । चाय अब सुबह ही पीयेंगे ।’’

फिर वह सब अपनी-अपनी कुर्सियां छोड़कर खड़े हो गये और उसके बाद सोने के लिये कॉटेज के अगल-बगल कमरों की तरफ बढ़े ।

कमांडर के लिये कमरे का बंदोबस्त अनुपमा जोशी ने पहले ही कर दिया था ।

□□□

‘‘क्या कर रहे हो ?’’

‘‘तुम्हें टटोलने की कोशिश कर रहा हूं ।’’

अनुपमा जोशी की हंसी छूट पड़ी ।

फिर उसके मुंह से मादक सिसकारी छूटी ।

उस समय अनुपमा जोशी और जगदीश नरूला बिस्तर पर लगभग निर्वस्त्र हालत में थे ।

अनुपमा जोशी के शरीर पर सिर्फ एक जालीदार ब्रा बची हुई थी । देखते ही देखते जगदीश नरूला ने उसकी वो ब्रा भी उतार कर दूर कुर्सी पर उछाल दी ।

अब उसके दूधिया उरोज बिल्कुल आवरणहीन हो गये ।

उसके शरीर का एक-एक कट कयामत ढाने वाला था ।

''कुछ कर भी रहे हो ।'' वह कुलबुलाई ।

जगदीश नरूला ने उसके नग्न शरीर को अपनी बांहो के दायरे में समेट लिया और फिर उसे बांहो में भरे-भरे बिस्तर पर ही कलाबाजी खा गया ।

फिर उसने अनुपमा जोशी के गाल का एक गरम-गरम चुम्बन लिया और उसके बाद बड़े प्यार से उसकी गोलाइयों को सहलाने लगा ।

''सचमुच तुम्हारे जिस्म का एक-एक हिस्सा बहुत खूबसूरत है अनुपमा !'' वह सरसराये स्वर में बोला ।

''यह सब तुम्हारे लिये है डियर, तुम्हारे लिये !''

''इन्हें चूमने को दिल चाहता है ।''

'' तो फिर चूम क्यों नही लेते ।'' अनुपमा जोशी पर भी मदहोशी सी छाती जा रही थी- ''अपने आपको तरसा क्यों रहे हो !''

जगदीश नरूला बड़ी तेजी के साथ उसकी गोलाइयों पर झुकता चला गया और फिर बेतहाशा चुम्बन लेने लगा ।

न चाहते हुए भी अनुपमा जोशी के होंठो से तेज सिसकारियां छूट पड़ी ।

उसके अंदर आग-सी भरती चली गयी ।

जांघो के बीच में लावा-सा खौलने लगा ।

काफी देर तक उनके बीच सैक्स का वो खेल चलता रहा ।

''एक बात कहूं डियर !'' अनुपमा जोशी ने बड़े प्यार से जगदीश नरूला का चेहरा अपनी दोंनो हथेलियों के बीच भर लिया ।

''कहो ।''

''कभी-कभी एक बात सोचकर मेरा दिल बहुत ज्यादा डरने लगता है ।''

''क्या ?''

''मान लो, अगर हम भी किसी दिन पवन मेहरोत्रा या गंजे उस्मान की तरह मारे गये, तब क्या होगा ?''

''अब ऐसा कुछ नहीं होगा डार्लिंग !'' जगदीश नरूला ने बड़े प्यार से उसके गाल पर एक और चुम्बन अंकित किया- ''अब ऐसा कुछ नहीं होगा ।''

''क्यों नहीं होगा ?''

''क्योंकि हमारी मदद के लिये अब कमाण्डर यहां आ चुके हैं ।''

जगदीश नरूला के हाथ निरन्तर उसके सख्त उरोजो पर सरसरा रहे थे- ‘‘अब उदय प्रताप बचने वाला नहीं है, कमाण्डर उसे पाताल से भी खोज निकालेंगे ।’’

तभी अनुपमा जोशी के मुंह से तेज सिसकारी छूट गयी ।

उसके होंठ दांतो के बीच सख्ती से भिंचे ।

वह अपनी जांघो के बीच में किसी गुनगनाती ठोस वस्तु को महसूस किया ।

‘‘और अगर मान लो ।’’ अनुपमा जोशी ने अपने उरोजों की नुकीली चोटियां उसके सीने में धंसाई-‘‘कमाण्डर भी उदय प्रताप को तलाश करने में सफल न हो पाये, तब क्या होगा ?’’

‘‘ऐसा किसी हालत में नहीं हो सकता कि कमाण्डर कामयाब न हो पायें।’’ जगदीश नरूला दृढ लहजे में बोला- ‘‘अब वह दिन ज्यादा दूर नहीं है, जब नक्शा भी हमारे कब्जे में होगा और 10 टन सोना भी हमारे पास होगा।’’

‘‘लेकिन ।’’

‘‘अब थोड़ी देर के लिये खामोश हो जाओ ।’’

जगदीश नरूला ने बड़े अनुरागपूर्ण ढंग से अपने दहकते होंठ अनुपमा जोशी के होठों पर रख दिये ।

उन दोनो के शरीर दहक कर अंगारा बन चुके थे ।

तभी जगदीश नरूला के होंठ अनुपमा जोशी की केले के तने जैसी चिकनी जांघो पर आकर ठहर गये, और धीरे-धीरे सरसरा कर ऊपर की तरफ रेंगने लगे ।

अनुपमा जोशी का रोम-रोम एक आनन्दपूर्ण सिहरन से भर गया ।

उसकी पिण्डलियां तक कांप उठीं ।

खेल शुरू हो चुका था ।

फिर जगदीश नरूला ने जैसे ही उसके ऊपर अपने जिस्म का दबाव बनाया, अनुपमा जोशी के होठो से हल्की सी चीख उबल पड़ी ।

मगर ऐसा तो होता ही है, थोड़ी से वेदना और ढेर सारा आनन्द ।

उन दोनों के शरीर एकसमान लयबद्ध गति में थिरकने लगे। जगदीश नरूला के हाथ निरंतर उसके उरोजो पर घूम रहे थे, जो उत्तेजना के कारण और भी कठोर हो गये थे । उनकी गुलाबी नोकों में तमतमाहट भरी हुई थी ।

समय गुजरने के साथ-साथ उन दोनो के नितम्बो की थिरकन तेज होती जा रही थी ।

तेज !

और तेज !

फिर चर्मोत्कर्ष !

उन दोनों के अंतर से खौलता लावा यौवन की फुहार बनकर अब फूट पड़ा ।

अब वह दोनो एक-दूसरे से बुरी तरह गूंथे हुए बिस्तरर पर पड़े जोर-जोर हांफ रहे थे ।

□□□

कमांडर बिस्तर पर लेटा था ।

उसकी आंखो में दूर-दूर तक नींद का नामोनिशान न था ।

वह 10 टन सोने के बारे में सोच रहा था और उदय प्रताप के बारे में सोच रहा था ।

दोनों तक ही पहुंचना कोई सरल कार्य न था ।

कॉटेज में शान्ति थी ।

तभी कमांडर ने बाहर गलियारे में किसी के लंगड़ा कर चलने की आवाज सुनी ।

कौन था ?

कौन था बाहर ?

वह बिलकुल ऐसी आवाज थी, जैसी उसने 'शेरटन होटल' में सुनी थी ।

कमांडर करण सक्सेना का मुंह सूख गया और वह एकदम बिस्तर छोड़कर उठ बैठा ।

किसी के लंगड़ा कर चलने की आवाज हर पल नजदीक आती जा रही थी ।

कमांडर ने फौरन अपनी 'कोल्ट रिवाल्वर' निकाल ली ।

रिवाल्वर हाथ में आते ही उसकी उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी ।

कमरे में घुप्प अंधेरा था ।

काजली अंधेरा !

फिर किसी के लंगड़ा कर चलने की वो आवाज आनी बंद गयी । अब कोई उसके बिलकुल कमरे के सामने आकर रूक गया था ।

फिर बहुत निःशब्द ढंग से कमरे का दरवाजा खुला और एक साये ने अंदर कदम रखा ।

कमरे में आते ही खांसी का तेज ठसका सा उठा ।

फिर सांस चलने की आवाज !

"कमाण्डर !" कमांडर के कानों में एक बहुत भर्रायी हुई सी आवाज पड़ी- "हूज दैट यू कमाण्डर ?"

"कौन है, कौन है वहाँ ?"

कमांडर के मुंह से आवाज निकलने की देर थी, फौरन धांय से गोली चली । अंधेरे में एक शोला-सा लपलपाता हुआ नजर आया ।

कमांडर की हृदय विदारक चीख निकल गयी ।

गोली ठीक उसके बाजू में आकर लगी थी । वह चीखता हुआ पीछे गिरा ।

कमांडर भी फायर कर पाता, उससे पहले ही वो रहस्यमयी आततायी कमरे से निकल कर बड़ी द्रुतगति के साथ भागा ।

फिर किसी के लंगड़ा कर दौड़ने की आवाज गलियारे में उभरी ।

"रूक जाओ ।"

कमांडर करण सक्सेना ने देर नहीं की ।

वह उठा और झपट कर बाहर गलियारें में आया।

बाहर आते ही उसने गोली चलायीं ।

पूरा कॉटेज पुनः गोली चलने की भीषण आवाज से थर्रा उठा ।

तभी कमांडर के कानो में कहीं का दरवाजा भड़ाक से खुलने और बंद होने की आवाज सुनायी पड़ी ।

लगातार दो गोलियां चलने के कारण एकाएक पूरे कॉटेज में जाग हो गयी थी और सब लगभग दौड़ते हुए अपने अपने कमरे से बाहर निकलें ।

लाइट जलने लगी ।

अनिल मोटे ने गलियारे की लाइट जलाई ।

"क्या हुआ ?" दिलीप मेहरा भी घबराया-घबराया बोला- "क्या हुआ कमाण्डर'?"

कमांडर तब तक दौड़ता हुआ कॉटेज के मुख्य द्वार के करीब पहुंच चुका था । द्वार खुला था, करण सक्सेना अब बाहर सड़क की तरफ झांकने लगा ।

"आखिर बात क्या है कमाण्डर !" जगदीश नरूला भी कमांडर के नजदीक पहुंच कर बोला- "यह गोलियां किसने चलाई थी ?"

"जरूर वह उदय प्रताप था ।"

"उदय प्रताप !"

उन चारों के शरीर में सनसनाहट दौड़ गयी ।

"क्या आपने उसकी सूरत देखी थी ?" दिलीप मेहरा बोला ।

"नहीं ।"

"फिर आप यह कैसे कह सकते हैं कि वो उदय प्रताप ही था ?"

"क्योंकि मैंने उसके लंगड़ा कर दौड़ने की आवाज सुनी थी ।" कमांडर रिवॉल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े बोला- "और खांसी का वो तेज ठसका भी सुना था, जो अस्थमें की वजह से उसे उठता है ।"

"ओह !"

सबके चेहरों पर राख पुत गयी ।

"अगर वा सचमुच उदय प्रताप ही था।" अनुपमा जोशी शुष्क स्वर में बोली-"तो अभी वो कॉटेज के आसपास ही कहीं होगा, हमें उसे फौरन तलाश करना चाहिए ।"

"बात बिलकुल ठीक है ।" अनिल मोटा भी बोला- "हमें उसे ढूंढना चाहिये ।"

वह चारों कमांडर के साथ अब कॉटेज से बाहर निकल आये और उसे आसपास के क्षेत्र में फैल कर देखने लगे ।

परन्तु उदय प्रताप उन्हें कही न दिखाई पड़ा ।

“अगर वो वाकई उदय प्रताप था ।” जगदीशा नरूला बोला- “तो वह तभी भाग निकला होगा, अब वो हमारे हाथ आने वाला नहीं है ।”

“ सचमुच यह आदमी छलावा बन गया है ।” दिलीप मेहरा बोला ।

उसी क्षण अनुपमा जोशी की निगाह कमांडर के बायें कंधे पर पड़ी, जहां अभी भी बड़ी तादाद में खून निकल रहा था ।

‘यह क्या कमाण्डर !” अनुपमा जोशी बुरी तरह चौंककर बोली-“आपको तो गोली लगी है ।”

“हां, कमबख्त का निशाना वाकई बहुत सच्चा था ।” कमांडर ने अपने कंधे के जख्म को कसकर दबाया- “घुप्प अंधेरे में भी उसने सिर्फ मेरी आवाज का ही निशाना लगाकर गोली चला दी। शुक्र है, जो गोली सिर्फ कंधे में ही लगी, गले में नहीं लगी ।”

कमांडर को जख्मी देखकर सबके चेहरे पर चिन्ता की लकीरें खिंच गयी ।

“चलो, सब अंदर चलो ।” दिलीप मेहरा बोला ।

सब वापस कॉटेज की तरफ बढ़े ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना एक काफी लम्बी ईजी चेयर पर टांग फैलाये बैठा था ।

अनिल मोटा एक बर्तन में पानी गरम करके ले आया था। वहीं हीटर पर चाकू के फल को भी तपाया जा रहा था । वह गोली निकालने की तैयारियां थीं ।

कॉटेज की अधिकांश लाइटें बंद की जा चुकी थीं ।

वह ज्यादातर कॉटेज में घुप्प अंधेरा ही करके रखते थे, ताकि आसपास के फार्महाउसों में रहने वाले लोगों को इस बात की भनक न मिल सके कि वहाँ कोई छिपा हुआ है । सिर्फ एक कमरे में ट्यूब लाइट जलाते थे, जो काफी अंदर का कमरा था ।

“एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही ।” थोड़ा फासले से बैठा दिलीप मेहरा बोला ।

“क्या ?”

“उदय प्रताप को इस बात की भनक कैसे मिली कि हम लोग यहां छिपे है ?”

“वह बहुत कांइया किस्म का आदमी है मेहरा साहब !” जगदीश नरूला बोला- “उसके लिये भला कौन सा काम मुश्किल है ! फिर इसी न्यूयार्क के अंदर उसकी आधी से ज्यादा जिन्दगी गुजर गयी है ।”

“फिर भी इस रहस्य का पता लगाना कोई आसान काम न था ।”

“यह तो है ।” जगदीश नरूला बोला- दिलीप मेहरा का दिमाग काफी तेजी से चल रहा था ।

“क्या ?”

“जब मुख्य द्वार अंद से बंद था, तो उदय प्रताप कॉटेज में घुसा कैसे ?”

“यह भी तो हो सकता है,” कमांडर बोला- “कि वह कॉटेज में किसी और रास्ते से घुसा हो, अलबत्ता भागा वो मुख्य द्वार से ।”

“हां ।” दिलीप मेहरा की गर्दन स्वीकृति में हिली- “यह सम्भव है ।”

तब तक हीटर पर रखा चाकू का पैना फल बुरी तरह भभकने लगा था ।

“अब आप थोड़ी देर के लिये खामोश हो जाओ कमाण्डर !”

अनिल मोटा बोला- “फिलहाल मैं आपकी गोली निकालता हूं ।”

“गोली तुम सही तरह से निकाल भी लेते हो ?”

“ चिन्ता मत करो ।” अनिल मोटा मुस्कुराया- “आपको बस थोड़ा सा कष्ट होगा ।”

“थोड़ा सा या फिर कुछ ज्यादा ?”

“थोड़ा सा !”

“ ठीक है ।”

अनिल मोटे ने चाकू को अब मूठ की तरफ से कसकर पकड़ लिया। कमांडर ने भी अपनी आंखे मूंद ली थीं ।

उसी क्षण अनिल मोटे ने चाकू की नोंक से उसके कंधे में घुसी गोली एक झटके से बाहर निकाल डाली ।

कमांडर के मुंह से तेज सिसकारी छूट पड़ी ।

सैकेण्ड के उस सौंवे हिस्से में उसका पूरा शरीर पसीनों में लथपथ हो उठा था ।

सिर से पांव तक वो इस तरह भीग गया, मानो अभी-अभी बाथरूम से नहाकर बाहर निकला हो ।

□□□

वह सब कॉटेज के ड्राइंग हॉल में जमा थे।

अनुपमा जोशी उन सबके लिये चाय बनाकर ले आयी थी। चाय में दूध काफी कम था । इसके अलावा वो नाश्ते में जो ‘रस’ लेकर आयीं, उनकी संख्या भी कोई बहुत ज्यादा न थी ।

कमांडर करण सक्सेना ने फिलहाल सिर्फ बनियान पहना हुआ था । और कंधे पर पट्टी बंधी थी। दवाई भी लगा दी थी, जिसकी ट्यूब वहीं बुक शेल्फ से बरामद हुई थीं ।

“एक बुरी खबर है ।” अनुपमा जोशी उन सबके सामने चाय के कप सरकाते हुए बोली ।

“क्या ?”

सबकी निगाहें अनुपमा जोशी की तरफ उठीं ।

“पाउडर का जो दूध यहां मौजूद था ।” अनुपमा जोशी बोली-“वो लगभग खत्म होने पर है। इसके अलावा आटा और दालें भी खत्म होने वाली है । खाद्य सामग्री जुटाने के लिये हमें फौरन कुछ करना होगा ।”

“यह एक और नई आफत आयी ।” जगदीश नरूला बोला ।

वाकई वह एक और नई धमाकाखेज मुश्किल से उन सबका सामना था ।

वह अपनी-अपनी जगह स्तब्ध भाव से बैठे रह गये ।

“पहले बाजार से खाद्य सामग्री कौन लेकर आया था ?” कमांडर ने पूछा ।

“कोई भी नहीं लाया था ।” दिलीप मेहरा ने बताया-“यहां कॉटेज की रसोई में हमें काफी सारा सामान भरा हुआ मिल गया था, उसी से अब तक काम चला रहे थे ।”

“ओह !”

“फिलहाल हद-से-हद दो दिन तक हम उस खाद्य सामग्री के भरोसे और रह सकते है ।” अनुपमा जोशी बोली- “परन्तु उसके बाद हमें कुछ न कुछ इंतजाम जरूर करना होगा ।”

“जब खाद्य सामग्री खत्म हो जायेगी, तब की तब सोंचेगे ।” अनिल मोटा उपेक्षित अंदाज में बोला-“अगर कुछ नहीं होगा, तो बाजार से मैं जाकर सारा सामान ले आऊंगा ।”

“लेकिन ऐसा करने में खतरा है ।”

“खतरा तो अब हमारी जिन्दगी में कदम-कदम पर हैं ।”

कमांडर के साथ-साथ सभी ने अपनी चाय के कप उठा लिये और वह धीरे-धीरे चाय सिप करने लगे ।

“जहां तक मैं समझता हूं ।” कमांडर बोला- “हमें फिलहाल खाद्य सामग्री को लेकर ज्यादा चिन्तित नहीं होना चाहिए । जब खाद्य सामग्री खत्म हो जायेगी, तब उसका कोई-न-कोई हल भी निकल आयेगा । फिलहाल हमें सिर्फ उदय प्रताप के बारे में बात करनी चाहिए । इस बारे में कुछ पता चला कि वो कॉटेज के अंदर घुसा कैसे था?” कमांडर ने एक-एक करके उन सबके चेहरों पर दृष्टिपात किया ।

“नहीं, कुछ पता नहीं चल सका ।” जगदीश नरूला बोला- “मैं सारा कॉटेज छान चुका हूं, मगर पूरे कॉटेज में कहीं ऐसी कोई जगह ही नहीं है कि कोई अंदर दाखिल हो सकें ।”

“यह भी तो हो सकता है ।” कमांडर बोला- “कि रात भूलवश कॉटेज का मुख्य दरवाजा खुला ही रह गया हो ?”

“नहीं, इस बात की भी कोई गुंजाइश नहीं है ।” अनिल मोटा चाय का घूंट भरता हुआ पूरी सख्ती के साथ बोला- “मैंने खुद रात मुख्य द्वार की सिटकनी अंदर से चढ़ाई थी और कुण्डा लगाया था ।”

“अच्छी तरह याद है ?”

“खूब अच्छी तरह याद है ।”

“तो फिर उदय प्रताप कॉटेज में घुसा कैसे ?”

“समझ नहीं आ रहा, क्या रहस्य है ?”

मामला वाकई बड़ा पेचीदा था ।

सबने अपनी-अपनी चाय के कप खाली करके वापस टेबिल पर रखे ।

□□□

दोपहर के वक्त एक और बड़ी हंगामाखेज घटना घटी ।

अनुपमा जोशी उस समय किचन में थी और लंच की तैयारी कर रही थी । अनिल मोटा और जगदीश नरूला दूसरे कमरे में ताश खेल रहे थे, जबकि कमांडर टेलीविजन देख रहा था ।

तभी एकाएक किसी की बहुत वीभत्स चीख पूरे कॉटेज को थर्राती चली गयी ।

“यह तो मेहरा साहब के चिल्लाने की आवाज है ।” जगदीश नरूला हड़बड़ाया हुआ अपने कमरे से बाहर निकला ।

“क्या हुआ मेहरा साहब को ?” अनुपमा जोशी भी चिल्लाते हुए अपने किचन से बाहर निकली ।

वह सब बहुत आनन-फानन दिलीप मेहरा के कमरे की तरफ झपटे ।

वहाँ सचमुच दिलीप मेहरा की काफी गंभीर हालत थी ।

उसका पूरा शरीर पसीनों में लथपथ था और वह बिस्तर पर पड़ा हुआ दर्द से बिलकुल इस तरह छटपटा रहा था, मानो उसके प्राण बस किसी भी क्षण निकलने ही वाले हो ।

होंठ शुष्क !

आंखो में ढेर सारा पानी ।

गर्दन की नसें फूली हुई ।

“मेहरा साहब !” जगदीश नरूला ने दिलीप मेहरा के नजदीक पहुंच कर उसे बुरी तरह झिझोड़ा- “मेहरा साहब !”

“टेबलेट !” दिलीप मेहरा फूलती-पिचकती सांसो के बीच बड़ी मुश्किल से बोल पाया- “मुझे टेबलेट दो !”

मैं अभी देती हूं ।”

अनुपमा जोशी उसी कमरे में मौजूद एक अलमारी की तरफ झपटी ।

अलमारी में 'यूरी स्पाश' नामक टेबलेट की एक पूरी शीशी रखी हुई थी । अनुपमा ने आनन-फानन उसमें से एक टेबलेट निकाली तथा फिर कॉच के एक गिलास में थोड़ा सा पानी पलटा ।

तब तक जगदीश नरूला और अनिल मोटे ने दिलीप मेहरा की कमर के नीचे हाथ देकर उसे बिठा दिया था ।

"मुंह खोलिये मेहरा साहब !" अनिल मोटा शीघ्रतापूर्वक बोला- "मुंह खोलिये !"

दिलीप मेहरा ने दर्द से छटपटाते हुए ही अपना मुंह खोला ।

उसी पल अनुपमा जोशी ने टेबलेट उसके हलक में डाल दी और ऊपर से पानी पिला दिया। दिलीप मेहरा फौरन ही टेबलेट गटक गया ।

"अब आप लेट जाइये ।"

दिलीप मेहरा वापस बिस्तर पर लेट गया ।

लेटने के बाद भी दिलीप मेहरा काफी देर तक दर्द से छटपटाता रहा, परन्तु फिर उसे सकून मिल गया ।

□□□

दिलीप मेहरा के इतनी बुरी तरह दर्द उठते देख कमांडर चौंका ।

वह उस समय ड्राइंग हॉल में था और अपनी पंसदीदा 'डनहिल' सिगरेट के छोटे-छोटे कश लगा रहा था ।

जगदीश नरूला, अनिल मोटा और अनुपमा जोशी भी वहीं थे ।

"क्या मेहरा साहब को इस तरह का दर्द अक्सर उठता है ?" कमांडर ने चिन्तित स्वर में पूछा ।

"हां ।" अनिल मोटे ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई- "दो-तीन दिन में एक मर्तबा तो उठ ही जाता है ।"

"यह कैसा दर्द है ?"

"दरअसल मेहरा साहब के गुर्दे में एक काफी बड़ी पथरी है । यह दर्द उसी पथरी के कारण उठता है ।"

"मेहरा साहब ने पथरी का कुछ इलाज नहीं कराया ?" कमांडर ने 'डनहिल' का कश लगाते हुए पूछा ।

"इलाज भी कराया। तीन बार तो आपरेशन करा चुके हैं । मगर उनके गुर्दे में कुछ डिफेक्ट है, जिसकी वजह से पथरी बार बार अपने आप बन जाती है। सबसे ज्यादा खतरनाक बात तो ये है कमाण्डर, अगर कभी वो पथरी गुर्दे मेंसे निकल कर उनकी पेशाब की उस नली में चली गयी, जो आगे ब्लेडर में जाकर खुलती है, तो न सिर्फ उस हालत में

उनका पेशाब रूक जायेगा, बल्कि गुर्दा फूलकर फट भी सकता है और तभी ऑन द स्पॉट उनकी मौत भी हो जायेगी ।''

''यानि मेहरा साहब की जान खतरे में है ?'' कमांडर के शरीर में सिहरन दौड़ी ।

''बिलकुल ।''

कमांडर अब और भी ज्यादा फिक्रमंद नजर आने लगा ।

वाकई वो बहुत खतरनाक मामला था ।

□□□

बहरहाल उस परिस्थिति ने और भी ज्यादा खतरनाक मोड़ तब लिया, जब दिलीप मेहरा दोपहर का खान खाने के बाद पेशाब करने के लिये शौचालय में गया और वहाँ से वो बड़ी चिन्तित मुद्रा में वापस लौटा ।

''क्या हो गया ?'' अनुपमा जोशी बोली ।

''मुझे कुछ गड़बड़ लग रही है ।'' दिलीप मेहरा के चेहरे पर उस वक्त ढेर सारी परेशानी के चिन्ह थे ।

''कैसी गड़बड़ ?''

''अभी काफी कोशिश के बाद भी मेरा पेशाब नहीं उतरा और अब ऐसा महसूस हो रहा है, जैसे पेशाब की नली में कोई चीज चुभ रही है ।''

दिलीप मेहरा के वह शब्द उन सबके दिल दिमाग पर भीषण बिजली की तरह गड़गड़ा कर गिरे ।

सब सकते में आ गये ।

उसी क्षण खड़े-खड़े दिलीप मेहरा ने एकाएक अपनी पेशाब वाली जगह कसकर पकड़ ली । फिर वो धम्म् से वहीं एक कुर्सी पर बैठ गया और बैठते ही मछली की तरह दर्द से छटपटाने लगा ।

''मुझे जल्दी से वही टेबलेट लाकर दो, जो सुबह दी थी ।'' दिलीप मेहरा चिल्लाकर बोला- ''जल्दी !''

''मैं अभी लाती हूं ।'' अनुपमा जोशी फौरन दिलीप मेहरा के कमरे की तरफ झपटी ।

यही वो क्षण था, जब दिलीप मेहरा चीखता हुआ कुर्सी से नीचे गिरा ।

वह दर्द से और भी ज्यादा बुरी तरह छटपटाने लगा । कमांडर और अनिल मोटे ने दौड़कर दिलीप मेहरा को तुरन्त सम्भाला तथा उसे वहीं एक सोफे पर लिटा दिया ।

जगदीश नरूला भागा-भागा पानी लेकर आया ।

कुछ ही सैकिण्ड में दिलीप मेहरा की इतनी बुरी हालत बिगड़ चुकी थी, जो पहले कभी नहीं बिगड़ी थी । उसके हांठ कागज की तरह फड़फड़ा रहे थे । चेहरे पर सफेदी पुत

चुकी थी। आंखो में हवाइंया थी ।

मेहरा को टेबलेट दी गयी ।

मगर आश्चर्य, टेबलेट देने के काफी देर बाद तक भी उसकी स्थिति में कुछ फर्क न पड़ा ।

बल्कि उसकी हालत बिगड़ती जा रही थी, और भी ज्यादा बिगड़ती जा रही थी ।

"अब हम लोग क्या करें ?" दिलीप मेहरा की हालत देखकर जगदीश नरूला के हाथ-पांव फूल गये ।

सबकी खोपड़ी फिरकनी की तरह घूमी हुई थी ।

"मेरी बात सुनो ।" दिलीप मेहरा दर्द से छटपटाते हुए ही बोला- "सुनो ।"

सबने फौरन दिलीप मेहरा की तरफ देखा ।

"अनुपमा जिस अलमारी में से तुम 'यूरी स्पाश' की टेबलेट निकाल कर लायी थी," दिलीप मेहरा हांफते हुए ही बोला- "वहीं एक और शीशी रखी हैं। जल्दी-जल्दी उस शीशी में से एक टेबलेट और निकाल कर लाओ । वह टेबलेट जरूर मेरे इस भीषण दर्द की रोकथाम करेगी ।"

अनुपमा जोशी तत्काल वह दूसरी टेबलेट लाने के लिये दिलीप मेहरा के कमरे की तरफ झपटी ।

फौरन दिलीप मेहरा को वह दूसरी टेबलेट लाकर खिलाई गयी ।

मगर घोर अश्चर्य, दर्द इतना भीषण था कि उस अत्यन्त शक्तिशाली दूसरी टेबलेट का भी कुछ असर न हुआ ।

उल्टे दिलीप मेहरा की अब ऐसी हालत हो चुकी थी कि उसके अब प्राण निकले ।

अब निकले ।

□□□

कमांडर , जगदीश नरूला, अनिल मोटा और अनुपमा जोशी, वह चारों सिर से सिर जोड़कर एक जगह जमा हुए ।

दिलीप मेहरा की उस एकाएक बिगड़ी हालत ने उन चारो की बुद्धि कुन्द करके रख दी थी । खासतौर पर मिशन से सम्बन्धित बातें तो वह कुछ देर के लिये बिलकुल ही भूल चुके थे ।

"मेहरा साहब की हालत वाकई बहुत खराब है ।" अनिल मोटा अपने माथे पर चुहचुहा आये पसीने की ढेर सारी बूंदे साफ करता हुआ बोला- "अगर फौरन ही इनका दर्द बंद न हुआ, तो इनकी मौत भी हो सकती है ।"

"लेकिन मौजूदा परिस्थिति में हम लोग क्या करें ?" कमांडर बोला- इस दर्द को फौरन रोकने का हमारे पास साधन क्या है ?"

“एक साधन है ।” जगदीश नरूला उस मुश्किल माहौल में उम्मीद की किरण करता हुआ बोला ।

“कैसा साधन ?”

“मेरे पास नींद की कुछ गोलियां है, जिन्हें नींद न आने पर मैं खा लेता हूं । हम क्यों न नींद की गोलियां मेहरा साहब को खिला दें । अगर उन्हें नींद आ गयी, तो शायद उन्हें दर्द से कुछ राहत मिल जाये ।”

सबकी निगाहें एक-दूसरे से मिलीं ।

उनमें संशय के भाव थे ।

“नींद की गोली देने में कुछ खतरा तो नहीं ?” अनिल मोटा सस्पैंसफुल स्वर में बोला ।

“जहां तक मैं समझता हूं, कोई खतरा नहीं होना चाहिए ।”

“आपका इस बारे में क्या विचार है कमाण्डर ?”

सबकी निगाह कमांडर करण सक्सेना पर जाकर ठहर गयीं ।

“देखों, हम में से कोई भी मेडीकल प्रेक्टिशनर नहीं हैं ।”

कमांडर बोला- “परन्तु मौजूदा माहौल में चूंकि हमारे पास यही एक रास्ता बचा हुआ है, इसलिये हमें इसे भी इस्तेमाल करके देख लेना चाहिए ।”

“ठीक है कमाण्डर !”

फिर बहुत आनन-फानन नींद की दो गोलियां दिलीप मेहरा को खिलाई गयीं ।

उन गोलियों का बड़ा अप्रत्याशित प्रभाव दिलीप मेहरा के ऊपर देखने को मिला ।

गोलियां खाने के पांच-दस मिनट बाद तक तो वह दर्द से छटपटाता रहा, लेकिन फिर उसे नींद आ गयी ।

नींद आने के कारण कम-से-कम उसका दर्द से छटपटाना बंद हो गया ।

उन चारों ने अब थोड़ी सकून की सांस ली ।

“मैंने मेहरा साहब को इतनी बुरी तरह दर्द से छटपटाते हुए पहले कभी नही देखा था ।” अनुपमा जोशी सिहर कर बोली ।

“वाकई, बड़ा तेज दर्द था ।” अनिल मोटा भी शुष्क स्वर में बोला-“ऐसा लगता था, मेहरा साहब के तो आज प्राण ही निकल जायेंगे ।”

कमांडर ने ‘डनहिल’ सुलगा ली और उसके छोटे-छोटे कश लगाने लगा । जहां उन सबके चेहरों पर सकून नजर आ रहा था, वहीं कमांडर अभी भी चिन्ता में डूबा हुआ था ।

“मैं आप लोगों से एक बात कहना चाहूंगा ।” कमांडर ने ‘डनहिल’ का ढेर सारा धुंआ छत की तरफ उछाला ।

“क्या कमाण्डर ?”

‘‘मेहरा साहब अभी भी खतरे से बाहर नहीं हुए है ।’’ कमांडर गम्भीरतापूर्वक बोला- ‘‘जैसे ही नींद की गोलियां का असर उनके ऊपर से खत्म होगा और वह दोबारा होश में आयेंगे, तो फिर पहले की तरह ही दर्द से छटपटाने लगेंगे । इसलिये इससे पहले कि नींद की गोलियां का असर खत्म हो, हमें उनके इलाज का कुछ बंदोबस्त करना चाहिये ।’’

‘‘लेकिन ऐसी हालत में हम उन्हें किसी भी हॉस्पिटल में इलाज के लिये कैसे ले जा सकते हैं कमाण्डर !’’ जगदीश नरूला बिस्मित लहजे में बोला- ‘‘देख नहीं रहें, अमरीका की पुलिस कितनी बुरी तरह हाथ धोकर हमारे पीछे पड़ी हुई है, अगर हम मेहरा साहब को लेकर हॉस्पिटल में गये, तो समझो सीधे जेल की सलाखों के पीछे पहुंचे।’’

‘‘सारे हालात मैं भी समझ रहा हूं ।’’ कमांडर ने ‘डनहिल’ की राख एश-ट्रे में झाड़ी- ‘‘परन्तु अब मेहरा साहब का किसी अच्छे डाक्टर से इलाज कराना जरूरी बन गया है । अगर पथरी वास्तव में ही उनके गुर्दे से निकल कर पेशाब की नली में पहुंच चुकी है, तो वह उनके लिये जानलेवा भी साबित हो सकती है ।’’

सब फिक्रमंद हो उठे ।

वह समझ गये, कमांडर वाकई ठीक कह रहा था ।

उन्हें जो करना था, जल्दी करना था ।

‘‘वैसे इसका एक और तरीका भी है । कमांडर बोला- ‘‘जिससे हमारा काम भी हो जायेगा और हम अमरीकन पुलिस के कहर से भी बचे रहेंगे ।’’

‘‘ऐसा क्या तरीका है ?’’

‘‘ इतने बड़े न्यूयार्क में कोई एक हिन्दुस्तानी डाक्टर तो होगा । हमें ऐसी परिस्थितियों में किसी हिन्दुस्तानी डॉक्टर की मदद लेनी चाहिये ।’’

कमांडर के उस प्रस्ताव को सुनकर उन तीनों की आंखे चमक उठी ।

‘‘आप ठीक कह रहें है कमाण्डर !’’ जगदीश नरूला बेहद उत्साहपूर्वक बोला- ‘‘बिलकुल ठीक कह रहे है। वाकई अगर हम किसी हिन्दुस्तानी डॉक्टर की मदद लें, तो हमारी यह मुश्किल हल हो सकती है ।’’

‘‘अब हमें बस जल्द से जल्द किसी हिन्दुस्तानी डॉक्टर का पता लगाना है ।’’ कमांडर करण सक्सेना ने ‘डनहिल’ का एक कश और लगाया ।

‘‘लेकिन इतने बड़े न्यूयार्क में किसी हिन्दुस्तानी डॉक्टर को तलाशना भी तो आसान बात नहीं हैं कमाण्डर!’’ जगदीश नरूला बोला- ‘‘खासतौर पर इस मौजूदा परिस्थति में तो हरगिज भी नहीं, जबकि यह पूरा कॉटेज हमारे लिये एक चूहेदान बना हुआ है और यहां से बाहर निकलते ही हमारे लिये खतरा-ही-खतरा है ।’’

‘‘सुनिये, मैं समझता हूं कि इस मुश्किल का समाधान भी हो चुका है ।’’ अनिल मोटा एकाएक प्रफुल्लित भाव से बोला ।

‘‘क्या मतलब ?’’

"मैं ऐसे एक डॉक्टर को जानता हूं, जो इन मुश्किल हालातों में हमारा मददगार साबित हो सकता है।"

सबने अनिल मोटे की तरफ देखा।

"कौन है वो डाक्टर ?" अनुपमा जोशी का सस्पैंसफुल स्वर।

"वह हिन्दुस्तानी डाक्टर तो नहीं है। अनिल मोटा बोला- "अलबत्ता श्रीलंका का एक डाक्टर जरूर है। उसे बड़ा ही धार्मिक व्यक्ति बताते है और यहां से दो किलोमीटर दूर ही उसका एक बहुत भव्य नर्सिंग होम बना हुआ है। जहां लगभग तमाम माडर्न इक्विपमेंट्स मौजूद हैं। जहां तक मैं समझता हूं, वह श्रीलंका का डॉक्टर भी हमारे लिये उतना ही मददगार साबित हो सकता, जितना कोई हिन्दुस्तानी डाक्टर मददगार साबित होता।"

"वह नर्सिंग होम श्रीलंका के उस डाक्टर का अपना है ?"

"बिलकुल।"

जगदीश नरूला ने कमांडर की तरफ देखा- "आपका इस बारे में क्या विचार है कमाण्डर ?"

"मैं समझता हूं," कमांडर ने 'डनहिल' का एक कश और लगाया- "मिस्टर अनिल रोहतगी की बात में दम हो सकती है।"

"यानि हमें श्रीलंका के उस डाक्टर को ट्राई करना चाहिये।"

"ट्राई करने में तो कुछ हर्ज नहीं है। हो सकता है कि हमारा काम वहीं बन जाये।"

□□□

राघवन नर्सिंग होम

वह कोई दो हजार वर्गगज के क्षेत्र में बना एक काफी भव्य नर्सिंग होम था। वह न्यूयार्क के बहुत पॉश इलाके में बना हुआ था और वहाँ आसपास चारों तरफ शांति ही शांति थी। नर्सिंग होम के बिल्कुल बराबर में ही उस श्रीलंका के डाक्टर ने अपनी काफी खूबसूरत कोठी भी बनायी हुई थी, जहां वो अपनी पत्नी तथा चार वर्ष की एक बेटी के साथ रहता था।

कमांडर करण सक्सेना जब उस नर्सिंग होम के अंदर दाखिल हुआ, उस वक्त शाम के पांच बज रहें थे।

नर्सिंग होम में गहमा गहमी का आलम था।

वार्ड ब्वायज और नर्सें इधर से उधर भागी-भागी, फिर रही थी।

हंगामे से भरा माहौल था।

देखने मात्र से ही लग रहा था कि वो काफी व्यस्त नर्सिंग होम है।

‘‘सुनो !’’ कमांडर ने बड़ी तेजी के साथ अपने बराकर में से गुजरते एक वार्ड ब्वाय को आवाज दी ।

‘‘यस ।’’

वार्ड ब्वाय ठिठका ।

वह एक अंग्रेज नौजवान था ।

‘‘मुझे डॉक्टर राघवन से मिलना है । क्या तुम बता सकते हो, उनका रूम कहां है ?’’ कमांडर विशुद्ध अंग्रेजी में बोला ।

‘‘सीधे जाकर दायीं तरफ मुड़ जाइये ।’’ वार्ड ब्वाय बोला- ‘‘रूम नम्बर तेइस उन्हीं का है ।’’

‘‘थैक्यू !’’

कमांडर ने उस वार्ड ब्वाय का आभार व्यक्त किया और फिर लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ आगे की तरफ बढ़ा ।

रूम नम्बर तेइस के सामने पहुंच कर वो ठिठका और उसने दरवाजा नॉक किया ।

‘‘यस, कम इन ।’’ फौरन अंदर से उसे एक भारी-भरकम आवाज सुनाई पड़ी ।

कमांडर करण सक्सेना आहिस्ता से दरवाजा खोलकर कमरे के अंदर दाखिल हो गया ।

अंदर घुसते ही ठण्डी हवा का एक तेज झोंका उसके शरीर से टकराया । वह पूरा केबिन एयरकण्डीशंड था और बड़े करीने के साथ सजाया गया था । खासतौर पर वहाँ फूलों के जो तीन-चार गमले रखे थे, उनकी छटा तो अद्भुत ही थी । वह जापान की ‘इकेबानाल’ पद्धति से सजाये गये थे । सामने ही एक काफी बड़ी टेबिल के पीछे रिवाल्विंग चेयर पर डॉक्टर राघवन बैठा था । वह मुश्किल से छत्तीस-सैंतीस साल का काफी स्वस्थ व्यक्ति था । उसका रंग गेहूंआ था और आंखो पर सुनहरे फ्रेम का ऐनक चढ़ा था ।

‘‘कहिये !’’ डॉक्टर राघवन, कमांडर करण सक्सेना को बड़ी पैनी निगाहों से देखता हुआ बोला- ‘‘मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं ।’’

‘‘मेरा नाम करण है ।’’ कमांडर ने डॉक्टर राघवन से कसकर हाथ मिलाया और उसे अपना परिचय दिया- ‘‘मैं एक हिन्दुस्तानी हूं तथा इस समय एक बहुत आवश्यक मदद के सिलसिले में आपके पास आया हूं ।’’

‘‘बैठिये ।’’

कमांडर कुर्सी खींचकर डॉक्टर राघवन के सामने बैठ गया ।

‘‘ अब बताइये !’’ डॉक्टर राघवन सहज मुद्रा में बोला- ‘‘आप मुझसे कैसी मदद चाहते है ?’’

“मेरा एक दोस्त है ।” कमांडर ने कहना शुरू कया- “उसकी हालत फिलहाल बहुत ज्यादा सीरियस है। मैं चाहता हूं कि आप उसका इलाज करें ।”

“तुम्हारे दोस्त को क्या हुआ है ?”

“उसके गुर्दो में पथरी थी ।” कमांडर ने बताया- “लेकिन आज दोपहर से ऐसा महसूस हो रहा है कि पथरी उसके गुर्दो में से निकलकर पेशाब की नली में जा पहुंची है । वह इस समय दर्द से बुरी तरह छटपटा रहा है । तड़प रहा है और उसकी हालत ऐसी है, मानो दर्द से छटपटाते हुए ही उसकी मौत हो जायेगी ।”

डाक्टर राघवन के चेहरे पर बहुत ज्यादा चौंकने जैसे भाव उभरे ।

“अगर तुम्हारे दोस्त की इतनी ज्यादा सीरियस हालत है,” डॉक्टर राघवन चकित मुद्रा में बोला- “तो तुमने उसे अभी तक नर्सिंग होम में एडमिट क्यों नहीं कराया ? उसे तो फौरन सेस भी पेश्तर मेडीकल एड दिये जाने की जरूरत है ।”

“यह बात मैं अच्छी तरह जानता हूं डाक्टर !” कमांडर गम्भीरतापूर्वक बोला- “लेकिन इसके अलावा मैं एक बात और भी जानता हूं तथा अब आप भी वो बात जान लें ।”

“क्या ?”

कमांडर ने फौरन एक अखबार खोलकर डॉक्टर राघवन के सामने फैलाया । उस अखबार के कवर पेज पर उन चारों की तस्वीरें छपी थी और अमरीकन सरकार द्वारा घोषित किये गये इनाम का हवाला भी था ।

“यह सब क्या है? डॉक्टर राघवन बुरी तरह बौखलाया ।

“आप इस आदमी को देख रहें है डाक्टर !” कमांडर ने दिलीप मेहरा की तस्वीर के ऊपर उंगली टिकाई ।

“देख रहा हूं ।”

“ यह मेरा वो दोस्त है, जिसका इलाज होना है ।”

डाक्टर राघवन के दिल दिमाग पर एकाएक भीषण बिजली सी गड़गड़ा कर गिरती चली गयी ।

अनार से छूटते चले गये ।

वो बेहद हत्प्रभ और भौंचक्की निगाहो से अब कमांडर करण सक्सेना को देखने लगा ।

□□□

काफी देर तक डाक्टर राघवन के मुंह से कोई शब्द न फूटा ।

वो कभी बहुत हैरान निगाहों से कमांडर करण सक्सेना को देख रहा था, तो कभी अखबार में छपी उन तस्वीरों को ।

‘‘लेकिन तुम्हारे ये चारों साथी तो अपराधी हैं मिस्टर !’’

‘‘अपराधी मत कहो इन्हें डाक्टर !’’ कमांडर गुर्रा उठा- ‘‘अपराधी मत कहो । यह जासूस है । अपने वतन के लिये मर मिटन वाले जासूस । इनके जिस्म में दौड़ रही खून की एक-एक बूंद पर अपने देश का नाम लिखा हैं। यह अमरीका में एक खास मिशन के तहत आये थे...लेकिन यहां आते ही पुलिस इनके पीछे पड़ गयी। इन्हें फरार अपराधी घोषित कर दिया गया । इनका कसूर सिर्फ इतना है कि यह अपने देश से बहुत प्यार करते है डॉक्टर, और अपने देश से प्यार करना कोई गुनाह तो नहीं ?’’

डॉक्टर राघवन एक बार फिर चकित निगाहों से कमांडर की तरफ देखने के लिये मजबूर हो गया ।

‘‘मैं तुम्हारे पास बड़ी उम्मीद लेकर आया हूं डॉक्टर !’’ कमांडर भावनाओं के प्रवाह में बोलता चला गया- ‘‘हालांकि तुम हिन्दुस्तानी तो नहीं हो, लेकिन फिर भी हिन्दुस्तानी मिट्टी और उसकी संस्कृति की महक से सराबोर हो । वही उम्मीद मुझे तुम्हारे पास खींचकर ले आयी है । बोलो डॉक्टर, क्या तुम मेरे साथी की मदद करोगे?’’

डॉक्टर राघवन के चेहरे पर अब निर्णय-अनिर्णय की दुविधा दिखाई पड़ने लगी ।

वो कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया और बेचैनीपूर्वक अपने एयरकण्डीशंड केबिन में उधर-उधर टहलने लगा ।

‘‘क्या सोच रहे हो डाक्टर ?’’ कमांडर ने भी कुर्सी छोड़ी ।

‘‘मैं तुम्हारी मदद करने के लिये तैयार हूं ।’’ डाक्टर राघवन एकाएक महत्वपूर्ण फैसले पर पहुंचता हुआ बोला- ‘‘लेकिन एक परेशानी है ।’’

‘‘कैसी परेशानी ?’’

‘‘मेरे नर्सिंग होम में ज्यादातर स्टाफ अमरीकन है । मैं उनके सामने तुम्हारे साथी का इलाज कैसे कर पाऊंगा?’’

‘‘ हां, यह मुश्किल जरूर है ।’’ कमांडर के चेहरे पर भी चिन्ता की लकीरें प्रकट हुई- ‘‘मगर इसका भी कोई न कोई हल तो हमें ढूढना ही होगा ।

डाक्टर राघवन फिर कुछ सेचने लगा ।

‘‘ठीक है ।’’ डाक्टर राघवन अपने सुनहरे फ्रेम का ऐनक दुरूस्त करके बोला- ‘‘तुम पेशेण्ट को नर्सिंग होम के बराबर में ही बनी मेरी कोठी में लेकर आओ, बाकी सब मैं अपने आप सम्भाल लूंगा ।

‘‘लेकिन आप करोगे क्या ?’’

‘‘वह सब मेरी हैडक है। जैसा मैं तुमसे कह रहा हूं, वैसा करो। क्विक !’’

‘‘ओ0के0 डॉक्टर !’’

□□□

फिर सब कुछ बड़ी तेजी के साथ हुआ। कमांडर , डाक्टर की ही कार लेकर वापस कॉटेज में पहुंचा । कार की पिछली सीट पर दिलीप मेहरा को लिटाया गया । जगदीश नरूला, अनिल मोटा और अनुपमा जोशी भी कार में ही सवार हुए, फिर वह सब डॉक्टर राघवन की कोठी पर पहुंचे ।

डॉक्टर राघवन की बीबी का नाम पार्वती राघवन था । वह उससे भी ज्यादा सुसंस्कृत और धांर्मिक रंग में रंगी औरत थी ।

उनकी बेटी बोर्डिंग स्कूल में पढ़ती थी ।

''आप लोग इसे अपना ही घर समझें ।'' पार्वती राघवन सुरक्षा के तौर पर खिड़कियों पर पर्दे सरकाते हुए बोली- ''यहां आपको कोई खतरा नहीं है और आप लोग यहां कभी तक भी इत्मीनान से रह सकते है ।''

''आप हमारी जो मदद कर रहें है, ''कमांडर एक सोफा चेयर पर बैठता हुआ बोला- ''उसके लिये हम सब आपके बहुत बहुत आभारी हैं ।

''इसमें आभार जैसी कोई बात नहीं कमांडर !'' डाक्टर राघवन भी कोठी के ड्रांइग हॉल में दाखिल होता हुआ बोला- ''मैं इन अमरीकन को अच्छी तरह जानता हूं । यह बहुत मतलबी और खुदगर्ज इंसान हैं। खासतौर पर एक एशियन लोगों की सफलता से तो यह हद से ज्यादा चिढते है । इसलिये ऐसे माहौल में हमारा यही फर्ज बन जाता है कि हम एक दूसरे की खुलकर मदद करें ।''

''वाकई आपके विचार काफी अच्छे हैं डाक्टर !'' कमांडर बोला ।

''लेकिन एक बात मेरी समझ नहीं आ रहीं ।'' अनिल मोटा मौजूदा वार्ता पर टिप्पणी करता हुआ बोला ।

''क्या ?''

''जब आपको अमरीकनो से इतनी सख्त नफरत है डाक्टर !'' अनिल मोटा बोला- ''तो आप अपना वतन छोड़कर यहां न्यूयार्क में आकर क्यों बसे ?''

''अच्छा सवाल पूछा है तुमने ।'' डाक्टर राघवन ने पुनः अपना सुनहरे फ्रेम का ऐनक दुरूस्त किया- ''दरअसल जब मैं श्रीलंका में था, तब अमरीका में रहना मेरा एक सपना था । मैंने अमरीकन लोगों और अमरीका कल्चर को लेकर बड़े बड़े खूबसूरत सपने देखे थे, जो यहां आते ही टूट गये । अब मुझे अहसास होता है कि इन घमण्डी लोगों के बीच में आना मेरी जिन्दगी की सबसे बड़ी गलती थी, लेकिन अब मैं यहां प्रॉपर्टी में इतना पैसा फंसा चुका हूं कि आसानी से वापस भी नहीं जा सकता ।''

पार्वती राघवन ने तब तक पेलमेट में झूल रहे तमाम पर्दे खिड़कियो के ऊपर सरका दिये थे और दरवाजा भी अंदर से बंद कर लिया ।

''अब आप लोगों को कोई नहीं देख सकता ।'' पार्वती राघवन बोली ।

दिलीप मेहरा के ऊपर से तब तक नींद की गोलियां का असर खत्म हो चुका था। वह इस वक्त आराम कुर्सी पर बैठा था । अलबत्ता पेशाब की नली में किसी चीज के चुभने की शिकायत उसे अभी भी थी ।

तभी डॉक्टर राघवन ने उन सबके मनोरंजन के लिये टी0वी0 खोल दिया ।

टी0वी0 पर उस समय फरार अपराधियो से सम्बन्धित प्रोग्राम आ रहा था और इत्तेफाक से उन्हीं की तस्वीरे स्क्रीन पर दिखाई जा रही थीं ।

''विशेष सूचना सुनिये ।'' तस्वीरो के पीछे से एनाउंसर की आवाज सुनायी पड़ रही थी- ''आप इन तस्वीरों को ध्यानपूर्वक देखें, यह चारो हिन्दुस्तानी जाली पासपोर्ट पर एक साथ अमरीका में दाखिल हुए थे और फिलहाल न्यूयार्क शहर में ही कहीं छिपे हुए हैं । इन हिन्दुस्तानियों का न्यूयार्क शहर में आने के पीछे क्या उद्देश्य है, यह अभी उजागर नहीं हुआ हैं । अलबत्ता यह किसी खास षड्यंत्र को जन्म देने के लिये ही न्यूयार्क शहर में दाखिल हुए हैं । यह चारों हिन्दुस्तानी आपको जहां कहीं भी दिखाई दें, फौरन पुलिस को सूचना दें । इनके सम्बन्ध में सूचना देने वाले किसी भी व्यक्ति को एक लाख डॉलर का नकद पुरस्कार दिया जायेगा ।''

फिर टी0वी0 पर एनाउंसर की आवाज आनी बंद हो गयी ।

उसके बाद उन चारों की तस्वीरे बार-बार स्क्रीन पर ब्रॉडकास्ट की गयी, ताकि टी0वी0 देखने वाले लोगों के दिगाम में उनके चेहरे अच्छी तरह स्थापित किये जा सकें ।

''लगता है, इस अमरीकन पुलिस को भी दूसरा कोई काम नहीं बचा है ।'' जगदीश नरूला झुंझला कर बोला- ''ऐसा कोई दिन नहीं जाता, जब हमारी तस्वीरें टी0वी0 पर ब्राडकास्ट न की जाती हों ।''

''चिन्ता मत करो ।'' कमांडर बोला- ''यह इनका काम है, इन्हें करने दो ।''

''फिर भी इनका यह प्रचार हमारे लिये सिरदर्दी का कारण तो बन ही चुका है ।''

''अब किया भी क्या जा सकता है ?''

डॉक्टर राघवन ने टी0वी0 बंद कर दिया ।

□□□

शाम के सात बज रहे थे, जब दिलीप मेहरा के पुनः बहुत भीषण दर्द उठा ।

उसका पूरा शरीर एकदम से पसीने में लथपथ हो गया ।

''यह दोपहर भी इसी तरह दर्द से छटपटा रहें थे ।'' अनिल मोटा बोला ।

''बल्कि अब तो ऐसा लग रहा है,'' अनुपमा जोशी बेचैन होकर बोली- ''कि इनको दोपहर से भी ज्यादा तेज दर्द है ।''

डॉक्टर राघवन भी दिलीप मेहरा के उस भीषण दर्द को देखकर चिन्तित हो उठा ।

‘‘मैं नर्सिंग होम से अभी आता हूं ।’’ डॉक्टर राघवन फौरन कोठी से बाहर चला गया ।

जल्द ही जब वो वापस लौटा, तो उसके हाथ में एक इंजेक्शन था । ड्रांइग हॉल में आते ही उसने दिलीप मेहरा को वो इंजेक्शन लगा दिया ।

इंजेक्शन का तुरन्त असर देखने को मिला ।

फौरन ही दिलीप मेहरा का न सिर्फ दर्द से छटपटाना बंद हो गया, बल्कि पहले की तरह ही वो कुछ नशे जैसे गिरफ्त में भी आ गया ।

‘‘इन्हें अब थोड़ी देर आराम करने दो ।’’ डॉक्टर राघवन बोला ।

‘‘लेकिन आप इनका इलाज कब करेंगे ?’’ कमांडर के स्वर में कौतुहलता थी ।

‘‘इस समय सात बज रहें हैं ।’’ डॉक्टर राघवन ने बताया- ‘‘ठीक आठ बजे मेरे नर्सिंग होम का जो डे-डयूटी वाला स्टाफ है वह छुट्टी करके चला जाता है, जबकि नाइट ड्यूटी वाला स्टाफ रात के ठीक दस बजे नर्सिंग होम में पहुंचता है । इस प्रकार आठ से दस बजे के बीच में यह जो दो घंटे का समय है, इस दो घंटे के समय में पूरा नर्सिंग होम स्टाफ से लगभग पूरी तरह खाली हो जाता है और सबसे बेहतर है । मुझे मिस्टर मेहरा के कुछेक चैकअप करने है, मैं वो सारे चैकअप उसी दो घंटे के दरम्यान करूंगा और फिर यह फैसला होगा कि अब हमने आगे क्या करना है ?’’

‘‘यानि सिर्फ एक घण्टे की बात और है ।’’ अनिल मोटा बोला ।

‘‘बिलकुल ।’’

मोटा वही एक कुर्सी पर पसर कर बैठ गया ।

उसकी घड़े जैसी तोंद अब काफी आगे निकल आयी ।

‘‘ठीक है, आप लोग आराम करें ।’’ पार्वती राघवन बोली- ‘‘तब तक मैं आप लोगों के लिये गरमा-गरम चाय बनाकर लाती हूं ।’’

‘‘चलिये मैडम, मैं भी चाय बनाने में आपकी कुछ मदद करती हूं ।’’ अनुपमा जोशी भी कुर्सी छोड़कर खड़ी हुई ।

‘‘नहीं, तुम रहने दो बेबी !’’

‘‘कोई बात नही ।’’

अनुपमा जोशी जबरदस्ती पार्वती राघवन के साथ-साथ किचन की तरफ बढ़ गयी ।

□□□

ठीक सवा आठ बजे दिलीप मेहरा को कोठी में से निकाल कर नर्सिंग होम में शिफ्ट कर दिया गया ।

नर्सिग होम में उस वक्त पूरी तरह शांति थी ।

मरीज अपने-अपने वार्डो में थे, जबकि दो-तीन स्वीपर (सफाई करने वाले) जो उस वक्त ड्यूटी में थे, उन्हें भी डाक्टर राघवन ने किसी काम से इधर-उधर भेज दिया ।

कुल मिलाकर अब वहाँ ऐसा कोई आदमी न था, जिससे उन्हें खतरा महसूस होता ।

फिर डाक्टर राघवर ने बड़ी तेजी के साथ दिलीप मेहरा के कुछ चैकअप करने शुरू किये ।

सबसे पहले एक्स रे किया ।

फिर आई0बी0पी0 किया ।

फिर अल्ट्रासाण्उड किया ।

फिर सी0टी0 स्कैन किया ।

फिर एम0आर0आई0 किया ।

उस बीमारी में जितने भी चैकअप सम्भव थे- डॉक्टर राघवन ने दिलीप मेहरा के वो तमाम चैकअप कर डाले।

उन सब चैकअप करने में रात के पौने दस बज चुके थे । चैकअप में डाक्टर राघवन की इधर-से उधर जो भागा दौड़ी हुई थी- उसकी वजह से वो काफी थका-थका नजर आने लगा ।

‘‘अब आप लोग एक काम करें ।’’ डाक्टर राघवन, कमांडर से बोला ।

‘‘कहिये ।’’

‘‘आप मिस्टर मेहरा को लेकर वापस कोठी में चले जायें, मैं तमाम टेस्टों की रिपोर्ट लेकर अभी वहाँ हाजिर होता हूं ।’’

‘‘ठीक है डाक्टर !’’

‘‘वैसे भी नाइट ड्यूटी वाले स्टाफ के आने का समय हो चुका है ।’’ डॉक्टर राघवन बोला ।

कमांडर ने अपनी रिस्टवॉच देखी- डॉक्टर राघवन ठीक कह रहा था ।

वह सब दिलीप मेहरा को लेकर वापस कोठी में आ गये ।

□□□

उस रात किसी को भी नींद न आयी ।

सब जागे रहें ।

दिलीप मेहरा तो दर्द के कारण ही न सो सका । सुबह से एक मर्तबा भी उसे पेशाब नहीं उतरा था । जितनी बार भी उसने पेशाब करने की कोशिश की-उतना ही उसका दर्द और बढ़ा ।

पार्वती राघवन भी उनके साथ जागी ।

“मैडम !” कमांडर करण सक्सेना ‘डनहिल’ का कश लगाते हुए उनिंदी अवस्था में बोला- “रात काफी हो चुकी है, मैं समझता हूं कि अब आपको बैडरूम में जाकर आराम करना चाहिए । आप हमारे साथ क्यों परेशान होती है ।”

“किन्हीं अपनो के सुख-दुख में काम आने से कभी कोई परेशान नहीं होता कमांडर !” पार्वती राघवन जज्बाती लहजे में बोली- “और सच बात तो ये है, इन फिरंगियो के देश में रहते हुए मैं काफी सालों बाद यहां अपनेपन का अहसास अनुभव कर रही हूं । किसी के काम आने मे जो सुख है, उससे बड़ा सुख इस पूरी दुनिया में और कोई दूसरा नहीं ।”

“सचमुच आपके विचार काफी अच्छे है ।”

कमांडर , पार्वती राघवन से प्रभावित हुए बिना न रह सका ।

रात के दो बज रहे थे, जब डॉक्टर राघवन कोठी में दाखिल हुआ । उसकी अस्त-व्यस्त हालत और थका हुआ चेहरा बता रहा था कि रिपोर्ट तैयार करने मे उसे अच्छी खासी मशक्कत करनी पड़ी हैं ।

उसने एक नजर ड्रांइग हॉल में बैठे तमाम लोगों पर डाली- दिलीप मेहरा को भी देखा ।

“कमांडर !” फिर वह कमांडर से सम्बोधित हुआ- “आप जरा मेरे साथ अंदर आइये ।”

डॉक्टर राघवन लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ अंदर वाले कमरे की तरफ बढ़ गया ।

फौरन कमांडर करण सक्सेना अपनी कुर्सी छोड़कर खड़ा हुआ और डॉक्टर राघवन के पीछे पीछे चला ।

देखते ही देखते अंदर कमरे में डॉक्टर राघवन, कमांडर , अनुपमा जोशी, जगदीश नरूला और अनिल मोटा जमा हो गये ।

“क्या रिपोर्ट है डॉक्टर ?”

“रिपोर्ट कोई उत्साहजनक नहीं है ।” डॉक्टर राघवन के माथे पर ढेर सारी चिन्ता की लकीरें खिंची हुई थीं-“मिस्टर मेहरा का केस काफी सीरियस स्टेज पर पहुंच चुका है ।”

“क्या मतलब ?”

सबके चेहरे पर सफेदी पुत गई ।

“रिपोर्ट बताती है कि उनका एक गुर्दा बिलकुल बेकार हो गया है तथा उसमें अभी भी काफी पथरी फंसी हुई है।” डाक्टर राघवन बेला- “जिसे लिथोट्रिप्सी यानि लेजन किरणों से भी तोड़कर बाहर नहीं निकाला जा सकता ।”

“ओह !”

सब सन्न् रह गये ।

सब चकित ।

‘‘इसके अलावा एक छोटी सी पथरी उनकी पेशाब की नली में भी जाकर फंस गयी है ।’’ डॉक्टर राघवन ने आगे बताया- ‘‘और सबसे खतरनाक स्थिति ये है कि गुर्दे में बार-बार पथरी बनने से उसमें कैंसर के लक्षण पैदा हो गये हैं, अगर ऐसी परिस्थिति में मैंने आपरेशन करने का प्रयास किया, तो मिस्टर मेहरा की टेबिल पर ही मौत हो सकती है ।’’

‘‘यह तो सचमुच काफी सीरियस मामला है ।’’ जगदीश नरूला आंदोलित लहजे में बोला ।

‘‘हां, हद से ज्यादा सीरियस मामला है ।’’डॉक्टर राघवन बोला ।

शुष्क स्वर- ‘‘हमें हर फैसला बहुत सोच-समझ कर करना होगा ।’’

‘‘यानि ऑपरेशन में खतरा है ?’’

‘‘सौ फीसदी तो नहीं अलबत्ता नब्बे फीसदी खतरा जरूर है ।’’
डॉक्टर राघवन बोला- ‘‘लेकिन ऑपरेशन में हमें कामयाबी भी हासिल हो सकती है । बहरहाल हमने जो भी फैसला लेना है, जल्दी लेना है ।’’

डॉक्टर राघवन के मुंह से अभी वो शब्द निकले ही थे कि तभी दरवाजे पर बहुत धीमी आहट उभरी ।

सबने फौरन दरवाजे की तरफ देखा ।

□□□

दरवाजे पर पर अब दिलीप मेहरा खड़ा था। उसके चेहरे पर जरा भी खौफ या चिन्ता के लक्षण नहीं थे, बल्कि आध्यात्मिक शान्ति जैसे भाव थे ।

‘‘मिस्टर मेहरा आप ।’’कमांडर, दिलीप मेहरा को वहाँ देखकर बुरी तरह सकपकाया ।

‘‘चिन्ता मत करो कमाण्डर !’’ दिलीप मेहरा धीमे-धीमे कदमों से चलता हुआ अंदर आया- ‘‘मैंने सब कुछ सुन लिया है, सब कुछ ! लेकिन यह दिलीप मेहरा इतनी आसानी के साथ मौत से डरने वाला नहीं है । बहुत बार इस दिलीप मेहरा ने मौत के साथ आंख-मिचौली का खेल खेला है । जिन्दगी और मौत की धूप-छांव पसंद है मुझे, इसीलिये मैंने जासूसी को अपना कार्यक्षेत्र चुना । डॉक्टर, तुम्हें ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं है । मैं अपना ऑपरेशन नहीं करा रहा हूं ।’’

‘‘लेकिन ।’’

‘‘पहले मेरी पूरी बात सुन लो ।’’ दिलीप मेहरा हाथ उठाकर उसे बीच में ही टोकता हुआ बोला- ‘‘मेरे पास अब जितनी भी सांसे हैं, थोड़ी या बहुत, कम या ज्यादा, मुझे उनसे अब कोई सरोकार नहीं हैं । मैं जब तक जिन्दा हूं, अब बस अपने देश के लिये काम करना चाहता हूं। मैं चाहता हूं, मैं एक देशभक्त की मौत मरूं ।’’

“लेकिन अगर आपका ऑपरेशन कामयाब रहा मिस्टर मेहरा !” डॉक्टर राघवन बोला- “तो आप दोबारा से स्वस्थ हो जायेंगे ।”

“नहीं, मैं अब स्वस्थ नहीं होना चाहता ।” दिलीप मेहरा दृढ़ लहजे में बोला- “मैं कोई रिस्क नहीं लेना चाहता । अब तो बस एक ही इच्छा है, खुद मरने से पहले उस नामाकूल आदमी को जहन्नुम पहुंचा दूं, जिसने न्यूयार्क पहुंचने के बाद हमसे गद्दारी की । हमारे मिशन को असफलता के गर्त में धकेला । प्लीज !” दिलीप मेहरा ने बहुत भाव-विह्वल अंदाज में उन सबकी तरफ देखा- “आप लोग कम-से-कम इस जंग में मेरा साथ दें। मेरी इस अंतिम इच्छा को पूरी करें ।”

कमांडर के साथ-साथ सब विचलित नजर आने लगे ।

दिलीप मेहरा ने उन सबको दोराहे पर लाकर खड़ा कर दिया था ।

“डाक्टर !” दिलीप मेहरा, डॉक्टर राघवन के सामने जाकर खड़ा हुआ- “मेरी आपसे भी एक विनती है ।”

“बोलो ।”

“आप कह रहें है, एक छोटी-सी पथरी मेरी पेशाब की नली में भी जाकर अटक गयी हैं ।”

“हां, यह सच हैं ।” डॉक्टर राघवन फंसे-फंसे स्वर में बोला ।

‘मैं समझता हूं, कम-से-कम उस छोटी सी पथरी को तो लेजर किरणो के द्वारा तोड़कर बाहर निकाला ही जा सकता है । आप बस उस पथरी को बाहर निकाल दें, जिससे मेरी मौजूदा परेशानी कम हो जायें ।”

डॉक्टर राघवन, कमांडर की तरफ देखने लगा ।

“आपका इस सम्बन्ध में क्या कहना है कमांडर ?”

“मेहरा साहब जो कह रहें है, आप वहीं करें डॉक्टर !” कमांडर ने अपना क्लेंसी हैट नीचे झुकाया ।

“ठीक है ।” डॉक्टर राघवन बोला- “तो फिर आप मेरे साथ अकेले नर्सिंग होम में चलिये मिस्टर मेहरा ।”

“क्यों ?”

“आपकी पेशाब की नली में जो पथरी है, मैं उसे अभी लिथोट्रिप्सी करके निकाल दूंगा ।”

“लेकिन आपका रात वाला स्टाफ नर्सिंग होम में आ चुका हैं डाक्टर !” अनिल मोटा बोला- “अगर ऐसी परिस्थिति में किसी ने मेहरा साहब को पहचान लिया तो क्या होगा ?”

“कोई नहीं पहचान पायेगा ।” डॉक्टर राघवन बोला- “ मैं सावधानी के तौर पर इनके माथे पर पट्टी बांध देता हूं और गाल पर बैंड-एड चिपका दूंगा । इस से इनका चेहरा

काफी बदल जायेगा ।

पार्वती !'' डाक्टर राघवन ने अपनी पत्नी पार्वती राघवन की तरफ देखा- ''तुम मेरी मैडिकल किट लेकर आओ ।''

पार्वती राघवन फौरन अंदर से मैडीकल किट लेने चली गयी ।

□□□

फिर कई सारे काम आनन-फानन हुए ।

जैसे डाक्टर राघवन ने दिलीप मेहरा के सिर और माथे पर सफेद पट्टी बांध दी । गाल पर क्रॉस के आकार में चौड़ी बेंड-एड चिपका दी । अब वाकई दिलीप मेहरा को पहचान पाना आसान न था ।

उसके बाद डॉक्टर राघवन, दिलीप मेहरा को लेकर नर्सिंग होम में चला गया ।

वहाँ वो सीधा उस कमरे में पहुंचा, जहां लिथोट्रिप्सी होती थी ।

उसने दिलीप मेहरा को एक बैड पर लिटा दिया ।

इंजेक्शन दिया ।

और फिर लेजर किरणों से उसका ऑपरेशन करने लगा ।

मुश्किल से दस मिनट दिलीप मेहरा का ऑपरेशन चला । उस दस मिनट के दौरान डॉक्टर राघवन ने उसकी पेशाब की नली में जो छोटी सी पथरी फंसी हुई थी, वह पूरी पथरी रेत के नन्हें-नन्हें कणो में बदल दी ।

फिर उसने दिलीप मेहरा को पीने के लिये एक दवाई दी ।

उस दवाई के पीते ही दिलीप मेहरा के ऊपर बड़ा अप्रत्याशित प्रभाव हुआ। सुबह से उसे जो पेशाब नहीं हो रहा था, फौरन उसे पेशाब ही हाजत हुई ।

डॉक्टर राघवन ने वहीं बैड पर लिटाये-लिटाये दिलीप मेहरा को पेशाब कराया । फौरन रेत के सारे नन्हें-नन्हें करण पेशाब के रास्ते बाहर निकल गये । दिलीप मेहरा ने अब ऐसी छुटकारे की सांस ली, मानों किसी बड़ी आफत से उसका पीछा छूटा हो ।

''अब कैसा महसूस कर रहें हो ?'' डॉक्टर राघवन ने दिलीप मेहरा की तरफ देखते हुए पूछा ।

''काफी सकून मिल रहा है ।'' दिलीप मेहरा गहरी सांस छोड़ता हुआ बोला ।

''पेशाब की नली में पहले की तरह चुभन तो नहीं हो रही ?''

''नहीं ।''

''ठीक है, तुम अब जाक बैठ सकते है ।''

दिलीप मेहरा फौरन बेड पर सीधा बैठ गया ।

लेजर किरणों द्वारा किये गये ऑपरेशन की सबसे ज्यादा खास बात यही होती है कि उसमें चीर-फाड़ नहीं करनी पड़ती ।

मरीज ऑपरेशन के तुरन्त बाद ही हॉस्पिटल से जाने की स्थिति में होता है ।

□□□

‘‘आपने इन मुश्किल हालातों में हमारी जो मदद की है डाक्टर !’’ कमांडर बोला- ‘‘उसके लिये हम आपके सदा आभारी रहेंगे ।’’

‘‘इसमें आभार जैसी कोई बात नहीं है ।’’ डॉक्टर राघवन कुर्सी पर पसर गया-‘‘मैंने वही किया है, जो मुझे करना चाहिए था । वैसे भी मैं आप जैसे देशभक्त लोगों के किसी काम आ सका, यह मेरे लिये गर्व की बात है ।’’

उस समय सब दोबारा कोठी के ड्राइंग हॉल में जमा थे ।

दिलीप मेहरा भी वहीं था ।

‘‘कमाण्डर !’’ अनुपमा जोशी, कमांडर से बोली- ‘‘इस वक्त रात के चार बज रहें है । मैं समझती हूं, अब हमें फौरन यह जगह छोड़ देनी चाहिए ।’’

‘‘ठीक बात है ।’’ कमांडर भी बोला ।

‘‘लेकिन आप यहां से जाने में इतनी जल्दबाजी क्यों कर रहें है ?’’ वह स्वर पार्वती राघवन का था- ‘‘आप जब तक चाहें, यहां रह सकते है । हमें आपके यहां रहने से कोई एतराज नहीं ।’’

‘‘हम जानते हैं मैडम !’’ जगदीश नरूला बोला- ‘‘कि आपको हमारे यहां रहने से कोई एतराज नहीं है, लेकिन इसके अलावा हम एक बात और भी जानते है ।’’

‘‘क्या ?’’

‘‘जब तक हम सब यहां है, तब तक आप पूरी तरह खतरे में है और हम नहीं चाहते कि हमारे कारण आप जैसे अच्छे लोगों को कोई नुकसान पहुंचे ।’’

‘‘लेकिन ।’’

‘‘प्लीज मैडम !’’ कमांडर करण सक्सेना ने पार्वती राघवन की बात काटी- ‘‘आप हमें यहां से जाने ही दें, तो बेहतर है । अगर एक बार यहां की पुलिस को आपके ऊपर देशद्रोही होने का शक हो गया, तो फिर इस शहर में रहना मुश्किल हो जायेगा। हां, जाने से पहले आपसे एक मदद हम और हासिल करना चाहेंगे ।’’

‘‘बताओ !’’ डॉक्टर राघवन बोला- ‘‘कैसी मदद चाहते हो ?’’

कमांडर ने अपनी जेब से लगभग दो सौ डॉलर निकाल कर डॉक्टर राघवन के सामने टेबिल पर रखे ।

‘‘मैंने सुना है कि इस शहर के अंदर ऐसे कई ‘सुपर बाजार’ हैं, जो चौबीसों घण्टे खुलते है और जहां से हर वक्त खरीदारी की जा सकती हैं ।’’

‘‘बिलकुल ठीक सुना है, लेकिन आप क्या खरीददारी करना चाहते है ?’’

“दरअसल जिस जगह हम छिपे हुए है, वहाँ हमारे सामने खाद्य सामग्री की समस्या आ खड़ी हुई हैं । मैं चाहता हूं कि आप नर्सिंग होम का कोई कर्मचारी भेजकर हमारे लिये दाल, चावल, दूध का पाउडर तथा कुछ मसाले बगैरह मंगा दें ।”

“इसके लिये किसी कर्मचारी को बाजार भेजने की क्या जरूरत है ?” पार्वती राघवन फौरन बोली- “यह सारा सामान तो आपको यहीं से मिल जायेगा। अभी कुछ दिन पहले ही हमने सारा स्टॉक परचेज किया है ।”

पार्वती राघवन लम्बे-लम्बे डग रखती हुई वापस किचन में चली गयी ।

जल्द ही जब वो लौटी, तो एक काफी बड़े थैले में सारा सामान भरे हुए थी ।

“यह लीजिए !”

उसने थैला वहीं उनके पास लाकर रख दिया ।

वह कोई पन्द्रह दिन का राशन था ।

“वाकई आप लोग हमारे काफी काम आ रहें हैं ।” अनिल मोटा बोला ।

“आप यह क्यों भूलते है !” डाक्टर राघवन बोला-“कि आखिर इंसान ही इंसान के काम आता हैं ।”

“यह तो है ।”

“कमांडर, आप अपने यह दो सौ डॉलर भी रखिये ।”

“लेकिन ।”

“आप इस मामले में मुझसे बहस ना करें । मैं आपके देश का नागरिक न सही, परन्तु आपके पड़ोसी देश का नागरिक जरूर हूं । आपकी इस तरह की मदद करना मेरा फर्ज बनता है ।”

वह दोनों पति-पत्नी सचमुच बहुत नेकदिल इंसान थे । कमांडर ने फिर उससे वाकई बहस न की ।

□□□

सुबह के पांच बज रहे थे, जब उन्होंने वापस जासूसी उपन्यासकार के कॉटेज में कदम रखा ।

अभी भी रात्रि का घटाघोप अंधेरा चारों तरफ फैला हुआ था और वहाँ दूर-दूर तक सन्नाटे का साम्राज्य था ।

“अनुपमा !” अनिल मोटा राशन का थैला लेकर कॉटेज में सबसे आगे दाखिल होता हुआ बोला- “जरा लाइट जलाना ।”

अनुपमा जोशी अंधेरे में ही दीवार पर लगे स्विच बोर्ड की तरफ बढ़ गयी और उसने टटोलकर एक स्विच दबाया ।

मगर लाइट न जी ।

‘‘क्या हुआ ?’’

‘‘लगता है, लाइट नहीं आ रही ।’’

‘‘ऐसा कैसे हो सकता है ।’’कमांडर आश्चर्यपूर्वक बोला- ‘‘बाहर तो अभी म्युनिसपिल्टी के सारे रोड लैम्प जल रहे थे ।’’

‘‘हो सकता है, अभी-अभी लाइट गयी हो ।’’

‘‘मैं देखता हूं ।’’ जगदीश नरूला सस्पैंसफुल लहजे में बोला ।

फिर नरूला कॉटेज से बाहर की तरफ बढ़ गया ।

जल्द ही वो वापस लौटा ।

‘‘बाहर तो सबकी लाइट आ रही है ।’’ आते ही उसने धमाका सा किया ।

‘‘फिर यहां क्या हुआ ?’’

‘‘मालूम नहीं ।’’

‘‘ मुझे तो कुछ गड़बड़ लग रही है कमाण्डर !’’ अनिल मोटा सिहर कर बोला ।

तब तक वो राशन का थैला फर्श पर पटक चुका था ।

‘‘कोई गड़बड़ नहीं हुई है ।’’ वह दिलीप मेहरा की दृढ़ता से भरी आवाज थी- ‘‘हमारे पीछे फ्यूज बगैरा उड़ गया होगा। कोई मोमबत्ती तलाश कर जलाओ ।’’

अनिल मोटे ने घुप्प अंधेरे में ही इधर-से-उधर काफी ढूंढकर मोमबत्ती जताई ।

मोमबत्ती जलते ही उसका हल्का पीला प्रकाश कमरे में चारों तरफ फैंल गया ।

‘‘मैं सबसे पहले मेन स्विच देखता हूं ।’’ जगदीश नरूला बोला- ‘‘कि उसके अंदर क्या खराबी हुई है ।’’

जगदीश नरूला जलती हुई मोमबत्ती लेकर कॉटेज के उस गलियारे की तरफ बढ़ा, जहां मेन स्विच लगा था ।

सब उसके पीछे-पीछे चले ।

मेन स्विच के पास पहुंचते ही उन सबकी आंखे फटी-की-फटी रह गयीं । सब मानों दहशत से जड़ हो गये । वहाँ बिजली के काफी सारे तार कटे हुए पड़े थे और उन्हें देखकर लगता था, किसी ने उन्हें जानबूझकर बहुत धारदार प्लायर से काटा हैं ।

‘‘लगता है,’’ कमांडर उन तारों की हालत देखकर फौरन बोला- ‘‘कोई हमारे पीछे कॉटेज में घुसा था।’’

‘‘लेकिन कौन ?’’

‘‘जरूर उदय प्रताप रहा होगा ।’’

उदय प्रताप के नाम पर उन सबके बीच एक बार फिर जबरदस्त आतंक की लहर दौड़ गयी ।

‘‘मगर उदय प्रताप हमारे पीछे कॉटेज में क्या करने के लिये घुसा था ?’’

‘‘यह तो कॉटेज की छानबीन करने के बाद ही मालूम होगा कि उसने यहां क्या खुराफात दिखाई है । पहले लाइट ठीक करो ।’’

जगदीश नरूला और अनिल मोटे ने बड़ी सावधानी के साथ बिजली के उन तारों को जोड़ना शुरू किया । उदय प्रताप ने वह तार बड़ी ही बेदर्दी के साथ काटे थे, इसलिए उन्हें जोड़ने में भी आधा घण्टे से ज्यादा समय लग गया ।

बहरहाल काफी कोशिशो के बाद लाइट ठीक हो गयी ।

लाइट ठीक होते ही उन्होंने उस कमरे की टयूब लाइट जलाई, जो कॉटेज का काफी अंदर का कमरा था और जिसमें जल रही लाइट बाहर से नहीं चमकती थी ।

‘‘जरूर उदय प्रताप ने यहां कुछ और भी गड़बड़ की होगी ।’’ कमांडर ‘डनहिल’ सुलगाते हुए आंदोलित लहजे में बोला- ‘‘यहां शान्तिपूर्वक बैठने से पहले पूरे कॉटेज की एक-एक चीज चैक करो ।’’

सब काफी तनाव में नजर आने लगे थे ।

उन सबने मिलकर कॉटेज की एक-एक चीज को चैक करना शुरू किया ।

वहाँ उन्हें वास्तव में ही ऐसे कई चिन्ह देखने को मिलें, जिससे साबित होता था कि कोई उनके पीछे कॉटेज में घुसा था ।

सारा मामला बड़ा सस्पैंसफुल था ।

‘‘फ्रीज भी खराब पड़ा है ।’’ तभी अनुपमा जोशी ने वहाँ एक और जबरदस्त रहस्योद्घाटन किया ।

‘‘फ्रिज को क्या हुआ ?’’

‘‘मालूम नहीं । लेकिन फ्रिज चल नही रहा ।’’

दिलीप मेहरा ने दौड़कर फ्रीज को देखा। वाकई वो बिलकुल बंद पड़ा हुआ था । उसके अंदर रखी सब्जी खराब हो चुकी थी और बर्फ के टुकड़े पुनः पानी बन गये थे ।

उसने स्टेबलाइजर देखा। वह चालू हालत में था ।

तभी दिलीप मेहरा की निगाह फ्रीज के पीछे पड़ी । वहाँ फ्रीज का कम्प्रेशर खुला पड़ा था और उसके आधे से ज्यादा पुर्जे इधर-उधर बिखरे थे ।

‘‘हे भगवान !’’ दिलीप मेहरा के शरीर में झुरझुरी दौड़ी- ‘‘उसने फ्रीज का कम्प्रेशर खराब कर दिया है ।’’

‘‘लेकिन यह समझ नहीं आ रहा, उदय प्रताप को यह सब करके क्या मिला ?’’

‘‘वह आदमी जरूरत से कुछ ज्यादा ही बुद्धिमान है ।’’कमांडर ‘डनहिल’ का कश लगाते हुए हुए सरसराये लहजे में बोला- ‘‘षड्यंत्र का हर पत्ता वो बहुत सोच-समझकर चल रहा है। उसने फ्रीज इसलिये खराब किया है, ताकि हम अपनी खाद्य सामग्री ज्यादा लम्बे टाइम तक संभालकर न रख सकें । वह हमारी मुकम्मल बर्बादी का सामान कर रहा है

। फिर उसने कम्प्रेशर खराब भी इतनी बुरी तरह किया है, जो उसे ठीक भी नही किया जा सकता ।''

''अब क्या होगा ?''

''अब क्या हो सकता है !'' अब हमें यहां बिना फ्रीज के ही काम चलाना पड़ेगा ।''

तभी अनिल मोटा भागा-भागा वहाँ आया । उसके जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा था और वो बहुत आंदोलित था ।

''तुम क्या खबर लाये हो ?''

''उदय प्रताप ने गैस की पाइप लाइन भी खराब कर दी हैं। मैं किचन में गैस जलाने की बहुत कोशिश कर चुका हूं, परन्तु गैस जल ही नही रही ।''

''बढ़िया !'' अनुपमा जोशी बोली- ''यह आफत सबसे बड़ी है ।''

सब किचन की तरफ दौड़े और उन्होंने गैस की पाइप लाइन को देखा। पाइप लाइन में सचमुच गैस की सप्लाई नहीं थी ।

सबसे ज्यादा खतरनाक बात ये कि उन्हें भी न मालूम हो सका कि उदय प्रताप ने 'गैस' की वो सप्लाई रोकी किस तरह है ।

~~(विशेष नोट- अमरीका में सिलेण्डरों के स्थान पर किचन गैस की पाइप लाइनें बिछी हुई है, जिनके द्वारा गैस घर-घर तक पहुंचती है ।)~~

□□□

वह सब बड़े दहशतजदा आलम में अब ड्रांइगरूम के अंदर जमा थे। कॉटेज में एकाएक जिस तरह के हालातों का उन्हें सामना करना पड़ा था, उसने उन्हें बुरी तरह झकझोर डाला था ।

सब विचलित थे ।

''हमारे लिये मुश्किलें हर पल बढ़ती जा रही हैं मेहरा साहब !'' जगदीश नरूला बोला ।

''सबसे बड़ी बात ये है,'' अनिल मोटे ने कहा- ''कि हमारी तमाम मुश्किलों की जड़ में एक ही आदमी है, उदय प्रताप ! और उस एक अकेले आदमी का हम अभी तक कुछ नहीं बिगाड़ सके। न तो उससे 10 टन सोने का नक्शा ही हासिल कर पाये हैं तथा न ही उससे पवन मल्होत्रा और गंजे उस्मान की मौत का बदला ले सके हैं ।

''मैं आप लोगों से एक सवाल पूछना चाहता हूं ।'' कमांडर पूरी संजीदगी के साथ बोला ।

''पूछिये ।''

सबकी निगाह कमांडर की तरफ उठी ।

‘‘वो सूत्र क्या है, जिनके बल पर पवन मल्होत्रा और गंजा उस्मान, उदय प्रताप को तलाशने के लिये यहां से गये थे ?’’

‘‘वो सूत्र मार्क है ।’’

‘‘मार्क !’’

‘‘हां ।’’

मार्क कौन है ?’’

‘‘मार्क, उदय प्रताप का बड़ा अच्छा अमरीकन दोस्त है ।’’ दिलीप मेहरा ने बताया- ‘‘हालांकि इन दोंनो के स्टेटस में जमीन-आसमान का फर्क है । उदय प्रताप ने जहां न्यूयार्क में रहकर गैरकानूनी तरीके से काफी धन कमाया, वहीं मार्क एक मामूली बेयरा है और ओरियन्टल रेस्टोरेण्ट में नौकरी करता है । दरअसल दोनों के बीच तभी से गहरी दोस्ती है, जब उदय प्रताप भी मार्क की तरह ही एक सड़कछाप आदमी हुआ करता था । वैसे मार्क भी कोई कम चलता पुर्जा नहीं है। बेयरागिरी तो वह सिर्फ आड़ के तौर पर करता है । वास्तव में उसका असली धंधा बाजारू औरतों की दलाली करना है, ओरियन्टल रेस्टोरेण्ट में इधर-उधर घूमते हुए वो ग्राहक फांसता है तथा उन्हें उन औंरतो तक पहुंचाता हैं ।’’

‘‘औरतों की दलाली खाने का यह काम वो कब से कर रहा है ?’’

‘‘कई साल हो गये ?’’

‘‘रहता कहां है ?’’

‘‘वहीं रेस्टोरण्ट के ऊपर मालिकों ने उसे एक कमरा दिया हुआ है, जो उसका ठिकाना हैं । सबसे बड़ी बात ये है कि अपने उस थर्ड केटेगिरी वाले काम के बावजूद उदय प्रताप से उसकी अभी भी जबरदस्त दोस्ती है और यह दोस्ती जरूर इसलिये है, क्यांकि उदय प्रताप भी औरतों का जबरदस्त रसिया हैं ।’’

‘‘यानि उदय प्रताप आज की तारीख में कहां है,’’कमांडर बोला- ‘‘यह कम-से-कम मार्क को जरूर मालूम होगा ।’’

‘‘बिलकुल ।’’

‘‘ठीक है । तो फिर मेरा पहला निशाना अब मार्क ही बनेगा ।’’

‘‘यानि उदय प्रताप तक पहुंचने की दिशा में काम शुरू कमाण्डर ?’’

‘‘बिलकुल शुरू ।’’

सबके चेहरे पर संतोष के भाव उभरे ।

थोड़ी देर बाद ही एक सुखद घटना और घटी ।

पाइप लाइन से गैस गायब होने के कारण उनके सामने ईधन की जो भयंकर समस्या पैदा हो गयी थी, वो हल हो गयी । वहीं कॉटेज के स्टोर में अनुपमा जोशी को एक स्टोव रखा मिल गया तथा केरोसिन ऑयल की एक पूरी भरी हुई कैन रखी मिलि गयी । जो एमरजेन्सी के तौर पर वहाँ रखी गयी थी ।

‘‘चलो ।’’ अनिल मोटा बोला- ‘‘कम से कम खाना बनाने की समस्या तो हल हुई । वरना ऐसे माहौल में तो हमारे भूखां मरने की नौबत आ जाती ।’’

‘‘तुम तो वैसे भी मोटे पेट वाले आदमी हो ।’’ जगदीश नरूला हंसकर बोला- ‘‘सबसे ज्यादा तो तुम्हारी ही बुरी हालत होती ।’’

सब मुस्कुराने लगे ।

कमांडर भी मुस्कुराया ।

□□□

जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी बिस्तर पर एक बार फिर अपना मनपंसद खेल, खेल रहे थे ।

उन दोनों के जवान जिस्म एक-दूसरे से टकराकर चिंगारी-सी पैदा कर रहें थे ।

गरम और दहकती हुई चिंगारी ।

जगदीश नरूला के दोनों हाथ अनुपमा जोशी की जांघो पर टिके हुए थे और सांसे गर्दन से टकरा रही थीं ।

कमरे में सिर्फ जीरो वॉट का एक बल्ब जल रहा था ।

लाल बल्ब !

जिसने माहौल को और भी ज्यादा ‘रंगीन’ बना दिया था ।

तभी उसके होंठ अनुपमा जोशी के होठों से जाकर चिपक गये ।

उस चुम्बन ने उन दोनों के शरीर में और भी ज्यादा जबरदस्त सनसनी मचा दी। जगदीश नरूला का हाथ अब अनायास उसके वक्ष पर पहुंच गया था ।

वक्ष पर पहुंचते ही उसने उसे आहिस्ता से ‘प्रेस’ कर दिया ।

अनुपमा जोशी के होंठो से हल्की सी सिसकारी निकल गयी ।

वह मन-ही-मन मुस्करा उठी। एक मर्द किसी औरत के वक्ष को छुए और उसे ‘करन्ट’ जैसा कुछ महसूस न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता था ।

उसके वक्षों की गुलाबी चोटियां अब जगदीश नरूला को चुनौती देती प्रतीत हो रही थीं ।

तभी नरूला ने अनुपमा जोशी की कमर अपने दोनों बाजुओं में कसकर पकड़ ली तथा होंठ वक्ष से जा सटे ।

उसकी नस-नस में अंगारे भरते चले गये ।

एक जानी-पहचानी सी गुदगुदाहट, जिसके सहन करने के लिये अनुपमा जोशी को अपना निचला होंठ दांतो के बीच दबा लेने पर मजबूर होना पड़ा था ।

जगदीश नरूला का एक हाथ अभी भी उसके दूसरे वक्ष की कठोरता का जायजा ले रहा था ।

जब गुदगुदाहट अनुपमा जोशी की बर्दाश्त से बाहर होने लगी, तो उसने दोनों हाथ जगदीश नरूला के सीने पर रखकर उसे थोड़ा पीछे धकेल दिया ।

यही वो क्षण था, जब हल्की आहट की आवाज सुनकर वह दोनों चौंक पड़े ।

दोनो स्तब्ध !

"लगता है, कोई है ।" अनुपमा जोशी ने घबराकर पलंग की चादर अपने नग्न शरीर के ऊपर खींच ली ।

उसी पल बैड के नीचे से एक काफी मोटा चूहा खड़खड़ करता हुआ निकलकर भागा ।

"हे भगवान!" अनुपमा जोशी का पूरा शरीर एकदम पसीने में लथपथ हो उठा-" मैं तो समझ रही थी, कि कोई आ गया ।"

कुछ ही सैकिण्ड में उसका शरीर ठण्डा पड़ चुका था ।

जगदीश नरूला भी सकपकाया ।

"कुछ भी कहो डियर !" अनुपमा जोशी सिहरकर बोली- "मुझे तो अब इस कॉटेज में और ज्यादा देर ठहरना खतरनाक लग रहा है ।"

"क्यों ?"

"आखिर उदय प्रताप को हमारे इस ठिकाने के बारे में पता लग चुका है । वह दो बार यहां आ भी गया है । न जाने क्यों मुझे ऐसा लग रहा है, वह तीसरी बार भी ज्यादा बड़ा हंगामा करेगा ।"

जगदीश नरूला खामोश रहा ।

अलबत्ता उसने अपना हाथ दोबारा अनुपमा जोशी की जांघ पर रख दिया था ।

"तुम कुछ बोल क्यों नहीं रहे डियर ?"

"सच बात तो यहे है ।" जगदीश नरूला स्थिर लहजे में बोला- "उदय प्रताप से अब मुझे भी डर लगने लगा है। कभी-कभी तो लगता है कि 10 टन सोना हासिल करने का हमारा यह मिशन कभी कामयाब नहीं पायेगा । अब बस कमाण्डर ही हमारी आखिरी उम्मीद बचे हैं, वही कुछ करें, तो करें ।"

अनुपमा जोशी ने फिर कुछ कहने के लिये होंठ खोले ।

"प्लीज...थोड़ी दर के लिये अब यह सारी बातें भूल जाओ ।"

जगदीश नरूला ने अपने दहकते हुए होंठ उसके अधखुले होंठो पर रखे- "भाग्य में जो लिखा है, उससे ज्यादा कुछ नहीं होगा ।"

अनुपमा जोशी कसमसाई ।

फिर उसने भी उसकी इच्छा के सामने समर्पण कर दिया ।

उसका शरीर भी अब बाकायदा अंगीठी की तरफ धधकने लगा था ।

दोनों के बीच मैच आरम्भ हो गया ।

पल भर के लिये वक्त जैसे ठहर गया था। हवा शांत हो गयी थी और कमरे की खामोशी जैसे कोई मादक गीत गुनगुनाने लगी थी ।

जगदीश नरूला ने उसके दोनों वक्षों के बीच में से अपना चेहरा ऊपर उठाया ।

उफ् !

उसका चेहरा मानो कोई दहकता अंगारा बन गया था । आंखो में कामुकता का सैलाब नजर आ रहा था और सांसे भाप बन गयी थी । अनुपमा जोशी उसके चेहरे पर लिखी इबारत साफ-साफ पढ़ रही थी। उसने बरबस ही जगदीश नरूला के माथे का चूम लिया और फिर उसके अधर चेहरे पर फिसलते हुए नरूला के होंठो पर जाकर जम गये। उसी क्षण जगदीश नरूला ने उसे अपनी बांहो में लेर इतनी जोर से भींचा कि अनुपमा जोशी को अपने शरीर की एक-एक हड्डी चटकती महसूस हुई ।

तभी कमरे की लाइट बुझ गयी ।

वहाँ एकदम घुप्प अंधेरा व्याप्त हो गया ।

उस घुप्प अंधेरे में वासना भरी सिसकारियों तथा कराहों का बाजार और भी ज्यादा गर्म होने लगा ।

□□□

'ओरियन्टल रेस्टोरेण्ट' न्यूयार्क के एक काफी आधुनिक इलाके में बना विशाल रेस्टोरेण्ट था ।

जिस वक्त कमांडर करण सक्सेना वहाँ पहुंचा, उस वक्त शाम के सात बज रहें थे और वहाँ अच्छी-खासी भीड़ थी ।

चारो तरफ तेज शोरगुल मच रहा था। रेस्टोरेन्ट में ज्यादातर वेट्रेस थीं, जो शक्ल सूरत से ही बाजारू नजर आ रही थीं और उनकी तमाम हरकतें अश्लीलता से भरी थीं । ग्राहकों को रिझाने के लिये वह जो खुराफातें कर रही थीं, उन खुराफातों ने रेस्टोरेण्ट का माहौल और भी ज्यादा हंगामें से भरा बना दिया था ।

करण सक्सेना बड़ी मुश्किल से अपने लिए एक छोटी-सी खाली टेबिल तलाश कर पाया ।

वो वहीं जाकर पसर गया ।

फौर सत्रह-अठारह साल की बड़े खिलदड़े स्वभाव वाली एक वेट्रेस उसके नजदीक आकर खड़ी हो गयी ।

उसने बहुत बड़े 'लो' कट गले की टॉप तथा माइक्रो मिनी स्कर्ट पहनी हुई थी, जो उस चड्ढी जैसा ही काम कर रही थी । उसकी छातियां अभी अधपकी थी और कच्चे अमरूद जैसी थीं। लेकिन फिर भी वो उन्हें यूं उछाल-उछालकर चल रही थी, मानों किसी पेड़ पर बहुत भारी-भरकम फल लटक आये हों ।

‘‘हैलो सर !’’ वह कमांडर के सामने इतना झुकी कि उसे अंदर तक उसकी घाटियां साफ नजर आयीं- ‘‘मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूं ।’’

कमांडर ने अपने ओवरकोट की जेब से एक पॉच डॉलर का नोट निकालकर सामने टेबल पर रखा ।

‘‘यह नोट अभी और इसी वक्त तुम्हारा हो सकता है बेबी ।’’

वेट्रेस की आंखो में ललचाई बिल्ली जैसी चमक कौंध गयी ।

उसने फौरन झपटकर वह नोट उठाना चाहा ।

लेकिन कमांडर ने उसका हाथ वहीं रोक दिया ।

‘‘अभी नहीं ।’’

लड़की की आंखो में मायूसी के भाव तैरे ।

‘‘इस नोट के बदले में तुम्हें एक मामूली-सा काम करना होगा ।’’

‘‘क्या ?’’

‘‘मार्क यहां जहां कहीं भी हो, उस तक यह सूचना पहुंचा दो कि कोई उससे मिलने आया है ।’’

‘‘ओह !’’ लड़की का चेहरा अब और भी ज्यादा खिल उठा- ‘‘समझी..आप मार्क से क्यों मिलना चाहते हैं। लेकिन जो काम मार्क करेगा, उससे कहीं ज्यादा बेहतर तो आपका वो काम मैं कर सकती हूं । आखिर मैं खुद जो हाजिर हूं । फीस भी ज्यादा नहीं, सिर्फ बीस डॉलर ! आठ घण्टे की सर्विस ! बॉडी तो तीन बार पंच करने की छूट। और अगर ग्राहक की पूरी संतुष्टि न मिले, तो इसी फीस में एक घण्टे का ओवरटाइम भी ।’’ लड़की बड़े मुदित भाव से मुस्कुराई-‘‘इसके अलावा कुछ और बोनस आइटम भी है, जिनकी जानकारी ग्राहक को सर्विस के दौरान ही मिलती हैं ।’’

‘‘लड़की वाकई चालू थी ।

चालू भी और मस्त थी ।

‘‘मुझे अफसोस है बेबी !’’ कमांडर बोला- ‘‘मेरा काम फिर भी सिर्फ मार्क ही कर सकता है ।’’

‘‘क्यों ?’’

लड़की की मुस्कान सिरे से गायब हुई।

‘‘क्योंकि मुझे एक खास तरह की डिश चाहिये, जिसका इंतजाम मार्क ही करेगा । तुम सिर्फ यह बताओ कि तुम पांच डॉलर का यह नोट कमाना चाहती हो या नहीं ?’’

‘‘ओ0के0 ! ओ0के0 ! मैं अभी मार्क को भेजती हूं ।’’

उसने पांच डॉलर का नोट उठाकर अपनी घाटियों में अंदर ठूंस लिया तथा फिर सड़ा सा मुंह बनाकर छुआरे की तरह पिचके हुए कूल्हों को बड़ी स्टाइल के साथ मटकाती

हुए वहाँ से चली गयी। तभी एक दूसरी लड़की वहाँ आकर उसकी टेबल पर लार्ज गमलेट सर्व कर गयी ।

जिसे कमांडर धीरे-धीरे चुसकने लगा ।

रेस्टोरण्ट में वेट्रेस ही ज्यादा थीं। वेटर तो कोई इक्का-दुक्का ही था, जो उस भीड़ में कभी-कभार नजर आता था ।

उनमें मार्क कौन था, यह भी कमांडर को मालूम न था ।

दिलीप मेहरा के पास न तो मार्क की कोई तस्वीर ही थी और न ऐसा कोई पहचान चिन्ह ही उसे मालूम था जिसकी बदौलत मार्क को फौरन गोली की तरह पहचाना जा सकता । उसे सिर्फ इतना बताया गया था कि वह साधारण कद-काठी का आदमी है और उसके बाल हल्के घुंघराले हैं ।

न्यूयार्क शहर में उस तरह की पर्सनेलिटी वाले नौजवान तो लाखों हो सकते थे ।

वेट्रेस भीड़ में कहीं जाकर गुम हो गयी ।

कमांडर शांत भाव से बैठा रहा ।

दस मिनट भी न गुजरे होंगे, तभी तीस-बत्तीस साल का एक नौजवान उसकी टेबल के नजदीक आकर खड़ा हो गया । वह वेटरो वाली सफेद भक्क वर्दी पहने था और उसके सीने पर ओरियन्टल रेस्टोरेण्ट का लाल रंग का काफी बड़ा बैज लगा था ।

''मार्क ?'' कमांडर ने काफी धीमी आवाज में पूछा ।

''यस सर !'' वह बड़े तत्पर लहजे में बोला- ''बताइये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं ?''

''मेरे एक जिगरी दोस्त ने बड़ी तारीफ करके मुझे तुम्हारे पास भेजा है । मुझे दरअसल आज रात के लिये एक बहुत बेहतरीन डिश चाहिये ।''

''बेहतरीन डिश !'' मार्क के होठों पर शरारती मुस्कान रेंगी-''लेकिन बेहतरीन डिश को काफी मंहगा आता है सर ।''

''कोई बात नही ।'' कमांडर ने अपनी जेब से सौ-सौ डॉलर के कई सारे नोट निकालकर उसे दिखाये- ''मेरे पास काफी डॉलर हैं ।''

''वैरी गुड !'' मार्क की आंखो में विलक्षण चमक कौंध उठी- ''फिर तो कुछ भी मुश्किल नहीं । आखिर सब कुछ इन्हीं नोटों को तो खेल है ।''

कमांडर ने डॉलर वापस अपनी जेब में रख लिये ।

उसने गमलेट का एक घूंट सिप किया ।

''मैं एक लड़की को जानता हूं सर !'' वह कमांडर के थोड़ा नजदीक झुक गया और फुसफुसाया- ''बिलकुल हूर है । देखा तो लार घुटनो- घुटनों तक टपकने लगे । न्यूयार्क के एक ब्यूटी कम्पटीशन में उसे 'मिस फोटोजनिक' का खिताब भी मिला था ।''

''बहुत अच्छे ! मुझे ऐसी ही कोई लड़की चाहिये ।''

“कोई बात नहीं ।”

“जगह का इंतजाम है ?”

“उसके सौ डॉलर एक्स्ट्रा ।”

“चलेगा ।”

मार्क अब काफी उत्साहित नजर आने लगा ।

“ठीक है सर।” मार्क बोला- “आप यहीं बैठिये, मैं अभी लौटकर आता हूं ।”

फिर मार्क जिस प्रकार जादू की तरह प्रकट हुआ था, उसी प्रकार गायब हो गया ।

कमांडर गमलेट सिप करता रहा ।

जल्द ही पूरा गिलास खाली हो गया। फिर उसने कुछ नहीं मंगाया और सिर्फ बिल पे किया ।

तभी मार्क भी वापस लौट अया ।

“आपने कुछ और तो नहीं लेना सर ?”

“नहीं ।”

“तो आइए, मैं आपको सबसे पहले जगह दिखाता हूं ।”

“डिश भी आ जायेगा। मैंने आर्डर दे दिया है । आप मेरे साथ आईये ।”

“चलो ।”

कमांडर कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया ।

वो खुद भी यही चाहता था ।

□□□

मार्क, कमांडर को लेकर रेस्टोरेण्ट की छत पर पहुंचा ।

रेस्टोरेण्ट की पिछली तरफ लोहे की सीढ़ियां बनी हुई थीं, जो जंग खाई खस्ता हालत में थीं और छत तक जाने का रास्ता थीं । छत काफी लम्बी-चौड़ी थी। वहाँ एक तरफ छोटे-छोटे चार केबिन बने हुए थे, जबकि सामने एक काफी बड़ा कमरा बना था, वहीं लकड़ी के कुछेक भारी-भरकम लट्ठे भी थे ।

मार्क, कमांडर को लेकर एक केबिन के अंदर दाखिल हुआ ।

केबिल साफ-सुथरा था ।

सामने ही एक मजबूत तख्त पड़ा हुआ था, जिस पर सफेद चाद बिछी थीं ।

वहीं नजदीक के स्टूल पर कुछ कण्डोम के पैकिट पड़े हुए थे। स्त्रियों के कुछ गर्भनिरोधक पड़े थे। एक स्प्रे पड़ा था, जो अभिसार के दौरान पुरूष की घर्षण क्षमता बढ़ाता था। इसी तरह का रतिक्रीड़ा के दौरान काम आने वाला और भी काफी सारा सामान वहाँ था ।

कमांडर करण सक्सेना समझ गया, उन केबिनों का उपभोग सिर्फ इसी तरह के काम के लिये होता था ।

मार्क ने आगे बढ़कर चादर झाड़ी ।

''जगह आपको पंसद आयी सर ?''

''हां, अच्छी है ।'' कमांडर करण सक्सेना एक 'डनहिल' सुलगाता हुआ बोला- ''वैसे भी कोई सारी उम्र तो यहां गुजारनी नहीं है !''

''यह बात आपने बिलकुल ठीक कहीं ।'' मार्क बहुत जोरो से हंसा ।

''लड़की कब तक आयेगी ?''

''मैंने उसे फोन कर दिया है । फिलहाल वो एक ग्राहक के साथ बिजी है । लेकिन कह रही थी, वो जल्द-से-जल्द उसे निपटाकर यहां पहुंचती है ।''

''कितनी देर में ?'''

''मुश्किल से आधा घण्टे में ।'' मार्क पंखे का स्विच भी खोलता हुआ बोला- ''लेकिन डिश ऐसा है सर, उसके सामने छप्पन व्यंजनो से सजी थाली कुछ नहीं । ग्राहक तो उसे देखते ही पागल हो जाते हैं। फौरन गिद्ध की तरह उसके ऊपर झपटते है और आनन-फानन उसके जिस्म का कचूमर निकालने लगते हैं ।''

वह बात कहकर मार्क फिर हंसा ।

वो काफी जिदांदिल नौजवान था । जिदंगी की दुश्वारियों ने उसके ऊपर अपना असर नहीं छोड़ा था ।

''आप आराम से बैठिये सर !''

कमांडर ने 'डनहिल' के कश लगाता हुआ वहीं पड़ी लकड़ी की एक साधारण-सी कुर्सी पर बैठ गया ।

''आप यह बताइये, जब तक लड़की नही आ जाती, तब तक मैं आपकी क्या खातिर करूं? एक लार्ज गमलेट और ले आऊं?''

''ले आओ ।''

''साथ में कुछ और ?''

''कुछ और भी तुम्हें जो अच्छा लगे, ले आना ।''

''ओ0के0 सर ।''

मार्क फिर वहाँ से चला गया ।

कमांडर अपनी पैनी दृष्टि से पूरे केबिन का निरीक्षण करने लगा ।

वो उस वक्त बहुत सावधान था ।

जरूर पवन मल्होत्रा और गंजा उस्मान भी उदय प्रताप को तलाशते हुए किसी-न किसी रूप में वहाँ तक पहुंचे थे और फिर हमेशा-हमेशा के लिये दुनिया से किनारा कर गये थे ।

क्या उन दोनों की मौत के लिये मार्क जिम्मेदार था ?

रहस्य जो भी था, बहुत जल्द उसके ऊपर से पर्दा उठना था ।

तभी मार्क एक लार्ज गमलेट और नमकीन पकौड़े के दो पीस ले आया ।

"लीजिये सर ! " उसने वह दोनों आइटम कमांडर के सामने एक दूसरे स्टूल पर रखें ।

कमांडर ने 'डनहिल' रगड़कर बुझा दी तथा प्लेट में से एक नमकीन पकौड़ा उठा लिया ।

"वैसे कुछ भी कहो, अया शी के लिये यह जगह बहुत लाजबाव है ।"" कमांडर बोला-"दूर-दूर तक खामोशी है । मेरा दोस्त तो इस जगह की तारीफ करते नहीं थकता था ।"

"क्या तुम्हारा दोस्त यहां आया था ?"

"कई बार आया था। बल्कि वह तो तुम्हारा रूटीन कस्टूमर था, हमेशा तुम ही उसे लड़की सप्लाई करते थे।"

"नाम क्या था उसका ?"

"नाम से तो शायद ही तुम उसे जानते होओ ।" कमांडर ने गमलेट का एक घूंट भरा और पकौड़े को दांतो से चबाया- "वैसे लड़कियों का बड़ा पूरा शौकीन था । रोज नई-नई मेमे फांसता था। जिदंगी में उसने सारे काम ही उल्टे-सीधे किये थे । सैकड़ो के हिसाब से लड़किया फिट की थीं और आड़े-तिरछे धंधो से खूब नांवा पीटा था । अब एक महीने से पता नहीं वो कहां गायब हैं ।"

"देखने में कैसा था तुम्हारा दोस्त ! मेरा मतलब है, उसके व्यक्तित्व में ऐसी कोई तो खूबी होगी, जिसके बयान करने से मुझे उसकी याद आ जाये ?"

"ऐसी तो उसके व्यक्तित्व में कई खूबियां थी ।" कमांडर बोला- "बल्कि उन्हें 'नुक्स' कहना ज्यादा मुनासिब होगा ।"

"नुक्स !"

"हां । जैसा कि वो थोड़ा-थोड़ा लंगड़ाकर चलता था । कभी उसके घुटने की कटोरी में एक गोली लग गयी थी, बस तभी से उसकी टांग में वो नुक्स पैदा हो गया ।"

"यानि तुम्हारा दोस्त लंगड़ा था ।"

"पूरी तरह लंगड़ा तो नहीं कह सकते ।" कमांडर बोला- "हां थोड़ा नुक्स जरूर था उसकी टांग में । लहरा-लहराकर तो चलता ही था ।"

"कोई और बात ।"

"एक बात और थी ।"

"क्या ?"

"वो अस्थमें का भी मरीज था ।"

"अस्थमा !"

"यानि दमा ! सांस बहुत जल्दी-जल्दी उखड़ता था उसका। खांसी के तेज ठसके उठते थे। इसीलिये थोड़ी-थोड़ी देर बाद उसे 'अस्थलीन इन्हेलर' के द्वारा गैस अपने मुंह में स्प्रे करनी पड़ती थीं ।"

मार्क अब चौंककर कमांडर की सूरत देखने लगा ।

उसके चेहरे पर घोर विस्मय के चिन्ह उभर आये ।

"नाम क्या था तुम्हारे दोस्त का ?"

"मैंने कहा न, तुम उसे नाम से नहीं जानतें होओगे।"

"फिर भी ।"

"उदय प्रताप नाम था ।"

मार्क फौरन झटके के साथ कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया और उसने जोर से अपने सिर पर हाथ मारा ।

"माई गॉड ! एक बला और आ टपकी ।"

"बला, कैसी बला ?"

"खड़े होओ !" मार्क चिल्ला उठा- "और दफा हो जाओ यहां से ! वरना मैं तुम्हें अभी धक्के मार-मारकर सीढ़ियों से नीचे फेंक दूंगा ।"

"यानि तुम यह कबूल करते हो !" कमांडर ने मुस्कुराते हुए गमलेट का आखिरी घूंट भरकर गिलास स्टूल पर रखा- "कि तुम न सिर्फ उदय प्रताप को अच्छी तरह जानते हो बल्कि उसने हाल-फिलहाल में जो खुराफातें दिखाई हैं, उनसे भी खूब अच्छी तरह वाकिफ हो ।"

"मैं किसी उदय प्रताप को नहीं जानता और मैंने कहा न, तुम दफा हो जाओ यहां से। तुम्हारे जैसे खंडूस लोगों के लिये मेरे पास कोई लड़की नहीं है ।"

"मुझे लगता है ।" कमांडर कुर्सी छोड़कर खड़ा हुआ- "तुम पवन मल्होत्रा को भी अच्छी तरह जानते हो, जो थोड़े दिन पहले ही उदय प्रताप को तलाश करता हुआ यहां आया था और फिर उसकी लाश समुद्र में तैरती पाई गयी ।"

"मैं किसी पवन मल्होत्रा को नहीं जानता ।"

"तुम गंजे उस्मान को भी जरूर जानते होओगे ।"" कमांडर धाराप्रवाह बोला- "वो भी उदय प्रताप को तलाश करता-करता यहां आ गया था, और फिर उसका शरीर भी रेलवे लाइन की पटरियों पर बुरी तरह कटा हुआ पाया गया । इतना ही नहीं, उदय प्रताप के साथ-साथ तुम भी उन दोनों की हत्याओं में शरीक थे। तुमने अपने दोस्त के साथ मिलकर उन निर्दोष और बेकसूर लोगां की मौत का प्रपंच रचा था ।"

"मैंने किसी की मौत का प्रपंच नहीं रचा ।" मार्क गुर्रा उठा- "पुलिस जानती है, पवन मल्होत्रा की हत्या नहीं हुई थी । बल्कि उसने खुद समुद्र में कूदकर मौत को गले

लगाया था । तमाम अखबारों में उसकी आत्महत्या की खबरें छपी थीं । और गंजे उस्मान ने भी आत्महत्या की थी । वो भी जानते-बूझते रेल के नीचे आकर कटा था ।''

''एक बात अच्छी तरह समझ लो मार्क ! ''

''क्या ?''

''तुम्हारे और उदय प्रताप के द्वारा रची गयी इन कहानियों से अमरीकन पुलिस ही बेवकूफ बन सकती है ।'' कमांडर ने दांत किटकिटाये- ''लेकिन मैं झूठ के इस भ्रमजाल में फंसने वाला नहीं हूं ।''

''यह कोई भ्रमजाल नहीं है ।''

''यह भ्रमजाल ही है । सच्चाई ये है उन दोनों को तुम लोगों ने मारा और उनकी मौत को नया मोड़ देने के लिये 'आत्महत्या' वाला नाटक पैदा कर दिया । जो कम से कम पुलिस की निगाह में सफल भी रहा ।

''मेरे तो कुछ समझ नहीं आ रहा ।'' मार्क झुंझलाकर बोला- ''कि तुम क्या कह रहें हो ।''

''तुम्हारी कुछ समझ में आना भी नहीं चाहिये । क्योंकि तुम्हारे जैसे शैतान आदमी अगर सब कुछ इतनी आसानी से समझने लगे, तो उन्हें शैतान ही कौन कहें !''

''तुम आखिर चाहते क्यो हो?''

''मैं फिलहाल उदय प्रताप का पता जानना चाहता हूं कि वो बद्जात आदमी इस वक्त कहां है ।''

''मुझे नहीं मालूम, वो कहां है। और वाई गॉड, अगर मुझे कुल मालूम भी होता, तब भी मैं उसके बारे में तुम्हें कुछ नहीं बताता ।''

''क्यों ?''

''क्योंकि मैं उदय प्रताप को खूब अच्छी तरह जानता हूं । वो बहुत खतरनाक आदमी है । कोई भी समझदार आदमी उससे दुश्मनी मोल नहीं लेना चाहेगा ।''

''तुम्हें मुझसे खतरा नहीं ?''

'' तुमसे क्या खतरा हो सकता है !'' मार्क हंसा- ''बल्कि तुम्हारे ऊपर तो मुझे दया आ रही है । तुम नहीं जानते, जिस तरह उदय प्रताप को तलाश करते-करते तुम आज यहां आये हो, उसी तरह उसे तलाश करते-करते कभी पवन मल्होत्रा यहां आया था, गंजा उस्मान यहां आया था। और फिर उनकी लाश ही अलग-अलग स्थानों पर पड़ी पाई गयी। तुम्हें यकीन नहीं आयेगा, लेकिन यह सच है कि मैं भी उन दोनों की मौत को आज तक आत्महत्या का ही मामला समझ रहा था। मगर अब तुम्हारी बात सुनकर लगता है कि उन दोनों की मौत के पीछे उदय प्रताप का हाथ भी हो सकता है। और अगर यह सच है, तो अब तुम्हारी भी खैर नहीं। तुम भी अब अपनी इस जिदंगी का जहूरा खत्म हुआ समझो ।''

''तुम मुझे धमकी दे रहे हो? '' कमांडर करण सक्सेना कर्कश लहजे में बोला ।

“नहीं, धमकी नहीं दे रहा।”

“फिर ?”

“मैं तुम्हें उदय प्रताप के जालो-जलाल से वाकिफ करा रहा हूं । उस लंगड़े आदमी की उसस शख्सियत से परिचय करा रहा हूं, जिससे अभी तुम वाकिफ नहीं लगते ।”

कमांडर अब बड़ी अनिश्चय-सी स्थिति में मार्क की सूरत देखने लगा। एकाएक उसकी बातों ने उसे उलझाकर रख दिया था ।

कमांडर फैसला न कर सका..मार्क की बातों पर उसे विश्वास करना चाहिये या नहीं ?

□□□

फिर कमांडर करण सक्सेना ने एक नया हथकण्डा इस्तेमाल किया ।

उसने सौ डॉलर के दस नोट निकालकर अपने हाथो में ले लिये ।

“देखो मार्क !” कमांडर बोला- “मैं नहीं जानता कि तुम क्या कह रहे हो । लेकिन अगर तुम मुझे उदय प्रताप का पता बता दो, तो यह एक हजार डॉलर इसी वक्त तुम्हारे हो सकते है ।”

एक हजार डॉलर देखकर मार्क की आंखो में लालच की चमक आ गयी ।

लेकिन जितनी तेजी से उसकी आंखो मे वो चमक पैदा हुई थी, उतनी ही तेजी से गायब भी हुई ।

“पता तो मैं तुम्हें तब बताऊं मिस्टर !” मार्क बोला- “जब आज की तारीख में मुझे खुद उदय प्रताप के बारे में कुछ मालूम हो ।”

कमांडर ने सौ-सौ डॉलर के दस नोट और उन नोटों में मिला दिये ।”

“मैं तुम्हें दो हजार डॉलर दूंगा ।”

“दो हजार डॉलर !” मार्क के मुंह से तेज सिसकारी छूटी ।

“यस !”

“बाई गॉड !” मार्क अपने सिर पर हाथ रखकर बोला- “अगर मुझे उदय प्रताप का पता मालूम होता, तो मैं इतने नोटों के ऐवज में तुम्हें जरूर बताता। तुम नहीं जानते, मुझे आज की तारीख में नोटों की कितनी सख्त जरूरत हैं । लोगों से उधार ले-लेकर बड़ी भारी रकम मैंने अपने सिर पर चढ़ा रखी है और अब वह लोग मेरी ऐसी-तैसी पीट रहें हैं ।”

न जाने क्यो मार्क, कमांडर को सच बोलता हुआ लगा ।

“उदय प्रताप को तुमसे मिले हुए कितना वक्त गुजर गया ? ”

“कोई महीना भर हो गया ।”

महीना भर !

इतने ही समय से वह 10 टन सोने के नक्शे के साथ गायब था ।

"आखिर बार वो तुमसे कहां मिला था ?"

"यहीं मिला था ।" मार्क ने बताया- "दोपहर के वक्त उसका नीचे रेस्टोरण्ट में मेरे पास फोन आया था कि मैं उसके लिये किसी बहुत खुराफाती सी लड़की का बंदोबस्त करके रखूं, वह रात के नौ बजे यहां पहुंचेगा । फिर वायदे के मुताबिक वो रात के नौ बजे यहां आया था फिर रात यहीं ठहरा । उसके बाद सुबह चला गया। फिर उसका कुछ पता नहीं ।"

"उसके बाद उदय प्रताप का कोई फोन भी नहीं आया ?"

"न ।"

"किसी तरह की उसके सम्बन्ध में कोई सूचना मिली हो ?"

"कोई सूचना नहीं मिली ।"

"रहता कहां था उदय प्रताप ?"

"यहीं न्यूयार्क में उसका एक गुप्त हाइडोन था, उसी में रहता था। कोई पंद्रह दिन पहले मैं उसकी खैर-खबर लेने के इरादे से वहाँ भी गया था, परन्तु वहाँ ताला पड़ा हुआ मिला। पता चला, कुछ दिन पहले वहाँ पुलिस ने छापा मारा था, बस तभी से उदय प्रताप भी वहाँ नहीं लौटा था ।"

अजीब चक्कर है !

कमांडर को अपने मस्तिष्क की नसें ठस्स होती महसूस हुई ।

"उदय प्रताप का कोई और पता-ठिकाना ?"

"कोई नहीं ।"

वह शब्द बोलते-बोलते एकाएक मार्क कुछ हिचकिचाया ।

"क्या हुआ ?"

"उसका एक ठिकाना और है ।" मार्क को जैसे कुछ याद आया- "लेकिन मैं नहीं समझता कि उदय प्रताप वहाँ गया होगा ।"

"कौन सा ठिकाना है ?"

मार्क ने बड़ी ललचाई निगाहों से कमांडर के हाथ में मौजूद डॉलरों की तरफ देखा ।

कमांडर समझ गया, वो क्या चाहता है। उसने फौरन सौ-सौ डॉलर के पांच नोट मार्क की तरफ बढ़ा दिये।

"न्यूयार्क से काफी दूर जंगली इलाके में एक बहुत बड़ा मेंशन बना हुआ है ।" पांच सौ डॉलर जेब में पहुंचते ही मार्क टेपरिकार्डर की तरह बजने लगा- "जो रेड मेंशन के नाम से विख्यात है। कभी उदय प्रताप ने उस मेंशन को बिलकुल कौड़ियो के दाम खरीदा था । दरअसल उस मेंशन के बारे में यह अफवाह फैली हुई थी कि वहाँ भूतो का बसेरा है । मगर उदय प्रताप को इस तरह की बकवास बातों पर कोई विश्वास न था। उसने मेंशन खरीद लिया । वह मुझसे अक्सर कहता था, उसका सपना है कि कभी वो उस मेंशन को तोड़कर

वहाँ अपने लिये एक आलीशान घर बनवायेगा। हो सकता है, उदय प्रताप अपने उसी मेंशन में गया हो । लेकिन मैं अपनी बात फिर दोहरा रहा हूं, इस बात की संभावना बहुत कम है ।"

"इस 'रेड मेंशन' तक पहुंचने के लिये कौन सा रास्ता है ?"

"रास्ते के बारे में मुझे कुछ नहीं मालूम । कभी उदय प्रताप से इस सम्बन्ध में ज्यादा बात हीं नहीं हुई ।"

किसी और ऐसे आदमी के बारे में जानते होओ, जिससे उदय प्रताप के बारे में कोई कन्फर्म रिपोर्ट हासिल हो सकती हो ?"

"आदमी के बारे में तो नहीं ।" मार्क कुछ सोचना हुआ बोला- "अलबत्ता ऐसी लड़की के बारे में, मैं जरूर जानता हूं, जो उदय प्रताप के विषय में कोई-न-कोई नई जानकारी जरूर दे सकती हैं ।"

"लड़की !" कमांडर के कान खड़े हो गये- "कौन लड़की ?"

"वह उदय प्रताप की प्रेमिका है ।" मार्क एक बिलकुल नया रहस्योद्घाटन करता हुआ बोला- "और उसका नाम नीलू है ।"

"नीलू ! यह नीलू कहां रहती है ?"

"उसका घर का एड्रेस तो मुझे नहीं मालूम । अलबत्ता उसका टेलीफोन नम्बर जरूर पता है । नीलू अक्सर उदय प्रताप से बात करने के लिये मेरे पास फोन करती रहती थी । इसीलिये उसने मेरे पास अपना टेलीफोन नम्बर भी छोड़ा हुआ था, ताकि उदय प्रताप जब यहां आये तो मैं उसकी नीलू से बात करा सकूं ।"

"नीलू का टेलीफोन नम्बर क्या है ?"

मार्क ने अपनी जेब से एक छोटी सी टेलीफोन डायरी निकाली और फिर नीलू का नम्बर उसे बताया ।

कमांडर ने नम्बर नोट कर लिया ।

"नीलू को पहचानने का तरीका क्या है ?"

"उसकी एक तस्वीर मेरे पास है, मैं अभी अपने सामने वाले कमरे में से तुम्हें वो तस्वीर लाकर देता हूं । बल्कि उस तस्वीर में उदय प्रताप भी नीलू के साथ खड़ा है ।"

कमांडर के शरीर में रोमांच की लहर दौड़ गयी ।

पहली बार वो 'उदय प्रताप' को भी देखने वाला था ।

'मैं बस अभी आया ।"

मार्क तस्वीर लाने के लिये केबिन से चला गया ।

जरूर रेस्टोरेण्ट की छत पर सामने जो बड़ा-सा टीन शैड वाला कमरा बना हुआ था, उसी में मार्क रहता था ।

कमांडर वापस कुर्सी पर बैठ गया और मार्क के वापस आने की प्रतीक्षा करने लगा ।

दो मिनट भी न गुजरे होंगे, एकाएक वह सारा वातावरण किसी इंसान की बहुत वीभत्स और हृदयग्राही चीख से गूंज उठा ।

वह मार्क के चीखने की आवाज थी ।

कमांडर एकदम बिजली जैसी अद्वितीय फुर्ती के साथ कुर्सी छोड़कर खड़ा हुआ और झपटकर केबिन से बाहर निकला ।

इतनी ही देर में उसके हाथ में अपनी कोल्ट रिवाल्वर भी आ चुकी थी ।

रिवाल्वर हाथ में आते ही उंगलियो के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी। उसी क्षण कमांडर करण सक्सेना के कानों में छत पर किसी के बड़ी तेजी के साथ दौड़ने की आवाज पड़ी और फिर धड़ाधड़ किसी के लोहे की सीढ़ियां उतरने की आवाज आयी । चारों तरफ तब तक इतना ज्यादा अंधेरा फैल चुका था कि कमांडर को कुछ भी स्पष्ट न दिखाई दिया ।

कमांडर भागता हुआ सामने वाले कमरे में पहुंचा ।

कमरे का दरवाजा चौपट खुला पड़ा था ।

लाइट जल रही थी ।

कमरे में घुसते ही कमांडर के नेत्र दहशत से फटे-के-फटे रह गये ।

सामने फर्श पर ही मार्क की खून से लथपथ लाश पड़ी थी । किसी ने लम्बे फल वाला धारदार चाकू उसके ठीक दिल में अंदर तक पेबस्त कर दिया था और खून का काफी बड़ा तालाब उसके मुर्दा जिस्म के आसपास बन गया था ।

तभी कमांडर ने किसी कार के जोरदार ढंग से इंजन गरजने की आवाज सुनी ।

कमांडर कमरे से बाहर निकला और दौड़ता हुआ लोहे की सीढ़ियां के करीब पहुंचा ।

वो वही काले रंग की कार थी, जिसने कभी अनिल मोटे का और उसका पीछा किया था । देखते-ही-देखते वो कार उसकी नजरों से ओझल हो गयी ।

हत्यारा भाग निकला था ।

कमांडर रिवाल्वर हाथ में लिये-लिये वापस कमरे में आया। सामने एक लकड़की की अलमारी खुली पड़ी थी और उसमें रखा काफी सारा सामान इधर-से-उधर फैला हुआ था । कुछ कागज फैले थे और नीचे फर्श पर ही एक फोटो एलबम खुली पड़ी थी ।

कमांडर ने रिवाल्वर वापस अपनी जेब में रखी और फोटो एलबम उठा ली ।

फिर उसने जल्दी-जल्दी पूरी एलबम के फोटोग्राफ देखे ।

उसमें नीलू और उदय प्रताप का फोटोग्राफ कहीं न था । जरूर उसी एक फोटोग्राफ के लिये मार्क की जान ले ली गयी थी और आततायी वो महत्वपूर्ण फोटोग्राफ अपने साथ लेकर भाग खड़ा हुआ था ।

अब ज्यादा देर वहाँ रूकना मुनासिब नहीं था ।

वहाँ खून हो चुका था । अगर किसी ने उसे वहाँ देख लिया, तो उसकी मुसीबत आ सकती थी ।

कमांडर निराश मुद्रा में लोहे की सीढ़ियां उतरता हुआ नीचे पहुंचा तथा फिर अंधेरे का ही एक हिस्सा बन धीमे-धीमे कदमों से आगे की तरफ बढ़ गया ।

उसी क्षण उसने लोहे की सीढ़ियों के पास एक टैक्सी रूकते देखी और उसमें से एक अंग्रेज लड़की को उतरते देखा ।

लड़की वाकई उम्दा क्वालिटी की डिश थी ।

बेहद खूबसूरत !

मार्क ने उसके बारे में यह बिलकुल भी गलतबयानी नहीं की थी कि लड़की हूर है । मर्दो की तो उसे देखते ही लार घुटनों-घुटनों तक टपकने लगती है ।

उसके जिस्म की रंगत बिलकुल दूध जैसी थी । बाल सुनहरी रंग से डाई किये गये थे। यौवन कलश काफी बड़े-बड़े थे और उसकी आंखो में वासना का तूफान घुमड़ रहा था ।

उस वक्त उसने ढीला-ढाला लाउजिंग पाजामा पहना हुआ था और जितनी तरो-ताजा वो नजर आ रही थी, उसे देखकर बिलकुल भी नहीं लगता था कि वो अभी-अभी किसी मर्द का बिस्तर गरम करके आ रही हैं ।

उसका जन्म ही मानों सहवास क्रिया के लिये हुआ था ।

लड़की ने टैक्सी से उतरकर टैक्सी का किराया चुकाया और फिर लम्बे-लम्बे डग रखती हुई लोहे की सीढ़ियों की तरफ बढ़ गयी ।

कमांडर समझ गया, कुछ ही सैकिण्डों में वहाँ अब भूचाल आने वाला है ।

उसके कदमों में और भी ज्यादा तेजी आ गयी ।

□□□

कॉटेज में सब अपने-अपने स्थान पर सन्न बैठे रह गये ।

भौचक्के !

''यानि उदय प्रताप ने एक हत्या और कर डाली ।'' दिलीप मेहरा के मुंह से तीव्र सिसकारी छूटी ।

''बिलकुल ।'' कमांडर करण सक्सेना ने 'डनहिल' का एक छोटा-सा कश लगाया-''और इस बार उदय प्रताप का निशाना मार्क बना है, उसका अपना दोस्त ! इससे पहले कि मार्क अपने कमरे में से फोटोग्राफ लाकर मुझे देता, उदय प्रताप वहाँ पहुंच गया और उसने उसकी जान ले ली ।''

''क्या वो उदय प्रताप ही था ?'' अनिल मोटा बोला ।

‘‘उसके अलावा दूसरा कौन हो सकता है ! फिर मैंने घुप्प अंधेरे में छत पर किसी के दौड़ने की आवाज सुनी थी और उसके बाद धड़ाधड़ किसी के सीढ़ियां उतरने की आवाज भी सुनी। उस दौड़ने की आवाज में लड़खड़ाहट थी, जो किसी लगड़े आदमी की अव्यवस्थित पद्चापों के कारण पैदा हो सकती है ।’’

‘‘वह जरूर उदय प्रताप ही होगा ।’’ जगदीश नरूला फुंफकारकर बोला- ‘‘कोई उस जैसा संगदिल आदमी ही अपने इतने घनिष्ठ दोस्त के सीने में छुरा घोंप सकता है । आखिर यही छुरा घोंपने का काम तो वह हमारे साथ भी कर रहा है ।’’

‘‘मार्क से उदय प्रताप के बारे में कुछ और बातें मालूम हुई है ?’’ दिलीप मेहरा ने पूछा ।

‘‘हां, कुछ नई बातें पता चली ।’’

‘‘जैसे ?’’

‘‘जैसे कि उदय प्रताप ने कुछ साल पहले न्यूयार्क से बाहर एक काफी बड़ा मेंशन बिल्कुल कौड़ियों के दामों में खरीदा था, जिसे रेड मेंशन के नाम से पुकारा जाता है । उदय प्रताप की ख्वाहिश थी कि वो उस मेंशन को तोड़कर वहाँ अपने लिये एक आलीशान घर बनवायेगा। जहां तक मैं समझता हूं, उदय प्रताप उस मेंशन में छिपा हो सकता हैं । अलबत्ता मार्क उसकी वहाँ उपस्थिति से इंकार कर रहा था। फिर मार्क को उस मेंशन का बिल्कुल सही-सही एड्रेस भी मालूम नहीं था, वो न्यूयार्क से बाहर किस इलाके में है ।’’

‘‘फिर क्या बात बनी ?’’

कमांडर खामोश रहा ।

‘‘इसके अलावा मार्क से एक नई जानकारी और हासिल हुई ।’’

कमांडर ‘डनहिल’ का एक छोटा-सा कश लगाते हुए बोला ।

‘‘क्या ?’’

‘‘जैसे कि उदय प्रताप की नीलू नाम की कोई प्रेमिका भी है । मार्क ने बताया, उदय प्रताप के बारे में फिलहाल नीलू से ही कोई सॉलिड जानकारी हासिल हो सकती है । उसने मुझे नीलू का टेलीफोन नम्बर भी दिया । मैंने फोन नम्बर से टेलीफोन डायरेक्ट्री में नीलू के घर का एड्रेस तलाश किया, तो पता चला कि वो लिंकन रोड के प्रिंस अल्बर्ट कम्पाउण्ड के पांच नम्बर फ्लैट में रहती है ।’’

‘‘वहाँ गये थे ?’’

‘‘फिलहाल वही से आ रहा हूं । लेकिन इस वक्त नीलू के घर पर ताला पड़ा हुआ है । कल फिर वहाँ जाकर ट्राई करूंगा ।’’

‘‘यानि अब अगला निशाना नीलू है ।’’

‘‘हां ।’’

तभी तौलिये से हाथ साफ करते हुए अनुपमा जोशी ने वहाँ कदम रखे।

“अगर आप लोगों की बातें खत्म हो गयी हो,” वो चेहरे पर आगे को झूल आयीं बालों की लट पीछे करते हुए बोली- “तो मैंने खाना डायनिंग टेबल पर लगा दिया है, इससे पहले कि वो ठण्डा हो, आप सब लोग उसे खा लें।”

“चलो भाई, चलो ।” अनिल मोटा सबसे पहले कुर्सी छोड़कर खड़ा हुआ- “खाना खाते हैं ।”

सब अनिल मोटे के साथ-साथ कुर्सी छोड़कर खड़े हुए ।

□□□

वह एक गोल कमरा था, जो कॉटेज का डायनिंग हॉल था ।

डायनिंग हॉल के बीचो-बीच एक बिलकुल काली आबनूस की लकड़ी से बनी हुई काफी बड़ी गोल मेज बिछी थी, फिलहाल उसी गोल मेज के इर्द-गिर्द वह सब जमा थे ।

अनुपमा जोशी ने आज बंगाली व्यंजन दाल भात बनाया था, जो काफी स्वाष्टि था ।

“सच बात तो ये है ।” दिलीप मेहरा भोजन करते हुए बोला- “मुझे फिलहाल एक ही बात की फिक्र सता रही है ।”

“किस बात की ?”

“10 टन सेने की ।”

“क्यों ?”

“क्योंकि उदय प्रताप को नक्शा लेकर गायब हुए काफी दिन गुजर चुके हैं कमाण्डर !” दिलीप मेहरा बोला- “मैं समझता हूं, वो फिलहाल पूरे तन-मन से अटलाटिंक महासागर में से 10 टन सोने को निकालने के प्रयासों में जुटा होगा, और जितनी देर हमें हो रही है, उस सबका फायदा उसे पहुंचना हैं ।”

“चिन्ता मत करो ।” कमांडर बोला- “उदय प्रताप की गर्दन अब हमारे शिकंजे से ज्यादा दूर नहीं है । वो यह आंख-मिचौली का जो खेल, खेल रहा है, यह खेल कोई बहुत लम्बे समय तक नहीं चल पायेगा ।”

तभी जगदीश नरूला खाना खाता-खाता उठा और वहीं डायनिंग हॉल के अंदर बिग ब्रेकेट में रखे टेलीविजन सैट की तरफ बढ़ा ।

“तुम क्या कर रहें हो ?” अनुपमा जोशी बोली ।

“फरार अपराधियों से सम्बन्धित प्रोग्राम आ रहा होगा ।” जगदीश नरूला ने बताया “देखते है कि आज प्रोग्राम में हम चारों की तस्वीर दिखाई जाती है या नहीं ?”

जगदीश नरूला ने टेलीविजन ऑन कर दिया और फिर चैनल मिलाया ।

प्रोग्राम शुरू हो गया था ।

यह देखकर उन्हें धक्का लगा, उस दिन भी उन चारों की तस्वीरें प्रोग्राम में दिखाई गयीं ।

□□□

प्रिंस अल्बर्ट कम्पाउण्ड वाकई एक बहुत विशाल कम्पाउण्ड था और वहाँ काफी ऊंची-ऊंची मल्टी स्टोरी बिल्डिंग बनी हुई था- जिनमें फ्लैट्स थे। नीलू का फ्लैट ग्राउण्ड फ्लोर पर ही था । सुबह के ठीक नौ बज रहें थे, जब कमांडर करण सक्सेना वहाँ पहुंचा और उसने द्वार पर लगी कॉलबैल पुश कर दीं ।

उस वक्त दरवाजे पर ताला नहीं पड़ा हुआ था ।

एक लगभग पच्चीस-छब्बीस साल की बड़ी ही साधारण शक्ल सूरत वाली लड़की ने दरवाजा खोला ।

वो बहुत पतली-दुबली थी ।

अगर वो नीलू थी, तो कमांडर के लिए यह वाकई बड़ी हैरानी की बात थी कि उदय प्रताप ने आखिर उसमें ऐसा क्या देखा था, जो उस ठूंठ-सी औरत के साथ मोहब्बत जैसा रिश्ता कायम किया । क्योंकि ऐसी कल्पना मुश्किल से ही की जा सकती है कि ऐसे पिचके हुए वक्ष वाली लड़की में काम-वासना की कोई बहुत ज्यादा उदीप्त भावनायें भी भड़कती होंगी ।

नीलू एक वर्मी मां-बाप की सन्तान थी और फिलहाल न्यूयार्क की ही एक प्राइवेट कन्सर्न में स्टेनो की नौकरी करती थी ।

''कहिये !'' उस लड़की की आंखो में अपने सामने एक अजनबी को खड़े देखकर सवालिया निशान उभरे ।

''गुड मार्निंग मैडम !'' कमांडर गंभीर स्वर में बोला- ''आर यू मिस नीलू ?''

''यस ।''

कमांडर की हैरानी बढ़ गयी ।

वो छेपटी-सी लड़की वाकई नीलू थी ।

''मेरा नाम करण है । मैं उदय प्रताप का हिन्दुस्तानी दोस्त हूं और फिलहाल उससे मिलने यहां आया हूं । कभी उसने मुझे मिलने के लिये यहीं का पता दिया था ।''

''कब ?''

''काफी टाइम गुजर गया ।''

नीलू के चेहरे पर गहरी निराश के भाव उभरे । न जाने क्यों उसकी आंखो में नमी तैर गयी ।

''आइये, अंदर आइये ।''

''क्या उदय प्रताप अंदर मौजूद है ?''

''आप आइये ! ''

फ्लैट काफी सुंदर ढंग से सजाया गया था। हर चीज बहुत सलीके के साथ अपनी जगह मौजूद थी।

"उदय प्रताप अब आपसे कभी नहीं मिल पायेगा।" वो बहुत भाव-बिह्नल स्वर में बोली।

"क्या मतलब ?"

"उदय प्रताप अब इस दुनिया में मौजूद नहीं है। वो मर चुका है।"

कमांडर के दिल-दिमाग पर भीषण वज्रपात हुआ।

वो हतप्रभ रह गया।

"उदय प्रताप मर चुका है !"

"हां।"

"लगता है, आपसे समझने में गलती हो रही है मैडम। आपका नाम नीलू ही है न ?"

"हां, मैं नीलू ही हूं।" वो संजीदा लहजे में बोली- "वही नीलू, जिससे उदय प्रताप ने ढेर सारा प्यार किया था, जिसके साथ शादी करने का सपना देखा था।"

कमांडर को अब अपने पैरों के नीचे से धरती खिसकती अनुभव हुई।

"और आप कह रही है।" कमांडर बोला- "उदय प्रताप मर चुका है।"

"जी हां।"

"हे भगवान ! ऐसा कैसे हो सकता है।"

"ऐसा ही हुआ है।"

"उसे स्वर्ग सिधारे कितना समय हो गया ?"

"आज पूरा एक महीना हो चुका है।"

□□□

कमांडर करण सक्सेना अब नीलू के सामने एक कुर्सी पर बिलकुल सकते जैसी अवस्था में बैठा था।

उसके हाथ-पैर ठण्डे पड़ गये थे।

दिमाग में अश्चर्य के अनार छूट रहे थे।

वो अभी भी इस बात पर यकीन नहीं कर पा रहा था कि उदय प्रताप मर चुका है। जिस उदय प्रताप के कारण इतना बड़ा हंगामा हो रहा था, वो उदय प्रताप कैसे मर सकता था।

मतलब ही नही था।

"आप कुछ लेंगे ?" नीलू बर्फ जैसे ठण्डे स्वर में बोली- "मेरा मतलब है...कोल्ड ड्रिंक ! कॉफी !"

''नहीं, फिलहाल मेरा कुछ भी लेने का मन नहीं है । मुझे तो यकीन ही नहीं हो रहा है, उदय प्रताप अब इस दुनिया में नहीं है ।''

''अब यकीन न करने जैसी कोई बात ही नहीं बचती मिस्टर। वैसे आप उदय को कैसे जानते थे ?''

कमांडर को उस सवाल का एकाएक कोई जबाव न सूझा ।

''यहीं न्यूयार्क में मेरे कुछ हिन्दुस्तानी दोस्त थे।'' कमांडर कुछ विचार कर बोला- ''उन्हीं की मार्फत मेरी उदय प्रतापप से भी दोस्ती हो गयी थी।''

''आप किन हिन्दुस्तानी दोस्तों की बात कर रहें है ? दिलीप मेहरा, जगीदश नरूला, गंजा उस्मान, अनिल मोटा और अनुपमा जोशी बगैरा ।''

कमांडर करण सक्सेना के नेत्र आश्चर्य से फटे-के-फटे रह गये ।

''आप उन सबको जानती है मैडम ?''

''नहीं, वैसे रू ब रू तो नहीं जानती। लेकिन उदय प्रताप ही अक्सर अपने उन हिन्दुस्तानी मित्रों के बारे में मुझसे चर्चा करता रहता था कि वह सब किसी बहुत महत्वपूर्ण मिशन को अंजाम देने न्यूयार्क आये हुए है । लेकिन।''

''लेकिन क्या ?''

''उदय प्रताप ने कभी आपके बारे में मुझसे चर्चा नहीं की ।''

''वह जरूर भूल गया होगा ।''

''उदय प्रताप भूलने वाले इंसानो में तो नहीं था । खास तौर पर मुझसे तो वो कभी भी अपने दिल की कोई बात नहीं छुपाता था । उसका ऐसा कोई अच्छा-बुरा राज नहीं था, जो मुझसे छिपा हो ।''

''यह भी तो हो सकता है ।'' कमांडर बात टालने की गरज से बोला- ''कि उसने कभी आपसे मेरा जिक्र किया हो और आपको ही याद न रहा हो ।''

नीलू खामोश रही ।

मगर कमांडर के उस जबाव से उसे संतुष्ट नहीं किया था ।

''वैसे उदय प्रताप की मौत कैसे हुई?'' कमांडर ने उत्कण्ठावश पूछा ।

''न्यूयार्क में ऐसे कई लोग थे, जो उदय प्रताप के दुश्मन थे। जो उसके कारनामों की बदौलत उसे गाहे-बगाहे जहन्नमुम पहुंचाने की फिराक में रहते थे । ऐसा ही कोई आदमी था, जिसने महीना भर पहले उदय प्रताप के गोली मारी थी। गोली ठीक उसके चेहरे पर लगी, जिससे उसके चेहरे के चीथड़े-चीथड़े बिखर गये। लाश पहचानने लायक भी नहीं बची । उदय प्रताप की जेब से पुलिस को आइडेण्टीफिकेशन हुई। पर्स में ही उदय प्रताप का मेरे नाम एक लैटर रखा हुआ था । उसी लैटर की वजह से पुलिस ने मुझे भी उसकी मौत के बारे में सूचित किया ।''

‘‘यानि तुमने खुद उदय प्रताप की लाश अपनी आंखो से देखी थी ?’’ कमांडर बोला ।

‘‘हां, बिलकुल देखी थी ।’’

‘‘फिर तुमने पहचाना उसे ?’’

‘‘मैंने बताया न, लाश ऐसी कंडीशन में ही नहीं थी, जो उसे पहचाना जा सकता। थ्री नॉट थ्री की गोली ने उसके चेहरे को मांस के लोथड़े में बदल दिया था ।’’

‘‘फिर आप यह कैसे कह सकती है मैडम, वो उदय प्रताप की ही लाश थी? पुलिस को इस मामले में धोखा भी तो हो सकता है ।

‘‘पुलिस को भला धोखा क्यों होगा ! मैंने बताया न, हत्प्राण की जेब से उदय प्रताप का ड्राइविंग लाइसेंस बरामद हुआ था। पॉकिट पर्स बरामद हुआ था। मेरे नाम चिट्ठी बरामद हुई थी। फिर उसने जो कपड़े हुए थे, मैंने उन्हें साफतौर पर पहचाना था । उदय प्रताप के लिये वो कपड़ा मैं खुद बाजार से खरीदकर लायी थी। जब इतने सारे सबूत मौजूद हो, तो फिर किसी को भी भ्रम कैसे हो सकता है !’’

‘‘लेकिन आप भूल रही है ।’’ कमांडर ने एक-एक शब्द चबाया- ‘‘कि इनमें से कोई भी सबूत अपने आपमें सॉलिड नहीं है । यह सारे सबूत ऐसे है, जिन्हें कोई भी लाश के साथ प्लाण्ट कर सकता है ।’’

‘‘आप कहना क्या चाहते है ?’’

‘‘मैं ये कहना चाहता हूं मैडम !’’ कमांडर पुरजोर लहजे में बोला- ‘‘कि जो लाश आपने देखी, वो उदय प्रताप की लाश नहीं थी । उदय प्रताप अभी मरा नहीं है, वो जिंदा है ।’’

‘‘आप यह बात इतने दावे के साथ कैसे कह सकते है ?’’ नीलू तीखे स्वर में बोली- ‘‘क्या आपने उदय प्रताप को देखा है ?’’

‘‘उसकी शक्ल तो नहीं देखी है, अलबत्ता कई मर्तबा उसके दौड़ने की आवाज जरूर सुनी है । आप जानती है, वो लंगड़ा है, और उसकी अव्यवस्थित पद्चापो के कारण दौड़ने की जो आवाज होती है, उस आवाज को सैकड़ो लोगों के बीच में भी बिलकुल अलग पहचाना जा सकता है । फिर उसकी खांसी का वो ठसका भी मैंने कई मर्तबा सुना, जो उसे अस्थमें की वजह से उठता है ।’’

‘‘मुझे यकीन नही होता । आपको जरूर इस सिलसिले में गलतफहमी हुई है कमांडर ! उदय प्रताप जिंदा नहीं हो सकता । मैं मानती हूं, मेरी आंखे धोखा खा जायें। लेकिन अमरीकन पुलिस धोखा नहीं खा सकती। असंभव नामुमकिन ! आप माने या न मानें ।’’ वह बड़े निर्णायक लहजे में बोली- ‘‘लेकिन उदय प्रताप मर चुका है । ही इज डैड ।’’

‘‘अगर उदय प्रताप जिंदा हो,’’ कमांडर बोला- ‘‘तो क्या उसके जीवित होने की आपको खुशी नहीं होगी ?’’

‘‘क्यों नही होगी, बिलकुल होगी। मगर फिजूल की बातों से फायदा क्या है...मैं जानती हूं, वो मर चुका है ।’’

‘‘ठीक है ।’’ कमांडर ने पैंतरा बदला- ‘‘मैं भी मानता हूं कि वो मर चुका है। लेकिन पिछले दिनों मेरे साथ कुछ ऐसी घटनायें घटी हैं, जिसके कारण मेरे मन में संशय है। मैं चाहता हूं, मेरे उस संशय का निवारण हो जाये।’’

‘‘निवारण कैसे होगा?’’

‘‘ बहुत आसान तरीका है । तुम उदय प्रताप को ढूंढने में मेरी हैल्प करो। मैं उदय प्रताप को कुछ ऐसी जगह ढूंढना चाहता हूं, जहां वो पुलिस से बचकर या कीन्हीं दूसरे कारणों से छिपा हो सकता है ।’’

‘‘जैसे ?’’’

‘‘जैसे रेड मेंशन !’’

कमांडर के मुंह से ‘रेड मेंशन’ का जिक्र सुनकर नीलू के चेहरे पर बुरी तरह चौंकने जैसे भाव उभरे।

‘‘तुम रेड मेंशन के बारे में जानते हो ?’’ वो बहुत आश्चर्य पूर्वक बोली ।

‘‘हां, एक बार उदय प्रताप ने ही मुझे रेड मेंशन के बारे में बताया था ।’’

‘‘कमाल है !’’

‘‘इसमें कमाल क्या है ?’’

‘‘उदय प्रताप रेड मेंशन का जिक्र अपने बहुत कम दोस्तों से करता था ।’’

‘‘क्यों ?’’

‘‘ऐसे ही ।’’

‘‘बहरहाल मुझे खुशी है, उसने रेड मेंशन का जिक्र मुझसे किया ।’’ कमांडर बोला- ‘‘अब मैं उसे ढूढने के लिये रेड मेंशन जाना चाहता हूं ।’’

‘‘और तुम समझते हो, वहाँ तुम्हें उदय प्रताप मिल जायेगा ?’’

‘‘अगर वो वास्तव में ही जिदां है, तो जरूर मिलना चाहिये। अगर नहीं मिलेगा, तो कम-से-कम मेरा शक तो दूर होगा। फिर मत भूलो मैडम, अगर उदय प्रताप जिंदा है, तो यह तुम्हारे लिये भी कोई कम बड़ी करिश्माजनक बात नहीं होगी। आखिर तुम्हें अपना बिछुड़ा हुआ वो साथी मिल जायेगा, जिसके साथ तुमने सारी उम्र गुजारने का सपना देखा था ।’’

नीलू बड़ी व्याकुल नजरों से कमांडर को देखने लगी ।

‘‘लेकिन तुम उदय प्रताप को ढूढने के लिये इतना उतावले क्यों हो रहे हो ?’’

‘‘ऐसे ही, आखिर वो दोस्त है मेरा !’’

“ठीक है ।” नीलू बोली- “मुझे तुम्हारे साथ रेड मेंशन चलने में कोई ऐतराज नहीं। लेकिन फिलहाल तो मुझे जल्द-से-जल्द अपने ऑफिस पहुंचना है, वहाँ आज कुछ जरूरी काम है। जबकि शाम के वक्त रेड मेंशन जाया नहीं जा सकता ।”

“क्यो ?”

“क्योंकि मेंशन बहुत निर्जन इलाके में बना है और वहाँ लाइट का भी प्रबंध नहीं है ।”

“ओह ! यानि अब कल सुबह ही निकलना होगा ।”

“हां ।” नीलू ने बैठे-बैठे अपने जूड़े को गूंथना शुरू किया-“वैसे भी कल मेरी ऑफिस से छुट्टी है, इसलिये कल का दिन ही बेहतर रहेगा । तुम एक काम करो, कल सुबह आठ बजे ही यहां आ जाओ। फिर साथ चलते है ।”

“ठीक है ।”

हालांकि नीलू को अब इतने लम्बे टाइम तक के लिये अकेले छोड़ना मुनासिब नहीं था । क्योंकि अगर वो उदय प्रताप से मिली हुई थी, तो उसकी तमाम बातें उस तक सर्कुलेट कर सकती थी । फिर उदय प्रताप के रेड मेंशन में मिलने की थोड़ी बहुत संभावना थी, वह भी खत्म हो जाती ।

मगर नीलू की बातों से लग नहीं रहा था, वह लड़की कोई ड्रामा रच रही है ।

कमांडर ने खतरा उठाने का फैसला कर लिया ।

वो नीलू पर विश्वास करके उसके फ्लैट से बाहर निकल आया ।

□□□

कमांडर न्यूयार्क में एक-एक कदम बहुत सोच समझकर उठा रहा था ।

अगर उसकी न्यूयार्क में उपस्थिति की जरा भी भनक सी आई ए को मिल जाती, तो वहाँ एक और नया हंगामा खड़ा हो जाना था ।

कमांडर करण सक्सेना ने जब कॉटेज में वापस कदम रखा, तो उसने वहाँ का माहौल काफी बदला-बदला पाया ।

दरवाजा, सांकेतिक अंदाज में कॉलबेल बजाने पर जगदीश नरूला ने खोला ।

उसकी आंखे सूजी हुई थी और ऐसा लग रहा था, मानों वो अभी काफी रोया है ।

“क्या हो गया ?” कमांडर ने गौर से जगदीश नरूला को देखते हुए पूछा ।

जवाब में जगदीश नरूला, कमांडर के सीने से लग गया और बच्चों की तरह सुबक उठा ।

कमांडर सन्न रह गया ।

“आखिर बात क्या है, और बाकी सब लोग कहां है ?”

जगदीश नरूला ने जवाब न दिया ।

कमांडर को अंदर वाले कमरे में कुछ आहट सुनायी दी, तो वह तेजी से उस कमरे की तरफ बढ़ा ।

और !

कमरे में कदम रखते ही उसे मानों चार सौ चालीस बोल्ट का करेण्ट छू गया । दिलीप मेहरा तथा अनुपमा जोशी भी वहाँ थे और उन दोनों की आंखे भी बुरी तरह नम थीं । जबकि सामने बिस्तर पर ही अनिल मोटे की खून से लथपथ लाश पड़ी थी और बिस्तर पर खून-ही-खून फैला था ।

''यह सब कैसे हुआ ?'' कमांडर करण सक्सेना विस्फारित मुद्रा में बोला ।

''मालूम नहीं, कैसे हुआ ।'' दिलीप मेहरा का संजीदा स्वर- ''आप तो सुबह ही चले गये थे कमाण्डर ! बाद में जब अनिल मोटा नौ बजे तक भी सोकर न उठा, तो अनुपमा ने उसे अंदर कमरे में जाकर देखा और तभी यह घोर वज्रपात हुआ। लगता है, रात ही किसी ने अनिल मोटे को मार डाला था। बिस्तर पर जो खून पड़ा हुआ है, वो भी अब काफी हद तक सूख चुका है ।''

'' मैं समझती हूं, जरूर इसे भी उदय प्रताप ने ही मारा है कमाण्डर !'' अनुपमा जोशी फुफकार उठी- ''उसने हमारे एक साथी की और जान ले ली है ।''

''लेकिन रात तो कॉटेज में कोई घटना नहीं घटी थी ।'' कमांडर ने अपने शुष्क होंठो पर जबान फिराई- ''सब कुछ सामान्य रहा था ।''

''एक घटना घटी थी ।'' पीछे खड़ा जगदीश नरूला बोला ।

''क्या ?''

''रात के दो या ढाई बजे का वक्त रहा होगा ।'' जगदीश नरूला ने बताया- ''मैंने कॉटेज में किसी के चीखने की आवाज सुनी थी । मैं कमरे से बाहर निकलकर भी आया । लेकिन दोबारा मुझे चीखने की कोई और आवाज सुनाई नहीं दी इसलिये मैंने इसे अपने मन का वहम समझा और वापस जाकर सो गया ।''

''बिलकुल ठीक बात है ।'' अनुपमा जोशी ने भी जगदीश नरूला की बात का समर्थन किया- ''रात चीखने की वो आवाज तो मैंने भी सुनी थी ।''

''फिर तुमने जगाया क्यों नहीं ?''

''मैंने समझा, मैं कोई सपना देख रही हूं कमाण्डर । मैं अर्द्धनिद्रां में थी ।

अनिल मोटे की मौत ने कमांडर को बुरी तरह झकझोर कर रख दिया ।

वो समझ नहीं पा रहा था, आखिर उदय प्रताप चाहता क्या है? वह क्यों एक-एक करके सबको मार रहा है ?

वह सब कमरे से बाहर निकले ।

''एक बुरी खबर और है कमाण्डर ।'' दिलीप मेहरा बोला ।

''क्या ?''

“अब पुलिस को आपके भी अमरीका में होने का पता चल गया है ।”

“क्या कह रहे हो ?” कमांडर चौंका ।

“यह सच है । सुबह की खबरों में हमारी तस्वीरों के साथ-साथ आपकी तस्वीर भी टेलीविजन पर दिखाई गयी और यह बताया गया था, आप हम चोरों की मदद के लिये न्यूयार्क पहुंच चुके है ।”

“जरूर उसी हरामजादे उदय प्रताप ने यह सूचना पुलिस तक पहुंचाई होगी ।”

“ऐसा ही लगता है ।”

हालात वाकई ठीक नहीं थे ।

“इसके अलावा अब एक और बात में भी शक की कोई गुंजाइश नहीं बची है ।” जगदीश नरूला बोला ।

“ किसमें ?”

“यही कि इस कॉटेज में आने-जाने का कोई और रास्ता भी है । क्योंकि सुबह कॉटेज का मुख्य द्वार बिलकुल सही-सलामत बंद था कमाण्डर । रात उदय प्रताप किसी और रास्ते से ही अंदर आया था और अपना काम करने के बाद वो उसी रास्ते से वापस लौट भी गया ।”

“हमें सबसे पहले उसी रास्ते को तलाश करना चाहिये ।”

वह सब तुरन्त उस रास्ते को तलाश करने के अभियान में जुट गये ।

कोई आधा घंटे के अथक परिश्रम के बाद उन्होंने वो रास्ता खोज निकाला ।

उस कॉटेज के बिलकुल बैक साइड में एक कमरा बना हुआ था। उस कमरे में एक खिड़की थी, जो सीधे पिछली सड़क की तरफ खुलती थी। उन्होंने देखा, उस खिड़की की अंदर से सिटकनी लगी हुई नहीं थी और पल्ले सिर्फ भिड़के हुए थे ।

“जरूर उदय प्रताप इसी रास्ते से कॉटेज में अंदर आया था ।”

“ऐसा ही मालूम होता है।”

“फिलहाल इस खिड़की की अंदर से सिटकनी लगा दो ।”

फौरन सिटकनी लगा दी गयी ।

आने-जाने का वो रास्ता बंद हो गया ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना , दिलीप मेहरा, जगदीश नरूला, अनुपमा जोशी...सब बेहद शोकपूर्ण स्थिति में सिर-से-सिर जोड़े बैठे थे ।

अनिल मोटे की लाश अभी भी अंदर वाले कमरे में पड़ी थी ।

“इस 10 टन सोने वाले मिशन, हम छः आदमी न्यूयार्क भेजे गये थे कमाण्डर !” दिलीप मेहरा काफी दुःखी स्वर में बोल रहा था- “लेकिन एक-एक करके हममें से तीन मारे

जा चुके हैं । पहले पवन मल्होत्रा मरा । फिर गंजा उस्मान तथा अब अनिल मोटा न जाने कल हममें से किसका और नम्बर आ जायें ।

कमांडर ने एक 'डनहिल' निकालकर होठों से लगायी तथा फिर उसे लाइटर से सुलगाया ।

''एक बात मुझे बहुत हैरान कर रही है ।'' कमांडर बोला ।

''क्या ?''

''तुम लोग बताते हो, उदय प्रताप अस्थमें का मरीज है ।''

''बिलकुल ठीक ।''

''लेकिन जिनती निर्दयता और ताकत के साथ उसने अनिल मोटे की छुरे से गर्दन काट डाली है, यह काम किसी बीमार आदमी का नहीं हो सकता । इस प्रकार किसी की गर्दन काटने के लिये इंसानी जिस्म में बहुत ताकत चाहिये ।''

''उदय प्रताप अस्थमें का मरीज जरूर है कमाण्डर !'' जगदीश नरूला बोला- ''परन्तु उसके जिस्म में ताकत की कमी नहीं है । वो अब भी अकेला ही दो-दो से निपट सकता हैं ।''

''फिलहाल इन सब बातों को छोड़ो ।'' दिलीप मेहरा गमजदा लहजे में बोला- ''और यह सोचो, अनिल मोटे की लाश का अंतिम संस्कार अब किस तरह किया जायें ।''

''ऐसे हालातो में लाश को वैदिक परम्परा से जलाया जाना तो मुमकिन नहीं है ।''

''फिर ?''

''बस एक ही तरीका बचता है ।'' कमांडर बोला- '' कॉटेज में पिछली तरफ छोटा सा लॉन है, हम वहाँ अनिल मोटे की लाश को दफना दें ।''

''क्या यह उचित होगा ?''

''उचित-अनुचित का प्रश्न ही नहीं है । जो हालात हमारे साथ चल रहें है, उन हालातों में हम इसके अलावा कुछ और कर ही नहीं सकते । इसलिये यही उचित हैं। यही वैदिक परम्परा हैं ।''

सब काफी देर तक एक दूसरे की सूरत देखते रहे ।

फिर वह अनिल मोटे के अंतिम संस्कार की तैयारी में जुट गये ।

पीछे लॉन में एक काफी गहरा गड्ढा खोदा गया और उसमें अनिल मोटे की लाश को दफना दिया गया । खून में सना जो बिस्तर था, उसको भी उन्होंने उसी गड्ढे में दबा दिया ।

बहरहाल उस दिन दोपहर का भोजन उनमें से किसी ने न खाया ।

सब शोक में डूबे हुए थे ।

□□□

तीन बज रहें थे ।

मौसम आज कुछ ठीक नहीं था आसमान पर भारी दोपहरी में भी हल्की-हल्की गर्द छाई हुई थी और ऐसा लग रहा था मानों आज या तो जमकर बारिश होगी या फिर आंधी आयेगी । न्यूयार्क के मौसम को वैसे भी 'मूडी' कहा जाता है, जिसे रंग बदलते देर नहीं लगती ।

दिलीप मेहरा आज सुबह से ही अपने गुर्दे में दर्द की शिकायत कर रहा था ।

''क्या ज्यादा तेज दर्द है ?'' कमांडर वहीं उसके नजदीक बैठा हुआ था ।

''ज्यादा तेज तो नहीं है ।'' दिलीप मेहरा बोला- ''मगर लगता है, अब यह दर्द बस जान ही लेकर मानेगा।''

''आप एकएक इतनी निराशापूर्ण बातें क्यों करने लगते हैं मेहरा साहब ।'' जगदीश नरूला ने कहा ।

''क्योंकि मैं जानता हूं, अब यही सच्चाई है। अब शायद ही मैं कभी जीवित हिन्दुस्तान वापस जा सकूं ।''

अनुपमा जोशी ने सोफा कवर ठीक करते हुए सिर्फ एक नजर दिलीप मेहरा के चेहरे पर डाली और दोबारा अपने काम में जुट गयी ।

यही वो क्षण था, जब उन्हें कॉटेज के बाहर बड़ी तेज हलचल सुनाई पड़ी । वह कुछ इंजन गरजने जैसी आवाज थी और एक के बाद एक इंजन गरजने की उन्हें वो कई आवाजें सुनाई पड़ी ।

''यह कैसी आवाजें है ?'' दिलीप मेहरा चौंका ।

''अनुपमा ! कमांडर ने अनुपमा जोशी को इशारा किया- ''जरा देखना ।

अनुपमा जोशी सोफा कवर छोड़कर तेजी से खिड़की की तरफ बढ़ गयी । उसने पर्दा हटाकर ग्लास विण्डो में से बाहर झांका और सारी पिकअप वैंने थी, जो कॉटेज के सामने आकर धड़ाधड़ रूक रही थीं ।

फिर अनुपमा जोशी के देखते ही देखते उन वैनों में से हथियार बंद पुलिसकर्मी नीचे कूदने शुरू हुए ।

''यह तो पुलिस है !'' अनुपमा जोशी चीखी ।

''पुलिस !''

सबके रोंगटे खड़े हो गये ।

सब फौरन अद्वितीय फुर्ती के साथ अपना-अपना स्थान छोड़कर खड़े हुए और उन्होंने ग्लास विण्डो में से बाहर का नजारा देखा ।

बाहर का दृश्य सचमुच अत्यन्त विहंगमकारी था ।

पुलिस इतनी बड़ी संख्या में वहाँ पहुंची थी, मानो फौज की छोटी-मोटी बटालियन हो ।

कमांडर करण सक्सेना ने फौरन पर्दा वापस ग्लास विण्डो के ऊपर सरका दिया ।

“जरूर उदय प्रताप ने ही पुलिस यहां भेजी है ।” दिलीप मेहरा आतंकित होकर बोला ।

“अब हम क्या करें कमाण्डर ?”

“एक ही रास्ता है, हमें फौरन यहां से भागना चाहिये ।”

लेकिन हम भाग कैसे सकते हैं कमाण्डर !” अनुपमा जोशी बोली- “कॉटेज के सामने तो इतनी ढेर सारी पुलिस है ।”

“हम कॉटेज के सामने से नहीं, बल्कि पीछे से भागेंगे । तुम शायद उस खिड़की को भूल गयी हो, जो उदय प्रताप के आने-जाने का रास्ता थी ।”

“कमाण्डर बिलकुल ठीक कह रहें हैं ।” जगदीश नरूला की आंखो में भी ‘खिड़की’ के नाम पर तीव्र चमक पैदा हुई- “हमें उसी रास्ते से भागना चाहिये । जल्दी करो । क्विक !”

तब तक कुछ पुलिसकर्मी दौड़ते हुए कॉटेज के मुख्य दरवाजे पर पहुंच चुके थे। उनमें से कुछेक जहां दरवाजे को जोर-जोर से भड़भड़ाने लगे, वहीं उनमें से एक ने कॉलबेल के पुश बटन पर ही उंगली टिका दी, जिससे कॉलबेल की बहुत तीक्ष्ण आवाज पूरे कॉटेज में गूंजने लगी ।

“कमांडर करण सक्सेना !” तभी पुलिस का कप्तान बाहर से लाउडस्पीकर पर गला फाड़कर चिल्लाया- “कमांडर करण सक्सेना !! हम जानते है कि तुम अपने चारों साथियों के साथ कॉटेज में मौजूद हो। अगर तुम अपनी जान की सलामती चाहते हो, तो चुपचाप अपने साथियों के साथ सरेडर कर दो और बाहर निकल आओ । वरना आज तुम सबकी जिदंगी का आखिरी दिन साबित होगा ।”

“देखा कमाण्डर !” जगदीश नरूला बोला- “आपके न्यूयार्क आने की बात अब अच्छी तरह फैल चुकी है। जरूर पुलिस का इतना बड़ा लाव लश्कर भी यहां आप ही के कारण आया हैं ।”

वह सब दौड़ते हुए कॉटेज के उस कमरे में पहुंचे, जिसमें खिड़की लगी हुई थी, जो सीधे पिछली सड़क की तरफ खुलती थी ।

इस बीच कोल्ट रिवाल्वर निकलकर कमांडर के हाथ में आ चुका थी ।

दिलीप मेहरा और जगदीश नरूला के हाथ में जहां जर्मन मेड पिस्टल थी, वहीं अनुपमा जोशी के हाथ में अब एक भारी-भरकम माउजर दिखाई पड़ रहा था । कमांडर के लिये वाकई यह बात बड़ी हैरानी की थी कि अनुपमा जोशी जैसी बेहद खूबसूरत और पतले दुबले शरीर की मालिक लड़की माउजर जैसा भारी वैपन हैण्डिल कर लेती है ।

बाहर से अभी भी जोर-जोर से कॉटेज का दरवाजा भड़भड़ाया जा रहा था । कॉलबैल बजाई जा रही थी । और लाउडस्पीकर पर पुलिस का कप्तान कमांडर करण सक्सेना के नाम चेतावनी जारी कर रहा था ।

पुलिस के आते ही वहाँ हंगामे जैसा माहौल बन गया था ।

दिलीप मेहरा ने खिड़की खोलकर पिछली सड़क की तरफ झांका ।

वहाँ दूर-दूर तक गहरी निस्तब्धता थी ।

सन्नाटा था ।

''रास्ता साफ है ।'' दिलीप मेहरा बोला- ''आ जाओ ।''

''आप रूकिये मेहरा साहब ।'' जगदीश नरूला झपटकर दिलीप मेहरा से आगे हुआ- ''पहले मैं कूदता हूं। वैसे भी आपके गुर्दे में दर्द हो रहा हैं ।''

खिड़की सड़क से कोई छः फुट ऊंचाई पर थी ।

जगदीश नरूला चौखट पकड़कर ऊपर चढ़ गया तथा फिर दूसरी तरफ सड़क पर कूद पड़ा ।

उसके बाद उसने दिलीप मेहरा को सड़क पर कूदने में मदद की ।

फिर कमांडर और अनुपमा जोशी भी कूदे ।

उसके बाद खिड़की के पल्ले सड़क की तरफ से बिलकुल इस प्रकार भेंड दिये गये, मानो वह बंद हों । कॉटेज के मुख्य दरवाजे पर अब प्रचण्ड चोटें पड़ने की आवाजें सुनाई दे रही थी। ऐसा लगता था, मानों वह दरवाजा तोड़ रहे हों ।

''भागो ।''

चारों सुनसान सड़क पर विद्युत गति के साथ सरपट भागे ।

तभी एक नई घटना और घटी ।

दहला देने वाली घटना ।

वह दौड़ते हुए अभी थोड़ी ही दूर गये होंगे कि पुलिस की एक पिकअप वैन जोर-जोर से सायरन बजाती हुई वहीं आ पहुंची थी ।

उस पिकअप वैन में चार पुलिसकर्मी मौजूद थे ।

''देखो, मेरा शक बिलकुल ठीक निकला।'' फौरन अमरीकन पुलिस के एक सीनियर सार्जेण्ट के चिल्लाने की आवाज उनके कानों में पड़ी- ''पीछे से ही भाग रहे हैं। पकड़ो उन्हें, पकड़ो । जाने न पायें ।''

पिकअप वैन के पहिये चीखते हुए रूके ।

फिर उसमें से धड़ाधड़ चारों सार्जेण्ट नीचे कूदे ।

दो के हाथ में कारबाइन थी ।

बाकी दो के हाथ में डबल बैरल गन !

नीचे कूदने के बाद वह चारों पोजीशन लेते, उससे पहले ही कोल्ट रिवाल्वर कमांडर की उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और उसने दो शोले उगल दिये ।

दो सार्जेण्ट तो दहाड़ते हुए वहीं ढेर हो गये । जबकि जीवित बचे बाकी दो सार्जेण्टो के होश उड़ गये । वह जितनी तेजी के साथ नीचे कूदे थे, उससे कहीं ज्यादा तेजी से वापस

आनन-फानन पिकअप वैन के ड्राइविंग पोर्शन की तरफ झपटे और उसमें चढ़ गये ।

तभी दिलीप मेहरा की पिस्टल ने भी एक गोली उगल दी ।

निशाना अद्भुत था ।

गोली पिकअप वैन की विण्ड स्क्रीन को फाड़ती हुई सीधे तीसरे सार्जेण्ट की खोपड़ी में जा लगी ।

वो हृदयविदारक ढंग से चिल्लाता हुआ वहीं ढेर हो गया । जब तक चौथा 'सार्जेण्ट' संभल चुका था । उसने कारबाइन अपने दोनों हाथों में कसकर पकड़ ली और फिर ड्राइविंग डोर में से बाहर को निकलकर उन चारों के ऊपर बस्ट फायर खोल दिया ।

धांय...धांय...धांय !

गोलियां की जैसे बाढ़ उन चारों के ऊपर झपटी ।

वहीं ईटों के काफी ऊंचे-ऊंचे चट्टे लगे हुए थे । चारों फौरन दौड़कर उन पट्टो के पीछे जा छिपे । उन चारों के छिपते ही गोलियों की वह बाढ़ रूक गयी ।

जिस चट्टे के पीछे वे छिपे हुए थे, उसके बीच में थोड़ी-सी झिरी थी । कमांडर ने उस झिरी में से पिकअप वैन की तरफ देखा ।

चौथा सार्जेण्ट अभी भी पिकअप वैन की ड्राइविंग सीट पर बैठा था और कुछ सेच रहा था ।

''हमारा ज्यादा देर यहां रूकना मुनासिब नहीं है ।'' कमांडर बोला ।

''क्यों ?''

''क्योंकि अगर गोलियां चलने की यह आवाज इसके बाकी साथियों तक पहुंच गयी होगी, तो बस हमारी आफत ही आ जायेगी ।''

तभी उन्होंने जोर से उस पिकअप वैन का इंजन गरजने की आवाज सुनी ।

''लगता है ।'' दिलीप मेहरा आन्दोलित लहजे में बोला- ''यह अपने साथियों को हमारे बारे में सूचना पहुंचाने जा रहा है ।''

''लेकिन अब सूचना पहुंचा नहीं पायेगा ।''

कमांडर एकदम एक्शन में आ गया ।

''यह आप क्या कर रहें हो कमाण्डर !''

''देखते रहो ।''

''लेकिन आपके इस चट्टे के पीछे से बाहर निकलने में खतरा है ।''

''खतरा तो अब कदम-कदम पर है ।''

रिवाल्वर कमांडर की उंगलियो के गिर्द पुनः फिरकनी की तरह घूमीं और अब वो बेखौफ उस चट्टे के पीछे से बाहर निकल आया ।

चट्टे के पीछे से बाहर निकलते ही फौरन गोलियां की बाढ़ उसके ऊपर झपटीं ।

दरअसल सार्जेण्ट ने जैसे ही कमांडर को बाहर निकलते देखा, वो वैन चलाना भूल गया । उसने झपटकर कारबाइन संभाली और पहले की तरह ही ड्राइविंग डोर पर झूलते हुए बस्ट फायर खोल दिया ।

कमांडर ने मार्शल आर्ट का अद्भुत प्रदर्शन दिखाया । वह तेज जम्प लेकर हवा में उछला ओर फिर धड़ाम् से चारों खाने चित्त नीचे सड़क पर गिरा ।

सारी गोलियां सनसनाती हुई उसके ऊपर से गुजर गयीं ।

सड़क पर गिरते ही कमांडर ने कलाबाजी खाई और बेपनाह फुर्ती के साथ उस सार्जेण्ट को अपने निशाने पर लेकर ट्रेगर दबा दिया ।

सार्जेण्ट की अत्यन्त मर्मभेदी चीख सारे वातावरण को कंपकपाती चली गयी ।

गोली ठीक उसकी खोपड़ी में जाकर लगी थी । पहले कारबाइन उसके हाथ से छूटकर नीचे गिरी और फिर फिर वो खुद भी ड्राइविंग डोर में से लुढ़ककर धड़ाम् से नीचे गिरा । उसकी खोपड़ी तरबूज की तरह फट पड़ी थी ।

कमांडर उछलकर सड़क पर सीधा खड़ा हो गया ।

‘‘हरीअप !’’ फिर वो ईंटो के चट्टे की तरफ मुंह करके चिल्लाया- ‘‘जल्दी सब बाहर आओ, जल्दी ।’’

दिलीप मेहरा, जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी दौड़ते हुए चट्टे के पीछे से बाहर निकल आये ।

तब तक कमांडर पिकअप वैन में चढ़ चुका था। अंदर जो सार्जेण्ट की लाश पड़ी थी, उसने उसे भी घसीटकर नीचे फैंक दिया। फिर उसने ड्राइविंग सीट संभाली, फौरन पिकअप वैन का इंजन जोर से घरघराया गरज उठा ।

तीनों भी दौड़ते हुए वैन में सवार हो गये ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना ने बौखलाकर पिकअप वैन को इतनी तेजी से और इतना ज्यादा बैक कर दिया था कि वैन का पिछला हिस्सा धड़ाम की तेज आवाज के साथ एक फार्महाउस की बाउण्ड्री बॉल से जा टकराया ।

कमांडर ने गियर बदला ।

पिकअप वैन पुनः झटके के साथ आगे बढ़ी और सड़क पर ‘यू टर्न’ लेती हुई न सिर्फ सीधी हो गयी बल्कि दु्रतगति के साथ भागी ।

‘‘रोको, वैन रोको ।’’ जिप्सी में मौजूद पुलिसकर्मी गला फाड़कर चिल्लाये ।

परन्तु वैन रोकने का प्रश्न ही नहीं था । वह अपनी फुल स्पीड से सड़क पर दौड़ी जा रही थी ।

जिप्सी की स्पीड भी तेज हो गयी ।

तभी जिप्सी में बैठे सार्जेण्ट पिकअप वैन पर आकर कारबाइन से धुआंधार गोलियां बरसाने लगे ।

''लगता है, आज यह लोग पीछा नहीं छोड़ेंगे ।'' अनुपमा जोशी ने अपने शुष्क अधरों पर जवान फिराई ।

''हिम्मत मत हारो ।'' कमांडर जरा भी विचलित नहीं दिखाई पड़ रहा था- ''इंसान का अगर इरादा दृढ़ हो, तो हर मुश्किल हल होती है । तुम इनकी गोलियां का जवाब गोलियां से दो, बाकी सब मैं संभालता हूं ।''

''ओ0के0 कमाण्डर ।''

कमांडर के आदेश की देर थी, वह सब अपने-अपने हथियार लेकर फौरन पीछे आ रही खुली जिप्सी पर धुंआधार गोलियां बरसाने लगे ।

दोनों तरफ से अब खुलकर फायरिंग होने लगी ।

कमांडर को बस एक ही डर था, जिप्सी से चलाई जा रही गोलियां पिकअप वैन के किसी टायर में न आ लगें ।

परन्तु वैसा कुछ न हुआ ।

कमांडर पिकअप वैन को चला भी लहराता हुआ रहा था, जिससे वैन अभी तक गोलियों से सुरक्षित थी ।

तभी कमांडर को आगे एक पतली सी सड़क दिखाई दी, जो मुख्य सड़क से कटकर बायीं तरफ मुड़ गयी थी । कमांडर ने एकाएक फुल स्पीड के साथ बिना ब्रेक लगाये पिकअप वैन उस पतली सी सड़क पर मोड़ दी ।

सामने ही एक टेम्पो खड़ा था ।

पिकअप वैन का उस टेम्पो से भीषण एक्सीडेण्ट होते-होते बचा। वैन सर्राटे के साथ टेम्पों के बिलकुल बराबर में से होकर गुजरी ।

अनुपमा जोशी की चीख निकल गयी ।

दिलीप मेहरा ने पलटकर देखा, पुलिस की जिप्सी अभी भी उनकें पीछे थी ।

वह उतनी ही स्पीड के साथ उस पतली सी सड़क पर मुड़ी थी ।

अलबत्ता जिप्सी में से अब फायरिंग नहीं हो रही थी । शायद पुलिसकर्मी समझ गये थे, उस फायरिंग का कोई नतीजा नहीं हैं ।

सड़क बिलकुल सुनसान थी ।

वहाँ दूर-दूर तक कोई आदमी नजर नही आ रहा था ।

उसी क्षण कमांडर को अगे एक संकरी सी सड़क और दिखाई दी, जो उस सड़क से भी ज्यादा पतली थी और बहुत उबड़-खाबड़ थी। कमांडर ने पहले की भांति फुल स्पीड के साथ पिकअप वैन उस संकरी सी सड़क पर मोड़ दी ।

वैन बुरी तरह उछली ।

‘‘क्या कर रहे हो कमाण्डर !’’ जगदीश नरूला भी भयभीत होकर चिल्लाया- ‘‘इस तरह तो एक्सीडेण्ट हो जायेंगे ।’’

‘‘कुछ नहीं होगा ।’’

वैन दौड़ती रही ।

कमांडर उस समय अपने कुशल ड्राइवर होने का भरपूर परिचय दे रहा था ।

फिर उसने एक नया कदम उठाया । उस संकरी सी सड़क पर पिकअप वैन थोड़ी ही दूर गयी होगी कि एकाएक कमांडर ने जोर से ब्रेक अप्लाई किये । वैन के पहिये काफी दूर तक घिसटते चले गये और फिर चीखते हुए रूके ।

‘‘अब क्या कर रहे हो ?’’ दिलीप मेहरा की आंखो से आश्चर्य के भाव उजागर हुए ।

‘‘देखते रहो ।’’

उस क्षण कोई नहीं जानता था, कमांडर क्या करने वाला है ।

उसका अगला कदम क्या हेगा ?

कमांडर ने फुर्ती के साथ अपनी कोल्ट रिवाल्वर का चैम्बर खोलकर देखा, उसमें सिर्फ एक गोली बची थी। उसने वह रिवाल्वर वापस अपनी जेब में रख ली और फिर उसके मस्तिष्क की मांसपेशियों ने हरकत दिखाई । फौरन क्लेंसी हैट की ग्लिप में फंसी दूसरी रिवाल्वर निकलकर खुद-ब-खुद कमांडर के हाथ में आ गयीं ।

रिवाल्वर हाथ में आते ही वो पिकअप वैन से नीचे सड़क पर कूद पड़ा ।

अब कमांडर सड़क के बिलकुल बीचों-बीच खड़ा था और उसने दोनों हाथों से रिवाल्वर कसकर पकड़ी हुई थी ।

‘‘कमाण्डर !’’ अनुपमा जोशी चिल्ला उठी- ‘‘आखिर आपका इरादा क्या है ?’’

‘‘बस इतना समझ लो !’’ कमांडर ने दांत किटकिटाये- ‘‘मेरा इरादा नेक नहीं है ।’’

‘‘लेकिन ।’’

शब्द अधूरे रह गये ।

उसी क्षण पुलिस की जिप्सी बहुत तूफानी स्पीड के साथ जोर-जोर से सायरन बजाती हुई उसी संकरी सड़क की तरफ मुड़ी । जैसे ही वो मुड़ी, रिवाल्वर कमांडर की उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और उसने ट्रेगर दबाया ।

धांय....धांय....धांय !

कोल्ट रिवाल्वर से एक साथ कई शोले निकले ।

दो गोलियां तो जिप्सी के दोनों अगले टायरों में जाकर लगीं। टायर बिलकुल इस तरह धामाखेज आवाज के साथ फटे, मानों बम फटे हों।

जिप्सी सड़क पर बिलकुल किसी शराबी की तरह लहराई ।

धांय !

एक गोली और चली ।

वह गोली जिप्सी की विण्ड स्क्रीन को फाड़ती हुई सीधे उस सार्जेण्ट की खोपड़ी में जा घुसी, जो ड्राइविंग सीट पर बैठा था। वो चीखता हुआ वहीं ढेर हो गया । जिप्सी अब बिलकुल ही आउट ऑफ कण्ट्रोल हो गयी ।

"कमाण्डर, बचो।" दिलीप मेहरा चिल्लाया ।

कमांडर ने बेपनाह फुर्ती के साथ दांयी तरफ जम्प लगा दी ।

जिप्सी सड़क को रौंदती हुई बिलकुल कमान से छूटे तीर की भांति उसी स्थान से गुजरी, जहां कुछ देर पहले कमांडर खड़ा था और फिर वो बहुत प्रचण्ड ध्वनि के साथ धड़ाम से पिकअप वैन से जा टकरायी ।

जिप्सी में बैठे सार्जेण्टो की चीखें गूंज उठीं। वह गेंद की तरह उछलकर उस खुली जिप्सी से बाहर गिरे ।

तुरन्त दिलीप मेहरा, जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी की पिस्टलें गरज उठीं। सार्जेण्ट संभल पाते, उससे पहले ही उन सबके शरीर में गोलियों के झरोखे बनते चले गयें ।

खून के फव्वारे छूट पड़े ।

□□□

सड़क का दृश्य अब काफी विहंगमकारी था ।

खुली जिप्सी का जहां बेहद मजबूत पिकअप वैन से टकराकर पूरी तरह बेड़ा गर्क हो गया था, वहीं उस संकरी सड़क पर अब सार्जेण्टो के खून में लथपथ शरीर छितराये पड़े थे ।

कमांडर धीमें-धीमें कदमों से चलता हुआ एक सार्जेण्ट के नजदीक पहुंचा ।

गोलियां उसके शरीर में कई जगह लगी हुई थीं। परन्तु अभी वो मरा नहीं था। उसके सांसे उल्टे-सीधे जरूर चल रहें थे ।

कमांडर अपनी टांगे इधर-उधर करके उसके शरीर के बिलकुल ऊपर खड़ा हो गया और उसने रिवॉल्वर सार्जेण्ट की खोपड़ी की तरफ तान दी ।

फिर कोल्ट रिवाल्वर बेपनाह तेजी के साथ उसकी उंगलियों के गिर्द घूमी ।

"नहीं।" सार्जेण्ट के नेत्र दहशत से उबल पड़े- "नहीं ! गोली मत चलाना, गोली मत चलाना।"

"नहीं चलाऊंगा।" कमांडर शान्त लहजे में बोला- "लेकिन मेरे एक सवाल का जबाव दो ।"

"कैसा सवाल?"

"हम लोग जासूसी उपन्यासकार के उस कॉटेज में छुपे हुए है, यह बात पुलिस को कैसे मालूम हुई ?"

“किसी रहस्यमयी आदमी का पुलिस हैडक्वार्टर में फोन आया था।” सार्जेण्ट कंपकंपाये स्वर में बोला- “उसी ने बताया कि अगर पुलिस फौरन उस कॉटेज पर रेड डाले, तो सारे भारतीय जासूस वहाँ पकड़े जा सकते हैं । सब वहीं मौजूद हैं ।”

“वह आदमी कौन था, जिसने यह टिप दी ? ”

“उसने अपना नाम नहीं बताया ।”

“सच ?”

“बाई गॉड ! चाहे कैसी कसम लें ।”

सार्जेण्ट के आगे के शब्द बहुत भयानाक चीख में परिवर्तित हो गये ।

कमांडर ने ट्रेगर दबा दिया था । बारूद भरी गोली उसके दिल को भेदती चली गयी ।

फौरन उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

“चलो ।” दिलीप मेहरा बोला- “अब जल्दी यहां से भागो ।”

जगदीश नरूला तेजी के साथ पिकअप वैन की तरफ झपटा ।

लेकिन कमांडर ने उसे वैन में सवार होने से रोका ।

“नहीं ।” कमांडर ने कहा- “अब हमारा और ज्यादा इस पिकअप वैन का इस्तेमाल करना ठीक नहीं हैं ।”

“क्यों ?”

“क्योंकि हो सकता है, हमारे वैन द्वारा भाग निकलने की सूचना अब तक चारों तरफ ब्रॉडकास्ट भी हो चुकी हो । ऐसी हालत में हमारा वैन का और ज्यादा उपयोग करना खतरनाक साबित हो सकता है ।”

“कमाण्डर ठीक कह रहे है ।” दिलीप मेहरा भी बोला- “सचमुच इस पिकअप वैन का हमें और इस्तेमाल नहीं करना चाहिये ।”

“फिर हम लोग क्या करें ?” अनुपमा जोशी बोली।

“तुम सब मेरे साथ आओ ।”

□□□

शाम के पांच बज रहें थे, वह सब उस समय नीलू के फ्लैट में जमा थे । वहाँ तक वो टैक्सी द्वारा पहुंचे थे और दरवाजे पर लगा बिल्ट-इन-लॉक खोलकर वह खामोशी के साथ अंदर आ गये ।

इस बात का उन्होंने खास ख्याल रखा था कि कोई उन्हें फ्लैट में घुसते न देख ले ।

बहरहाल शुक्र था, किसी की नजर उनके ऊपर न पड़ी ।

“कमाण्डर !” जगदीश नरूला बोला- “मैं समझता हूं, हम लोगो ने यहां आकर ठीक नहीं किया है !”

‘‘यह तुम्हारा वहम है ।’’ कमांडर करण सक्सेना इत्मीनान से एक सोफा चेयर पर पसरकर बोला- ‘‘फिलहाल पूरे न्यूयार्क में हमारे छिपने के लिये इससे बेहतर जगह दूसरी कोई नहीं हो सकती थी ।’’

‘‘लेकिन आप एक बहुत गंभीर बात नजरअंदाज कर रहे हैं कमाण्डर !’’

‘‘क्या ?’’

‘‘नीलू, उदय प्रताप की प्रेमिका है । उसकी लवर है । अगर उसे कोई मौका हासिल हुआ, तो वह हमारा साथ देने की बजाय उदय प्रताप का ज्यादा साथ देगी और हमारी तबाही में ऐड़ी- चोटी का जोर लगा डालेगी ।’’

‘‘मैं जानता हूं ।’’

‘‘फिर भी आप इतना बड़ा रिस्क ले रहे है कमाण्डर ? इतना बड़ा खतरा उठा रहें हैं ।’’

‘‘मैं कोई खतरा नहीं उठा रहा ।’’ कमांडर गंभीरतापूर्वक बोला- ‘‘न जाने क्यों मुझे ऐसा लग रहा है, अगर उदय प्रताप जिंदा है, तो वह सिर्फ हमें ही धोखा नहीं दे रहा, बल्कि हमसे भी कहीं ज्यादा पहले वो नीलू को धोखा दे रहा हैं । उसके साथ छल-फरेब का नाटक रच रहा हैं ।’’

‘‘नीलू को वो धोखा क्यों देगा ?’’ दिलीप मेहरा ने पूछा ।

‘‘आपने कभी नीलू को देखा है ?’’

‘‘नहीं ।’’

‘‘बस, आप इसीलिये यह सवाल कर रहे हैं। अगर आपने एक नजर भी नीलू को देखा होता, तो आप यह बात हर्गिज न पूछते ।’’

‘‘क्यों, ऐसा क्या उस लड़की में ?’’

‘‘क्या मतलब ?’’

‘‘वो एकदम ठुंठ-सी लड़की है मेहरा साहब ! उसमें ऐसा कुछ नहीं है, जो कम-से-कम उदय प्रताप जैसा अति महत्वांकाक्षी आदमी उसके साथ वर्षो तक बंधकर रहना पसंद करेगा । और यही एक बात मेरे अंदर उम्मीद पैदा कर रही है। मुझे लगता है, नीलू कम से कम हमें उस तरह धोखा नहीं दे सकती, जैसे धोखे की हम उससे अपेक्षा कर रहे हैं ।’’

‘‘बड़ी अजीब बात कर रहे हो कमाण्डर !’’

‘‘बात अजीब जरूर है, मगर सच्चाई से भरी है। मैं एक बार उस लड़की से मिल चुका हूं, इसीलिये इस तरह की बात कर रहा हूं । फिर वो लड़की ज्यादा चालाक भी नहीं है। बात को सीधे-सादे ढंग से करना जानती है ।’’

‘‘यानि फिलहाल हमें उससे कोई खतरा नहीं ?’’

‘‘होना तो नहीं चाहिये। आगे ईश्वर की मर्जी ।’’

जगदीश नरूला के चेहरे पर फिर भी विश्वास के भाव नहीं उभरे ।

यह बात उसे अंदर-ही-अंदर आंदोलित कर रही थी कि लड़की के कारण कुछ-न-कुछ गड़बड़ जरूर होगी ।

सारा मामला इतना उम्मीद से भरा हुआ नहीं रहने वाला ।

''मैं एक बात कहूं।'' अनुपमा जोशी ने जगदीश नरूला की तरफ देखते हुए कहा ।

''कहो ।''

''अब हमने ओखली में सिर दे ही दिया हैं ।'' अनुपमा जोशी बोली- ''इसलिये हमें छोटी-छोटी बातों से घटराना छोड़ देना चाहिये । जो होगा, देखा जायेगा ।''

''यह हुई कुछ हिम्मत वाली बात !'' दिलीप मेहरा भी मुस्कराया। जगदीश नरूला के होठों पर भी अब हल्की सी मुस्कान तैर गयी ।

''नीलू दफ्तर से आयेगी किस वक्त ?''

''बस थोड़ी बहुत देर में आने ही वाली होगी ।'' कमांडर करण सक्सेना अपनी रिस्टवॉच देखता हुआ बोला- ''छः बजे उसी ड्यूटी ऑफ होती है ।''

सब बड़ी ब्रेसब्री से नीलू के आने की प्रतीक्षा करने लगे ।

इस बीच उन्होंने फ्लैट को अच्छी तरह देख लिया था । वह तीन कमरों का फ्लैट था और वहाँ सुख-सुविधा के तमाम साधन उपलब्ध थे ।

ठीक सवा छः बजे जोर से फ्लैट की कॉलबैज बजी ।

''लगता है, नीलू आ गयी ।'' अनुपमा जोशी तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ी ।

''नहीं, तुम रूको ।'' कमांडर बोला- ''मैं देखता हूं ।''

अनुपमा जोशी ठिठक गयी ।

कमांडर करण सक्सेना ने आगे बढ़कर मैजिक बॉल में-से बाहर झांका ।

बाहर कार्बन ब्ल्यू कलर की टाइट जीन्स और हल्के चेकदार रॉयल ब्ल्यू करल की टॉप पहने कोई लड़की खड़ी थी । परन्तु मैजिक बॉल में से लड़की का चेहरा न चमका ।

''नीलू ही मालूम होती है ।'' कमांडर पलटकर काफी तेजी के साथ उन सबके करीब आया-''तुम लोग एक काम करो, जल्दी से अंदर वाले कमरे में जाकर छुप जाओं ।''

''लेकिन इस सबकी क्या जरूरत है ?'' जगदीश नरूला बोला ।

''जरूरत है। जैसा मैं कह रहा हूं, वैसा करो ।''

फिर उन तीनों में से किसी ने ज्यादा जिरह नहीं की । वह अंदर वाले कमरे की तरफ बढ़ गये ।

इस बीच कॉलबैल पुनः बहुत जोर से घनघनाई ।

तभी कमांडर ने दरवाजा खोला ।

□□□

वह नीलू ही थी।

"तुम !" कमांडर को अपने फ्लैट के अंदर देखकर नीलू के चेहरे पर घोर आश्चर्य के भाव उभर आये- "तुम मेरे फ्लैट के अंदर किस तरह घुसे ?" मैं तो यह देखकर ही हैरान रह गयी थी कि मेरे फ्लैट का ताला खुला है और कोई अंदर मौजूद है ।"

"पहले अंदर आओ ।" कमांडर बोला- "फिर मैं तुम्हें सारी कहानी सुनाता हूं ।"

"लेकिन ।"

"अंदर तो आओ ।"

नीलू ने अंदर कदम रखा। उसके पिचके हुए कूल्हे और सींक जैसी पतली टांगो में वो टाइट जीन्स काफी अजीब मालूम हो रही थी । खासतौर पर उसकी छातियों के उभार तो नहीं के बराबर थे ।

"तुम कमांडर हो ?" वो अंदर बाते ही बोली- "अन्तर्राष्ट्रीय जासूस कमांडर करण सक्सेना !"

"तुम्हें यह सब कैसे मालूम ?" कमांडर चौंका ।

"आज के तमाम अखबारों में तुम्हारी तस्वीर छपी हुई है, यह देखो !" नीलू ने उसी दिन का एक समाचार-पत्र कमांडर की तरफ बढ़ाया ।

कमांडर ने देखा, उस अखबार के कवर पेज पर ही उसकी तस्वीर छपी थी ।

"मैंने तो जब अखबार में तुम्हारी फोटो देखी," नीलू हैरानीपूर्वक बोली- "तब मालूम हुआ कि आज सुबह जो आदमी मुझसे मिलने आया था, वह वास्तव में कितनी बड़ी तोप चीज है। आखिर यह सब चक्कर क्या है ? क्या जंजाल है ? अखबार में नीचे दिलीप मेहरा, जगदीश नरूला, अनिल मोटा और अनुपमा जोशी का भी नाम है । और यह भी लिखा है कि पवन मल्होत्रा तथा गंजा उस्मान मारे भी जा चुके हैं । क्या यह सच है, क्या वह दोनों वाकई मारे जा चुके हैं ?"

"हां ।" कमांडर गंभीरतापूर्वक बोला- "यह सच है। सिर्फ वह दोनों ही नहीं, बल्कि अब अनिल मोटा भी ।"

"अनिल मोटा भी !"

"हां ।"

"माई गॉड ! लेकिन उन्हें किसने मारा ? "

"तुम यकीन नहीं कर पाओगी ।"

"क्यों?" नीलू बोली- "मैं यकीन क्यों नहीं कर पाऊंगी ?"

"क्येंकि यह तीनों हत्यायें उदय प्रताप ने की है मैडम !" कमांडर एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला- "उस उदय प्रताप ने, जो तुम्हारी निगाह में मर चुका है । जिसकी लाश तुमने खुद अपनी आंखो से देखी है ।"

"ऐसी नहीं हो सकता ।"

"ऐसा ही हुआ है , यही सच है ।"

नीलू अब भयभीत हिरणी की मानिन्द पलकें झपकातें हुए कमांडर को देखने लगे ।

‘‘और दिलीप मेहरा, जगदीश नरूला तथा अनुपमा जोशी इस वक्त कहां है ?’’

‘‘वह तीनों !’’ कमांडर ने गहरी निःश्वास छोड़ी-‘‘वह तीनों भी यहीं हैं ।’’

‘‘यहीं, मेरे फ्लैट में ?’’

नीलू के चेहरे पर एकाएक घोर आश्चर्य ताण्डव नृत्य करने लगा ।

‘‘हां ।’’

यही वो क्षण था, जब दिलीप मेहरा, जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी एक-एक करके अंदर वाले कमरे में से बाहर निकल आये ।

आखिर वह उन दोनों की बातें तो सुन ही रहे थे ।

उन्हें वहाँ देखकर नीलू के दिमाग पर और ज्यादा भीषण वज्रपात हुआ। वो सन्न् रह गयी ।

□□□

नीलू अब कुर्सी पर बैठी थी। उसकी आंखे धुआं-धुआं हो रही थी और चेहरे पर ऐसे गहन अचरच के भाव थे, जो शायद ही पहले कभी उसके चेहरे पर प्रकट हुए होंगे ।

कमांडर करण सक्सेना , दिलीप मेहरा, जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी भी अब उसके सामने अलग-अलग कुर्सिंयो पर विराजमान थे ।

‘‘लेकिन आप तो यहां सुबह आने वाले थे कमाण्डर !’’

नीलू सनसनाये स्वर में बोली- ‘‘फिर एकाएक यह प्रोग्राम कैसे बना ?’’

‘‘यह प्रोग्राम भी उदय प्रताप के कारण ही बना है ।’’ कमांडर ‘डनहिल’ सुलगाता हुआ बोला ।

‘‘उदय प्रताप के कारण, वो कैसे?’’

‘‘दरअसल हम लोग जिस कॉटेज में छिपे हुए थे, हमारे उस कॉटेज में छिपे होने की भनक न जाने कैसे उदय प्रताप को मिल गयी थी । उसने पुलिस को इस संबंध में इन्फार्मेशन दे दी। थोड़ी देर पहले ही पुलिस ने वहाँ जबरदस्त ढंग से रेड मारी, जिसके कारण हमें आनन-फानन वह स्थान छोड़कर फरार होना पडा । कल रात उसी कॉटेज में उदय प्रताप ने बड़ी ही खामोशी के साथ घुसकर अनिल मोटे की भी हत्या की थी ।’’

‘‘उदय प्रताप ! उदय प्रताप ! उदय प्रताप !’’ नीलू झुंझला उठी- ‘‘आप लोग आखिर यह कबूल क्यों नहीं कर लेते, उदय प्रताप मर चुका है ।’’

‘‘हम खुशी-खुशी इस बात को कबूल करते मैडम !’’ दिलीप मेहरा शुष्क स्वर में बोला- ‘‘बशर्ते कि उदय प्रताप वास्तव में ही मर गया होता । लेकिन वह न सिर्फ जिंदा है, बल्कि हम सबकी तबाही का कारण बना एक-एक करके हम मारे जा रहे हैं ।’’

“लेकिन उदय प्रताप आप लोगों की हत्या क्यों करेगा ?” नीलू बोली- “आपको धोखा क्यों देगा ?”

“क्या तुम्हें मिशन के बारे में कुछ नहीं मालूम ?”

“नहीं ।”

दिलीप मेहरा ने अब कमांडर की तरफ देखा ।

“मैं तुम्हें सब कुछ समझाता हूं ।” कमांडर बोला- “ दरअसल उदय प्रताप यह सब कुछ क्यों कर रहा हैं, इसके लिये जरूरी है कि तुम्हें सब कुछ मालूम हो । आज से कुछ सप्ताह पहले भारत सरकार ने अपने छः बहुत कुशल जासूस एक खास मिशन के अन्तर्गत न्यूयार्क भेजे थे। उनका मिशन था, 10 टन सोने को किसी विशेष स्थान से बाहर निकालना तथा फिर उसे भारत के लिये डिस्पैच करना। वह 10 टन सोना किस जगह मौजूद था और किसका था, यह एक लम्बी कहानी हैं । बहरहाल न्यूयार्क के बाद इन सभी छः जासूसों ने उदय प्रताप से मदद हासिल करनी थी। क्योंकि वह 10 टन सोना जिस जगह मौजूद था, उसे वहाँ से बाहर निकालने में उदय प्रताप ही अहम् भूमिका निभा सकता था । उसने अहम् भूमिका निभाई भी। जैसे उसने एक ऐसा नक्शा तैयार कराया, जिसकी बदौलत सोने तक सहूलियत के साथ पहुंचा जा सकता था । लेकिन नक्शा तैयार होते ही उदय प्रताप की नीयत बदल गयी । उसने उसी रात न सिर्फ वह नक्शा चुरा लिया, बल्कि अपने उस घनिष्ठ दोस्त की भी हत्या कर डाली, जिसने उसके विशेष आग्रह पर वो नक्शा तैयार किया था । उदय प्रताप के कमीनेपन की इन्तहा तो तब हुई, जब उसने उन सभी छः जासूसो के बारे में न्यूयार्क पुलिस को भी इन्फॉर्मेशन सर्कुलेट कर दी और उन्हें ये भी बता दिया कि ये किसी खास मिशन के अन्तर्गत अमरीका आये हुए हैं । उदय प्रताप की उसी हरकत की वजह से इन सभी को अपना वह स्थान छोड़कर फरार होना पड़ा, जहां यह सबसे पहले छिपे हुए थे । फिर उदय प्रताप ने पवन मेल्होत्रा और गंजे उस्मान को मारा । फिर उसने रूखसाना सुलतान नामक बड़ी मशहूर कैबरे डांसर की हत्या कर डाली । फिर मार्क को मारा। और रात ही उसने अनिल मोटे को भी मार डाला है ।”

नीलू बहुत विस्फारित नजरों से कमांडर करण सक्सेना को देखने लगी ।

“और आप ये कहना चाहतें है कमाण्डर !” नीलू बोली- “कि उदय प्रताप यह सब उस 10 टन सोने को हासिल करने के लिये कर रहा है ।”

“बिलकुल ।”

“नहीं, मुझे इस बात पर यकीन नहीं आता ।”

“क्यों, यकीन क्यों नहीं आता ? 10 टन सोना कोई कम मूल्यवान नहीं होता ? इतने अकूत धन को देखकर तो बड़े-बड़े संत-महात्माओं की नीयत भी डोल सकती है ।”

“क्या आप कभी उदय प्रताप से मिले है कमाण्डर ?”

“नहीं !” कमांडर ने ‘डनहिल’ की राख ऐश-ट्रे में झाड़ी ।

"बस, आप तभी उसके बारे में इस तरह की बातें कर रहे हैं। अगर आप एक मर्तबा भी उदय प्रताप से मिले होते, तो उसके बारे में ऐसी कोई बात न करते।"

"क्यों न करता ?"

"क्योंकि तब आपको मालूम होता, उदय प्रताप एक बेहद देशभक्त आदमी हैं । हिन्दुस्तान से उसे इस कदर प्यार है कि वो उसके लिये कुछ भी कर सकता है । हालांकि उदय प्रताप ने न्यूयार्क में रहकर जितना भी धन कमाया, वह सब उल्टे-सीधे हथकण्डो से कमाया। मगर वो हथकण्डे कभी उसी कांशस पर हावी नहीं हुए। उन हथकण्डों ने कभी उसकी आत्मा को इतना मैला नहीं किया कि वो दौलत के लालच में अपने ही देश से गद्दारी करने पर उतारू हो जाये ।"

"लेकिन इस हकीकत से भी तो इंकार नहीं किया जा सकता, जो सामने दिखाई दे रही है । एक बार उसने मेरे सामने ही रूखसाना सुलतान पर हमला किया। फिर कई मर्तबा उसके दौड़ने की आवाज हम सुन चुके हैं। उसके खांसी के ठसके सुन चुके हैं ।"

"कहीं-न-कहीं कुछ गड़बड़ जरूर है ।" नीलू बहुत दृढ़ लहजे में बोली- "अब ये लोग क्या चाहते है ? "

"यह किसी तरह उदय प्रताप तक पहुंचना चाहते है ।"

"क्यो ?"

"क्योंकि उससे अपने साथियों की मौत का बदला ले सकें । उसे जहन्नमुम पहुंचा सकें ।"

नीलू का चेहरा राख की तरह सफेद झक्क पड़ गया ।

"और ये समझते है !" नीलू विस्मयपूर्वक बोली- "कि इस काम में, मैं इनकी हैल्प करूंगी ।"

"ये नहीं समझते हैं !" कमांडर ने 'डनहिल' का एक कश और लगाया- "बल्कि ऐसा मैं समझता हूं।"

"तुम्हीं क्यों समझते हो ? "

"क्योंकि तुम मेरे साथियों को नहीं जानतीं ।" कमांडर ने एक नया पैंतरा खेला- "यह सब बहुत खतरनाक किस्म के आदमी है । खासतौर पर अपने तीन साथियों की मौत ने तो इन्हें अत्यन्त ही दुर्दान्त बना दिया है । इन्हें जब तुम्हारे बारे में पता चला, तो इन्हेंने कहा कि क्यों न तुमसे जबरदस्ती उदय प्रताप का पता मालूम किया जाये या फिर तुम्हें जबरन 'रेड मेंशन' पर ले जाया जाये, जहां उदय प्रताप के होने की काफी संभावनायें हैं । परन्तु इन्हें तुम्हारे खिलाफ कोई भी सख्त कदम उठाने से मैंने रोका। मैंने कहा, जब तुम वैसे ही हमारी मदद के लिये तैयार हो, तो फिर इस तमाम बखेड़े की क्या आवश्यकता है ।"

नीलू के चेहरे पर अब बड़े असमंजसपूर्ण भाव दिखाई पड़ने लगे ।

वह पलक झपकाते हुए कभी कमांडर को देख रही थी, तो कभी बाकी तीनों को देख रही थी ।

"मैडम, मौजूदा माहौल में तुम मुझे अपना परम् हितैषी समझो ।" कमांडर स्नेहसिक्त भाव से बोला- " और जैसा मैं कह रहा हूं, वैसा करो । उन बातो से क्या फायदा है कि इनमें से कोई गुस्से में तुम्हारी कंधे से बांह उखाड़ फेंके । तुम्हारे चेहरे पर ऐसिड डाल दें । या फिर आवेश में कुछ और उन्नीस-इक्कीस काम कर बैठे । इससे तो अच्छा यही है कि तुम इन्हें 'रेड मेंशन' ले जाओ । बदले में, मैं तुमसें वादा करता हूं कि यह तुम्हें कोई शारीरिक नुकसान नहीं पहुंचायेंगे । और फिर इस पूरे प्रकरण में तुम एक बात तो भूल ही रही हो ।"

"क्यो ?"

"जब तुम्हारा यह दृढ़ विश्वास है कि उदय प्रताप मर चुका है, तो फिर तुम्हें इन लोगों को रेड मेंशन तक ले जाने में क्या ऐतराज है ? फिर तो मैं समझता हूं, तुम्हें इनकी वैसे भी खुलकर मदद करती चाहिये । आखिर इनका यह जो भ्रम बना हुआ है कि यह सब किया-धरा उदय प्रताप का है, तो कम-से-कम इनका यह भ्रम तो टूटेगा। फिर यह असली हत्यारे तक पहुंचने की कोशिश कर सकें । बल्कि मैं तो एक बात और भी कहूंगा ।"

"क्या ?"

"अगर उदय प्रताप वास्तव में ही निर्दोष है !" कमांडर बोला- "तो फिर यह भी संभव है कि जिसने पवन मल्होत्रा, गंजा उस्मान, रूखसाना सुलतान, मार्क तथा अनिल मोटे की हत्या की, उसी ने उदय प्रताप की भी हत्या की हो । ऐसी हालत में तो तुम इन दोनों की हैल्प करके अपरोक्ष रूपसे उदय प्रताप की ही हैल्प करोगी। बताओ, क्या मैं कुछ गलत कह रहा हूं ?"

नीलू के चेहरे पर निर्णय-अनिर्णय की दुविधा के भाव बिलकुल स्पष्ट देखे जा सकते थे ।

"क्या तुम इनकी मदद के लिये तैयार हो ?" कमांडर ने नीलू की आंखो में झांका ।

"ठीक है । मैं इनकी मदद करूंगी ।"

"गुड ! मुझे तुमसे ऐसी ही समझदारी की उम्मीद थी । वैसे ये 'रेड मेंशन' है कहां ?"

"न्यूयार्क से लगभग बीस किलोमीटर दूर डेनबर नाम का एक बहुत छोटा सा टाउन (कस्बा) है ।" नीलू ने बताया- "और डेनवर के पास बिलकुल हाइवे पर ही रेड मेंशन बनी है ।"

कमांडर ने 'डनहिल' का एक कश और लगाया ।

□□□

दिलीप मेहरा उस रात जल्दी अंदर वाले कमरे में सोने के लिये चला गया । वह अभी भी गुर्दे के दर्द की शिकायत कर रहा था ।

कमांडर करण सक्सेना को उसकी फिक्र होने लगी ।

अभी तक सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था । नीलू सारी हकीकत मालूम होने की बावजूद उन्हें न सिर्फ 'रेड मेंशन' ले जाने के लिये तैयार हो गयी थी, बल्कि उनसे बीच यह भी फाइनल हो गया था कि वह पहले प्रोग्राम के मुताबिक कल सुबह ही 'रेड मेंशन' के लिए निकल पड़ेगे ।

नीलू के पास एक सैकिण्ड हैण्ड ब्यूक कार थी, जिसके कारण उन्हें डेनवर तक जाने में भी कोई प्राब्लब नहीं होनी थी ।

रात के वक्त उन्होंने टी0वी0 खबरे भी सुनीं ।

खबरों में जासूसी उपन्यासकार के कॉटेज पर पड़ी रेड का पूरा वर्णन था । खबरों में बताया गया था कि किस तरह टेलीफोन पर गुमनाम टिप मिलते ही पुलिस ने बहुत आनन-फानन वहाँ रेड मारी । खबरों में अनिल मोटे की मौत का भी जिक्र था । पुलिस ने लॉन में दबी हुई अनिल मोटे की लाश को खोंदकर बाहर निकाल लिया था । वहाँ की उथली जमीन को देखकर ही पुलिस को संदेह हो गया । खबरों में यह भी बताया गया, न्यूयार्क की पुलिस अब इन लोगों को पकड़ने के लिए पहले से भी ज्यादा मुस्तैद हो गयी है ।

''पुलिस की इन जबरदस्त सरगर्मियों को देखकर मेरे दिमाग में एक विचार आ रहा है ।'' अनुपमा जोशी बोली ।

''क्या ?''

''जब न्यूयार्क की पुलिस इतनी बुरी तरह हमारे पीछे पड़ी हुई है, तो आसपास की तमाम चैकपोस्टों पर भी हमारे संबंध में सूचनायें सर्कुलेट की जा चुकी होंगी । हमारे फोटोग्राफ्स वहाँ पहुंच चुके होंगें ।''

''बिलकुल पहुंच चुके होंगे ।'' कमांडर बोला ।

''कमाण्डर !'' अनुपमा जोशी पुरजोर लहजे में बोली- ''ऐसी परिस्थिति में जब हम लोग कल सुबह 'रेड मेंशन' जाने के लिये न्यूयार्क चैकपोस्ट क्रॉस करेंगे, तो क्या पुलिस हमें वहीं नहीं दबोच लेगी? क्या हम तभी नहीं पकड़ लिये जायेंगे ?''

अनुपमा जोशी द्वारा प्रकट की गयी नई संभावना से तमाम लोग सिहर उठे ।

''बात तो तुम्हारी बिलकुल ठीक है ।'' जगदीश नरूला बोला ।

''बात तो ठीक है ।'' नीलू भी बोली- ''मगर फिर भी तुम लोगों को इस बात में ज्यादा सोच- सोचकर परेशान होने की जरूरत नहीं है ।''

''क्यो ?''

''क्योंकि न्यूयार्क से एक सड़क अंदर-ही-अंदर डेनवर टाउन तक गयी है। डेनवर तक जाने के लिये वह रास्ता लम्बा जरूर है, मगर उस रास्ते की सबसे बड़ी खासियत ये है

कि बीच में केड्र चैकपोस्ट नहीं पड़ती । हम ‘रेड मेंशन’ पहुंचने के लिये उसी रास्ते का प्रयोग करेंगे ।”

“यह बेहतर रहेगा ।” कमांडर ने राहत की सांस ली ।

नीलू द्वारा सुझाये गये उस प्रस्ताव के कारण कम-से-कम एक बात तो फौरन ही साबित हो गयी ।

वों ये ही नीलू अब उनका मन से साथ देने के लिये तैयार है ।

तभी बाहर कम्पाउण्ड में से तेज कोलाहल की आवाजे सुनाई पड़ने लगीं ।

“यह कैसे कोलाहल की आवाजें है ?” जगदीश नरूला चौंककर बोला ।

“मैं देखती हूं ।” नीलू ने कहा ।

फिर नीलू ने सबसे पहले टी0वी0 बन्द किया और फिर पर्दा सरकाकर बाहर झांका ।

बाहर का दृश्य देखते ही उसने नेत्र बहुत विस्फारित अंदाज में फैल गये ।

बाहर प्रिंस अल्बर्ट कम्पाउण्ड में भारी मात्रा में पुलिस मौजूद थी और तमाम पुलिसकर्मी उसी के फ्लैट की तरफ इशारे कर-कर के आपस में कुछ बातें कर रहें थे ।

नीलू ने जल्दी से पर्दा वापस गिराया और बहुत आतंकित अवस्था में उन सबकी तरफ पलटी ।

“क्या हुआ ?”

“बाहर पुलिस मौजूद है ।”

“पुलिस!”

सबके छक्के छूट पड़े ।

“हां। लगता है, पुलिस को तुम सबकी यहां मौजूदगी की भनक मिल गयी हैं ।

“लेकिन पुलिस को इतनी जल्दी भनक कैसे मिली ?”

“क्या कहा जा सकता है । लेकिन आफत तुम लोगों के बिलकुल सिर पर है ।”

सबके जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया ।

कमांडर करण सक्सेना ने तेजी के साथ आगे बढ़कर खिड़की का मामूली-सा पर्दा हटाया और बाहर झांका ।

बाहर वाकई बड़ी भारी तादाद में पुलिस मौजूद थी ।

इतना ही नहीं, पुलिस अब बड़े जत्थे के रूप में उसी तरफ बढ़ रही थी ।

कमांडर तुरन्त पीछे हट गया। उसका दिमाग बड़ी तेजी के साथ उस विकट स्थिति से बच निकलने की तरकीब सोचने लगा ।

“हमें जल्दी से कुछ करना चाहिये, पुलिस इसी तरफ आ रही है ।”

“क्या फ्लैट में पीछे से भाग निकलने का कोई रास्ता है ?”

“नहीं, कोई रास्ता नहीं है ।” नीलू ने कहा ।

उन आवाजों को सुनकर अब दिलीप मेहरा भी कमरे से बाहर निकल आया था ।

मौजूदा परिस्थिति ने उसे भी झकझोर डाला ।

यही वो क्षण था, जब फ्लैट का दरवाजा बाहर से बुरी तरह भड़भड़ाया गया ।

''दरवाजा खोलिये !'' साथ ही किसी पुलिस ऑफिसर की बहुत कड़कदार आवाज उनके दिल-दिमाग पर हण्टर से बरसाती चली गयी ।

''आप लोग जल्दी से फ्लैट में अंदर कहीं जाकर छिप जाइये, जल्दी !''

''हम तो अंदर जाकर छिप जाते हैं मैडम !'' दिलीप मेहरा बोला- ''लेकिन हमारे जाते ही पुलिस के साथ मिलकर कुछ गड़बड़ न कर बैठना ।''

''मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाली हूं ।''

''इसी में तुम्हारी भलाई है ।'' दिलीप मेहरा की आवाज में साफ-साफ धमकी छिपी थी-'' वरना हम लोग बाद में मरेंगे, उससे पहले तुम्हारी लाश यहां पड़ी होगी ।''

फिर वह सब तुरन्त फ्लैट में अंदर की तरफ बढ़ गये ।

□□□

नीलू ने दरवाजा खोला ।

सामने ही न्यूयार्क पुलिस का बड़ा खुर्राट सा दिखाई देने वाला कैप्टन खड़ा था । उसकी कनौती बड़ी-बड़ी थी और आंखो में बेहद खूंखार भाव थे । कैप्टन के इधर-उधर काफी सारे हथियारबंद सार्जेण्ट मौजूद थे ।

नीलू को अपने गले में कांटे से चुभते अनुभव हुए ।

''कहिये !'' नीलू बोली- ''क्या काम है आपको ?''

पुलिस कैप्टन के हाथ में पोस्टकार्ड साइज की कुछ तस्वीरें थीं । उसने वह तस्वीरें नीलू की तरफ बढ़ायीं ।

''आप इन लोगों को देखकर बताइये मैडम, क्या आप इन्हें जानती है ?'' कैप्टन बोला ।

नीलू ने तस्वीरें देखीं। वह कमांडर करण सक्सेना , दिलीप मेहरा, जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी की तस्वीरें थी ।

उसके दिमाग में अनार से छूटते चले गये ।

''कौन हैं ये ?''

नीलू के उस अप्रत्याशित सवाल पर कैप्टन चौंका।

''आप इन्हें नहीं जानती ?''

''नहीं ।''

''आश्चर्य है ! जबकि हमें सूचना दी गयी है कि यह चारों शख्स इस समय आपके फ्लैट में ही मौजूद है ।''

“बड़ी अजीब बात कर हैं आप !” नीलू बोली- “मैं भला किन्हीं अजनबी लोगों को अपने फ्लैट में शरण क्यों दूंगी ? वैसे हैं कौन ये ?”

“यह चारो हिन्दुस्तानी जासूस हैं और खतरनाक मुहिम पर न्यूयार्क आये हुए हैं ।

“हिन्दुस्तानी जासूसो से मेरा क्या वास्ता !”

“यह तो हमें नहीं मालूम। लेकिन हमारे पास सॉलिड इन्फार्मेशन है, यह चारों यहीं हैं ।”

पुलिस का कैप्टन अब नीलू को एक तरफ करके फ्लैट में अंदर आ गया था। उसके पीछे-पीछे काफी सारे सार्जेण्टों ने भी अंदर कदम रखा।

“अब आप क्या चाहते है ?”

“हमें आपके फ्लैट की तलाशी लेनी है ।”

“तलाशी !” नीलू के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया- “लेकिन जब मैं आपसे कह रही हूं, यहां कोई नहीं है, तो फिर तलाशी का क्या मतलब है ?”

“दिस इज माई ड्यूटी मैडम ! और वैसे भी हमारे पास आपके फ्लैट की तलाशी का सर्च वारण्ट है, आप कानूनन तौर पर भी हमें तलाशी लेने से नहीं रोक सकतीं ।” कैप्टन ने अपने चैस्टर की जेब से ‘सर्च वारण्ट’ की एक कॉपी निकालकर दिखाई और फिर बिना नीलू के ऊपर दृष्टिपात किये बड़े ही दबंग अंदाज में अंदर की तरफ बढ़ा ।

उसके पीछे-पीछे बाकी सार्जेण्ट भी मार्च पास्ट सा करते हुए अंदर वाले कमरे की तरफ बढ़े ।

नीलू को अब अपने हाथ-पांव ठण्डे पड़ते महसूस हुए ।

क्या होने वाला था अब ?

नीलू वही एक कुर्सी पर बैठ गयी और उसने आंखे बंद कर लीं। उसे अपनी आंखो के गिर्द अंधेरा-सा घिरता अनुभव हुआ ।

अंदर कमरे में से अब उखाड़-पछाड़ की आवाजें सुनायी दे रहीं थी ।

“यहां तो कोई नहीं है कैप्टन !” उसके कानो में एक आवाज पड़ी ।

“ऐसा नहीं हो सकता, स्टोर देखो ।”

स्टोर का दरवाजा खुलने की आवाज आयी ।

“यहां भी कोई नहीं है ।”

“परछत्ती देखो।” कैप्टन गुर्राया- “डबल-बैड बॉक्स वाला है, उसका बॉक्स खोलकर देखो । एक-एक चीज छान मारो । वह चारों हण्ड्रेड परसेण्ट यहीं-कहीं होने चाहिये ।”

कमरों में से अब और भी ज्यादा उखाड़-पछाड़ की आवाजें आने लगीं ।

नीलू का दम सूखने लगा। उसे लग रहा था, आज उसकी खैर नहीं है ।

काफी देर तक वो तलाशी अभियान चला । फिर कैप्टन अपने तमाम सार्जेण्टों के साथ बाहर निकला। उस वक्त उन सभी के चेहरें निराशा में डूबे हुए थे ।

''आइ बैग योअर पार्डन मैडम !'' कैप्टन आह मुद्रा में बोला- ''लगता है, हमें किसी ने गलत ही इन्फॉर्मेशन दी थी । यहां कोई भी नहीं हैं । इतनी रात को हमारे कारण आपको जो कष्ट उठाना पड़ा है, उसके लिये हम शर्मिन्दा है ।''

नीलू आश्चर्य के आवेग में एक झटके से कुर्सी छोड़कर खड़ी हो गयी ।

''कोई नही है ?''

''यस मैडम ! आप ठीक ही कह रही थीं । लगता है, किसी ने पुलिस के साथ भद्दा मजाक किया है ।'' कैप्टन बाल सुलभ अंदाज में मुस्कुराया- ''दरअसल हमारे शहर में आजकल मसखरों की कोई कमी नहीं है । अलबत्ता उनके कारण परेशान आप जैसे ड्राईक्लीन सिटीजंस को होना पड़ता है । आई एम वैरी सॉरी मैडम !''

''इट्स ऑल राइट !'' नीलू ने राहत की दीर्घ श्वांस छोड़ी- ''वैसे एक सलाह मैं आपको भी देना चाहूंगी कैप्टन !''

''क्या ?''

''अगर इस शहर में ऐसे घातक मसखरों की तादाद बढ़ गयी है, तो आपको सफेदपोश शहरियों पर भी कुछ ऐतबार करना सीखना चाहिये ।''

''आपका कहना दुरूस्त है ।'' कैप्टन सम्मानीय अंदाज में बोला- मगर हमारा पेशा ऐसा है, उसमें सिर्फ ऐतबार करने से काम नहीं चलता । कब कहां धोखा हो जाये, क्या कहा जा सकता हैं ।''

यही वो क्षण था, जब एक सार्जेण्ट अंदर फ्लैट में से दौड़ा-दौड़ा बाहर आया ।

''मुझे कुछ गड़बड़ लग रही है कैप्टन !'' उसने बाहर आते ही धमाका-सा किया ।

''कैसी गड़बड़ ?''

कैप्टन तेजी से उसी तरफ घूमा ।

''अंदर किचन में कॉफी सारे चाय के कप और बर्तन सने हुए पड़े है तथा ऐसा लगता है, प्रेशर कुकर में भी काफी आदमियों का खाना तैयार किया गया हैं ।''

नीलू को एकदम अपने पैरों के नीचे से धरती खिसकती अनुभव हुई ।

उसकी मुस्कान भक्क् से लोप हो गयी ।

''क्या यह सच है मैडम !'' कैप्टन ने फौरन शक भरी निगाहों से नीलू की तरफ देखा- ''क्या यहां थोड़ी देर पहले वास्तव में ही काफी आदमियों ने खाना खाया है ?''

नीलू कोई जबाव देती, उससे पहले ही वहाँ एक और विस्फोट हुआ।

''और यह देखिये कैप्टन !'' एक अन्य सार्जेण्ट काफी व्यग्र स्वर में बोला- ''सेण्टर टेबिल पर यह जो ऐश-ट्रे रखी है, इसमें सिगरेट की राख मौजूद है । ऐसा मालूम होता है, किसी ने थोड़ी देर पहले यहां बैठकर सिगरेट पी हैं ।''

कैप्टन ने फौरन आगे बढ़कर सेण्टर टेबिल पर रखी ऐश-ट्रे उठायी और उसमें मौजूद सिगरेट की राख को अपनी दो उंगलियो से मसलकर देखा।

फिर उसने राख को सूंघा।

''सिगरेट पिये हुए अभी ज्यादा वक्त भी नहीं गुजरा है।'' कैप्टन सुप्रसिद्ध जासूस 'शरलॉक होम्स' की तरह रहस्योद्घाटन करता हुआ बोला- ''मुश्किल से आधा घण्टा। या फिर चालीस मिनट !''

नीलू ने अपने शुष्क अधरों पर जबान फिराई।

''यह सब क्या चक्कर है मैडम ?''

''कुछ भी चक्कर नहीं है।'' नीलू ने पूरी दृढ़ता और हौंसले के साथ जवाब दिया- ''यह सच है कि मैंने आज शाम को पांच-छः आदमियों के लिये खाना बनाया था और यह भी सच है, किसी ने यहां बैठकर सिगरेट पी है। परन्तु जैसा आप लोग मामला समझ रहें है, वैस कुछ भी नहीं है। आज शाम मेरे कुछ पर्सनल गेस्ट डिनर पर इनवाइटिड थे, जो खाना खाकर जा चुके हैं। और वैसे भी आप लोग मेरे फ्लैट की अच्छी तरह खाना तलाशी ले चुके है, अगर कोई यहां होता, तो आपको दिखाई न पड़ता ?''

कैप्टन निरूत्तर हो गया।

किसी सार्जेण्ट से भी नीलू की उन बातो का जवाब न दिया गया।

''मैं फिर कहूंगी कैप्टन, आप लोग खामखाह शक कर रहें है। यहां कुछ गड़बड़ी नहीं है।''

कैप्टन ने खड़े-खड़े एक बार फिर पूरे फ्लैट में अंदर-बाहर दृष्टि फिराई।

शायद वो फैसला नहीं कर पा रहा था, उसे क्या करना चाहिये। कुछ सोचकर वो अंदर किचन में गया और उसने सने हुए बर्तन चैक किये। फिर वो वापस बाहर निकलकर आया। नीलू का दिल धड़क-धड़क जा रहा था।

''ओ0के0 मैडम !'' कैप्टन बाहर आते ही बोला- ''लगता है, हमें ही कुछ वहम हो रहा है। हम चलते है। गुड नाइट !''

''गुड नाइट !''

''परमात्मा ने चाहा तो फिर मिलेंगे। वी बिल मीट अगेन !''

''जरूर।''

कैप्टन फर्श को रौंदता हुआ बाहर निकला गया।

उसके पीछे-पीछे सार्जेण्टो का पूरा लाव-लश्कर बाहर निकला। नीलू उन सबको छोड़ने अपने फ्लैट के दरवाजे तक आयीं। उसके देखते-ही-देखते वहीं प्रिंस अलबर्ट कम्पाउण्ड में पुलिया की जो गाड़ियां खड़ी थी, वह सब उसमें सवार हो गये तथा फिर चले गये।

परन्तु नीलू तब तक अपने फ्लैट के दरवाजे पर ही खड़ी रही, जब तक पुलिस की वह गाड़ियां पूरी तरह उसकी नजरों से ओझल न हो गयीं ।

उसका दिल अभी भी जोर-जोर से धड़कता जा रहा था ।

फिर वह फ्लैट का दरवाजा बंद करके अंदर आयी ।

यह बात उसे बहुत हैरान कर रही थी, वह चारों फ्लैट के अंदर-ही-अंदर से कहां गायब हो गये थे ?

□□□

नीलू ने पूरा फ्लैट छान मारा, परन्तु वह चारों कहीं न मिले।

तभी हल्की खड़-खड़ की आवाज उसके कानों में पड़ी ।

नीलू उस समय फ्लैट के सबसे पिछले कमरे में थी । उसने फौरन गर्दन उठाकर छत की तरफ देखा और अगले पहल को सन्न् रह गयी । उसने कमरे की छत के पास लगा रोशनदान खुलते देखा और फिर उसमें से कमांडर को गर्दन चमकाते देखी ।

रोशनदान के नजदीक ही सीढ़ी लगी हुई थी ।

नीलू के देखते ही देखते कमांडर रोशनदान के रास्ते फ्लैट में अंदर आ गया तथा फिर सीढ़ी से उतरकर नीचे पहुंचा । फिर इसी प्रकार दिलीप मेहरा, जगदीश नरूला, अनुपमा जोशी भी अंदर आ गये ।

''माई गॉड !'' नीलू का मुंह आश्चर्यवश खुले का खुला रह गया- ''आप लोग कहां चले गये थे ?''

''आज तो बस कमाण्डर के कारण ही जान बची ।'' दिलीप मेहरा बुरी तरह हांफता हुआ वहीं बिस्तर पर बैठ गया- ''रोशनदान के करीब से ही एक वाटर पाइप बिल्डिंग में ऊपर तक चला गया है । हम उसी वाटर पाइप के सहारे चलकर बिल्डिंग के पहले माले पर पहुंच गये थे । अगर हम वहाँ न पहुंचते, तो आज जरूर मारे जाते ।''

''तौबा ! आप लोगों के कारण मेरी तो जान ही निकल गयी थी।''

''बहरहाल शुक्र है ।'' कमांडर ने अपना क्लेंसी हैट दुरूस्त किया- ''जो आज कोई बड़ी घटना नहीं घटी ।''

''लेकिन एक बात मैं समझ नहीं पा रहा हूं ।'' जगदीश नरूला बेहद सस्पैंसफुल स्वर में बोला- ''हमारे यहां मौजूद होने की इन्फॉर्मेशन इतनी जल्दी पुलिस तक कैसे पहुंच गयी ?''

''जरूर यह काम भी उदय प्रताप ने ही किया होगा ।''

''बड़ी अजीब बात है ।'' नीलू बोली- ''आप लोग हर मामले में एक मरे हुए आदमी को घसीट रहें हैं । और अगर मान लो, उदय प्रताप जिंदा भी है, तो उसे इतनी जल्दी आप लोगों की यहां मौजूदगी के बारे में पता कैसे चल गया ?''

“उदय प्रताप कुछ भी कर सकता है ।” जगदीश नरूला बेला- “यह भी संभव है जब हम जासूसी उपन्यासकार के कॉटेज से फरार होकर यहां पहुंचे, तभी उसने गुचचुप तौर पर हमारा पीछा किया हो। ऐसी हालत में उसे हमारी यहां मौजूदगी का पता चल जाना क्या बड़ी बात है ।”

“यानि पता चाहे जैसे चले, परन्तु काम यह भी उदय प्रताप का ही है ।”

“उसके अलावा और कौन है, जिस पर फिलहाल शक किया जा सकता है ।”

नीलू खामोश हो गयी ।

□□□

जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी एक ही बिस्तर पर थे ।

बंद कमरे में ।

दोनों की गरम-गरम सांसे एक-दूसरे से टकरा रहीं थी ।

“सैक्स भी बड़ी अद्भुत चीज है ।” जगदीश नरूला, अनुपमा जोशी को अपनी बांहो के दायरे में समेटता हुआ बोला-“ माहौल चाहे जैसा भी हो, लेकिन सैक्स की भूख इंसानी शरीर में कभी भी कैसे भी हालात में जाग सकती है ।”

अनुपमा जोशी हंसी ।

वह हंसी, तो उसकी मोतियां जैसी सफेद दंत-पंक्ति चमक उठी। जिसने उसकी सुंदरता में और भी ज्यादा चार चांद लगा दिये ।

“डियर !” अनुपमा जोशी ने भी अपनी गोरी-चिट्टी बांहो का हार उसके गले में डाला- “शायद इसीलिये समाज में नये-नये सैक्स स्कैण्डल आये दिन खड़े होते रहते है ।”

“यह तो है ।” जगदीश नरूला भी मुस्कुराया- “अब देखते है, हम दोनों का किस तरह सैक्स स्कैण्डल बनता है ।”

“हमारा कोई सैक्स स्कैण्डल नही बनेगा ।” अनुपमा जोशी उससे और ज्यादा बुरी तरह लता की मानिन्द चिपट गयी ।

“क्यों ?”

“क्योंकि हम दोनों के बीच में कोई ऐसा तीसरा शख्स नहीं है, जो हंगामा बरपा सके ।”

“यह बात तुमने बिलकुल ठीक कहीं ।” जगदीश नरूला भी मुस्कुराया ।

फिर उसने थोड़ा उन्मादित होकर अनुपमा जोशी के पूरे चेहरे को चुम्बनों से भर डाला। उसके कपोल, अधर, ठुड्डी, गर्दन, भला कौन की जगह थी, जहां उसने अपने हांठो की मुहर नहीं लगायी ।

अनुपमा जोशी बैचैन हो उठी ।

उनसे जगदीश नरूला का चेहरा अपनी दोनों हथेलियों के बीच भर लिया और उसकी आंखो में प्यार का सैलाब उमड़ आया ।

जगदीश नरूला कम-से-कम औरतों की फितरत का अच्छा जानकार था ।

वो जानता था, उस निगाह का क्या मतलब है ।

उस समय वो समर्पण को पूर्णतया तैयार थी । उसकी आंखो में वासना का ज्वार-भाटा उमड़ रहा था । और यौवन कलश धधकने लगे थे ।

अनुपमा जोशी ने भी बड़े अनुरागपूर्ण ढंग से जगदीश नरूला के गाल का एक चुम्बन लिया ।

वह उसकी दीवानी थी ।

प्रेम दीवानी ।

सैक्स का जो अद्भुत आनन्द उसे उस मिशन के दौरान जगदीश नरूला से हासिल हुआ था, वह पहले कभी किसी दूसरे पुरूष से हासिल नहीं हुआ । हालांकि वह आज तक दर्जनों पुरूषो के साथ सहवास का आनन्द लूट चुकी थी । परन्तु जगदीश नरूला जिस तरह उसे धीरे-धीरे सैक्स के सागर में गोते खिलाता था, उसकी बात ही कुछ और थी।

वह पूर्ण पुरूष था ।

अपने आपको 'रोकने' की शक्ति उसमें दूसरे पुरूषों की तुलना में कई गुनी थी ।

जगदीश नरूला के साथ सैक्स का वो बेहद आनन्ददायक खेल खेलते-खेलते एकाएक अनुपमा जोशी ख्यालों में कहीं गुम हो गयी ।

"क्या हुआ डार्लिंग !" जगदीश नरूला की उंगलियों ने उसके उरोजो पर सरसराहट कीं ।

"कुछ नहीं ।"

"कुछ तो !""

"एकाएक उदय प्रताप का ख्याल आ गया था । इस आदमी का कैरेक्टर दिन-ब-दिन कितना रहस्यमय होता जा रहा है । अब तो मुझे भी एक अहसास हो रहा है ।"

"क्या ?"

"मुझे लगता है, यह उदय प्रताप वास्तव में ही मर चुका है ।"

अनुपमा जोशी की बात सुनकर जगदीश नरूला बिलकुल इस तरह चिहुंका, मानों उसे तेज करण्ट लग गया हो ।

उसकी आंखो में हैरानी का साम्राज्य उमड़ पड़ा ।

"क्यों, तुम्हें ऐसा अहसास क्यों हो रहा है?"

"क्योंकि अगर उदय प्रताप जिन्दा होता माई डियर !" अनुपमा जोशी ने उसके सीने के बालों में प्यार से उंगलियां फिराई- "तो नीलू इतनी आसानी से हमारा साथ देने के लिये तैयार न हो जाती ।"

जगदीश नरूला की दृष्टि अब उसकी केले के तने जैसी चिकनी जांघो पर जाकर केन्द्रित हो गयी थीं ।

"तुम बात को इतनी गहराई से नहीं सोच पा रही, डार्लिंग, जितनी गहराई से मैं सोच रहा हूं ।"

"वो कैसे ?"

"यह भी तो हो सकता है, इसके पीछे भी उदय प्रताप की कोई चाल हो ।"

"कैसी चाल ?"

"यह तो अब उदय प्रताप की जाने। परन्तु मुझे लग रहा है।" जगदीश नरूला उसे दोबारा अपनी बांहो में समेटता हुआ बोला- "कि रेड मेंशन पहुंचने के बाद भी कोई बहुत बड़ा रहस्योद्घाटन नहीं हो जायेगा ।"

तभी जगदीश नरूला ने अनुपमा जोशी की जांघो को अपने दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिया और अपनी शरीर का बोझ उसके ऊपर डाला ।

अनुपमा जोशी के हलक से तेज सिसकारी छूटी ।

परन्तु उस सिसकारी में भी आनन्द था ।

अपूर्व उत्तेजना !

अनुपमा जोशी भी उससे पहले की तरह ही कसकर चिपट गयी। फिर वह दोनों धीरे-धीरे चर्मोत्कर्ष की तरफ बढ़ने लगे ।

□□□

रात के कोई साढ़े बारह बज रहें थे, जब एकाएक दिलीप मेहरा की बहुत हृदय विदारक चीख से वह पूरा फ्लैट थर्रा उठा।

सोते-सोते दिलीप मेहरा के गुर्दे में पुनः भीषण दर्द उठा था । दर्द पहले की तरह ही बहुत तेज था, मानों अब प्राण निकले । सबके हाथ-पांव फूल गये। हालत ज्यादा सीरियस देखकर कमांडर ने तुरन्त डॉक्टर राघवन को फोन कर दिया ।

डॉक्टर राघवन भी अपनी कार में सवार होकर आनन-फानन वहाँ पहुंचा ।

आते ही उसने दिलीप मेहरा को दो इंजेक्शन लगाये थे और कुछ टेबलेट खाने के लिए दी थीं ।

"अब आप कैसा महसूस कर रहें है ?" डॉक्टर राघवन, दिलीप मेहरा की तरफ देखता हुआ बोला।

"अभी भी दर्द है ।" दिलीप मेहरा ने छटपटाते हुए कहा ।

"किस जगह, क्या पेशाब की नली के आसपास?"

"नहीं, गुर्दे में !"

"दर्द वाली जगह पर अपना हाथ रखकर बताइये ।"

दिलीप मेहरा ने पेट पर एक जगह हाथ रखा।

डॉक्टर राघवन धीरे-धीरे उस स्थान को अपनी दो उंगलियों से सहलाने लगा ।

दर्द फौरन बंद तो न हुआ, अलबत्ता कुछ कम जरूर हो गया।

''हालत वाकई चिन्ताजनक है।'' डॉक्टर राघवन बेहद परेशानी के आलम में वहीं एक कुर्सी पर बैठ गया- ''पथरी इस बार पेशाब की नली में तो नहीं पहुंची है, लेकिन जिस तरह का दर्द उठा है, उससे अब यह अंदेशा जरूर हे गया है कि गुर्दा किसी भी क्षण फट सकता है। कमाण्डर !'' डॉक्टर राघवन ने कमांडर की तरफ देखा-''मेरी आपको एक सलाह है।''

''बोलिये।''

सबके माथे पर चिन्ता की लकीरें खिंची हुई थीं।

''आप जितना जल्द-से-जल्द हो सकें, मेहरा साहब को मेरे नर्सिंग हेम में एडमिट करा दें । अब ऑपरेशन ही इसका एकमात्र हल है।''

''लेकिन मैं आपरेशन नहीं कराना चाहता ।'' कमांडर कुछ कहता, उससे पहले ही दिलीप मेहरा दृढ़ लहजे में बोला- ''मैं जिंदा रहना चाहता हूं । मेरे पास जितनी भी सांसे हैं, मैं उन्हें अपने देश के लिये खर्च करना चाहता हूं ।''

''परन्तु अगर आपका गुर्दा फट गया मेहरा साहब, तो आपकी फौरन डैथ हो जायेगी । जबकि ऑपरेशन में आपके बचने के फिर भी कुछ परसेण्ट चांस है ।''

''मुझे अपनी मौत की कोई परवाह नहीं ।'' दिलीप मेहरा बोला- ''मेरे लिये फिलहाल यही बहुत बड़ी बात है कि मैं जिंदा हूं और मिशन पर काम कर रहा हूं ।''

''मगर यह सरासर आत्महत्या है ।''

''आप इसें चाहे कुछ भी कहें, परन्तु यह मेरा आखिरी फैसला है ।''

दिलीप मेहरा की आवाज में दृढ़ निश्चय की झलक थी ।

डॉक्टर राघवन ने दोबारा कमांडर की तरफ देखा- ''कमाण्डर, आप ही इन्हें समझाईये ।''

''मैं क्या, दुनिया की कोई भी ताकत इन्हें नहीं समझा सकती । डॉक्टर !'' कमांडर बहुत जज्बाती होकर बोला- ''तुम इन देशभक्त लोगों को नहीं जानते, लेकिन मैं जानता हूं । न जाने किस मिट्टी के बने होते हैं ये । अपनी जान की तो जरा भी परवाह नहीं करते, देश के लिये हंसते-हंसते कुर्बान हो जाते हैं ।''

''लेकिन ।''

''प्लीज डॉक्टर !'' दिलीप मेहरा बोला- ''जो काम संभव नहीं है, आप उस पर बहस मत करो ।''

''ओ0के0 !'' डॉक्टर राघवन निराश मुद्रा में बोला- ''मैं आपकी मनःस्थिति समझ सकता हूं मेहरा साहब। लेकिन फिर भी आपकी एक आखिरी मदद मैं जरूर करना चाहूंगा

।''

''कैसी मदद ?''

''यह इंजेक्शन हैं ।'' डॉक्टर राघवन ने अपने सफेद ओवर ऑल की जेब से सामान निकालकर टेबिल पर रखना शुरू किया- ''और कुछ सीरिंज तथा निडिल ! अगर आपके दोबारा इसी तरह का बहुत भीषण दर्द उठे, तो किसी डॉक्टर को बुलाने की जरूरत नहीं है, आप फौरन यह इंजेक्शन ले लें। क्योंकि अगर डॉक्टर के आपके पास पहुंचने में देर हो गयी, तो वह भी आपके लिए खतरनाक ही साबित होगा ।''

''थैंक्यू डॉक्टर, थैंक्यू वैरी मच ।''

सबकी आंखो में डॉक्टर राघवन के प्रति आभार के भाव थे। सचमुच वह आदमी न्यूयार्क की उस धरती पर उनके काफी काम आया था ।

''ओ0के0 एवरीबडी !'' डॉक्टर राघवन ने सबकी तरफ देखा- ''मैं चलता हूं ।''

डॉक्टर राघवन ने अपना किटबैग उठाया और दरवाजे की तरफ बढ़ा ।

''सुनो डाक्टर !'' तभी कमांडर की आवाज उसके कानों में पड़ी-''आज एक सलाह मैं भी तुम्हें देना चाहता हूं ।''

डॉक्टर राघवन के कदम ठिठके ।

''एक कहावत है, तुमने जरूर सुनी होगी ।'' कमांडर बोला- ''ए थिंग इज वैल्यूड व्हेअर इट बिलोंग्ज ! यानि जंगल में मोती की कदर नहीं होती । यह न्यूयार्क शहर बेहद घमण्डी और अहसानफरोश लोगों का एक जंगल है। जबकि तुम अच्छाई के एक मोती हो। इसलिये जितना जल्द-से-जल्द हो सकें, घमण्डी लोगों के इस जंगल से निकलकर वापस अपने वतन लौट जाओ। श्रीलंका लौट जाओ। इस दुनिया में धन बहुत लोग कमा लेते हैं डॉक्टर, परन्तु संस्कारों की वो दौलत हर कोई नहीं कमा पाता, जो इस वक्त तुम्हारे पास है ।''

डॉक्टर राघवन की आंखो में आंसू छलछला आये ।

''आप शायद ठीक कह रहें है कमाण्डर ।'' डॉक्टर राघवन बहुत जज्बाती होकर बोला- '' ठीक कह रहे हैं । वाकई दौलत कमाने के लिये अमरीका आना मेरी जिंदगी का सबसे बड़ा गलत कदम था और इसका बहुत शिद्दत के साथ अहसास मुझे तब हुआ, जब आप जैसे देशभक्त लोगों से मेरा वास्ता पड़ा। आपको एक जानकारी पाकर खुशी होगी, मैंने न्यूयार्क की अपनी प्रापर्टी बेचने के सिलसिले में एजेण्टों से बात करनी शुरू कर दी है और ज्यादा संभावना इस बात की है, कुछेक दिनों में ही सारा काम निपट जायेगा ।

''वैरी गुड !'' दिलीप मेहरा प्रफुल्लित होकर बोला- ''यानि आप पहले से ही सारी तैयारी कर रहे है ?''

''हां । आखिर देशभक्त लोगों के संसर्ग का कुछ तो असर होगा । गुडबाय एण्ड गुडलक एवरीबडी !''

डॉक्टर राघवन रात के अंधेरे में ही खामोशी के साथ वहाँ से बाहर निकल गया।

नीलू ने अंदर से सिटकनी लगा ली।

उस क्षण वो भी कमांडर करण सक्सेना से बहुत प्रभावित नजर आ रही थी। उसकी देशभक्ति पूर्ण बातें सुनकर अनायास ही उसे अपने 'बर्मा' की याद आ गयी।

बर्मा!

जहां उसका जन्म हुआ।

जहां उसका बचपन बीता।

लेकिन वो भी धन के लालच में अपना सब कुछ पीछे छोड़ आयी थी। जिसका अब उसे भी अफसोस था।

''आधी से ज्यादा रात तो हमारी इसी तरह गुजर चुकी है।'' अनुपमा जोशी बोली- ''अब बस 'रेड मेंशन' के लिये रवाना होने में कुछ घण्टे का वक्त ही और बाकी है।''

''आपकी कार तो ठीक-ठाक है मैडम ?'' जगदीश नरूला बोला।

''बेफ्रिक रहो, कार सैकिण्ड हैण्ड जरूर है, मगर खचाड़ा नहीं है। इंजन एकदम रनिंग कण्डीशन में है।''

''और पेट्रोल !'' कमांडर करण सक्सेना ने सवाल किया- ''कार में इतना पेट्रोल तो होगा, जो हम 'रेड मेंशन' तक आ-जा सकें।''

अब नीलू के चेहरे पर हिचकिचाहट के भाव प्रतिबिम्बित हुए।

''क्या हुआ ?''

''यह बात मैं दावे के साथ नहीं कह सकती।'' नीलू बोली- ''कि कार के टैंक में इतना पेट्रोल है या नहीं ? वैसे फिक्र करने की बात इसलिये नहीं है, क्योंकि रास्ते में काफी सारे पेट्रोल पम्प पड़ेगे। अगर पेट्रोल कम भी होगा, तो रास्ते से ले लेंगे।''

''नहीं। कहीं बीच रास्ते में कार रोककर पेट्रोल लेना हमारे लिये मुनासिब नहीं होगा।''

''फिर ?''

''तुम अभी वापस कार का टैंक चैक कर आओ। अगर पेट्रोल कम हुआ, तो सुबह रवानगी लेने से पहले उसका भी कुछ इंतजाम यहीं से करके चलेंगे।''

''ओ0के0 !''

नीलू ने वहीं कप-बोर्ड में रखी अपनी तीन सैलों वाली टार्च उठाई और फिर दोबारा अपने फ्लैट के दरवाजे की तरफ बढ़ गयी।

बाहर कम्पाउण्ड में वाहन खड़े करने के लिए एक काफी बड़ा पार्किंग-लॉट अलग से बना हुआ था, जो बस उसके फ्लैट से थोड़ा ही फासले पर था।

नीलू ने अपने फ्लैट का दरवाजा खोला और दरवाजा खोलते ही उसे न जाने क्या हुआ, उसने वापस धड़ से बंद कर दिया।

□□□

सब चौंके।

"क्या हुआ ?" कमांडर ने विस्मयपूर्वक पूछा ।

"पुलिस !"

वो स्तब्ध भाव से बोली ।

"पुलिस, क्या कह रही हो ?"

"लेकिन पुलिस तो जा चुकी थी ।" जगदीश नरूला बोला ।

"वो फिर वापस आ गयी और इस बार पहले से भी ज्यादा बड़े लाव-लश्कर के साथ आयी है ।"

कमांडर करण सक्सेना ने खिड़की का पर्दा हटाकर बाहर झांका ।

वो सन्नाटे में आ गया ।

पुलिस इस बार वाकई बड़ी भारी तादाद में आयी थी । वह मधुमक्खियों के छत्ते की मानिन्द पूरे प्रिंस अल्बर्ट का कम्पाउण्ड में फैली थी । सबसे घोर विस्मयजनक बात ये थी, पुलिस बार सब कुछ बड़ी खामोशी के साथ कर रही थी। जैसे उनके वाहन कम्पाउण्ड में कहीं खड़े नजर नहीं आ रहें थे, वह जरूर वाहनों को दूर-दराज के इलाके में खड़ा करके आये थे, ताकि उनके इंजन की आवाज से वह लोग सतर्क न हो जायें। कम्पाउण्ड में भी वो बड़ी ही खामोशी के साथ किसी व्यूह रचना की तैयारी में जुटे थे ।

"मुझे पहले ही समझ जाना चाहिये था ।" नीलू आतांकित मुद्रा में बोली- "कैप्टन पूरी तरह विश्वस्त होकर यहां से नहीं गया था । जिस तरह उसने किचन में जाकर खुद सने हुए बर्तन देखे थे और फिर हिचकिचाहट का प्रदर्शन करते हुए विदाई ली थी, वहीं बात इस वजह की ठोस गारण्टी थी कि कैप्टन लौटकर आयेगा ।"

"लेकिन वो इतनी जल्दी लौटकर आयेगा ।" अनुपमा जोशी बोली ।

"यह बात तो चौंका देने वाली है ।"

"इसमें कोई शक नहीं ।"

दिलीप मेहरा ने भी खिड़की के रास्ते कम्पाउण्ड का दृश्य देखा ।

"अब क्या करें ?" जगदीश नरूला बोला ।

"मामला वाकई संगीन है ।" कमांडर के माथे पर भी चिन्ता की सिलवटें उभर आयीं- "कैप्टन इस बार पुलिस के जितने बड़े लाव लश्कर के साथ आया है, उससे एक बात स्पष्ट है ।"

"वो क्या कमाण्डर ?"

"कैप्टन को जरूर अब इस बात का पक्का भरोसा है कि हम लोग इसी फ्लैट के अंदर मौजूद हैं । अगर उसे पक्का भरोसा न होता, तो वह इतनी जल्दी लौटकर न आता

और इतने बड़े लश्कर के साथ न आता। फिर वह शायद पूरी बिल्डिंग की घेराबंदी कर रहा हैं ।

"ऐसी स्थिति में तो हमारा यहां से निकल भागना भी मुश्किल है ।"

"बिलकुल ।"

"फिर क्या करें ?"

कमांडर करण सक्सेना को एकाएक को जवाब न सूझा ।

मौजूदा हालात ने उसे भी हिलाकर रख दिया था । वो बिल्कुल इस तरह फंसा महसूस कर रहा था, मानों किसी बड़े 'चूहेदान' में कई सारे चूहे फंस गये हों ।

दिलीप मेहरा के गुर्दे में अभी भी दर्द था ।

परन्तु !

अब वो प्रकट नहीं कर रहा था ।

"इस समस्या से निपटने का मैं एक हल बताता हूं ।" दिलीप मेहरा बोला ।

"क्या ?"

"हममें से कोई एक आदमी यही फ्लैट के अंदर रूके और कम्पाउण्ड में मौजूद पुलिस पर जबरदस्त फायरिंग करें । इससे पुलिस का सारा ध्यान फायरिंग की तरफ लग जायेगा और पुलिस के बीच यह भ्रम पैदा होगा कि इतनी पुलिस को देखकर हम सब लोग बौखला उठे हैं । तथा अब अपने बचाव में फायरिंग कर रहें हैं । जबकि उस फायरिंग की आड़ में बाकी तमाम लोग चुपचाप फ्लैट के अंदर से भाग खड़े होंगे ।"

"और उस एक आदमी का क्या होगा ।" कमांडर बोला- "जिसे बाकी लोग फ्लैट में अकेले ही फायरिंग करता छोड़कर जायेंगे ?"

"उसने बाकी लोगों की हिफाजत के लिये अपने आपको कुर्बान करना होगा ।"

सबके दिल-दिमाग पर तीक्ष्य बिजली गड़गड़ाकर गिरी ।

सब चौंके ।

"यह आप क्या कह रहें है मेहरा साहब ?"

"फिलहाल इस संकट से निकलने का यही एक हल है और हमें इस सिलसिले में जल्दी ही कोई फैसला करना चाहिये कमाण्डर ।"

इससे पहले कि पुलिस कोई व्यूह रचना तैयार करके बिल्डिंग के पिछले हिस्से में भी पहुंचे, सिर्फ एक को छोड़कर बाकी तमाम लोगों ने यहां से निकल जाना है ।"

"लेकिन वह एक आदमी कौन होगा ।" अनुपमा जोशी विस्मयपूर्वक बोली- "जो यहां रूकेगा?"

"यह भी कोई पूछने की बात है ।" दिलीप मेहरा का चेहरा एकाएक तांबे की तरह तमतमाने लगा- "वह एक आदमी मैं होऊंगा ।"

"आप ।"

‘‘हां ।’’ दिलीप मेहरा के स्वर में दृढ़ता थी-‘‘आखिर इस समय मेरे से ज्यादा सस्ती किसकी जान है । मैंने तो वैसे भी मरना है कमाण्डर ! इस दिलीप मेहरा के लिए इससे बेहतर मौत और कोई नहीं हो सकती कि वह तुम लोगों की हिफाजत करते हुए मरे । शेर की तरह लड़ते हुए मरे ।’’

‘‘नहीं मेहरा साहब !’’ जगदीश नरूला फौरन बोला- ‘‘हम आपको यहां मौत के मुंह में अकेले छोड़कर नहीं जा सकते ।’’

‘‘बेवकूफो की तरह बातें मत करो नरूला ।’’ दिलीप मेहरा गुर्राया- ‘‘हम सब जासूस हैं और यहीं एक जासूस की जिंदगी है। फिर मुझे तो शहीद की मौत नसीब होने जा रही है, जिस पर तुम सबको गर्व करना चाहिये।’’

‘‘फिर भी यह ठीक नहीं होगा मेहरा साहब ।’’ कमांडर भी विचलित नजर आने लगा ।

‘‘आप भी बेवकूफो की तरह बातें करने लगे कमाण्डर ! मुझे कम-से-कम आपसे इस तरह की उम्मीद नहीं थी।’’

‘‘लेकिन ।’’

‘‘आपको ‘भारत मां’ की सौगन्ध है कमाण्डर, अगर आपने मुझे रोकने का प्रयास किया तो ! प्लीज, आप लोग जल्दी यहां से बाहर निकलिये, जल्दी ! कहीं ऐसा न हो, आप लोगों के लिये भी देर हो जाये। और यहीं फ्लैट हम सबकी कब्रगाह बन जाये।’’

कमांडर के चेहरे पर भूकम्प जैसे भाव थे।

उसने जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी की तरफ देखा। उनके चेहरे पर भी निर्णय-अनिर्णय की दुविधा थी ।

‘‘ठीक है मेहरा साहब !’’ कमांडर भर्राये स्वर में बोला- ‘‘जैसा आप चाहते है, वैसा ही होगा। आपकी यह कुर्बानी हमेशा भारतीय जासूसी के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज रहेगी ।’’

‘‘थैंक्यू, थैंक्यू वैरी मच कमाण्डर ! मुझे आपसे एक अंतिम विनती और करनी है ।’’

‘‘बोलिये ।’’

‘‘जब आप भारत वापस लौटे,’’ दिलीप मेहरा की आंखो में आंसू आ गये- ‘‘तो चीफ से जाकर कहना, यह दिलीप मेहरा अपने मिशन में तो जरूर असफल हो गया था, लेकिन शायद जिंदगी और मौत की इस लड़ाई में पूरी तरह असफल नहीं हुआ । इस मिशन में मुझे जो नाकामयाबी हासिल हुई है, उसके लिये चीफ से मेरी तरफ से माफी मांग लेना।’’

सबकी आंखे भर आयीं ।

यहां तक कि उन लोगों की कुर्बानी देखकर नीलू की आंखो में भी आंसुओं की नन्हीं-नन्हीं बूंदे टिमटिमा उठीं।

“आपको कोई नाकामयाबी हासिल नहीं हुई मेहरा साहब ।” कमांडर ने एकाएक बहुत कसकर दिलीप मेहरा को अपने सीने से चिपटा लिया- “आप जैसा इंसान कभी अपने मिशन में नाकाम नहीं हो सकता । आप महान हैं ।”

जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी भी बिल्कुल अबोध बच्चों की तरह दिलीप मेहरा से आकर लिपट गये।

सारा माहौल एकाएक बहुत गमजदा हो गया था ।

“अब आप लोग यहां ज्यादा समय व्यर्थ न करें, जल्दीं यहां से निकलें ।” दिलीप मेहरा ने उन सबकों अपने से अलग किया ।

फिर उन सबने विदाई ली ।

“जय हिन्द मेहरा साहब !” कमांडर जैसे आदमी ने भी दिलीप मेहरा को बहुत ठोककर सैल्यूट मारा ।

“जय हिन्द !”

वह सब उस पिछले कमरे की तरफ बढ़ गये, जहां रोशनदान के बिल्कुल नीचे सीढ़ी लगी हुई थी ।

“तुम भी इन लोगों के साथ जाओ नीलू !”

“मैं !”

नीलू चौंकी ।

“हां नीलू ! दिलीप मेहरा बोला- “अगर तुम यहां रही, तो मेरे साथ-साथ तुम भी मारी जाओगी । जबकि अभी तुमने एक ज्यादा महत्वपूर्ण कार्य को अंजाम देना है । तुमने इन लोगों को लेकर ‘रेड मेंशन’ जाना हैं ।”

“मेहरा साहब ठीक कह रहें है नीलू !” कमांडर भी बोला- “तुम मेरे साथ आओ ।”

नीलू भी पिछले कमरे की तरफ बढ़ गयी ।

□□□

वह चारों जा चुके थे ।

अपने जीवन के उन आखिरी क्षणो में अब दिलीप मेहरा वहाँ बिल्कुल अकेला था। उसके गुर्दे में अभी भी बहुत भीषण दर्द उठ रहा था, जिसे वह उन लोगों के सामने छिपाये हुए था। जब दर्द उसे अहसनीय होने लगा, तो वह अपने मुंह में यूं ही कई सारी दर्द निवारक गोलियां डालकर सटक गया और दो इंजेक्शन अपने बाजू में लगा लिये ।

फिर भी उसके दर्द को कुछ आराम न मिला ।

परन्तु दिलीप मेहरा को अब अपने दर्द की बिल्कुल परवाह न थी ।

वह खिड़की के नजदीक पहुंचकर एक स्टूल पर बैठ गया ।

उसने अपनी जेब से दो पिस्टल निकाल लीं ।

दोनो लॉडिड थीं ।

इसके अलावा गोलियां का थोड़ा का स्टॉक भी निकालकर उसने वहीं स्टूल पर रख लिया ।

फिर उसने खिड़की को मुश्किल से एक इंच खोला ।

सामने कम्पाण्उड में पुलिस की गतिविधियां अब काफी तेज नजर आ रही थीं । पुलिस के छोटे-छोटे जत्थों के बीच में खड़ा हुआ कैप्टन अलग दिखाई दे रहा था और वह हाथ उठा-उठाकर सार्जेण्टों को शायद इधर-उधर फैलने के आदेश जारी करने में लगा था ।

''तुम्हारा खेल खत्म होता है कैप्टन, अब एक नया तमाशा शुरू होगा ।''

उस खिड़की के बिल्कुल बराबर में ही एक और खिड़की थी ।

दिलीप मेहरा ने उस खिड़की के बीच में भी एक इंच की झिरी खोल ली ।

फिर उसने दोनों हाथो में पकड़ी हुई पिस्टल दोनों झिरी के सामने टिकाई और अलग-अलग सार्जेण्टो का निशाना लेकर धांय-धांय दो फायर किये ।

फौरन कम्पाउण्ड में खड़े दो सार्जेण्ट चीखते हुए कटे वृक्ष की तरह नीचे गिरे ।

कम्पाउण्ड में तहलका मच गया ।

जो सार्जेण्ट अभी तक सारा काम खामोशी से कर रहे थे, वह चीख उठे ।

''गोली सामने वाली खिड़की से चलाई गयी है ।'' तभी उनमें से कोई चिल्लाया- ''नीलू के फ्लैट से ।''

''मारो सालों को ।''

''फायर ।''

वह आवाज कैप्टन की थी ।

दिलीप मेहरा ने धांय-धांय कुछ गोलियां और चलायीं तथा फौरन खिड़की से नीचे झुककर बैठ गया ।

तभी कारबाइनों से निकली कई सारी गोलियां तड़, तड़, तड़ करके खिड़कियों से आकर टकराई और उनका कांच तोड़ती चली गयीं ।

पूरा कम्पाउण्ड गोलियों के बस्ट फायर से गरज उठा ।

कैप्टन जो व्यूह रचना तैयार कर रहा था, वह सारी छिन्न-भिन्न होकर रह गयीं ।

तभी खिड़की में से कुछ गोलियां और चलायी गयीं ।

□□□

“हमें मिली सूचना बिल्कुल ठीक हैं ।” कैप्टन उस फायरिंग के बीच गला फाड़कर चिल्ला रहा था- “वह चारों इसी फ्लैट में छिपे हुए हैं । आखिर हमें इस सम्बन्ध में दूसरी बार टेलीफोन पर गुमनाम टिप मिली थी ।”

“लेकिन यह टिप देने वाला आदमी आखिर है कौन ?”

एक सार्जेण्ट अपनी कारबाइन से धुआंधार गोलियां बरसा रहा था ।

“कुछ कहा नहीं जा सकता ।” कैप्टन की गिद्ध जैसी दृष्टि खिड़की को ही घूर रही थी- “शायद इन्हीं लोगों का कोई दुश्मन हैं ।”

“कोई पहचान ।”

“कोई पहचान नहीं ।”

“फिर ?”

“सिर्फ इस मर्तबा उसकी एक खास बात नोट की गयी थी । टेलीफोन पर बोलते समय उसे जोर-जोर से खांसी के दो बार ठसके उठे थे। ऐसा मालूम होता है, वह शायद दमे का मरीज हैं ।”

“ओह ।”

तभी दो-तीन सार्जेण्ट फिर चीखते हुए नीचे गिरे ।

खिड़की में से पुनः गोलियों की बौछार-सी उनके ऊपर झपटी थी ।

“कैप्टन !” आगे खड़ा एक सार्जेण्ट चिल्लाया- “हमारे आदमी एक-एक करके ढेर होते जा रहे हैं, हमें आगे बढ़कर फ्लैट पर हमला बोलना चाहिये ।”

“नहीं, हमला नहीं ।”

“लेकिन क्यों ?”

“क्योंकि वह चार आदमी है और हमें यह भी मालूम नहीं है, उसने पास किस-किस किस्म के हथियार है । जब तक उनका ज्यादा से ज्यादा ऐमीनेशन खत्म नहीं हो जाता, तब तक हमने दूर से ही उनका मुकाबला करना हैं ।”

तभी एक सार्जेण्ट अपनी कारबाइन से बस्ट फायरिंग करता हुआ तेजी से फ्लैट की तरफ दौड़ा ।

धांय !

सामने की तरफ से गोली चली ।

सार्जेण्ट की खोपड़ी इस तरह फूटी, जैसे अण्डे का छिलका फूटा हो। वह चीखता हुआ नीचे ढेर हो गया ।

“गधा !” कैप्टन झल्ला उठा- “ नामाकूल ! आगे से आगे होशियारी दिखाता हैं ।”

दोनों खिड़कियों की तरफ पुनः भीषण अंदाज में गोलियां चलाई ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना, जगदीश नरूला, अनुपमा जोशी और नीलू, वह चारों इस समय मल्टीस्टोरी बिल्डिंग के पहले माले पर थे ।

वह चारों पहले की तरह ही रोशनदान में-से निकलकर वाटर पाइप पर चढ़ते हुए पहले माले पर पहुंचे थे । अलबत्ता इस तरह ऊपर चढ़ने में नीलू को काफी दुश्वारी पेश आयी। दो बार तो वह वाटर पाइप से नीचे गिरते-गिरते बची, कमांडर ने उसे सहारा दिया।

''थैक्यू कमाण्डर, थैंक्यू !''

नीलू किसी तरह हांफती हुई ऊपर पहुंची ।

''हमारे साथ-साथ तुम्हें भी मुसीबत उठानी पड़ रही है मैडम ।''

''कोई बात नहीं ।''

वह सब इस समय पहले माले के गलियारे में थे ।

उस गलियारे में दोनो तरफ फ्लैट बने हुए थे ।

फिलहाल गलियारे में पूरी तरह अमन शांति थी ।

बिल्डिंग के ज्यादातर लोग अभी भी गहरी नींद सो रहे थे । जो गोलियों की आवाज सुनकर जाग गये थे, वह अपने-अपने फ्लैट की खिड़कियों से बाहर सड़क की तरफ झांकने लगे थे। अलबत्ता गलियारे में कोई नहीं आया था ।

''जल्द-से-जल्द बिल्डिंग की छत पर पहुंचो ।'' कमांडर ने आदेश दनदनाया ।

''छत पर क्यों ?''

''इस सवाल का जवाब छत पर पहुंचने के बाद अपने आप मिल जायेगा ।''

ज्यादा सोचने-विचारने का समय किसी के पास न था ।

सब तेजी से लिफ्ट की तरफ दौड़े ।

लिफ्ट अपने जंगले के पीछे थी ।

तुरन्त पैनल पर लगा गोल स्विच दबाया गया ।

मगर स्विच दबाने के बाद भी न तो इंडीकेटर की लाइट ही जली और न लिफ्ट ही ऊपर से नीचे आयी ।

''लगता है, बिल्डिंग की लिफ्ट खराब है। अब क्या करें कमाण्डर ?''

''सीढ़ियों की तरफ से चलो।''

अभी वो सीढ़ियों के नजदीक पहुंच भी न पाये थे, तभी उन्होंने कुछ पदचापों की आवाज सुनी । वह दो आदमी थे, जो जल्दी-जल्दी सीढ़ियां उतरनते हुए नीचे आ रहे थे ।

''यह कौन है ?''

''अभी देखता हूं, कौन है ।''

सब फौरन सीढ़ियों के दांयी तरफ छिपकर खड़े हो गये। कमांडर ने वहीं छिपे-छिपे अपनी कोल्ट रिवाल्वर में साइलेंसर रॉड फिट की ।

सीढ़ियां उतरते दोनों आदमियों के कदमों की पद्चापें अब काफी करीब आ चुकी थीं।

जैसे ही वह दोनों अंतिम सीढ़ी के नजदीक पहुंचे, कमांडर रिवाल्वर हाथ में लेकर तुरन्त उनके सामने जा खड़ा हुआ।

वह दोनो अठ्ठाइस-तीस साल के नौजवान थे और शक्ल-सूरत से ही बहुत शातिर नजर आ रहे थे।

शायद गोलियों की आवाजें सुनकर उनकी आंख खुली थी और अब वो नीचे यह देखने जा रहें थे कि वह सब क्या हंगामा हो रहा हैं।

अपने सामने एक हथियारबंद आदमी को देखते ही वह बुरी तरह हड़बड़ाये।

"कौन हो तुम?" उनमें से एक सकपकाकर बोला।

"फिलहाल तो अपनी सिर्फ मौत ही समझो।"

तत्काल दूसरे नौजवान का हाथ अद्वितीय फुर्ती से अपनी पेण्ट के अन्दर कहीं रेंगा, लेकिन फिर वो बाहर नहीं निकल सका।

पिट्!

पिट्!

हल्की-हल्की दो आवाजें हुई और वह दोनो नौजवान चीखते हुए वहीं सीढ़ियों पर ढेर हो गये।

गोलियां ठीक उनके दिल में जाकर लगी थीं।

"क्या हुआ ?"

नौजवान की चीख सुनते ही फौरन जगदीश नरूला, अनुपमा जोशी और नीलू बाहर निकलकर आये।

"कुछ नहीं, मैंने रास्ता साफ कर दिया है।"

सीढ़ियों पर पड़ी दो लाशें देखकर उन सबके नेत्र दहशत से फैल गये।

जबकि कमांडर करण सक्सेना ने आनन-फानन उन दोनों की लाशें घसीटते हुए वहीं बने टॉयलेट के अंदर डालीं।

फिर वह वापस सीढ़ियों की तरफ झपटा।

"क्विक, सब ऊपर आओ।"

तीनों फौरन कमांडर के पीछे-पीछे सीढ़ियों की तरफ झपटे और जल्दी-जल्दी ऊपर चढ़ते चले गये।

वह दस माले की बिल्डिंग थी।

नीचे से अभी भी धुंआधार फायरिंग की आवाजें आ रही थीं।

दिलीप मेहरा अकेला ही सारा मोर्चा संभाले हुए था।

वह वाकई हौसलामंद आदमी था।

लेकिन इससे पहले कि अमरीकन पुलिस को उनकी उस योजना की भनक मिल पाती, उन चारों ने वहाँ से भाग निकलना था ।

वह सब दौड़ते हुए दसवें माले पर पहुंचे ।

फिर वह बिल्डिंग की छत पर जाने वाली सीढ़ियों की तरफ बढ़े ।

तभी घटना घटी ।

बिल्कुल अकस्मात् दसवें माले पर बने एक फ्लैट का दरवाजा खुला और एक पति-पत्नी बाहर निकलें ।

वह चारों अभी सीढ़ियों के मुहाने तक पहुंच भी न पाये थे कि उनकी नजर उन पर पड़ गयी ।

उन हथियारबंद लोगों को देखकर वह चौंके ।

''ऐ !'' पति चिल्लाया- ''कौन हो तुम लोग ?''

चारों के शरीर को मानों लकवा मार गया।

चारों ठिठके ।

''लगता है, इन्हें भी अपनी आइटेण्टीफिकेशन देनी पड़ेगी।'' जगदीश नरूला का पिस्टल वाला हाथ तेजी से ऊपर उठा ।

''नहीं ।'' कमांडर बोला- ''गोली नहीं ।''

जगदीश नरूला की ट्रेगर की तरफ बढ़ती उंगली ठिठक गयी ।

''तुमने जवाब नहीं दिया ।'' पति फिर गरजकर बोला-''कौन हो तुम लोग और यह नीचे कैसा हंगामा हो रहा है ?''

''मैं तुम्हें तुम्हारे सवाल का जवाब देता हूं ।''

कमांडर ने रिवाल्वर अपने ओवरकोट की जेब में रखी और फिर बड़े आक्रामक मूड में उन दोनों पति-पत्नी की तरफ बढ़ा ।

''मुझे तो डर लग रहा है ।'' पत्नी कुछ घबराकर बोली ।

पति भी खतरा भांपता, इससे पहले ही कमांडर करण सक्सेना उनके बिल्कुल सामने जा खड़ा हुआ और फिर सटाक्, सटाक् की आवाज करते हुए उसकी कराटे चेप उन दोनों के दिमाग की विशेष नस पर पड़ी ।

वे चीखते हुए वहीं ढेर हो गये ।

''इन्हें क्या हुआ?'' नीलू बोली ।

''कुछ नहीं, सिर्फ कुछ घण्टे के लिए बेहोश हुए हैं।'' कमांडर शान्त लहजे में बोला-''इनकी जान लेने से बेहतर यही था कि इन्हें कुछ देर आराम करने का मौका दिया जायें ।''

कमांडर करण सक्सेना ने उन दोनों को भी घसीटकर वापस उनके फ्लैट के अंदर डाला ।

दरवाजा बंद किया ।

उसके बाद वह चारों सीढ़ियां चढ़ते हुए बिल्डिंग की छत पर पहुंचे। छत काफी लम्बी-चौड़ी थी । तभी यह रहस्य भी उजागर हुआ, कमांडर करण सक्सेना उन सबको बिल्डिंग की छत पर क्यों लेकर आया था । दरअसल उस बिल्डिंग से थोड़ा आगे जो दूसरी मल्टी स्टोरी बिल्डिंग बनी हुई थी, उन दोनों बिल्डिंगो के बीच में ऊपर ही ऊपर एक तीन फुट चौड़ ब्रिज बना था, जो दोनों बिल्डिंग को एक-दूसरे से जोड़ता था ।

उस ब्रिज की सहायता से वह दूसरी बिल्डिंग के अंदर पहुंच सकते थे ।

इसके अलावा उस दूसरी बिल्डिंग के आसपास पुलिस भी नहीं थी। इसलिये उस बिल्डिंग के अन्दर से भाग निकलने में उन्हें ज्यादा सहूलियत रहतीं ।

''वाकई, आपके दिमाग का जवाब नहीं है कमाण्डर !'' नीलू ने भी प्रशंसात्मक दृष्टि से कमांडर की तरफ देखा ।

''थैंक्यू !''

वह चारों ब्रिज की तरफ दौड़ते चले गये ।

□□□

प्रिंस अल्बर्ट कम्पाउण्ड में मौजूद पुलिस अभी भी फ्लैट की दोनो खिड़कियों पर बेतहाशा गोलियां बरसाये जा रही थीं ।

पूरे कम्पाउण्ड में भूकम्प जैसा माहौल था ।

लगभग तमाम फ्लैटों में मौजूद लोग जाग चुके थे और अब वो अपनी-अपनी खिड़कियां खोलकर नीचे कम्पाउण्ड में झांक रहें थे ।

उन सबकी आंखो में दहशत थी ।

आतंक !

बहरहाल सबसे बड़ा शुक्र इस बात का था, पुलिस के बीच अभी भी यह भ्रम बना हुआ था कि सारे जासूस फ्लैट के अंदर ही मौजूद है। इसके अलावा पुलिस ने इतनी बड़ी संख्या में वहाँ उपस्थित होने के बावजूद फ्लैट की तरफ बढ़ने का हौसला नहीं दिखाया था।

''तुम लोग ज्यादा देर तक हमारा मुकाबला नहीं कर पाओगे ।'' पुलिस कैप्टन लाउडस्पीकर पर चिल्लाते हुए बोल रहा था- ''इससे बेहतर यही है कि तुम सब लोग हथियार डाल दो और बाहर निकल आओ ।''

''हथियार डाल दो ।'' दिलीप मेहरा के होठों पर व्यंग्यपूर्ण मुस्कान रेंगी- ''जासूसों से हथियार डालने के लिये कह रहा है बेवकूफ पागल !''

''मैं तुम्हें लास्ट वार्निंग दे रहा हूं कमाण्डर !'' कैप्टन पुनः गला फाड़कर चिल्लाया- ''अभी भी समय है, बाहर निकल आओ ।''

दिलीप मेहरा उस वक्त खिड़की के नीचे बैठा हुआ था ।

उसने अपनी दोनों पिस्टलों के चैम्बर खोलकर देखे, वह खाली हो चुके थे ।

वह धीरे-धीरे उनमें दोबारा गोलियां भरने लगा ।

तभी नीचे फर्श पर बैठे हुए दिलीप मेहरा की यकायक ऐसा अहसास हुआ, जैसे उसके पेट में आग का तेज गोला-सा उठा हो ।

तुरन्त पिस्टलें उसके हाथ से छूट गयीं और उसने दोनों हाथों से अपना पेट कसकर पकड़ लिया ।

उसी क्षण दर्द की भीषण लहर-सी उठकर उसके दिमाग से टकराई और वह चकराकर धड़ाम से नीचे गिरा। उसे ऐसा लगा, जैसे उसके पेट में कोई थैली फटी हो ।

तभी दिलीप मेहरा को जोर से उबकाई आयी और उसने उल्टी कर दी ।

उल्टी में खून-ही-खून था ।

दिलीप मेहरा के नेत्र आतंक से फटे-के-फटे रह गये ।

उसका गुर्दा बस्ट हो गया था ।

गोलियां उसके सिर के ऊपर से दहकते अंगारो की तरह धांय-धांय होकर गुजर रही थीं ।

मेहरा को अपने हाथ-पैर ठण्डे पड़ते महसूस हुए ।

‘‘लगता है, अब वैसे भी मेरा अंत समय आ गया है ।

दिलीप मेहरा ने आस्तीन से अपने मुंह का खून साफ किया और फिर किसी दिलेर योद्धा की तरह दोबारा अपनी पिस्टलें हाथ में कसकर पकड़ लीं ।

‘‘जय हिन्द, जय भारत !’’

फिर उसने दोनों हाथ खिड़कियों की तरफ उठाकर तीन-चार फायर किये। तभी एक गोली सनसनाती हुई दिलीप मेहरा के कंधे में आ लगी ।

वह जोर से चीखा ।

लेकिन गोली लगने से बावजूद उसने कम्पाउण्ड की दिशा में कुछेक फायर और किये ।

तभी दो गोलियां और सनसनाती हुई उसके कन्धे में आकर लगीं ।

दिलीप मेहरा अब चीखता हुआ पीछे गिरा ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना, जगदीश नरूला, अनुपमा जोशी और नीलू, वह चारों दूसरी बिल्डिंग की छत पर पहुंच चुके थे ।

वहाँ उन्हें एक नई मुश्किल का सामना करना पड़ा ।

उस बिल्डिंग की छत से नीचे वाली जो सीढ़ियां थी, उन सीढ़ियों के आगे छत की तरफ दरवाजा लगा था और उस दरवाजे का कुण्डा अन्दर से बन्द था।

“अब क्या करें ?” चारों की निगाहें एक-दूसरे से टकराई ।

‘इस समस्या का बस एक ही हल है ।”

“क्या?”

कमांडर ने तत्काल अपनी साइलेंसर युक्त कोल्ट रिवाल्वर तानी और कुण्डे वाली जगह पर तीन फायर किये ।

तुरन्त कुण्डा उछलकर दूर जा गिरा ।

सैकिण्डों में दरवाजा खुल गया था ।

“जल्दी नीचे चलो ।” कमांडर सीढ़ियां की तरफ झपटता हुआ बोला- “हमारे पास समय बहुत कम है ।”

कमांडर के पीछे-पीछे सब सीढ़ियां उतरते चले गये ।

अभी उन्होंने दो मंजिल की सीढ़ियां ही उतरी होंगी, तभी उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई जल्दी-जल्दी सीढ़ियां चढ़ता हुआ ऊपर की तरफ ही आ रहा है ।

पद्चापें बता रही थीं, वह कोई एक आदमी है ।

सब ठिठक गये ।

सबके हाथ में मौजूद अपनी-अपनी गनें तन गयीं ।

“लगता है, फिर कोई आफत आयी।”

“इस आफत से भी निपटा जायेगा ।” कमांडर फुसफुसाया ।

उस बिल्डिंग की सीढ़ियां गोलाकार ढंग से बनी हुई थी और ऊपर से झांकने पर नीचे तक की तमाम सीढ़ियों के दर्शन होते थे। कमांडर ने ऊपर से नीचे झांका, वह उस बिल्डिंग का नाइट वॉचमैन था, जो बड़ी तेजी के साथ सीढ़ियां चढ़ता हुआ ऊपर की तरफ आ रहा था ।

उसने गहरे नीले रंग की वर्दी पहनी हुई थी, पैरों में ऐमीनेशन ब्लैक बूट थे और हाथ में एक डबल बैरल गन थी ।

शायद बिल्डिंग के उस नाइट वॉचमैन के कानों तक छत की तरफ का दरवाजा खुलने की आवाज पहुंच गयी थी और उसी आवाज को सुनकर वह ऊपर भागा आ रहा था ।

उस वक्त वह पांचवे माले पर था ।

“हमें छिप जाना चाहिये कमाण्डर !” अनुपमा जोशी बोली ।

वहीं गलियारे में उस बिल्डिंग का छोटा-सा कम्बाइण्ड स्टोर-रूम था, जिसमें मामूली काठ-कबाड़ भरा हुआ था और जिसके दरवाजे पर ताला भी नहीं था। वह चारों उस स्टोररूम में छिप गये ।

वॉचमैन के कदमों के नजदीक आने की आवाज लगातार उनके कानों में पड़ रही थी ।

जल्द ही वॉचमैन उसी माले पर आ गया तथा फिर सीढ़ियां चढ़ता हुआ ऊपर छत की तरफ चला गया ।

वह चारों स्टोर रूम से बाहर निकल आये ।

‘‘आप लोग यहीं रूको ।’’ कमांडर करण सक्सेना , वॉचमैन के पीछे झपटता हुआ बोला- ‘‘मैं अभी आया ।’’

‘‘लेकिन आप कहां जा रहे हो कमाण्डर?’’ अनुपमा जोशी चौंककर बोली ।

‘‘वापस आकर बताता हूं ।’’

कमांडर निःशब्द से ऊपर जाने वाली सीढ़ियां चढ़ता चला गया ।

कोल्ट रिवाल्वर अभी भी उसके हाथ में थी ।

टॉप फ्लोर पर पहुंचकर कमांडर करण सक्सेना ने देखा कि नाइट वॉचमैन छत पर खुलने वाले दरवाजे के नजदीक खड़ा था और बहुत हैरानी से आसपास का नजारा कर रहा था ।

कमांडर करण सक्सेना ने कोल्ट रिवाल्वर अपने ओवरकोट की जेब में रख ली ।

‘‘क्या हो गया?’’ फिर उसने आशा के विपरीत वॉचमैन को आवाज दी ।

वॉचमैन चौंककर कमांडर की दिशा में घूमा ।

डबल बैरल गन उसने अभी भी बहुत सावधानीपूर्वक अपने हाथ में पकड़ी हुई थी ।

‘‘समझ में नहीं आ रहा, छत की तरफ का यह दरवाजा कैसे खुल गया?’’ वॉचमैन बोला ।

‘‘ऐसा भी हो सकता है, दरवाजा अन्दर से बन्द ही न किया गया हो?’’

‘‘सवाल ही नहीं उठता, मैं रोज रात को खुद यह दरवाजा अपने हाथ से बन्द करता हूं। मुझे खूब अच्छी तरह याद है, मैंने आप भी यह दरवाजा अन्दर से बन्द किया था। और यह देखो !’’ वॉचमैन ने नीचे झुककर सीढ़ियों पर पड़ा कुण्डा उठाया- ‘‘यह कुण्डा भी टूटा हुआ पड़ा है। लगता है, इसे किसी ने बाहर छत की तरफ से जबरदस्ती तोड़ा है ।’’

कमांडर करण सक्सेना ने भी अब अपने चेहरे पर थोड़ी हैरानी के भाव उभारे और वह सीढ़ियां चढ़ता हुआ वॉचमैन के बिल्कुल करीब पहुंचा ।’’

‘‘वाकई, कुण्डे को देखकर तो अब मुझे भी लग रहा है।’’ कमांडर बोला- ‘कुछ-न-कुछ गड़बड़ जरूर है ।’’

‘‘लेकिन आप कौन है ?’’

‘‘तुम मुझे नहीं पहचानते ?’’

‘‘न। मैंने तो पहले कभी आपको इस बिल्डिंग में नहीं देखा ।’’

‘‘कमाल हो गया !’’ कमांडर के होठों पर व्यंग्यात्मक मुस्कान दौड़ी ।

‘‘वैसे हैं कौन आप ?’’

‘‘बाहर छत पर चलो, अभी बताता हूं ।’’

“यहीं बताने में क्या परेशानी है ?”

“परेशानी है, तभी तो कह रहा हूं। जरा दो कदम आगे चलो।”

“ठीक है।”

नाइट वॉचमैन जबरदस्त सस्पैंस में उलझा हुआ दो सीढ़ियां और चढ़कर बाहर छत पर पहुंच गया।

छत पर चन्द्रमा की हल्की-हल्की रोशनी फैली थी और स्याह आसमान पर सितारे चमचमाते हुए बड़े मनोहारी प्रतीत हो रहे थे।

कमांडर ने भी छत पर कदम रखा।

न जाने क्या हुआ, कमांडर के वहाँ पहुंचते ही नाइट वॉचमैन कुछ खतरा भांप गया और शीघ्रतापूर्वक अपनी डबल बैरल गन उसेक सीने परताननी चाही।

परन्तु !

कमांडर ने इतना मौका नहीं दिया।

उसने एकदम कराटे की ‘हिजागिरी’ का जबरदस्त एक्शन दिखाया।

वॉचमैन के मुंह से चीख निकल गयी।

डबल बैरल गन हवा में उछलकर छत पर काफी दूर जा पड़ी।

तत्काल अद्धितीय फुर्ती के साथ कमांडर करण सक्सेना की राउण्ड किक घूमी। वॉचमैन चीखता हुआ पीछे दीवार से जाकर टकराया। लेकिन वो गिरता, उससे पहले ही सम्भला और टाइगर क्लान के खतरनाक एक्शन में आ गया।

कमांडर भांप गया, वह भी जूडो-कराटे का जानकार है।

टाइगर क्लान के एक्शन में आते ही नाइट वॉचमैन ने ‘स्नैक हेण्ड’ चलाया।

कमांडर ने फौरन अपना एक हाथ्ज्ञ बिजली जैसी रफ्तान से आगे बढ़ाकर उसका ‘स्नैक हेण्ड’ ब्लॉक कर दिया और उसकी दो उंगलियां सड़ाक् से वॉचमैन की गर्दन में अन्दर जाकर घुसी, फिर उन उंगलियों ने रिब्स को पकड़कर झटके के साथ बाहर खींचा।

वॉचमैन के हलक से हृदयग्राही चीख निकल गयी।

रिब्स टूट चुकी थी।

रिब्स टूटते ही उसके मुंह से थुलथुल करके खून बहने लगा और वो चीखता हुआ पीछे जाकर गिरा।

सैकिण्ड के सौवें हिस्से में ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

□□□

कमांडर करण सक्सेना इत्मीनान से सीढ़ियां उतरता हुआ वापस जगदीश नरूला, अनुपमा जोशी और नीलू के पास आया।

साइलेंसर लगी कोल्ट रिवाल्वर एक बार फिर उसके हाथ में नजर आने लगी थी।

“रास्ता साफ हो गया है ।” वह बोली- “नीचे चलो ।”

“नाइट वॉचमैन कहां गया ?”

“उसे मैंने ऊपर पहुंचा दिया ।”

“ऊपर छत पर ?” नीलू आतंकित मुद्रा में बोली- “या बिल्कुल ऊपर ?”

“बिल्कुल ऊपर !”

“ओह माई गॉड !”

नीलू के शरीर में जबरदस्त सिहरन दौड़ गयी ।

वह अचम्भित निगाहों से कमांडर को देखने लगी। वो इस बात पर यकीन नहीं कर पा रही थी, शक्ल-सूरत से इतना खूबसूरत नजर आने वाला वह व्यक्ति इनता खूंखार भी हो सकता है।

“अब जल्दी यहां से चलो ।”

वह चारों पहले की तरह ही काफी तेजी के साथ बिल्डिंग की सीढ़ियां उतरने लगे ।

फिर नीचे तक उनके सामने मुश्किल पेश न आयी ।

□□□

कम्पाउण्ड में मौजूद पुलिसकर्मी अभी भी फ्लैट की तरफ धुआंधार फायरिंग कर रहें थे । लेकिन अब पिछले तीन-चार मिनट से फ्लैट की तरफ से कोई गोली नहीं चली थी । इस बात ने तमाम पुलिसकर्मियों को सोच में डाला हुआ था ।

“मुझे तो कुछ गड़बड़ लगती है कैप्टन!” एक सार्जेण्ट पुलिस कैप्टन से बोला ।

“कैसी गड़बड़ ?”

“आप देख नहीं रहें, फ्लैट के अन्दर से अब गोलियां ही नहीं चल रही हैं ।

कैप्टन के माथे पर भी सिलवटें उभर आयीं ।

वाकई, यह बात तो वह भी नोट कर रहा था।

“हमें अन्दर जाकर देखना चाहिये कैप्टन !”

“लेकिन यह जासूसों की कोई चाल भी तो सकती है !”

“बिल्कुल हो सकती है। परन्तु आप कोई दूसरी वजह क्यों नहीं सोच रहें?”

कैप्टन के चेहरे पर अब साफ-साफ उलझनपूर्ण भाव नजर आने लगे ।

वो दुविधा में था ।

“फायरिंग बन्द करो ।” तभी उसने चिल्लाकर तमाम पुलिसकर्मियों को आदेश दिया ।

आदेश देने की देर थी, तत्काल फायरिंग बन्द हो गयी ।

सभी पुलिसकर्मी अब एक-एक करके कैप्टन के इर्द-गिर्द जमा होने लगे थे ।

''हमने अब फ्लैट पर धावा बोलना है ।'' कैप्टन उन सबसे सम्बोधित हुआ- ''अन्दर शायद कुछ गड़बड़ है। हमें अन्दर जाकर देखना है, जासूस वहाँ क्या कर रहें है ?''

''परन्तु हम फ्लैट के अन्दर किस तरह घुसेंगे ?'' एक सार्जेण्ट ने पूछा।

''फ्लैट के अन्दर घुसने के दो दरवाजे है, जो सामने की तरफ ही मौजूद हैं । हम दस-दस पुलिसकर्मियों की दो टुकड़ियां बनाकर दोनों दरवाजों पर धावा बोलेंगे और दरवाजे तोड़ते हुए अन्दर घुस जायेंगे । इसके अलावा दस पुलिसकर्मियों की एक तीसरी टुकड़ी उस वक्त खिड़कियों के पास पहुंचकर अपनी-अपनी कारबाइनों से अन्दर सपोर्ट फायरिंग करेगी, ताकि अन्दर मौजूद जासूसों का ध्यान भंग किया जा सके। और बाकी दोनों टुकड़ियां सुरक्षित अन्दर फ्लैट में दाखिल हो सकें। इस प्लान पर किसी को कोई शक? कोई सवाल?''

''कोई सवाल नहीं ।''

सब समवेत् स्वर में बोले ।

''गुड !''

फिर पलक झपकते ही तीस बड़े मुस्तैद सार्जेण्टों की तीन अलग-अलग टुकड़ियां बन गयी ।

''टुकड़ी नम्बर एक !'' पुलिस कैप्टन गरजकर बोला- ''और टुकड़ी नम्बर दो, तुम लोगों ने दरवाजों पर अटैक करना है ।''

''ओ0के0 सर !''

दोनों टुकड़ियां के सार्जेण्ट बिल्कुल फौजियों की तरह सैल्यूट ठोककर बोले ।

''टुकड़ी नम्बर तीन !'' फिर पुलिस कैप्टन 'टुकड़ी नम्बर तीन' की तरफ घूमा ।

''यस सर !''

टुकड़ी नम्बर तीन के सार्जेण्टो ने भी जोर से सेल्यूट ठोका ।

''तुम लोगों ने दोनों खिड़कियों पर सपोर्ट फायरिंग करनी है और उन्हें फ्लैट के अन्दर घुसने में मदद देनी है।''

''ठीक है सर ।''

तीनों टुकड़ियां अब कुछ-कुछ फुट के फासले पर पोजीशन लेकर खड़ी हो गयीं। खुट पुलिस कैप्टन 'टुकड़ी नम्बर एक' में शामिल हो गया था ।

''अटैक फायर !'' कैप्टन गरजकर बोला ।

तत्काल तीनों टुकड़ियां तोप से छूटे गोले की भांति अपने-अपने टारगेट की तरफ झपटीं। टुकड़ी नम्बर एक और टुकड़ी नम्बर दो ने जहां फ्लैट के दोनो दरवाजों पर अपनी पूरी शक्ति के साथ कारबाइनों की बटें बजानी शुरू कर दी थी, वहीं टुकड़ी नम्बर तीन ने खिड़कियों के सामने पहुंचकर अपनी-अपनी कारबाइन के बर्स्ट फायर खोल दिये ।

धड़ ! धड़ ! धड़ ! ! ! फ्लैट के अन्दर गोलियां की बारिश-सी होने लगी ।

दोनों दरवाजे लरजने लगे। हालांकि वह काफी मजबूत थे, लेकिन फिर भी पूरी शक्ति के साथ की जाती कारबाइनों की मजबूत बटों का सामना वो कब तक करते !शीघ्र ही उनके कब्जे चौखट से उखड़ गये और वे भीषण गर्जना करते हुए धड़ाम से अन्दर गिरे ।

अब दोनों टुकड़ियां बेतहाशा गोलियां चलाती हुई एकदम फ्लैट में जा घुसीं । कैप्टन अन्दर घुसने वालों में सबसे आगे था ।

अन्दर घुसते ही सब चौंके ।

उन्होंने तुरन्त गोलियां चलानी बन्द कर दीं।

''यहां तो कोई नहीं है कैप्टन !'' एक सार्जेण्ट चीखकर बोला ।

फौरन सबकी निगाहें पूरे फ्लैट में घूम गयीं ।

वहाँ सचमुच कोई न था ।

सिर्फ दोनों खिड़कियों के नीचे एक आदमी औंधे मुंह पड़ा हुआ था। उसके आसपास काफी सारा खून फैला था और पिस्टल में चलने वाली गोलियां का स्टॉक पड़ा था। वहीं उसके नजदीक दो पिस्टल पड़ी थीं ।

''लगता हैं, हमारे साथ धोखा हुआ है।'' कैप्टन बोला- ''सारे जासूस यहां से भाग गये हैं ।''

इस बीच कुछ सार्जेण्टों ने बहुत आनन-फानन पूरे फ्लैट को खंगाल डाला, वह वाकई कोई न था ।

''यह तो दिलीप मेहरा है ।'' पुलिस कैप्टन बोला ।

''वही लगता है ।''

उसका सारा चेहरा खून में सना हुआ था । सार्जेण्ट ने चेहरे का खून साफ किया, तो बिल्कुल ही साबित हो गया, वह दिलीप मेहरा है ।

''जरा देखना !'' पुलिस कैप्टन बोला- ''यह जिन्दा है या मर गया ?''

सार्जेण्ट ने उसकी नब्ज देखी ।

चेहरे पर निराशा के भाव आये । फिर उसने जल्दी से उसकी हार्ट बीट चैक की ।

''क्या हुआ ?''

''दिस इज डैड !''

''सब जल्दी से बाहर निकलकर इसके बाकी साथियों को देखो ।'' कैप्टन चिल्ला उठा- '' जल्दी ! वह अगर अभी फरार हुए हैं, तो ज्यादा दूर नहीं गये होंगे ।''

सार्जेण्ट अपनी-अपनी कारबाइन सम्भालकर आंधी-तूफान की तरह वापस बाहर की तरफ दौड़े ।

□□□

वह चारों न सिर्फ प्रिंस अल्बर्ट कम्पाउण्ड से बाहर निकल आये थे, बल्कि इस समय एक बहुत निर्जन सी सड़क पर पूरे जी-जान से दौड़े जा रहे थे ।

नीलू उनमें सबसे ज्यादा डरी हुई थी ।

शायद इसलिये, क्योंकि उस तरह की हंगामाखेज घटना से उसका जिन्दगी में पहली बार वास्ता पड़ा था ।

मुश्किल से एक किलोमीटर दूर 'सिटी रेलवे स्टेशन' था। वह रेलवे स्टेशन पूरी तरह अण्डरग्राउण्ड था और पूरे न्यूयार्क शहर में जमीन के नीचे नीचे-ही-नीचे वह रेलवे लाइन बिछी थी, जहां सुपर फास्ट ट्रेनें दौड़ती थी और चौबीसों घण्टे यात्रियों को न्यूयार्क के छोटे-छोटे स्टेशनों पर इधर-उधर पहुंचाती थी ।

''सब रेलवे स्टेशन की तरफ चलो ।'' नीलू बेतहाश दौड़ते हुए बोली ।

''स्टेशन की तरफ क्यों ?''

''मैं तुम लोगों को एक ज्यादा सुरक्षित जगह ले जाऊंगी ।''

किसी ने नीलू से यह नहीं पूछा कि वह सुरक्षित जगह कौन सी है ? सब तुरन्त ही 'सिटी रेलवे स्टेशन' की तरफ दौड़ पड़े ।

उस समय 'रेड मेंशन' जाने का विचार किसी के दिमाग में न था ।

तभी एक घटना घटी ।

एक पुलिस पेट्रोलिंग कार सांय-सांय करती हुई बिल्कुल एकाएक सामने सड़क पर प्रकट हुई और वे चारों उस कार की हैडलाइट के तीक्ष्य प्रकाश में सिर से पांव तक नहा गयें ।

''सब गली की तरफ मुड़ो ।'' जगदीश नरूला चिल्लाया ।

वहीं नजदीक में एक गली थी ।

सब गली की तरफ दौड़े ।

अभी वे गली तक पहुंच भी न पाये थे कि उन सबसे आगे गुजर चुकी उस 'पुलिस पेट्रोलिंग कार' के जोर से ब्रेक अप्लाई किये गये ।

कार के पहियों के काफी दूर तक घिसटने और फिर रूकने की आवाज उन सबके कानों में पड़ी ।

फिर देखते-ही-देखते उस पेट्रोलिंग कार में से छः हथियारबन्द सार्जेण्ट धड़ाधड़ नीचे कूदे ।

''अरे !'' एक सार्जेण्ट उनकी तरफ देखता हुआ चिल्लाया- ''यह तो वही हिन्दुस्तानी जासूस हैं, जिनकी तस्वीरें रोजाना टेलीविजन पर ब्रॉडकास्ट की जा रही हैं ।''

''हां, ये वहीं हैं ।'' दूसरे सार्जेण्ट ने भी चिल्लाकर कहा ।

''मारे गये !''

उन चारों को सांप सूंघ गया ।

“पकड़ो इन्हें, पकड़ो ।”

तमाम सार्जेण्ट अपनी-अपनी कारबाइन सम्भालकर उनके पीछे झपटे ।

तब तक वह चारों गली के दहाने पर पहुंच चुके थे ।

वह बड़ी तेजी के साथ गली में मुड़े ।

उसी क्षण पीछे से उनके ऊपरी धुआंधार फायरिंग की गयी, जिनसे बस वो बाल-बाल बचे ।

गली में घुसते ही नीलू बुरी तरह लड़खड़ाई। कमांडर ने उसे हाथ पकड़कर सहारा दिया और फिर उसे अपने साथ-साथ लेकर भागता चला गया ।

नीलू एक बार फिर जी-जान से दौड़ रही थी ।

उस गली में आगे जाकर बिल्कुल अलग-अलग दिशा में दो सड़कें फटती थीं। जो काफी चौड़ी सड़कें थी और अच्छे-खासे बाजार में परिवर्तित थीं ।

कमांडर करण सक्सेना और नीलू बिल्कुल साथ-साथ दायीं तरफ वाली सड़क पर भागते चले गये।

नीलू जैसी पतली-दुबली लड़की भी उस समय भागने में जितना साहस दिखा रही थी, वह सचमुच कमाल था ।

नीलू ने भागते-भागते पलटकर देखा ।

जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी उनके पीछे नहीं थे ।

सड़क पर दूर-दूर तक अंधेरा था ।

सन्नाटा !

“यह दोनों कहां रह गये ?” नीलू विस्मयपूर्वक बोली।

“जरूर वह दूसरी सड़क पर चले गये।” कमांडर ने भागते हुए ही कहा- “उनकी चिन्ता मत करो, वह हमें मिल जायेंगे। हमारा पहला काम पुलिस से अपनी जान छुड़ाना हैं ।”

सड़क काफी लम्बी थी और उसका घुप्प अंधकार में डूबे होना फिलहाल उनके लिये काफी फायदेमन्द साबित हो रहा था ।

दोनों बेतहाशा दौड़ते रहे ।

पीछे से सार्जेण्टों के दौड़ने की आवाजें भी निरंतर उनके कानों में पड़ रही थीं। उनके भारी-भरकम ऐमीनेशन ब्लैक बूट सड़क से टकराकर एक अजीब-सा दहशतजनक माहौल बना रहे थे ।

दौड़ते-दौडते नीलू की सांसे बुरी तरह से फूलने लगी ।

“मैं और नहीं दौड़ सकती कमाण्डर !” नीलू ने जोर-जोर से हांफते हुए कहा ।

“थोड़ी हिम्मत और करो बेबी !”

“नहीं ।” उसी क्षण नीलू के कदम जोर से लड़खड़ाये और इससे पहले कि वो वहीं सड़क पर ढेर होती, कमांडर ने अपनी दोनों बांहो से उसे सम्भाल लिया ।

उसके दिल के जोर-जोर से पसलियों को कूटने की आवाज बाहर तक सुनाई पड़ रही थी ।

उसका पूरा शरीर पसीनों में लथपथ था ।

कमांडर उसकी हालत देखकर समझ गया, वह लड़की वास्तव में अब और नहीं दौड़ पायेगी ।

कमांडर ने सड़क पर इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई ।

सामने ही उसे ‘एण्टीक आइटम्स’ (दुर्लभ वास्तुओं) का एक काफी बड़ा शोरूम नजर आया, जो उस वक्त बन्द था । लेकिन उस शोरूम के बाहर शट के इधर-उधर पत्थर की दो आदमकद मूर्तियां खड़ी थीं । वे पहरेदारों की मूर्तियां थीं । जिन्होंने मिलेट्री कलर की लम्बी-लम्बी ब्रिजिस पहनी हुई थीं और सिर पर हेलमेट नुमा कैप थे । इसके अलावा उन दोनों ने अपने-अपने हाथों में बड़े नुकीले भाले भी पकड़ रखे थे ।

कमांडर और नीलू उन पहरेदारों के पीछे जाकर छिप गये ।

□□□

सार्जेण्टो के भारी-भरकम जूतों की आवाज अभी भी उनके कानों में पड़ रही थी ।

वह भागकर उसी तरफ आ रहे थे ।

कमांडर करण सक्सेना ने मूर्ति के पीछे छिपे-छिपे उस भाले को पकड़कर देखा जो पहरेदार के हाथ में था । भाला बिल्कुल असली था और उसे पहरेदार की बन्द मुठ्ठी के अन्दर अलग से डाला गया था ।

कमांडर ने आहिस्ता से वह भाला बाहर निकाल लिया ।

तभी सार्जेण्ट दौड़ते हुए ‘एण्टीक शॉप’ के सामने पहुंचे ।

वह दो सार्जेण्ट थे ।

दोनों के हाथ में अभी भी कारबाइनें तनी थी और वह शक्ल-सूरत से काफी दुर्दान्त नजर आ रहे थे ।

‘एण्टीक शॉप’ के बिल्कुल सामने आकर वह दोनों सार्जेण्ट ठिठक गये और बड़ी सन्देह भरी निगाहों से इधर-उधर देखने लगे ।

“अभी तो मैंने उनकी काली-सी परछाई यहीं कहीं देखी थी ।” एक सार्जेण्ट की आवाज उनके कानों में पड़ी- “मालूम नहीं एकाएक कहां गायब हो गये ?”

“जरूर साले इधर-उधर ही कहीं छिपे होंगे। हमें उन्हें ढूंढना चाहिये ।”

उनमें से एक सार्जेण्ट कारबाइन हाथ में लेकर उन्हें तलाशने की गरज से थोड़ा आगे बढ़ गया, जबकि दूसरा ‘एण्टीक शॉप’ की तरफ ही बढ़ा ।

दोनों के दिल की धड़कनें तेज हो गयीं ।

कमांडर करण सक्सेना के हाथ भाले पर कस गये ।

दूसरा सार्जेण्ट बिल्कुल उसी दिशा में बढ़ रहा था ।

फिर वो नीलू वाली मूर्ति के सामने जाकर खड़ा हो गया । तथा बड़ी चौकन्नी निगाहों से अन्धेरे में इधर-उधर देखने लगा । नीलू कुछ ज्यादा घबरायी हुई थी, इसलिये सार्जेण्ट को अपने इतना नजदीक देखकर वह बुरी तरह लड़खड़ाई ।

''ऐ !'' सार्जेण्ट फौरन चीख उठा- ''कौन है, कौन है वहाँ ?''

नीलू कसकर मूर्ति से चिपक गयी। उसका ऊपर का सांस ऊपर और नींचे का नीचे ठहर गया ।

सार्जेण्ट ने अब अपनी कारबाइन बिल्कुल मूर्ति की तरफ तान दी थी ।

''जबाव नहीं दिया ।'' सार्जेण्ट पुनः जोर से गरजा- ''मूर्ति के पीछे कौन छिपा है ?''

सार्जेण्ट धीरे-धीरे मूर्ति की तरफ बढ़ा ।

कमांडर भांप गया, नीलू खतरे में है ।

उसने फौरन कुछ करना था ।

वह एकदम भाला हाथ में लेकर दूसरी मूर्ति के पीछे से बाहर निकल आया ।

''इधर सुनो !'' कमांडर धीमी आवाज में बोला- ''मैं बताता हूं, मूर्ति के पीछे कौन छिपा है ?''

सार्जेण्ट बेपनाह तेजी के साथ कमांडर की तरफ घूमा ।

तुरन्त उसके नेत्र आतंक से फैल गये। उसने कारबाइन से गोलियां चलानी चाहीं ।

परन्तु कमांडर ने उसे इतना मौका नहीं दिया । उसने पूरी शक्ति के साथ भाला उस सार्जेण्ट की तरफ खींच मारा। सार्जेण्ट चीखता हुआ पीछे गिरा ।

भाला उसकी मजबूत पसलियों को बेदर्दी के साथ तोड़ता हुआ सीने के आर-पार निकल गया था ।

''कौन है ?'' अपने साथी के चिल्लाने की आवाज सुनकर दूसरे सार्जेण्ट धुआंधार स्पीड से दौड़ता हुआ उसी तरफ आया- ''कौन है वहाँ ?''

तब तक कोल्ट रिवाल्वर कमांडर के हाथ में आ चुकी थी ।

वह उसकी उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और फिर धांय-धांय दो फायर हुए ।

दोनों गोलियां उसके ऐन 'थर्ड बर्टीब्रा' (दिल के ऊपर की तीसरी पसली) को भेदती चली गयीं ।

वह सार्जेण्ट भी हृदयविदारक ढंग से चिंघाड़ता हुआ वहीं बीच सड़क पर ढेर हो गया ।

"अब जल्दी यहां से दौड़ो।" कमांडर व्यग्रतापूर्वक नीलू का हाथ पकड़ता हुआ बोला- "जल्दी !"

नीलू एक बार फिर अपनी सम्पूर्ण ताकत से कमांडर के साथ-साथ सड़क पर दौड़ती हुई चली गयी ।

फिलहाल पीछे से एक सार्जेण्ट के दौड़ने की आवाज और आ रही थी ।

मगर उन दोनों के तथा उस सार्जेण्ट के बीच काफी फासला था ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना और नीलू अण्डरग्राउण्ड बने 'सिटी रेलवे' स्टेशन पर पहुंचे ।

दिन के वक्त जहां उस रेलवे स्टेशन पर खूब गहमा-गहमी रहती थी, वहीं रात के वक्त वहाँ गहन सन्नाटे का साम्राज्य था । साफ-सुथरे पड़े प्लेटफार्म का फर्श शीशे की तरह चमक रहा था और दीवारों मे जगह-जगह वॉल-लैम्प की दूधियां रोशनी चारों तरफ बिखरी थी ।

रात के उस वक्त तीन पच्चीस हो रहे थे ।

यात्री वहाँ नहीं के बराबर थे। कभी-कभार कोई इक्का-दुक्का नजर आता था । सामने ही एक बुक-स्टॉल खुला हुआ था और एक फास्ट फूड की दुकान खुली थी । इसके अलावा प्लेटफार्म पर काफी दूरी तक पारदर्शी कांच का 'इन्क्वॉयरी काउण्टर' भी बना हुआ नजर आ रहा था, जिसके अन्दर मुश्किल से बाइस-तेइस साल की एक बहुत ब्लौंड गर्ल बैठी थी और वॉकमैन पर खाली वक्त गुजारने के लिये शायद कोई म्यूजिक सुन रही थी । इसके अतिरिक्त एक जासूसी उपन्यास भी उसके हाथ में था ।

कमांडर और नीलू वहीं प्लेटफार्म पर बनी एक बैंच पर जा बैठे ।

"माई गॉड !" नीलू भयभीत थी और हांफ रही थी- "मैंने अपनी पूरी लाइफ में एक साथ इतने लोगों को मरते कभी नहीं देखा ।"

कमांडर मुस्कराया ।

"इसी का नाम जिन्दगी है मैडम !" वह बोला- "इससे थ्रिल, सस्पैंस सब कुछ होता है। खासतौर पर एक जासूस की जिन्दगी में तो ऐसे क्षण बार-बार आते हैं ।"

नीलू काफी देर बाद अपनी सांसो को नियंत्रित कर सकी ।

"न जाने हमारे पीछे मेहरा साहब का क्या हुआ होगा ?"

"कुछ कहा नहीं जा सकता ।"

दिलीप मेहरा का जिक्र छिड़ने से कमांडर पुनः गम्भीर हो उठा ।

सचमुच वो एक देशभक्त आदमी था ।

जिस तरह का फैसला दिलीप मेहरा ने लिया था, ऐसा फैसला कोई बहुत जिगर वाला आदमी ही ले सकता है ।

फिर उसकी निगाह सीढ़ियों पर जाकर टिक गयी ।

जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी का अभी भी कुछ पता नहीं था ।

''क्या वह दोनों यहीं आयेंगे?'' नीलू बोली ।

''आने तो चाहिये, आखिर बिछड़ने से पहले उन्हें मालू था कि हम लोगों का टार्गेट 'सिटी रेलवे स्टेशन' है।''

''यह तो है। फिर वो आये क्यों नही अभी तक ?''

''शायद थोड़ी बहुत देर में आ जायें। अब हमनें कहां जाना है ?''

''फिलहाल 'रेड मेंशन' तक जाने का तो कोई साधन यहां मौजूद नहीं है ।'' नीलू बोली- ''क्योंकि सिटी रेलवे स्टेशन से चलने वाली कोई भी ट्रेन शहर से बाहर नहीं जाती। जबकि वहाँ तक जाने के लिये अपना कोई वाहन हमारे पास नहीं है । इसलिये इस वक्त हम बिस्टन रोड जायेंगे, जहां मेरी निगाह में एक ऐसी जगह है, जहां हम पुलिस से छिपकर थोड़ा समय गुजार सकते है ।''

''विस्टन रोड !''

''हां ।''

''ठीक है ।''' कमांडर बैंच छोड़कर खड़ा हुआ- ''मैं इन्क्वॉयरी काउण्टर पर मालूम करके आता हूं कि विस्टन रोड जाने वाली ट्रेन किस टाइम आयेगी ?''

नीलू कुछ न बोली ।

कमांडर लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ अब इन्क्वॉयरी काउण्टर की तरफ बढ़ गया था ।

वहाँ बैठी ब्लौंड गर्ल अभी भी बड़ी तन्मयता से जासूसी उपन्यास को अपने चेहरे के आगे किये पढ़ रही थी और उसके कानों से पहले की तरह की वॉकमैन चिपका था ।

''हैलो मैडम !'' कमांडर ने काउण्टर का ग्लास खटखटाया ।

परन्तु वह लड़की उपन्यास पढ़ने में बुरी तरह लीन रही ।

कमांडर की आवाज उसके कानों तक न पहुंची ।

''मैडम !'' कमांडर ने ग्लास थोड़ा और जोर से खटखटाया ।

लड़की की तन्द्रा अब भंग हुई।

उसने जासूसी उपन्यास को चेहरे के सामने से हटाकर कमांडर की तरफ देखा।

''यस प्लीज !''

''व्हाट्स द अराइवल टाइम ऑफ विस्टन रोड बाउण्ड ट्रेन ?''

(विस्टन रोड जाने वाली गाड़ी कब आती है?)

''व्हाट !'' लड़की ने अपने कानों से चिपका हैडफोन हटाया ।

‘‘मैडम, व्हाट्स द अराइवल टाइम ऑफ विस्टन रोड बाउण्ड ट्रेन ?’’

‘‘ओह सॉरी ! सॉरी । थ्री फिफ्टी !’’

‘‘थैंक्यू !’’

कमांडर वापस नीलू के पास लौट आया ।

‘‘क्या हुआ ?’’

‘‘लड़की बता रही है, विस्टन रोड जाने वाली ट्रेन तीन पचास पर आयेगी ।’’

‘‘तीन पचास !’’ नीलू ने अपनी रिस्टवॉच देखी- ‘‘अभी तो बहुत वक्त है । पच्चीस मिनट ।’’

‘‘हां । शायद रात के वक्त ट्रेनों की सर्विस कम हो जाती है ।’’ कमांडर ने इन्क्वॉयरी काउण्टर की तरफ देखा । लड़की ने पहले की तरह ही हैडफोन अपने कान से चिपका लिया था और वह पुनः जासूसी उपन्यास चेहरे के आगे करके पढ़ने में मशगूल हो गयी थी ।

लड़की उपन्यासों की कुछ ज्यादा ही शैदाई मालूम होती थी ।

‘‘ट्रेन आने में तो अभी बहुत वक्त है, तब तक कॉफी पीओगे ?’’

‘‘आप क्यों परेशान होते है कमाण्डर, कॉफी मैं लाती हूं ।’’

‘‘नहीं, तुम बैठो ।’’’

करण सक्सेना फास्ट फूड की दुकान की तरफ बढ़ गया और जल्द ही वहाँ से कॉफी के दो मग लेकर लौटा । जिसे वो वहीं बैंच पर बैठकर पीने लगे ।

इस वक्त कमांडर के दिमाग में एक ही खतरा था, कहीं पुलिस उन्हें ढूंढती हुई वहाँ तक न आ जाये । इसके अलावा वो जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी की भी बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा था ।

कहां रह गये थे दोनो ?

कहां चले गये थे ?

कहां ।

कमांडर के दिमाग में अपशकुन से भरा हुआ एक बड़ा खतरनाक विचार आया, जिसमें उसने तत्काल अपने दिमाग से झटक दिया ।

उसने कॉफी का एक गरमा-गरम घूंट भरा ।

□□□

वक्त धीरे-धीरे गुजर रहा था ।

कमांडर करण सक्सेना और नीलू ने कॉफी पीने के बाद प्लास्टिक के मग कूड़ेदान में फेंक दिये थे और अब ट्रेन आने की प्रतीक्षा कर रहें थे ।

‘‘मुझे तो उन दोनों की फिक्र हो रही है।’’ नीलू बोली- ‘‘न जाने कहां रह गये थे ?’’

जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी के बारे में सोच-समझकर कमांडर की चिन्ता भी बढ़ने लगी थी ।

एक बात कन्फर्म थी, वह दोनों पुलिस के शिकंजे से उस तरह बचकर नहीं निकले थे, जिस तरह वह बच आये थे। वह या तो अभी भी कहीं फंसे हुए थे या फिर उनके साथ कोई दुर्घटना घट गयी थी ।

तभी कमांडर के दिमाग में खतरे की घण्टी बजी ।

सामने प्लेटफार्म पर जो फास्ट फूड की दुकान थी, उस दुकान पर बैठा आदमी बहुत गौर से उसी को देख रहा था । न जाने क्यों उसके देखने का अंदाजा कुछ ऐसा था, कमांडर जैसे आदमी के शरीर में भी तेज झुरझुरी दौड़ गयी ।

उसने फौरन उस आदमी की तरफ से चेहरा घुमा लिया। फिर कमांडर तिरछी निगाहों से उसकी गतिविधि देखने लगा ।

उस शॉप कीपर ने अब काउण्टर के नीचे रखा कोई पुराना अखबार निकाल लिया था। फिर वो कभी अखबार की तरफ और कभी कमांडर की तरफ नजरें उठा-उठाकर देखने लगा ।

कमांडर करण सक्सेना के शरीर में सांय-सी निकल गयी ।

वो भांप गया, वह दुष्ट आदमी क्या चीज देख रहा था। फिर कमांडर ने उस शॉप कीपर को टेलीफोन की तरफ हाथ बढ़ाते देखा ।

कमांडर करण सक्सेना से अब बैठे न रहा गया ।

वह तुरन्त बैंच छोड़कर उठा और तेजी के साथ फास्ट फूड की उस दुकान की तरफ बढ़ा ।

शॉप कीपर ने तत्काल अपना हाथ टेलीफोन से इस तरह वापस पीछे खींचा, जैसे टेलीफोन में चार सौ चालीस बोल्ट का करेण्ट दौड़ने लगा हो ।

''हैलो सर !'' वो कमांडर को देखकर बड़े बनावटी ढंग से मुस्कुराया- ''और क्या चाहिये आपको?''

''डनहिल सिगरेट होगी ?''

''क्यों नहीं, बिल्कुल है ।''

''एक पैकेट दो ।''

शॉप कीपर ने अपने पीछे से 'डनहिल' का एक पैकिट निकालकर कमांडर की तरफ बढ़ाया ।

कमांडर ने वही खड़े-खड़े पैकिट में से एक सिगरेट निकालकर होठों से लगा लीं ।

फिर उसने इधर-उधर देखा ।

हर तरफ प्लेटफार्म पर दूर-दूर तक सन्नाटा था ।

गहरा सन्नाटा !

इन्क्वॉयरी काउण्टर पर बैठी लड़की पहले की तरह ही उपन्यास पढ़ रही थी। बुक स्टॉल पर बैठा बूढ़ा दिखाई नहीं दे रहा था और नीलू दूर रेल की पटरियों को निहार रही थी ।

उसने फौरन चाल चली ।

"मेरे पास लाइटर नहीं है ।" कमांडर , शॉप कीपर से कुछ धीमी आवाज में बोला-"जरा मेरी सिगरेट सुलगा दोगे?"

"क्यों नहीं, जरूर !"

वहीं काउण्टर पर लाइटर पड़ा था ।

शॉप कीपर ने वह लाइटर उठा लिया ।

जबकि कमांडर सिगरेट होठों के बीच चिपकायें-चिपकायें अब थोड़ा आगे को झुका।

उधर !

शॉप कीपर ने वह लाइटर उठा लिया ।

जबकि कमांडर सिगरेट होंठो के बीच चिपकाये-चिपकाये अब थोड़ा आगे को झुका।

उधर !

शॉप कीपर भी उसकी तरफ झुका और उसने लाइटर जलाने का उपक्रम किया।

कमांडर ने तुरन्त हरकत दिखाई ।

खतरनाक हरकत !

जिसने शॉप कीपर के होश उड़ा कर रख दिये ।

कमांडर ने तत्काल चीते जैसी फुर्ती के साथ उसकी गर्दन वहीं कसकर दबोच ली ।

शॉप कीपर के नेत्र दहशत से उबल पड़े ।

उसके मुंह से गूं-गूं की आवाजें निकलने लगीं और वह जोर-जोर से अपने हाथ-पैर झटकने लगा।

कमांडर ने फौरन उसकी खोपड़ी पर एक कराटे चेप जड़ी ।

चेप कुछ ज्यादा ही कसकर पड़ गयी थी ।

शॉप कीपर का शरीर एक ही झटके में निढाल हो गया ।

कमांडर ने पुनः इधर-उधर देखा ।

प्लेटफार्म पर पहले की तरह ही गहन शान्ति थी और किसी की भी निगाह उस पर न थी ।

उसने राहत की सांस ली ।

उसके बाद कमांडर ने लाइटर उठाकर बड़े इत्मीनान के साथ अपनी 'डनहिल' सुलगाई और फिर धीरे-धीरे कदमों से वापस नीलू की तरफ बढ़ा ।

तभी 'विस्टन रोड' जाने वाली ट्रेन वहाँ आ पहुंची ।

बिल्कुल शान्त पड़े रेलवे स्टेशन पर कुछ देर के लिये हंगामा-सा मच गया ।

कमांडर और नीलू दौड़कर ट्रेन में जा चढ़े ।

□□□

प्रिंस अल्बर्ट कम्पाउण्ड से थोड़ी दूर ही वह एक बिल्कुल नई बन रही इमारत थी, जिसके एक कमरे में इस वक्त जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी बिल्ली की तरह छिपे बैठे थे ।

वह पुलिस से किसी तरह बचते हुए वहाँ तक आये थे। अभी उस बिल्डिंग के सिर्फ ऊंचे-ऊंचे पिलर खड़े किये गये थे या फिर पांच माले तक लैंटर डाल दिया गया था, कंस्ट्रक्शन का सारा काम शेष था ।

जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी उस वक्त चौथे माले पर बने एक कमरे में मौजूद थे । वह कमरा बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन में प्रयोग होने वाले सामान को रखने के लिये टेम्प्रेरी तौर पर बनाया गया था ।

''आज तो हम लोग बुरे फंसे ।'' जगदीश नरूला आतंकित मुद्रा में बोला ।

''यह कमाण्डर और नीलू कहां रह गये ?''

''वह शायद दूसरी सड़क पर मुड़ गये थे ।''

वह कितनी ही देर तक ऊपर बैठे हांफते रहे ।

काफी जल्दी-जल्दी सीढ़ियां चढ़ने में उनका सांस बुरी तरह फूलने-पिचकने लगा, लेकिन फिर भी उन्हें इस बात का संतोष था, वह पुलिस के शिकंजे में फंसने से बच गये ।

काफी देर वो उस कमरे में छुपे रहें ।

रात्रि का गहन अंधकार अभी भी चारों तरफ फैला था और दूर-दूर तक नजर आ रही बिल्डिंगे सन्नाटे में डूबी खड़ी थी ।

''हमें अब देखना चाहिये ।'' अनुपमा जोशी बोली- ''नीचे पुलिस है या नहीं?''

जगदीश नरूला कमरे से बाहर निकला और फिर चौथी मंजिल के लेंटर पर चलता हुआ किनारे की तरफ बढ़ा।

उसने एक पिलर के पीछे खड़े होकर नीचे झांका ।

फौरन उसके नेत्रो में चिन्ता के भाव बढ़ गये।

नीचे अभी भी पुलिस मौजूद थी । बल्कि सार्जेण्टों की संख्या तो अब कहीं ज्यादा बढ़ चुकी थी । शायद वो पुलिसकर्मी भी अब वहीं आ पहुंचे थे, जो थोड़ी देर पहले प्रिंस अल्बर्ट कम्पाउण्ड में हंगामे का कारण बने थे ।

वह बड़ी सरगर्मी के साथ सड़क पर उन्हें इधर-से-उधर ढूंढ रहे थे ।

जगदीश नरूला तत्काल पीछे हट गया और वापस अनुपमा जोशी के पास पहुंचा ।

“क्या हुआ ?”

“पुलिस अभी भी नीचे है ।’”

“हे भगवान !” अनुपमा जोशी के शरीर का एक-एक रोआं खड़ा हो गया- “कहीं पुलिस हमें ढूंढती-ढूंढती यहीं तक न आ जाये ।”

“क्या कहा जा सकता है !” जगदीश नरूला की आवाज में भी ढेर सारी परेशानी के भाव थे- “लेकिन जब तक पुलिस नीचे है, तब तक हमने यहीं छिपकर रहना होगा ।”

अनुपमा जोशी ने अपना सिर जगदीश नरूला की गोद में रख दिया ।

जगदीश नरूला भी धीरे-धीरे उसकी बालों की लटों को उंगली से सहलाने लगा। दोनों के दिल में इस वक्त अंजाना-सा डर था ।

अन्जाना-सा खौफ !

“मुझे लगता है जगदीश !” अनुपमा जोशी कंपकंपाये स्वर में बोली-“हम 10 टन सोने तक कभी नहीं पहुंच पायेंगे ।”

“तुम भूल रही हो डार्लिंग, कमाण्डर हमारे साथ हैं ।”

“लेकिन उदय प्रताप भी तो हमारे पीछे बुरी तरह हाथ धोकर पड़ा हुआ है ।” अनुपमा जोशी बोली- “वह कदम-कदम पर हमें मात दे रहा है । हमारी हर योजना को फेल कर रहा है । फिर एक बात और मेरे दिमाग में मंडरा रही हैं, जो अभी तक किसी ने नहीं सोंची ।”

“क्या?”

“जिस तरह हमारे इर्द-गिर्द घटनायें घट रही है,” अनुपमा जोशी ने कहा- “उससे तो यही लगता है कि उदय प्रताप हर वक्त हमारे आसपास ही मौजूद है ।”

“यह बात तो है ।”

“फिर सोचो, उस आदमी को ‘रेड मेंशन’ में ढूंढने जाने की क्या तुक है ?”

“बात तो ठीक है ।” जगदीश नरूला, अनुपमा जोशी का चेहरा देखता रह गया ।

वाकई !

उसके उस तर्क में जान थी ।

जगदीश नरूला ने उसे कसकर अपनी बांहो के दायरे में समेट लिया ।

अनुपमा जोशी भी बहुत समर्पण भाव से उससे लिपट गयी ।

बड़े अनुरागपूर्ण ढंग से !

वक्त धीरे-धीरे गुजरता रहा ।

सुबह के पांच बच चुके थे ।

अलबत्ता रात्रि का गहन अंधकार अभी भी चारों तरफ फैला था और भोर की किरणों ने निकलना शुरू नहीं किया था ।

जगदीश नरूला ने फिर कमरे से बाहर जाकर नीचे सड़क का मुआयना किया ।

पुलिस का अब वहाँ दूर-दूर तक नामोनिशान न था ।

"जा चुकी है ।" जगदीश नरूला शीघ्रतापूर्वक अनुपमा जोशी के पास आकर बोला- "मैं कमाण्डर और नीलू को देखकर आता हूं ।"

"तुम उन दोनों को देखने कहां जाओगे?" अनुपमा जोशी चौंकी ।

"वह जरूर 'सिटी रेलवे स्टेशन' पर होंगे। जब तक मैं लौट नहीं आता, तुम यहीं रहना ।"

"लेकिन अब तक उनके वहाँ होने का क्या मतलब है ?"

"मैं जानता हूं, हमें काफी देर हो चुकी है ।" जगदीश नरूला बोला- "फिर भी मुझे एक बार उन्हें वहाँ देखने जरूर जाना चाहिये, क्या पता वह हमारा इन्तजार कर रहें हो ।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूं ।" अनुपमा जोशी फौरन उठकर खड़ी हुई ।

"नहीं, तुम नहीं ।"

"क्यो ?"

"क्योंकि हो सकता है, पुलिस नीचे ही कहीं मौजूद हो ।" जगदीश नरूला सावधानीवश बोला- "अगर ऐसी परिस्थिति में हम दोनों गये, तो हम दोनों की जान को खतरा पैदा हो सकता है ।"

"लेकिन ।"

"जैसा मैं तुमसे कह रहा हूं, वैसा करो।"

अनुपमा जोशी खामोश हो गयी ।

□□□

जगदीश नरूला जा चुका था ।

इस बात ने ही अनुपमा जोशी के दिल में और घबराहट भर दी थी कि अब वो उस पूरी बिल्डिंग में बिल्कुल अकेली है ।

हालांकि वो बहुत मजबूत दिल-गुर्दे वाली लड़की थी । इसलिये उसने जासूसी को अपना पेशा चुना था । परन्तु पिछले कुछ दिनों में जिस तरह की हंगामाखेज घटनायें घटी थी, उन घटनाओं ने उसे झकझोर डाला था ।

वह उसी कमरे में बैठकर जगदीश नरूला के वापस लौटने का इन्तजार करने लगी ।

तभी उसके कान खड़े हुए ।

जगदीश नरूला को गये हुए दस मिनट भी न गुजरे होंगे, एकाएक उसे ऐसा महसूस हुआ, जैसे कोई बिल्डिंग की सीढ़ियां चढ़ता हुआ ऊपर की तरफ ही आ रहा है ।

आवाज बहुत स्पष्ट थी ।

इतनी जल्दी नरूला तो वापस नहीं आ सकता था ।

उसने ध्यान से वो आवाजें सुनीं ।

अगले पल उसका गला सूख गया ।

उसके जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया ।

वह किसी के लंगड़ाकर सीढ़ियां चढ़ने की आवाज थी ।

‘‘उदय प्रताप ।’’ अनुपमा जोशी के माथे पर ढेर सारा पसीना चुहचुहा आया ।

तभी उसने जोर से किसी के खांसने की आवाज सुनी ।

अब यह बिल्कुल कन्फर्म हो गया, वह उदय प्रताप ही था ।

हण्ड्रेड परसैण्ट उदय प्रताप ही था ।

अनुपमा जोशी ने झटके के साथ अपने कपड़ों में छिपा माउजर बाहर निकाल लिया ।

उसने बुलेट्स देखीं ।

काफी राउण्ड खाली थे । उसने उन्हें दोबारा से लोड किया ।

एकाएक वो लोमड़ी की तरह बेहद चौकन्नी नजर आने लगी थी, मानो शिकार के सामने आते ही वह उसके ऊपर खतरनाक ढंग से झपट पड़ेगी । अलबत्ता यह सोच-सोचकर उसके दिल की घबराहट भी बहुत बढ़ती जा रही थी, वो वहाँ अकेली है और उदय प्रताप वहाँ पहुंचा है ।

फिर उसके लेंटर पर चलने की आवाज आने लगी ।

ऐसा लग रहा था, जैसे वह उसकी तरफ आ रहा हो ।

अनुपमा जोशी ने माउजर अपने हाथ से कोई दो फुट आगे तान लिया और फिर कमरे से बाहर झांका।

वहाँ कोई न था ।

जरूर उदय प्रताप अभी नीचे वाली मंजिल पर था ।

अनुपमा जोशी झटके के साथ कमरे से बाहर निकल आयी और दबे पांव लेंटर पर चलने की वो आवाज आनी बंद हो गयी ।

अनुपमा जोशी की सांस थम गयी ।

उसके कान उसी तरफ लगे थे ।

घबराहट के मारे उसका बुरा हाल होने लगा ।

दिल जोर-जोर से उछलकर पसलियों पर प्रचण्ड प्रहार कर रहा था ।

थोड़ी देर शान्ति रही ।

गहन शान्ति ।

फिर उदय प्रताप के दोबारा सीढ़ियां चढ़ने की आवाज आने लगी। सीढ़ियां चढ़ते समय उसके कदमों की लंगड़ाहट स्पष्ट महसूस हो रही थी ।

तभी उसे खांसी के तीन-चार ठसके फिर उठे और उसकी खांसी की नली में से अजीब सी घरघराहट निकली।

जल्दी ही सीढ़ियां चढ़ने की वह आवाज भी आनी बन्द हो गयी ।

अब उदय प्रताप बिल्डिंग के उसी तल पर आ चुका था, जहां वो थी ।

अनुपमा जोशी को अपने दिल की धड़कन बन्द होती महसूस हुई। उसे ऐसा लगा, जैसे वह खड़े-खड़े मर जायेंगी । उसका आधे से ज्यादा शरीर पसीनों मे नहा चुका था ।

एक बार फिर पहले की तरह गहन निस्तब्धता छा गयी ।

समझ नहीं आ रहा था, उदय प्रताप क्या कर रहा है ?

पांच मिनट !

दस मिनट !

या फिर और भी ज्यादा !

लेकिन इस बीच अनुपमा जोशी की हिम्मत नहीं पड़ी कि वो पिलर के पीछे से गर्दन निकालकर उदय प्रताप की पोजीशन चैक करें ।

तभी लेंटर पर किसी के चलने की वो आवाज फिर आने लगी ।

कोई उसी तरफ आ रहा था ।

उसी पिलर की तरफ ।

अनुपमा जोशी को अपने शरीर में कंपकंपाहट-सी दौड़ती महसूस होने लगी। उसकी उंगलियां बड़ी सख्ती से ट्रेगर पर कस गयीं ।

तभी उसे एक बड़ा खौफनाक अहसास हुआ, वह उसके पीछे था ।

बिल्कुल पीछे ।

वह उसके पीछे से धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ रहा था और फिर वह उसके काफी करीब आकर खड़ा हो गया।

अनुपमा जोशी ने कसकर अपनी आंखे बन्द कर लीं ।

मौत को अपने इतना करीब उसने जीवन में पहले कभी अनुभव नहीं किया था। वो समण् नहीं पा रही थी, वो उसका वहम है या हकीकत !

उसी क्षण किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा ।

''कौन ?'' अनुपमा जोशी हृदयग्राही ढंग से चिल्लाते हुए एकदम झटके से पलटी- ''कौन है ?''

साथ ही उसने धुआंधार स्पीड से अपने माउजर का दो बार ट्रेगर दबा दिया ।

कोई चीखता हुआ धड़ाम् से नीचे लेंटर पर गिरा ।

अनुपमा जोशी ने झटके से एक बार और ट्रेगर दबा देना चाहा ।

''नहीं, नहीं अनुपमा !'' फौरन एक जानी-पहचानी चीख अनुपमा जोशी के कानों में पड़ी ।

अनुपमा जोशी ने तुरन्त आगन्तुक की तरफ देखा, वह जगदीश नरूला था । दोनों गोलियां उसके बिल्कुल कंधे को छूते हुए गुजरी थीं और बस वो बाल-बाल बचा था ।

''तुम यहां पिलर के पीछे छिपी हुई क्या कर रही थी ?'' जगदीश नरूला चौंककर लेंटर से उठा ।

''हे भगवान ! यह तुम हो जगदीश !'' अनुपमा जोशी एकदम कसकर जगदीश नरूला से चिपट गयी और फिर बुरी तरह हांफने लगी- ''सॉरी ! मैंने समझा था, उदय प्रताप था । इसीलिये मैंने यूं आनन-फानन में गोली चला दी।''

''उदय प्रताप !''

जगदीश नरूला के चेहरे पर घोर आश्चर्य का सागर उमड़ा ।

''हां उदय प्रताप, वो अभी यहीं था ।'' अनुपमा जोशी आतंकित मुद्रा में बोली- ''अभी बिल्डिंग में मैंने उसके खांसने की आवाज सुनी थी । लंगड़ाकर चलने की आवाज सुनी थी। शायद वो तुम्हें देखकर बिल्डिंग में कहीं छिप गया है ।''

''क्या कह रही हो ? लेकिन उदय प्रताप यहां कैसे आ सकता है ?''

''वो यहीं था । मैं गारण्टी से कह सकती हूं, वो थोड़ी देर पहले यहीं था ।''

जगदीश नरूला ने भी अब अपनी जेब से पिस्टल बाहर निकाल ली । अगर उदय प्रताप वहाँ था, तो यह वाकई बड़ी खौफनाक बात थी ।

''मैं देखता हूं, वो कहां है ।''

जगदीश नरूला वापस सीढ़ियों की तरफ बढ़ा ।

''मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूं ।'' अनुपमा जोशी भी थर-थर कांपते हुए उसके साथ आगे बढ़ी ।

मुश्किल से दस मिनट के अन्दर उन्होंने पूरी बिल्डिंग छान मारी ।

लेकिन उदय प्रताप फिर उन्हें कहीं न दिखाई पड़ा। वो एकाएक गायब हो चुका था ।

□□□

अनुपमा जोशी एक बार फिर जगदीश नरूला की गोद में सिर रखे बैठी थी। उसका चेहरा अभी भी रूई की तरह सफेद झक्क् पड़ा हुआ था और चेहरे पर ढेर सारे आतंक के बादल घिरे थे ।

जगदीश नरूला पहले की तरह उसके बालों में स्नेह से उंगलियां फिरा रहा था ।

''मुझे लगता है डार्लिंग!'' जगदीश नरूला बोला- ''तुमने बिल्डिंग में उदय प्रताप के चलने-फिरने और खांसने की जो आवाजें सुनीं, वह सब तुम्हारा मन का वहम था ।''

''नहीं, वो मेरा वहम नहीं थ जगदीश !''अनुपमा जोशी दृढ़ लहजे में बोली- ''मैं गारण्टी से कह सकती हूं, उदय प्रताप ही यहां आया था । वह उदय प्रताप के अलावा कोई

और नहीं हो सकता ।''

''ओ0के0 ! कूल डाऊन बेबी, कूल डाउन ! अब चिन्ता मत करो, मैं तुम्हारे पास हूं ।'' जगदीश नरूला बोला- ''अगर वो हरामजादा यहां फटका भी, तो मैं गोली से उसकी खोपड़ी चटका दूंगा ।''

''रेलवे स्टेशन पर क्या हुआ ?''

''वहाँ कमाण्डर और नीलू मुझे कहीं नहीं दिखाई पड़े, शायद वे कहीं चले गये हैं ।''

''कहां?''

''मालूम नहीं कहाँ !''

''फिर अब हम कमाण्डर को किस जगह तलाश करेंगे ?'' अनुपमा जोशी के चेहरे पर परेशानी के भाव और बढ़े ।

''इस वक्त यही बात मैं सोच रहा हूं ।''

□□□

वह दो कमरों का एक काफी बड़ा फ्लैट था ।

और बिस्टन रोड उकी एक काफी खूबसूरत बिल्डिंग के सोलहवें माले पर बना हुआ था ।

कमांडर तथा नीलू वहाँ तक लिफ्ट द्वारा पहुंचे ।

फ्लैट में उस वक्त कोई नहीं था और वहाँ ताला पड़ा हुआ था ।

''यहां तो कोई नहीं है ?''' कमांडर फ्लैट के दरवाजे पर ताला देखकर चौंका ।

''चिन्ता मत करो, फ्लैट में किसी के होने या न होने से हम पर कोई फर्क नहीं पड़ता ।'' नीलू बोली- ''मेरे पास फ्लैट की चाबी है ।''

नीलू ने आगें बढ़कर उस फ्लैट का ताला खोला ।

कमांडर और नीलू लगभग साथ-साथ फ्लैट के अन्दर दाखिल हुए ।

फ्लैट बहुत खूबसूरत ढंग से सजाया गया था ।

नीलू ने अन्दर घुसते ही दरवाजा वापस बन्द कर लिया ।

''यह किसका फ्लैट है ?''

''मेरे एक दोस्त का फ्लैट है ।'' नीलू ने बताया- ''वह दवाइयों की एक बहुत बड़ी कम्पनी में मेडीकल रिप्रिजेन्टेटिव है । और अक्सर दवाइयों के सैम्पल लेकर उसे शहर-शहर भटकना पड़ता है । फ्लैट की एक चाबी मेरे पास भी रहती है । बस कभी-कभार मैं उसके पीछे आकर फ्लैट को चैक कर लेती हूं कि यहां कुछ गड़बड़ तो नहीं है । दरअसल आज न्यूयार्क में चोरी-चकारी की घटनायें कुछ ज्यादा ही होने लगी है ।''

''ओह !'

''बहरहाल शुक्र है, कम-से-कम अभी तक तो यहां ऐसी कोई घटना नहीं घटी ।''

“यानि हम लोग यहां इत्मीनान से रह सकते है ।” कमांडर बोला ।

“बिल्कुल, किसी भी तरह का यहां कुछ खतरा ही नहीं है ।”

नीलू ने आगे बढ़कर छत के पंखे का स्विच ऑन कर दिया और जीरो वॉट का बल्ब जला दिया ।

“मैं तो पहले स्नान करूंगी फिर थोड़ी नींद लूंगी ।” नीलू अपने सैण्डिल उतारते हुए बोली ।

“यह नहाने का कौन-सा टाइम है ?” कमांडर चौंका ।

रात्रि का अंधेरा अभी भी चारों तरफ फैला था और पूरी तरह दिन निकलने में कुछ घण्टे शेष थे ।

“दरअसल तमाम हंगामे के कारण मेरा दिल बहुत घबरा रहा है और बिना नहाये अब मुझे सकून नहीं पहुंचेगा ।”

वहीं कमरे में एक काफी बड़ा कप-बोर्ड बना हुआ था ।

नीलू से आगे बढ़कर वो कप-बोर्ड खोला तथा उसके अन्दर से नाइटी निकाली ।

फिर वो लम्बे-लम्बे डग रखते हुए बाथरूम की तरफ बढ़ गयी ।

पीछे कमांडर ने भी कप-बोर्ड में से अपने लिये एक गाउन निकाल लिया । फिर वो भी अपने कपड़े चेंज करके वहीं बिस्तर पर लेट गया ।

रह-रहकर उसे जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी का ख्याल सता रहा था ।

दिलीप मेहरा का ख्याल सता रहा था ।

इसके अलावा उस 10 टन सोने की भी उसे फिक्र थी, जो अटलांटिक महासागर में डूबा हुआ था और जिसे निकालने वो वहाँ भेजा गया था ।

परन्तु उस दिशा में कोई सॉलिड कदम अभी तक उठा नहीं था ।

□□□

थकान की वजह से कमांडर करण सक्सेना की आंखे मुंदने लगीं ।

वह अपने सिर में हल्का दर्द अनुभव कर रहा था ।

उसे यकीन था, जल्द ही उसे नींद आ जायेगी ।

तभी हल्की आहट की आवाज सुनकर कमांडर ने आंखे खोलीं। नीलू बाथरूम में से नहाकर बाहर आ गयी थी ।

वह उस समय हल्के गुलाबी कलर की झीनी-सी नाइटी पहने थी और उस नाइटी में उसके यौवन पठार बड़े ही उन्मुक्त ढंग से नमूदार हो रहे थे ।

कमांडर आश्चर्य से उसकी तरफ देखता रह गया ।

लड़की पतली-दुबली जरूर थी ।

मगर नाइट ड्रेस पहनते ही गजब की सैक्सी दिखाई पड़ने लगी थी ।

उसके उरोज बहुत खूबसूरत प्यालों की तरह थे, जिनमें कसावट बरकरार थीं।
वह तने हुए थे।
उन्हें देखकर कोई भी मर्द पागल हो सकता था।
इसके अलावा उसकी जांघे तो और भी शानदार थीं।
जानदार भी।
और मांसल भी।
कमांडर को अपना कण्ठ सूखता अनुभव हुआ।
उसने कभी उस लड़की के बारे में यह जो फिकरा कहा था कि उसमें 'कुछ-नहीं' है, वह सिरे से गलत था।
उसमें न सिर्फ कुछ था, बल्कि बहुत कुछ था।
"क्या देख रहे हो कमाण्डर ?" नीलू कमांडर की तरफ देखकर मुस्कराई।
"कुछ नहीं।" कमांडर सकपका उठा।
"फिर भी, कुछ तो।"
नीलू इठलाते हुए उसकी तरफ बढ़ी।
उसने अपने गालों पर ढलक आयी बालों की एक छोटी-सी लट को कान के पीछे किया।
उस वक्त उसकी मुस्कान में भी जादू था।
"देख रहा हूं !" कमांडर गहरी सांस लेकर बोला- "औरत रात के अंधेरे में कितना बदल जाती है।"
नीलू बड़े खनकदार ढंग से हंसी।
"और क्या यही बात मर्द पर लागू नहीं होती कमाण्डर ?"
"कह नहीं सकता, यह बात कोई औरत ही ज्यादा बेहतर बता सकती है।" कमांडर , नीलू की आंखो में झांकने लगा।
"तो फिर सच्चाई यही है कमाण्डर !" नीलू बोली- "मर्द भी रात के अंधेरे में उतना ही बदल जाता है, जितनी औरत बदल जाती है।"
"रिअली ?"
"यस, रियली !"
नीलू अब बड़े अनुरागपूर्ण ढंग से कमांडर को निहार रही थी।

□□□

सुबह वह दोनों काफी लेट सोकर उठे थे।
बिस्तर पर लेटते ही उन्हें नींद आ गयी थी और पता भी न चला, वो कहां पड़े हैं।
सुबह जब उनकी आंख खुली, तब ग्यारह बज रहें थे।

कमांडर करण सक्सेना ही सबसे पहले उठा ।

फिर उसने नीलू को भी जगाया ।

धूप की किरणें अब खिड़कियों में से अन्दर झांक रही थी और उन्होंने सारा माहौल खुशगवार कर दिया था । नीलू नाश्ता बनाने के लिये किचन में चली गयी, जबकि कमांडर ने टी0वी0 खोल लिया ।

टी0वी0 पर उस समय समाचार आ रहे थे ।

जैसाकि पहले भी बताया जा चुका है, हर एक घण्टे बाद वहाँ टी0वी0 पर न्यूज बुलेटिन प्रसारित होता था ।

उन समाचारों से कमांडर को कुछ नई जानकारी मिली ।

पिछली रात प्रिंस अल्बर्ट कम्पाउण्ड में जो हंगामाखेज घटना घटी थी, उस पूरी घटना का जिक्र समाचारों में था ।

समाचारों से पता चला, पुलिस को दिलीप मेहरा की लाश फ्लैट के अन्दर से बरामद हुई थी । उसके कुछ गोलियां लगी थी और पोस्टमार्टम के बाद मालूम हुआ कि उसका गुर्दा भी फट गया था । मृत्यु का असली कारण गुर्दा फटना बताया गया, जबकि जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी के सम्बन्ध में कोई समाचार नहीं था । सिर्फ एक लाइन में यह बताया गया, पुलिस द्वारा गुमनाम टिप मिलने के फौरन बाद ही प्रिंस अल्बर्ट कम्पाउण्ड में रेड मारी गयी, लेकिन फिर भी सारे भारतीय जासूस वहाँ से निकल भागने में सफल रहें ।

इसके अलावा नीलू की तस्वीर भी टी0वी0 पर दिखाई गयी । न्यूयार्क पुलिस अब नीलू को भी उन भारतीय जासूसों का सहयोगी मानकर चल रही थी। इतना ही नहीं, उसकी गिरफ्तारी पर भी दस हजार डॉलर का इनाम अलग से घोषित कर दिया गया था ।

समाचारों के बाद कमांडर ने टी0वी0 बन्द कर दिया ।

नीलू ने भी वो समाचार सुने ।

वो गरमा-गरम चाय और कुछ स्नैक्स लेकर वहाँ आयी थी ।

अपनी तस्वीर टी0वी0 स्क्रीन पद देखते ही उसके शरीर में भय की तेज सिहरन दौड़ गयी ।

उसका चेहरा पीला जर्द पड़ गया ।

बिल्कुल हल्दी की तरह ।

‘‘यह क्या ?’’ वो बहुत हैरानीपूर्वक ईजी चेयर पर बैठते हुए बोली- ‘‘पुलिस तो मुझे भी आप लोगों का सहयोगी समझ रही है ।’’

‘‘हां ।’’

‘‘अब क्या होगा ?’’’

उसका पूरा शरीर सूखे पत्ते की तरह कांपा ।

‘‘अब क्या हो सकता है !’’ कमांडर ने निर्विकार ढंग से कहा- ‘‘पुलिस की समझ पर किसका अंकुश है ।’’

‘‘जरूर वह लोग अब मेरी तस्वीर भी बार-बार टी0वी0 पर दिखायेंगे, अखबारों में छापेंगे । जल्द ही मेरी हालत ऐसी हो जायेगी कि आप लोगों की तरह मेरा भी सड़क पर निकलना मुहाल होगा ।’’

कमांडर कुछ न बोला ।

मगर वो जानता था, अब ऐसा ही होने वाला था ।

नीलू भी खतरे में फंस चुकी थी ।

कमांडर केतली में से अपने लिये चाय पलटने लगा और उसने एक स्नैक्स उठा लिया ।

‘‘खबरो से एक बात और साबित हो गयी है ।’’ कमांडर शान्त लहजे में बोला ।

‘‘क्या ?’’

‘‘जगदीश नरूला और अनुपमा जोशी भी रात पुलिस के शिकंजे में नही फंसे ।’’

‘‘क्यो ?’’

‘‘क्योंकि अगर पुलिस उन्हें पकड़ लेती, तो उन दोनों के पकड़े जाने का जिक्र खबरों में जरूर होता । जबकि ऐसा कोई जिक्र खबरों में नहीं था ।’’

‘‘यह तो है ।’’ नीलू ने स्वीकृति में गर्दन हिलाई ।

परन्तु वो आतांकित अभी भी बहुत थी ।

उसके दिल में अजीब-सा डर समा गया था ।

‘‘चाय पीओ !’’ कमांडर ने उसके लिये भी केतली से चाय पलटी ।

नीलू ने अपनी चाय का कप उठा लिया ।

फिर वो उसे धीरे-धीरे चुसकने लगी ।

हालात हर पल खतरनाक मोड़ ले रहे थे ।

नई-नई घटनायें घट रही थी ।

अगले क्षण क्या होने वाला है, कोई नहीं जानता था ।

‘‘अब आगे का क्या प्रोग्राम है ?’’ कमांडर बोला ।

‘‘कैसा प्रोग्राम ?’’

‘‘रेड मेंशन कब चलना है ?’’

‘‘वहाँ जाने के लिये सबसे पहले तो हमें अपने वाहन की ही जरूरत पड़ेगी ।’’

‘‘उसका इन्तजाम कैसे होगा ?’’

‘‘जहां तक मैं समझती हूं, उसका इन्तजाम कुछ ज्यादा मुश्किल काम नहीं है । मेरे जिस दोस्त का यह फ्लैट है, उसके पास भी एक सफेद रंग की वेक्सल कार है और वो ज्यादातर इस बिल्डिंग के पीछे बने पार्किंग लॉट में खड़ी रहती है ।’’

''क्या वो जब शहर-शहर दौरे पर जाता है, तो कार अपने साथ नहीं ले जाता ?'' कमांडर ने स्नैक्स अपने दांतो से तोड़ा ।

''नहीं ।''

''क्यो ?''

''क्योंकि तब कम्पनी की गाड़ी उसके साथ जाती है, वह वेक्सल कार तो उसने अपने निजी उपयोग के लिये खरीद रखी है ।''

''ओह !''

तभी एकाएक नीलू को जैसे कुछ याद आया । उसने चाय का कप सामने टेबल पर रखा ।

''बल्कि कार पार्किंग लॉट में खड़ी हैं या नहीं, यह तो मैं अभी देखकर बताती हूं । वह कार की चाबी कप-बोर्ड के ड्राअर में रखता है- अगर कार नीचे खड़ी है, तो चाबी भी वहाँ होनी चाहिये ।''

नीलू कुर्सी छोड़कर खड़ी हो गयी और फिर कप-बोर्ड की तरफ बढ़ी। जैसे ही उसने ड्राअर खोली, तुरन्त वहाँ से कार की चाबी बरामद हो गयी ।

''कार नीचे है ।'' वह चाबी लेकर कमांडर की तरफ घूमी ।''

''वैरी गुड ! यानि रेड मेंशन तक जाने में अब हमें कोई प्रॉब्लम नहीं ।''

''नहीं ।''

''ठीक है, तो फिर हम कल सुबह मुंह अंधेरे ही रेड मेंशन के लिये निकल पड़ेगे ।''

नीलू ने हामी भर दी ।

फिर वह दोनों पहले ही तरह ही नाश्ता करने लगे ।

□□□

परन्तु वह अगले दिन मुंह अन्धेरे ही रेड मेंशन के लिये रवाना होते, उससे पहले ही एक और बड़ी हंगामाखेज घटना घटी ।

घटना आधी रात के वक्त घटी ।

रात के कोई साढ़े तीन बज रहे थे ।

वह दोनों सारा दिन फ्लैट में बन्द रहे थे और चूंकि उन्हें सुबह जल्दी निकलना था, इसलिये वो जल्दी ही बिस्तर के हवाले भी हो गये । सोने से पहले उन्होंने टी0वी0 खबरें जरूर सुनीं ।

मगर उनमें कोई खास बात न थी ।

साढ़े तीन बज रहे थे, टेलीफोन की बुरी तरह चिंघाड़ती हुई घण्टी की आवाज ने उन दोनो को चौंकाकर जगाया ।

''आधी रात के वक्त किसका फोन आ गया ?'' कमांडर हैरानीपूर्वक बोला ।

“मैं देखती हूं ।”

टेलीफोन की उस घण्टी की आवाज ने नीलू को भी काफी हैरत में डाल दिया था ।

यह कोई कम बड़े विस्मय की बात न थी कि उस बन्द पड़े फ्लैट में टेलीफोन की घण्टी बज रही थी ।

वो भी रात को !

नीलू ने आगे बढ़कर टेलीफोन का रिसीवर उठाया ।

“हैलो !” वो काफी धीमी आवाज में बोली ।

उसने आवाज बदल ली थी ।

तुरन्त दूसरी तरफ से कुछ कहा गया । कुछ ऐसा कहा गया, जिसे सुनते ही नीलू के होश फनां हो गये ।

चेहरा एकदम सफेद झक्क् पड़ गया ।

बिल्कुल रूई की तरह ।

और आंखो में हवाइयां-सी उड़ती नजर आने लगी । वह आंधी में फंसे सूखे पत्ते की तरह कांप उठी ।

“ठीक है ।” उसने बहुत आतंकित मुद्रा में कहा- “मैं अभी आती हूं, जल्दी !” अन्तिम शब्द नीलू ने लगभग चीखते हुए कहे ।

फिर नीलू ने रिसीवर भड़ाक् से क्रेडिल पर पटक दिया और उसके बाद आनन-फानन अपने नाइट गाउन की डोरियां खोलती हुई कपड़ो की तरफ झपटी ।

“क्या हो गया ?” कमांडर भी हैरान था ।

चकित !

वो समझ नहीं पा रहा था, किसका फोन है ?

“मेरे जिस दोस्त का यह फ्लैट है, उसका ट्रेन में बहुत भीषण एक्सीडेण्ट हो गया है ।” नीलू बहुत दहशतनाक अंदाज में बोली- “और इस समय वो रेल की पटरियों पर पड़ा हुआ मुझे मदद के लिये बुला रहा है । किसी तरह उसने अपने मोबाइल पर मुझसे बात की है ।”

“मोबाइल पर !” कमांडर के दिमाग में आश्चर्य की चिंगारियां छूटी- “लेकिन तुम्हारे दोस्त को यह कैसे मालूम हुआ तुम इस वक्त यहां हो ?”

“जरूर पहले उसने मेरे फ्लैट पर टेलीफोन मिलाया होगा और उसके बाद यहां ट्राई किया ।”

नीलू अपने कपड़े लेकर झट से बाथरूम के अन्दर बन्द हो गयी ।”

□□□

वह सफेद रंग की वेक्सल कार थी, जो रात के अंधेरे में न्यूयार्क की सड़क पर तूफानी स्पीड से दौड़ी जा रही थी ।

कार की ड्राइविंग सीट नीलू से सम्भाली हुई थी ।

कमांडर करण सक्सेना उसके बराबर में बैठा था ।

स्पीड उस समय सौ से कम नहीं थी ।

कार बिल्कुल हवा से बातें कर रही थी । एक-दो जगह उसका दूसरे वाहनों को ओवरटेक करने के चक्कर में भीषण एक्सीडेंट भी होते-होते बचा था ।

"स्पीड थोड़ी कम करो ।"

"नहीं, मुझे जल्द-से-जल्द वहाँ पहुंचना है ।"

"लेकिन अगर तुम कार इसी रफ्तार से चलातीं रहीं, तो शायद ही हम कभी अपनी मंजिल तक पहुंच पायें।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा ।"

एकाएक नीलू ने कार की स्पीड कुछ और बढ़ा दी ।

तभी उस कार ने बड़े खतरनाक अंदाज में कुछेक वाहनों को और ओवरटेक किया । नीलू का उस समय बुरा हाल था । उसके जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा था और वो बहुत घबराई हुई थी । लेकिन फिर भी वो एक बहुत कुशल ड्राइवर थी, इसलिये अभी तक उसने वो कार कहीं ठोकी नहीं थीं ।

जल्द ही वेक्सल कार मुख्य सड़क से हटकर एक कच्ची चकरोड सड़क की तरफ मुड़ गयी, जहां रेल की पटरियां बिछी हुई थी ।

"क्या तुम्हारे दोस्त का यहीं कहीं एक्सीडेण्ट हुआ है ?"

"हां ।" नीलू विचलित मुद्रा में बोली- "उसने घटनास्थल का जो एड्रेस बताया है, वो अब बस थोड़ी ही दूर है ।"

जल्द ही नीलू ने कच्ची सड़क पर एक जगह कार रोकी और फिर उसमें से उतरकर तीन की तरह पटरियों की तरफ भागी ।

उसने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई ।

शीघ्र ही उसे अपना दोस्त नजर आ गया ।

वो रेल की पटरियों से बस थोड़ा ही फासले पर खून से बुरी तरह लथपथ हालत में पड़ा था । उसकी एक टांग आधी से ज्यादा कट गयी थी और सीने तक पेट का हिस्सा भी खून से सराबोर था । वहीं उसका मोबाइल पड़ा था ।

लेकिन अभी उसकी कोई-कोई सांस अटकी थी ।

अभी वो जिन्दा था ।

अपने दोस्त की यह हालत देखकर नीलू की रूलाई छूट पड़ी । वह हिचकियों के साथ रोती हुई उसकी तरफ झपटी ।

तब तक कमांडर भी उसके निकट पहुंच गया था ।

उस आदमी की क्षत-विक्षिप्त हालत देखकर वो भी दहल उठा ।

सचमुचच वो एक खौफनाक मंजर था । जिस तरह वो आदमी रेल से कटा था, उससे यही कोई कम बड़े आश्चर्य की बात न थी कि वो अभी तक जिन्दा था ।

□□□

भोर की किरणें अब धीरे-धीरे चारों तरफ फैलने लगी थी ।

लेकिन उन किरणों में उल्लास नहीं था ।

वो उमंग नहीं थी, जो किसी भी अठखेली करती सुबह में होती है ।

वातावरण स्तब्ध था। हर तरफ शान्ति थी । जैसे किसी विराट प्रलय के बाद समय चक्र ठहर गया हो । जीवन गति रूक गयी हो ।

सफेद वेक्सल कार एक बार फिर न्यूयार्क की सड़क पर दौड़ी जा रही थी ।

लेकिन अब उसकी ड्राइविंग सीट कमांडर करण सक्सेना ने सम्भाली हुई थी और उसके बराबर में कार की फ्रण्ट सीट पर ही नीलू बैठी थी ।

वह 'रेड मेंशन' की तरफ जा रहे थे ।

नीलू की आंखो में अभी भी आंसुओं का सागर उमड़ा हुआ था ।

वह बार-बार सुबक उठती ।

''अब शान्त हो जाओ ।'' कमांडर ने उसे दिलासा दी ।

''नहीं, मैं उसे कभी नहीं भुला सकती ।'' नीलू रूंधे स्वर में ही बोली- ''कभी नहीं !''

''मैं जानता हूं, तुम्हारा उसके साथ गहरा आत्मीय सम्बन्ध था । लेकिन अब उसे भुला देने के सिवाय तुम्हारे पास कोई चारा नहीं है ।''

नीलू ने अपना चेहरा दोनों हथेलियों में छुपा लिया ।

वह सुबकती रही ।

नीलू के उस रहस्यमयी दोस्त की मृत्यु हो चुकी थी । फिलहाल उसकी लाश उन्होंने कार की डिक्की में बहुत सहेज कर रखी हुई थी और अब जल्द-से-जल्द 'रेड मेंशन' पहुंच जाना उनका उद्देश्य था ।

इसके अलावा एक घटना और घटी थी ।

नीलू के उस रहस्यमयी दोस्त ने मरने से पहले कुछ ऐसी बातें बतायी थीं, जिन्होंने कमांडर को भी चौंकाकर रख दिया था ।

वो हतबुद्ध रह गया ।

सचमुच वो पूरा मिशन कदम-कदम पर नई-नई करवटें बदल रहा था ।

नये-नये रहस्योद्घाटन हो रहे थे ।

'रेड मेंशन' तक जाने के लिये कमांडर ने नीलू के द्वारा बताया गया वही रास्ता चुना, जो चैकपोस्ट से होकर नहीं गुजरता था, बल्कि आबादी के अन्दर से होकर डेनवर तक जाता था ।

काफी देर तक वो कार सड़क पर दौड़ती रही ।

न्यूयार्क काफी पीछे छूट चुका था ।

वह एक छोटा सा गांव था, जिसकी बाईपास सड़क पर वो कार दौड़ रही थी ।

कमांडर ने रिस्टवॉच देखी ।

छ:बजने वाले थे ।

''रेड मेंशन अभी कितनी दूर और है ?''

''बस थोड़ा सफर और बाकी है ।'' नीलू बोली ।

उसके आंसू अब काफी हद तक सूख चुके थे ।

लेकिन फिर भी वो काफी जज्बाती लड़की थी ।

फिर वो गांव भी पीछे छूट गया और उन्हें आगे डेनवर का एक बहुत बड़ा बोर्ड लगा नजर आया ।

'रेड मेंशन' अब करीब ही थी ।

जल्द ही कमांडर को एक सड़क नजर आयी, जो बायीं तरफ कटती थी और पहाड़ी सड़क थी । वह ऊंचाई की तरफ चली गयी थी ।

नीलू के इशारा करने पर कमांडर ने कार उस सड़क पर डाल दी ।

कार अब उस पहाड़ी पर दौड़ने लगी ।

कार थोड़ी ही दूर दौड़ी होगी, तभी उन्हें सामने 'रेड मेंशन' दिखाई पड़ी । वो एक काफी लम्बे विशाल क्षेत्रफल में फैली थी । बहुत ऊंची बाउण्ड्री वॉल थी और एक काफी बड़ा लोहे का गेट था, जो उस मेंशन का सदर दरवाजा था ।

वेक्सल कार उस सदर दरवाजे के बिल्कुल करीब पहुंचकर रूकी और उसमें से कमांडर तथा नीलू उतरे।

''लोहे के गेट पर ताला लगा हुआ नहीं है ।'' कमांडर नीचे उतरते ही चौंका- ''लगता है, मेंशन के अन्दर कोई है ।''

नीलू ने भी देखा ।

वाकई सदर दरवाजे पर ताला लगा हुआ नहीं था ।

लोहे का मोटा सरकण्डा भी खुला था ।

''क्या सदर दरवाजे पर अमूमन ताला लगा रहता है ?'' कमांडर ने पूछा ।

''हां, वैसे तो ताला ही लगा रहता है । जब उदय प्रताप ही यहां आयें, तभी ताला खुलता हैं ।''

''लगता है, जिसकी तलाश में हम यहां आये है, वो अन्दर मौजूद है ।''

नीलू कुछ न बोली ।

अलबत्ता उसने अपने शुष्क होंठो पर जुबान जरूर फिराई ।

उसकी आंखो में चिन्ता के सांये मंडराने लगे थे ।

कमांडर करण सक्सेना का हाथ अब अपने ओवरकोट की जेब में पहुंच गया, जिसमें कोल्ट रिवाल्वर मौजूद थी । उसका हाथ रिवाल्वर की बैरल पर जाकर मजबूती के साथ कस गया और उंगली ट्रेगर पर जाकर टिक गयी ।

अगला एक-एक कदम अब खतरे से भरा था ।

उसने पूरी तरह सावधान रहना था ।

रिवाल्वर को कसकर अपने हाथ में पकड़े-पकड़े कमांडर ने लोहे का सदर दरवाजा अन्दर की तरफ धकेला । वह फौरन मोटे पहियों पर अन्दर की तरफ सरसराकर खुलता चला गया ।

अब सामने एक लम्बा-चौड़ा ड्राइव-वे नजर आने लगा ।

ड्राइव-वे के दोनों तरफ सफेद और यूकलिप्टिस के पेड़ कतारबद्ध अवस्था में खड़े थे और काफी दूर तक चले गये थे ।

कार को वहीं छोड़कर वह दोनों ड्राइव-वे पर पैदल ही आगे बढ़े ।

थोड़ा ही दूर चले होंगे कि सामने ही उन्हें बहुत विशाल वर्ग क्षेत्रफल में फैली 'रेड मेंशन' नजर आने लगी। वह काफी बड़ा और काफी ऊंचा चबूतरा था, जिस पर वो मेंशन निर्मित था । चूंकि सारा मेंशन लाल रंग के काफी बड़े-बड़े पत्थरों से बना था, इसलिये उसका नाम ही 'रेड मेंशन' पड़ गया था ।

मेंशन वाकई बहुत शानदार था ।

अलबत्ता उसका रख-रखाव सही ढंग से नहीं हुआ था, इसलिये अब वह खण्डहर में बदलता नजर आ रहा था ।

तभी नीलू की दृष्टि वहाँ एक ऐसी चीज पर पड़ी कि उसके शरीर में तेज सिहरन दौड़ गयी ।

"लगता है कमाण्डर !" नीलू व्याकुल भाव से बोली- "तुम्हारा आइडिया बिल्कुल ठीक है ।"

"कैसा आइडिया ?"

"वो यहीं है। अब तो मैं भी गारण्टी से कह सकती हूं, वो यहीं है ।'"

"कैसे जाना ?"

"सामने देखो ।"

कमांडर की दृष्टि फौरन उस दिशा में उठी और अगले ही पल वो भी सन्न् रह गया। मेंशन की सीढ़ियों से थोड़ा हटकर यूकलिप्टिस पेड़ों के काफी बड़े झुण्ड के पास एक टैक्सी

खड़ी थी । इसके अलावा वह टैक्सी कुछ इस ढंग से खड़ी की गयी थी, जो एकाएक किसी की दृष्टि उसके उसके ऊपर न पड़ सके ।

''बिल्कुल ठीक कहती हो तुम ।'' कमांडर भी भौंचक्के स्वर में बोला- ''वह जरूर इसी टैक्सी में यहां तक आया है ।'''

नीलू भी चकित थी ।

और करण सक्सेना भी ।

सस्पैंस बढ़ता जा रहा था ।

कमांडर ने अब अपना कोल्ट रिवाल्वर ओवरकोट की जेब से बाहर निकाल ली और उसे पहले से भी ज्यादा मजबूती के साथ कसकर पकड़ लिया ।

फिर वह दोनों पांच-छः सीढ़ियां चढ़कर मेंशन के आगे बने काफी बड़े कम्पाउण्ड में पहुंचे और उस दरवाजे की तरफ बढ़े, जो सीधा अन्दर मेंशन में खुलता था ।

दरवाजे के नजदीक पहुंचकर कमांडर ने वह दरवाजा अन्दर की तरफ धकेला, तो वह दरवाजा भी किर्र-किर्र करता हुआ बड़े सस्पैंसफुल अंदाज में अन्दर की तरफ खुलता चला गया ।

□□□

मेंशन का एक बहुत बड़ा हॉल कमरा और शायद दीवान-ए-खास था, जहां इस समय कमांडर करण सक्सेना और नीलू खड़े थे । दीवारों और फर्श पर धूल का अम्बार था । छत पर जगह-जगह मकड़ियों के जाले लगे थे । चमगादड़े झूलती नजर आ रही थीं ।

सचमुच वो सारा परिदृश्य किसी भुतहा हवेली के समान ही था ।

वह उस हॉल कमरे को पार करके एक दूसरे गेट से बाहर निकले, तो वह एक काफी लम्बे-चौड़े गलियारे में पहुंचे । गलियारे के दोनों तरफ बड़े-बड़े कमरे बने थे और उनमें भी धूल का अम्बार था। सामने ही काफी बड़ा जीना था, जो ऊपर की तरफ चला गया था ।

''वो यहीं कहीं होना चाहिये ।'' कमांडर रिवाल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े बोला- ''उसे मेंशन के तमाम कमरों में ढूढो ।''

तुरन्त नीलू एक कमरे की तरफ बढ़ गयी ।

कमांडर करण सक्सेना दूसरे कमरे की तरफ बढ़ा ।

अपने हाव-भावों से वह दोनों ही उस वक्त बहुत चौकन्ने नजर आ रहें थे । खासतौर पर कमांडर तो कुछ ज्यादा ही चौंकन्ना था ।

बेहद अलर्ट ।

कमांडर दरवाजा खोलकर एक कमरे में दाखिल हुआ । जैसी ही वो अन्दर दाखिल हुआ, फौरन एक चमगादड़ जोर-जोर से पंख फड़फड़ाते हुए सीधे उसके हैट से आकर

टकराई तथा फिर चीखते हुए नीचे गिरी ।

कमांडर करण सक्सेना एक पल के लिये पीछे हटा ।

परन्तु फिर उसने अन्दर कदम रखा ।

कमरे में कोई न था ।

वह पूरी तरह खाली था ।

इसके अलावा उस कमरे में भी जगह-जगह जाले लगे हुए थे । दीवारों में पड़ी दरारें साफ चमक रही थीं और प्लास्टर कई जगहों से बुरी तरह उखड़ा था ।

मेंशन का माहौल ऐसा था, अगर वहाँ रात के समय कोई कमजोर दिलवाला आदमी घुस आता, तो निःसन्देह उसका हार्ट फेल हो जाता। वो यही समझता कि वहाँ भूतों का बसेरा हैं ।

कभी-कभी हवा के तेज झक्कड़ यूकलिप्टिस के पेड़ो से टकराते, तो पेड़ो में अजीब-सी ध्वनि पैदा होती ।

वह ध्वनि कभी किसी खिलखिलाकर हंसने का भ्रम देतीं, तो कभी किसी पायल के जोर से खनखनाने का ।

सब कुछ बड़ा रहस्यमयी था ।

दहशत पैदा करने वाला !

कमांडर उस कमरे से बाहर निकला और फिर दूसरे कमरे को देखने के लिये बढ़ा ।

थोड़ी ही देर में कमांडर और नीलू ने गलियारे के इधर-उधर बने काफी सारे कमरे छान मारे । परन्तु वहाँ उन्हें कोई न मिला ।

अलबत्ता जरा-जरा सी आहट पर वह जरूर चौंकते ।

तभी घटना घटी ।

एकाएक नीलू की बहुत हृदयविदारक और वीभत्स चीख से वह पूरा मेंशन थर्रा उठा ।

□□□

कमांडर करण सक्सेना उस वक्त एक कमरे में था ।

नीलू की चीख सुनकर वह चौंका ।

वह तुरन्त सौ मीटर के फर्राटा धावक की तरह बेतहाशा दौड़ता हुआ कमरे से बाहर निकला और फिर उसी दिशा में दौड़ा, जिधर से चीख की आवाज सुनायी दी थी ।

तभी उसने नीलू को एक कमरे से बाहर निकलते देखा ।

उसके चेहरे पर आतंक-ही-आतंक था ।

जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा !

वह एकदम दौड़ती हुई सीधे कमांडर से आकर टकराई और उसका ओवरकोट अपनी दोनों मुठ्ठी में पकड़ी वहीं निढाल हो गयी ।

''क्या हो गया ?'' कमांडर ने उसे झंझोड़ा- ''क्या हुआ ?''

''वहाँ !'' नीलू का सांस बुरी तरह फूल-पिचक रहा था- ''वहाँ !''

''वहाँ क्या है ?''

''वहाँ कोई है ।''

''यह मालूम नहीं । लेकिन कोई है ।''

कमांडर ने तुरन्त नीलू को अपने से अलग हटाया । कोल्ट रिवाल्वर हाथ में तानी। फिर बिना कोई सैकिण्ड गंवाये वह उसी कमरे की तरफ झपटा, जिधर नीलू ने इशारा किया था ।

वह बड़ी प्रचण्ड आंधी की तरह उस कमरे में दाखिल हुआ ।

कमरे में घुसते ही वह ठिठका ।

चौंका ।

मेंशन के दूसरे कमरों के फर्श पर जहां धूल का अम्बार था, वहीं उस कमरे की बाकायदा झाड़ू दी गयी थी और वहाँ धूल का एक अंश तक नजर नहीं आ रहा था । सामने फर्श पर एक चादर बिछी थी और वहाँ कोई बड़े इत्मीनान के साथ सो रहा था । एक सफेद रंग की चादर उसने सिर से पांव तक ओढ़ी हुई थी ।

वह इतनी गहरी नींद में था कि हंगामे का उस पर कोई असर न था ।

यहां तक की नीलू की भूकम्पकारी चीख भी उसे जगा नहीं पायी थीं ।

''ऐ !'' कमांडर करण सक्सेना ने रिवाल्वर उसकी तरफ तान दी और चीखा- ''कौन हो तुम?''

उस पर कोई प्रतिक्रिया न हुई ।

वह रंचमात्र भी न हिला ।

कमांडर करण सक्सेना बड़ी सावधानी के साथ कुछ कदम और आगे बढ़ा ।

''सुना नहीं तुमने ?'' वह दहाड़ा- ''कौन हो तुम ?''

तब तक नीलू भी वापस उस कमरे के दरवाजे पर आकर खड़ी हो गयी थी ।

वह किसी भयभीत हिरणी की तरह बहुत सहमी-सहमी नजर आ रही थी ।

जब करण सक्सेन ने देखा कि उसके चिल्लाने का भी उस व्यक्ति पर कोई असर नहीं है, तो वह झटके से आगे बढ़ा और उसने एकदम चादर पकड़कर सर्राटे के साथ उतार फेंकी ।

नीलू की एक बार फिर अत्यन्त वीभत्स चीख निकल गयी ।

वह दृश्य ही ऐसा था । उसे देखकर बड़े से बड़ा दिल गुर्दे वाला आदमी भी दहल उठता। कमांडर जैसे आदमी के शरीर में भी आतंक की फुरेरी-सी दौडी और वह तत्काल

दो कदम पीछे हटा ।

वहाँ अनुपमा जोशी की लाश पड़ी थी ।

लाश बिल्कुल निर्वस्त्र थी ।

शरीर पर कपड़े की एक धज्जी तक नहीं थी ।

इतना ही नहीं, लाश तीन टुकड़ों में विभक्त थी ।

टांगे अलग !

धड़ अलग !

सर अलग !

अनुपमा जोशी के शरीर में खून की एक बूंद तक शेष नहीं थी । इसलिये उस लाश का चेहरा बहुत दहशतनाक बन गया था और उस पर निगाह पड़ते ही शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ती थी ।

''यह तो अनुपमा जोशी है ।'' नीलू के मुंह से तीव्र सिसकारी छूटी और वह एकदम से अन्दर आयी ।

''हां ।'' कमांडर भी स्तब्ध था ।

वहाँ अनुपमा जोशी की लाश के दर्शन हो जायेंगे, यह बात तो उसके स्वप्न में भी न थी ।

''इसे किसने मार डाला ?''

''मालूम नहीं। अभी तो यह भी देखना बाकी है, इसकी लाश को यहां लेकर कौन आया ?''

□□□

यही वो क्षण था, जब उस पूरी 'रेड मेंशन' में किसी के कदमों की आवाज गूंज उठी ।

वह सीढ़ियां उतर रहा था ।

उसने भारी-भरकम जूते पहने हुए थे । इसलिये उसके जूतों की वह ध्वनि पूरे मेंशन में गुंजायमान हो रही थीं।

''लगता है, बाहर कोई है ?'' नीलू चिल्लाई ।

कमांडर करण सक्सेना ने भी रिवाल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े एकदम से एबाउट-टर्न लिया और दौड़ता हुआ बाहर गलियारे में आ गया ।

नीलू भी वहाँ खड़ी थी ।

सामने सीढ़ियों पर वह आवाज सुनाई दे रही थी, लेकिन अभी तक कोई आदमी नजर नहीं आया था ।

''यहीं खड़ी रहो।''

नीलू ठिठक गयी ।

कमांडर ने अब अपनी रिवाल्वर सीढ़ियों की तरफ तान दी थी ।

वह किसी भी हालात से निपटने के लिये पूरी तरह तैयार था ।

नई-नई घटनायें घट रही थीं ।

कुछ देर तक सीढ़ियों पर जूतो की वह ध्वनि गुंजायमान होती रही और फिर वह आदमी भी चमका, जो सीढ़ियां उतर रहा था ।

वह जगदीश नरूला था ।

□□□

जगदीश नरूला को देखकर दोनों चौंके ।

उस वक्त जगदीश नरूला बहुत हैरान-परेशान नजर आ रहा था। उसके कपड़े कई जगह से फटे हुए थे । जिस्म पर कई जगह चोट के भी निशान थे और उसकी हालत ऐसी थी, जैसे वह अर्द्धपागल हो ।

बाल बिखरे हुए थे ।

वह सीढ़ियां उतरकर वहीं बीच गलियारे में खड़ा हो गया और बड़ी डबडबाई आंखो से कमांडर करण सक्सेना की तरफ देखने लगा ।

"मिस्टर नरूला !" कमांडर लपककर जगदीश नरूला के पास पहुंचा और उसने उसे झंझोड़ा- "यह सब क्या हो गया है ?"

जगदीश नरूला की रूलाई टूट पड़ी और वह कमांडर के सीने से लगकर एकदम हिचकियों से रो पड़ा।

"हम बर्बाद हो गये कमाण्डर ! उस शैतान ने अनुपमा जोशी को भी नहीं छोड़ा, उसे भी मार डाला ।"

"किसने ?"

"वहीं, उदय प्रताप !"

"उदय प्रताप !" कमांडर करण सक्सेना की आंखो में आश्चर्य के अनार छूटे- "वो कहां मिला तुम्हें ? उसने अनुपमा जोशी को किस तरह मार डाला ?"

जगदीश नरूला कुछ देर बहुत भाव-विहृल अंदाज में रोता रहा ।

फिर उसने बहुत धीरे-धीरे अपनी आंखो से आंसू साफ किये ।

वह कमांडर के सीने से पीछे हटा और उसकी डबडबाई आंखो में अब किसी बहुत जबरदस्त हंगामे की प्रतिछाया दौड़ने लगी ।

देखते-ही-देखते उसका चेहरा भावनाओं से भरी कोई किताब बन गया था ।

किताब !

जिसकी यादों के पन्ने बड़ी तेजी के साथ फड़फड़ाते हुए पलटते चले गये और उन पर बड़ी जल्दी-जल्दी वह दृश्य उभरने लगे, जिनमें अनुपमा जोशी की मृत्यु की कहानी दफन थी।

"उस रात जब हम चारों प्रिंस अल्बर्ट कम्पाउण्ड से भागे कमाण्डर !" जगदीश नरूला खोये-खोये स्वर में बोला- "तो पुलिस हमारे पीछे लग गयी थी। उन्हीं पुलिसकर्मियों के लगातार पीछा करने के कारण हम चारों बिछड़ गये। आप और नीलू जहां दूसरी सड़क पर मुड़ गये थे, वहीं मैं और अनुपमा जोशी दूसरी सड़क पर भागते चले गये। पुलिस से तो हम बच गये और एक बिल्कुल नई बन रही इमारत के चौथे माले पर जा छिपे। बस वहीं से तबाही की शुरूआत हुई।"

"कैसे ?"

□□□

"हम दोनों सारी रात पुलिस के डर से उसी इमारत में छुपे बैठे रहे।

हमारी हिम्मत जवाब दे रही थी।

मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं, हम दोनों ही उस वक्त आतंकित थे।

मैं भी।

अनुपमा जोशी भी !

इस प्रकार उस इमारत में छिपे-छिपे दोनों को सुबह के पांच बज गये।

मैंने फिर बिल्डिंग के ऊपर से नीचे झांका।

पुलिस वहाँ नहीं थी।

वह जा चुकी थी।

इससे मेरी थोड़ी राहत बंधी।

तब मैंने आपको और नीलू को 'सिटी रेलवे स्टेशन' देखने जाने का फैसला किया। आखिर हम चारों ने वहीं पहुंचना था।

मुझे शक था, कहीं आप अभी भी हम दोनों की वहाँ प्रतीक्षा न कर रहे हों।

मैं अनुपमा जोशी को अकेले उसी इमारत में छोड़कर आप दोनों को देखने रेलवे स्टेशन पहुंचा, जहां आप मुझे नहीं मिले। जब मैं वहाँ से लौटा, तो मैंने अनुपमा जोशी को बेहद आतांकित अवस्था में पाया और उसे एक पिलर के पीछे छिपे देखा।

अनुपमा जोशी ने बताया, अभी-अभी उदय प्रताप वहाँ आया था और अब वो जरूर मुझे देखकर कहीं छिप गया है।

उस बात ने मुझे हिला डाला।

मैंने फौरन पूरी बिल्डिंग छान मारी।

परन्तु उदय प्रताप मुझे कहीं न मिला।

तब मैंने इसे अनुपमा जोशी के मन का वहम समझा ।

मैंने समझा, चूंकि अनुपमा जोशी पीछे अकेली थी, इसलिये भय और संत्रास की स्थिति में उसे ऐसा अनुभव हुआ था ।

परन्तु !

ऐसा सोचना मेरा पागलपन था ।

सरासर बेवकूफी !

सच्चाई ये थी कमाण्डर, उदय प्रताप न सिर्फ वहाँ था, बल्कि हमारी एक-एक हरकत पर निगाह रखे था ।

अगला सारा दिन भी हमने उसी इमारत के चौथे तल पर छिपे हुए गुजारा ।

इतना ही नहीं, पूरा दिन हमने कुछ खाया-पिया भी नहीं ।

□□□

फिर रात घिर आयी ।

"हमें अब किसी तरह यहां से निकलना चाहिये ।" रात बितते ही मैंने अनुपमा जोशी के सामने प्रस्ताव रखा।

"लेकिन हम कहां जायेंगे ?" अनुपमा जोशी बोली- "हमारे छिपने के तमाम रास्ते बन्द हैं । एक कमाण्डर हमारी आखिरी उम्मीद बचे थे, लेकिन अब तो कमाण्डर के बारे में भी मालूम नहीं कि वो कहां है ?"

"परन्तु फिर भी हम कमाण्डर तक पहुंच सकते है ।"

"कैसे ?"

"तुम शायद भूल रही हो ।" मैंने कहा- "कमाण्डर का उद्देश्य उदय प्रताप की तलाश में 'रेड मेंशन' पहुंचना था । वो कभी-न-कभी 'रेड मेंशन' जरूर पहुंचेगे । अगर हम यहां से 'रेड मेंशन' पहुंच जाये, तो वहीं हमारी कमाण्डर से मुलाकात हो जायेगी ।"

अनुपमा जोशी की आंखे चमक उठी ।

मेरा आइडिया इतना बेहतरीन था, जो फौरन ही किसी भी समझ में आ जाता ।

अनुपमा जोशी की भी समझ में आया ।

"परन्तु एक मुश्किल है ।" अनुपमा जोशी बोली ।

"क्या ?"

"हम रेड मेंशन तक जायेंगे किस तरह ? वहाँ तक जाने के लिये हमारे पास अपना कोई वाहन बगैरा भी तो नहीं है ।"

"उसके बिना भी हम वहाँ तक पहुंच सकते है ।"

"कैसे ?"

"न्यूयार्क का आखिरी स्टेशन 'सेंटटॉप हिल' है । हम ट्रेन से सेंटटॉप हिल तक जायेंगे और उससे आगे डेनवर तक जाने के लिये हम वहीं से कोई प्राइवेट टैक्सी या बस पकड़ लेंगे ।"

"लेकिन इस तरह प्राइवेट टैक्सी या बस में सफर करने में तो बहुत खतरा है ।" अनुपमा जोशी थोड़ा सहमकर बोली ।

"खतरा तो जिन्दगी में कदम-कदम पर है । परन्तु अगर हमने 'रेड मेंशन' पहुंचना है, तो यह रिस्क तो अब उठाना ही होगा ।"

□□□

बहरहाल हम दोनों के बीच यह फाइनल हो गया कि हमने उसी तरह 'रेड मेंशन' पहुंचना है ।

पहले ट्रेन द्वारा सेंटटॉप हिल !

उसके बाद टैक्सी या बस पकड़कर डेनवर !

रात के उस समय दो बज रहे थे, जब मैं और अनुपमा जोशी उस बिल्डिंग के अन्दर से बड़ी खामोशी के साथ निकले और 'सिटी रेलवे स्टेशन' पहुंचे ।

हम दोनों के मन में ही अजीब सा भय था ।

एक-एक कदम उठाते हुए डर रहे थे ।

हर पल ऐसा लगता, मानो अभी कहीं से पुलिस प्रकट होगी और हमें पकड़ लेगी । निःसन्दहेह वो बहुत दहशत पैदा करने वाले क्षण थे । हमें अपनी परछाई से भी डर लग रहा था। जरा सी आहट पर ही चौंक उठते ।

खासतौर पर उदय प्रताप का हमें सबसे ज्यादा डर था, आखिर वो एक चक्कर उस नई बिल्डिंग के अन्दर भी लगा चुका था ।

बहरहाल !

हम दोनों आतंक के उसी माहौल में 'सिटी रेलवे स्टेशन' पहुंचे ।

प्लेटफार्म पर गहरा सन्नाटा था ।

खामोशी !

"ट्रेन आने में अभी कितनी देर है ?" अनुपमा जोशी ने वहाँ पहुंचकर मुझसे सवाल किया ।

"तकरीबन दस मिनट !"

"आओ, तब तक बैठते हैं ।"

"चलो ।"

वहीं प्लेटफार्म के सबसे अधियारे हिस्से में जो बैंच पड़ी हुई थी, हम दोनों उस पर जा बैठे ।

प्लेटफार्म पर एक भी यात्री नहीं था ।

"एक बात कहूं जगदीश !" अनुपमा जोशी ने बैंच पर बैठे-बैठे अपना हाथ मेरे हाथ में रख लिया ।

मैंने देखा ।

उसका हाथ ठण्डा था ।

बिल्कुल बर्फ की तरह ।

"क्या कहना चाहती हो ?" मैंने अनुपमा जोशी की आंखो में झांका ।

"न जाने क्यों डर लग रहा है ।"

"ऐसा महसूस होता है जैसे आज की रात हमारे साथ कोई-न-कोई हादसा जरूर पेश आयेगा ।"

मैं हंसा ।

परन्तु मेरी उस हंसी में भी कहीं-न-कहीं आशंका छिपी थी ।

"यह तुम्हारा बहम है अनुपमा ।" मैंने बड़े विश्वास के साथ उसका हाथ थपथपाया- "ऐसा कुछ नहीं होगा । हम सही-सलामत 'रेड मेंशन' पहुंच जायेंगे ।"

"लेकिन ।"

"डोन्ट बी स्कैअर्ड ।"

अनुपमा जोशी खामोश हो गयी ।

लेकिन सिर्फ मेरे कह देने से उसके मन का डर मिट नहीं गया था ।

और !

सिर्फ उसके मन का क्या !

अभी तो मेरे मन में भी डर बाकी था ।

यही वो क्षण था, जब हम दोनों ने अंधेरे में डूबी सीढ़ियों पर एक आदमी को उतरते देखा । वह बहुत सम्भल-सम्भलकर उतर रहा था, जैसे बीमार हो । उसकी पीठ हम दोनो की तरफ थी और उसका चेहरा हमें दिखाई नहीं पड़ रहा था ।

सीढ़ियां उतरकर वह सम्भल-सम्भलकर चलता हुआ ही हमसे काफी दूर एक बैंच पर जा बैठा ।

उसकी पीठ अभी भी हमारी तरफ थी ।

प्लेटफार्म पर अब हमारे सिवा एक यात्री और बढ़ गया ।

□□□

ठीक दस मिनट बाद बिल्कुल राइट टाइम पर वहाँ ट्रेन आ गयी । अनुपमा जोशी और मैं फौरन दौड़कर उस ट्रेन के सबसे पिछले डिब्बे में जा चढ़े ।

डिब्बा बिल्कुल खाली था ।

उसमें एक यात्री भी न था ।

और !

फिलहाल यह बात हमारे लिये वरदान ही थी, क्योंकि अगर उसमें कोई यात्री होता, तो हमारे पहचान लिये जाने का पूरा खतरा था । अब कम-से-कम हम इत्मीनान के साथ उस डिब्बे में बैठ सकते थे ।

एक सीट पर जाकर हम बैठ गये ।

मेरा हाथ बार-बार जेब में मौजूद पिस्टल को टटोलना नहीं भूलता था ।

जो पूरी तरह लॉडिड थी ।

तभी ट्रेन चल पड़ी। जैसे ही ट्रेन ने रफ्तार पकड़ी, उसी पल धड़ से किसी यात्री के उस डिब्बे में चढ़ने की आवाज हुई ।

"यह कौन आ गया ?" अनुपमा जोशी चौंकी ।

"घबराओ मत, शायद वही यात्री डिब्बे में चढ़ा है, जो थोड़ी देर पहले प्लेटफार्म पर आया था ।"

अनुपमा जोशी शांत हो गयी ।

ट्रेन अब तक पूरी तरह रफ्तार पकड़ चुकी थी ।

हम सहज भाव से सीट पर बैठे थे ।

कोई दस मिनट तक कुछ न हुआ ।

लेकिन !

दस मिनट के बाद जो घटनायें घटनी शुरू हुई, वह बेहद विहंगमकारी थी । ट्रेन उस समय अपनी फुल स्पीड के साथ पटरियों पर दौड़ी जा रही थी । तभी हम दोनों को डिब्बे में यात्री के चलने की आवाज सुनाई पड़ी ।

हम सन्न् रह गये ।

यात्री धीरे-धीरे लंगड़ाकर चल रहा था और लंगड़ाकर चलता हुआ उसी तरफ आ रहा था ।

फिर हमने उसकी खांसी के ठसके की आवाज भी सुनी ।

हम दोनों के शरीर में फुरेरी दौड़ गयी ।

"यह तो उदय प्रताप है ।" अनुपमा जोशी हत्प्रभ स्वर में बोली ।

खांसी के ठसके की आवाज ने मेरे जिस्म के भी तमाम रोंगटे खड़े कर दिये ।

मैंने फौरन अपनी जेब से पिस्टल बाहर निकाल ली और दौड़कर गैलरी में पहुंचा ।

तुरन्त मुझे उदय प्रताप नजर आया ।

हां !

वो उदय प्रताप ही था ।

उसने काला चैस्टर पहना हुआ था और चौड़ी मोहरी की पतलून पहनी हुई थी, जिसे वो हमेशा पहनता था । इसके अलावा उसके हाथ में प्वाइण्ट थ्री की एक रिवाल्वर थी ।

अनुपमा जोशी भी तब तक झपटकर अपना माउजर निकाल चुकी थी ।

वह भी दौड़कर गलियारे में आयी ।

जैसे ही उसने सामने उदय प्रताप को देखा, तत्काल अपने माउजर का ट्रेगर दबा दिया ।

धांय ! धांय !!

माउजर की दो गोलियां निकलकर उदय प्रताप की तरफ झपटी ।

परन्तु उदय प्रताप हद से ज्यादा फुर्तीला इन्सान था ।

इधर गोलियां चलीं, और उसने अद्वितीय फुर्ती के साथ अपनी दांयी तरफ वाली सीट पर छलांग लगा दी ।

दोनों गोलियां एक अन्य सीट को फाड़ती हुई अन्दर लकड़ी में जा धंसी ।

उदय प्रताप बहुत स्तब्ध मुद्रा में अन्दर की साइड में सीट पर पड़ा रहा।

''उदय प्रताप !'' मैं पिस्टल हाथ में पकड़े-पकड़े गरजा- ''बाहर निकलो । आज तुम बचोगे नहीं। बहुत मौत का ताण्डव तुम कर चुके !''

उदय प्रताप कुछ न बोला ।

उसे सिर्फ खांसी के दो जोरदार ठसके और उठे ।

''बाहर निकलो उदय प्रताप !'' मैं पुनः दहाड़ा- ''आज तुम्हारी खैर नहीं है ।''

अनुपमा जोशी भी मेरे बिल्कुल बराबर में माउजर ताने खड़ी थी ।

हम दोनों उस क्षण अपने आप में इस कदम चौंकेन्ने थे कि अगर हमें उदय प्रताप की एक झलक भी नजर आ जाती, तो हम उसकी खोपड़ी की हड्डी चटका डालते ।

मगर वैसा कुछ न हुआ ।

मेरे बार-बार ललकारने के बावजूद उदय प्रताप बाहर न निकला ।

कुछ देर के लिये वहाँ सन्नाटा छा गया ।

ट्रेन निरन्तर पटरियों पर बहुत तूफानी स्पीड से दौड़ी जा रही थी और उसके इन्जन के सीटी देने की आवाज बार-बार रात की नीरवता में दूर तक गुंजायमान हो जाती ।

''उदय प्रताप !'' मैं पुनः गरजा ।

उसी क्षण उदय प्रताप बिल्कुल एकाएक चीते जैसी फुर्ती के साथ बाहर निकला । वह इतने आकस्मिक रूप से बाहर निकला था कि अनुपमा जोशी और मैं दोनो ही भौंचक्के रह गये। हम गोली चला पाते, उससे पहले ही उदय प्रताप ने फायर कर दिया ।

मेरे कण्ठ से वीभत्स चीख निकल गयी ।

गोली सर्राटे के साथ मेरी पिस्टल में आकर लगी थी ।

निशाना बहुत सच्चा था ।

फौरन पिस्टल मेरे हाथ से उछलकर दूर जा गिरी ।

अनुपमा जोशी ने तत्काल माउजर से गोली चलायी ।

मगर उदय प्रताप न सिर्फ जम्प लेकर उस गोली से बच गया बल्कि बचते ही उसने एक फायर और किया ।

अनुपमा जोशी के कण्ठ से भी बहुत हृदयविदारक चीख निकली। उसके हाथ से भी माउजर उछलकर दूर जा गिरा ।

□□□

पटरियों पर धुआंधार स्पीड से दौड़ती ट्रेन के इन्जन ने पुनः बहुत जोरदार अंदाज में सीटी दी और गड़गड़ाते हुए ट्रेन ने पटरी बदली ।

हम दोनों ही उदय प्रताप के सामने अब निहत्थे हो चुके थे ।

खाली हाथ !

हमारे चेहरे पर अब आतंक-ही-आतंक था। जबकि हमें उस हाल में देखकर उदय प्रताप हंसा ।

जोर से हंसा ।

''साले, कबूतर !'' वह खिलखिलाकर हंसते हुए बोला- ''अंटलाटिक महासागर में से सोना निकालने आये थे, 10 टन सोना ! लेकिन अब सोना किसी के हाथ नहीं लगेगा, उस पर सिर्फ-और सिर्फ उदय प्रताप का कब्जा होगा। तुम सब मारे जाओगे, सब !''

''तुम शायद कमाण्डर को भूल गये लगते हो उदय प्रताप !'' अनुपमा जोशी गरजी ।

''मैं किसी को नहीं भूला ।'' उदय प्रताप उस वक्त बहुत खतरनाक मूड में था- ''जिस तरह पवन मेल्होत्रा, गंजा उस्मान, अनिल मेटा और दिलीप मेहरा मरे, उसी तरह कमाण्डर की अर्थी भी सजेगी ।''

''यह तुम्हार वहम है ।''

''कभी-कभी वहम सच भी बन जाते हैं ।''

तभी मैंने एक चाल-चली ।

अच्छी चाल ।

उदय प्रताप का सारा ध्यान उस वक्त अनुपमा जोशी की तरफ था। मैंने तुरन्त वहीं थोड़ा फासले से पड़े अपने पिस्टल की तरफ छलांग लगा दी ।

मगर जल्द ही साबित हो गया कि उदय प्रताप जैसे काइयां शख्स की आंखो में धूल झोंकना आसान नहीं था।

सिर्फ ऐसा लग ही रहा था कि उसका सारा ध्यान अनुपमा जोशी की तरफ है, जबकि उसका ध्यान मेरी तरफ भी था । जैसे ही मैं पिस्टल की तरफ झपटा, तुरन्त उसने एकदम से जम्प लगाकर मुझे पकड़ लिया और मेरे पेट में अपने घुटने की कटोरी का ऐसा वज्र प्रहार किया कि मैं दहाड़ उठा ।

मेरी आंखे उबल पड़ीं और उनसे पानी जाने लगा ।

लेकिन इसके बावजूद भी मैं वहीं उदय प्रताप से कसकर चिपट गया। खासतौर पर उदय प्रताप की उस कलाई को अपनी बगल में दबा लिया, जिसमें उसने रिवाल्वर पकड़ा हुआ था ।

''अनुपमा!'' साथ ही मैं अनुपमा जोशी की तरफ मुंह करके चिल्लाया- ''तुम जल्दी से दूसरे डिब्बे में भाग जाओ, फौरन ! इतने मैं इसे सम्भालता हूं ।''

''नहीं ।'' अनुपमा जोशी बोली- ''मैं तुम्हें इस दरिन्दे के साथ अकेले छोड़कर नहीं जा सकती ।''

''बेवकूफ मत बनो अनुपमा !''

लेकिन अनुपमा जोशी ने मेरी बात नहीं सुनी ।

वहीं उसका माउजर पड़ा हुआ था, वह तेजी से उस माउजर की तरफ झपटी ।

परन्तु उदय प्रताप ने उसे भी वो हथियार उठाने का मौका नहीं दिया ।

हालांकि मैं उससे बुरी तरह चिपटा हुआ था, परन्तु इसके बावजूद वो मुझे अपने साथ कब्जाये-कब्जाये उछला और उसकी दोनों प्रचण्ड लातें अनुपमा जोशी की छातियों पर जाकर पड़ी ।

अनुपमा जोशी चीखते हुए पीछे गिरी ।

''अनुपमा !'' मैं उससे चिपटे-चिपटे पुनः चिल्लाया- ''भाग जाओ यहां से, बेवकूफी मत करो ।''

उसी क्षण उदय प्रताप को खांसी के बहुत जोर-जोर से दो ठसके उठे ।

मैंने उसकी रिवाल्वर पर झपट्टा मारना चाहा ।

परन्तु उदय प्रताप हद से ज्यादा चौकस था ।

उसने मुझे अपने मकसद में सफल न होने दिया ।

दमे का मरीज होने के बावजूद भी उसके अन्दर फौलाद जैसी ताकत थी । अब उसने भी अपनी बांहो का शिकंजा मेरे गले के गिर्द चपेट दिया था । मुझे अपनी सांस घुटती महसूस होने लगी ।

तभी अनुपमा जोशी पुनः जम्प लेकर खड़ी हुई और इस मर्तबा उसने एक बड़ी जबरदस्त फ्लाइंग किक उदय प्रताप के चेहरे पर जड़ी ।

उदय प्रताप ने वहीं उसकी एक टांग पकड़ ली और उसे जोर से पीछे की तरफ उछाला ।

अनुपमा जोशी का सिर बहुत जोर से एक सीट में जाकर लगा ।

वह चीखी ।

और कुछ क्षण के लिये वहीं ढेर हो गयी। उसके सिर में से खून निकलने लगा था ।

□□□

उदय प्रताप को अब अच्छा मौका मिल गया ।

हालांकि उसका सांस बुरी तरह उखड़ रहा था । उसने 'अस्थलीन इन्हेलर' निकालकर उसकी गैस अपने मुंह में स्प्रे की ।

मैं निरन्तर उसके मजबूत शिकंजे से आजाद होने के लिये तड़प रहा था । परन्तु तभी उदय प्रताप ने अपने चैस्टर की जेब से नायलोन की एक मजबूत डोरी निकाल ली । वह सारे इन्तजाम करके आया था। नायलोन की डोरी से उसने मेरे हाथ-पैर कस दिये और वहीं एक सीट के साथ बांधकर डाल दिया ।

अब मैं बिल्कुल ही बेबस हो गया ।

फिर रिवाल्वर हाथ में पकड़े-पकड़े वो लंगड़ाकर चलता हुआ अनुपमा जोशी की तरफ बढ़ा ।

उसे फिर खांसी के दो ठसके उठे ।

अनुपमा जोशी के सिर में काफी गहरी चोट लगी थी, जिसके कारण वो अभी भी निढाल थी । परन्तु उदय प्रताप को अपनी तरफ बढ़ते देखकर वो फिर भी हिम्मत करके खड़ी हो गयी।

उदय प्रताप की आंखो में उस क्षण वहशियाना चमक थी ।

रिवाल्वर की नाल बिल्कुल अनुपमा जोशी की खोपड़ी को घूर रही थी ।

''जिस दिन से तुम यहां न्यूयार्क में आयी हो डार्लिंग !'' एकाएक उदय प्रताप काएक और बिल्कुल नया रूप उभरकर सामने आया- ''उसी दिन से मेरी निगाह तुम्हारे ऊपर है । उसी दिन से मैं तुम्हारे यौवन का रसपान करना चाहता हूं, जिसका मौका मुझे आज मिलेगा ।''

''नहीं ।'' अनुपमा जोशी कांप उठी- ''नहीं !''

''क्या ! डर गयीं डार्लिंग !'' उदय प्रताप मुस्कुराया- ''तुम तो बहुत बहादुर हो । तुम तो जासूस हो ।''

लेकिन अनुपमा जोशी अब सचमुच उसका बहुत भय खा गयी थी ।

उदय प्रताप की नीयत ऐसी होगी, तब तक उसने सोचा भी न था ।

एकाएक अनुपमा जोशी पलटी और भागी ।

लेकिन अब भागना उसके लिये आसान न था । उदय प्रताप ने बेपनाह फुर्ती के साथ प्वाइंट थ्री टू की रिवाल्वर अपनी जेब में रखी और फिर वह जम्प लगाकर अनुपमा

जोशी की तरफ झपटा । अगले ही पल वह उसके शिकंजे में फंसी बुरी तरह फड़फड़ा रही थी ।

“छोड़ो मुझे !” अनुपमा जोशी चिल्लायी- “छोड़ो ।”

अनुपमा जोशी ने एकाएक अपने सिर की प्रचण्ड टक्कर उसके चेहरे पर जड़ी ।

उदय प्रताप बिलबिला उठा ।

अनुपमा जोशी उसकी बांहो के शिकंजे से फिसलकर आजाद होने ही वाली थी कि उदय प्रताप ने उसे दोबारा कस लिया ।

“तुम्हें मैं आज इतनी आसानी से छोड़ने वाला नहीं हूं बेबी !” उदय प्रताप ने अब उसके उरोजों को अपने बिल्कुल सीने के साथ कस लिया- “आज इसी दौड़ती ट्रेन के अन्दर मेरी इच्छा पूरी होगी ।”

उदय प्रताप ने एकाएक अनुपमा जोशी की टी-शर्ट पर हाथ डाल दिया ।

फिर उसे झटके के साथ खींचा तो टी शर्ट चर्र-चर्र करके फटती चली गयी ।

“उदय प्रताप !” मैं सीट के साथ बंधा हुआ बुरी तरह छटपटाया- “इसे छोड़ दे । इतना भी दरिन्दा मत बन।”

“क्यो !” उदय प्रताप हंसा- “दु:ख हो रहा है तुझे, अपनी प्रेमिका का यह हश्र देखकर दु:ख हो रहा है ।”

मैं खून के आंसू रो पड़ा ।

तड़प उठा ।

उस क्षण मेरी इच्छा हुई, अगर रिवाल्वर मेरे हाथ में आ जाये, तो या तो मैं खुद को गोली मार लूं या फिर उस घटिया आदमी के जिस्म को छलनी-छलनी कर डालूं ।

अनुपमा जोशी उसकी हवस का शिकार बनने से बचने की पूरी-पूरी कोशिश कर रहीं थी ।

टी-शर्ट फटते ही उसकी ब्रा चमक उठी ।

ब्रा !

जिसे देखकर उदय प्रताप और वहशी बन गया ।

उसकी कामाग्नि भड़क उठी ।

आंखो में सुर्ख डोरे तैरने लगे ।

और !

अगले पल उसका हाथ ब्रा पर पड़ा ।

अनुपमा जोशी चीखी ।

चिल्लाई !

उसने जोर से हाथ-पैर पटके ।

सब व्यर्थ !

एक ही झटके से ब्रा अपने स्ट्रेप से टूटकर अलग हो गयी ।

अनुपमा जोशी के दूधिया उरोज अब बिल्कुल नग्न हो गये ।

उफ् !

मैंने सख्ती के साथ अपनी आंखे बन्द कर लीं ।

मेरे दिमाग में चिंगारियां छूट रही थीं ।

हथौड़े बरस रहे थे ।

वह हरामजादा इन्सान अनुपमा जोशी की इज्जत मेरी आंखो के सामने लूट रहा था और कुछ भी करने में अक्षम था ।

असहाय था ।

उदय प्रताप के खिलखिलाकर हंसने की आवाजें निरन्तर मेरे कानों में पिछले शीशे की तरह पड़ रही थीं ।

परन्तु !

पासा फिर पलटा ।

एकाएक उदय प्रताप की हंसी भक्कृ से गायब हो गयी ।

मैंने झटके के साथ आंखे खोली, तो देखा कि अनुपमा जोशी अभी भी उदय प्रताप के शिकंजे में कसी हुई थी। उदय प्रताप ने अब उसके पेण्ट भी उतार फैंकी थी । इस वक्त अनुपमा जोशी के शरीर पर सिर्फ एक कपड़ा था ।

पेण्टी !

काली पेण्टी !

उसके भक्क् से हंसी उड़ने की वजह से ट्रेन की रफ्तार कम होना था ।

शायद कोई स्टेशन आ गया था ।

□□□

उस परिवर्तित माहौल पर मेरे और अनुपमा जोशी के शरीर में इस तरह उत्साह का संचार हुआ, जैसे मरते हुए व्यक्ति को जीवन का चिन्ह नजर आ रहा हो ।

मैं, जो अभी तक चीख रहा था, एकाएक उदय प्रताप की तरफ देखकर हंसा ।

"अब बताओ उदय प्रताप !" मैंने उसका मखौल उड़ाया- "तुम क्या करोगे? तुम फंस चुके हो ।"

और !

सचमुच उदय प्रताप अब घबराया हुआ नजर आ रहा था ।

उसके दिमाग में ढेर सारी आशंकाओ के बादल घिर उठे ।

अनुपमा जोशी की आंखो में भी उम्मीद की चमक आ गयी। उसे भी लगा अब वो उस वहशी इन्सान की हवस का शिकार होने से बच जायेगी ।

ट्रेन की रफ्तार निरन्तर कम हो रही थी।

तभी इन्जन ने जोरदार ढंग से सीटी दी और फिर धीरे-धीरे पटरियां बदलनी शुरू कीं। प्लेटफार्म अब ज्यादा दूर नहीं था।

उदय प्रताप ने एकाएक झटके से प्वाइंट थ्री टू की रिवाल्वर फिर निकाल लीं।

फिर उसने आनन-फानन कई काम किये।

वह अनुपमा जोशी को अपनी बांहो में कब्जाये-कब्जाये घसीटता हुआ मेरे नजदीक लेकर पहुंचा।

उसके बाद उसने रिवाल्वर की बैरल का एक बड़ा प्रचण्ड प्रहार मेरी खोपड़ी पर जड़ा।

मेरे मुंह से दहशतजनक चीख निकलीं।

मेरा मुंह फटा।

उसी क्षण उदय प्रताप ने रिवाल्वर की लम्बी नाल मेरे हलक में किसी सुए की तरह ठोक दी।

मेरे नेत्र उबल पड़े।

मेरे मुंह से गूं-गूं की आवाजें निकलने लगीं।

अब मैं बिल्कुल ही बेबस हो गया था। चीख भी नहीं सकता था।

फिर उदय प्रताप ने वहीं फर्श पर पड़ी पिस्टल उठा ली और अनुपमा जोशी तथा उसके तमाम कपड़े लेकर एक सीट के नीचे अंधेरे में दुबक गया।

मैंने देखा।

उदय प्रताप ने सीट के नीचे पहुंचने के बाद पिस्टल की नाल अनुपमा जोशी की कनपटी पर रख दी थी।

''अगर मुंह से जरा भी आवाज निकाली।'' उसने दांत किटकिटाकर अनुपमा जोशी को धमकी दी- ''तो पहले तू मरेगी और उसके बाद यह नरूला ! एक-एक फायर में दोनों की लाइफ स्टोरी खत्म।''

हमारी आंखो में पुनः आतंक के भाव तैर गये।

तभी प्लेटफार्म आ गया और ट्रेन धीरे-धीरे रूकने लगी।

अब सब कुछ किस्मत के हाथों में था।

अब सब इस बात पर निर्भर करता था कि कोई यात्री उस डिब्बे में चढ़ता है या नहीं।

□□□

लेकिन एक बड़ी मशहूर कहावत है, भाग्य भी शैतान की मजबूत जूती से डरता है।

वही हुआ।

भाग्य ने भी उदय प्रताप का साथ दिया ।

ट्रेन उस स्टेशन पर कोई दो मिनट रूकी ।

वह दो मिनट हम तीनों के लिये ही बेहद सस्पैंस के क्षण थे । एक-एक सैकिण्ड इस तरह गुजर रहा था, जैसे अब कोई उस डिब्बे में आया ।

मगर अफसोस, कोई भी यात्री उस डिब्बे में न आया और ट्रेन चल पड़ी ।

ट्रेन के रफ्तार पकड़ते ही उदय प्रताप का उत्साह अब दोगुना हो गया ।

वह अनुपमा जोशी को बड़ी बेदर्दी के साथ घसीटता हुआ दोबारा सीट के नीचे से बाहर निकाल लाया ।

बाहर निकलते ही उसने अनुपमा जोशी की ट्रेन के कारपेट पर पटका और फिर झट से उसका हाथ अनुपमा जोशी की पेण्टी पर पड़ा ।

अनुपमा जोशी के हलक से अब झनझनाती हुई हृदयविदारक चीख निकल गयी ।

उसी क्षण पेण्टी फटकर अलग जा गिरी ।

□□□

जगदीश नरूला अब 'रेड मेंशन' के गलियारे में खड़ा जोर-जोर से सुबक रहा था ।

उसने अपना शरीर दीवार के साथ टिकाया हुआ था और उसकी हालत ऐसी थी, जैसे वह जिन्दगी की पूरी जंग हार गया हो ।

कमांडर करण सक्सेना और नीलू भी उसकी कहानी सुनकर स्तब्ध थे ।

चकित !

कमाण्डर ! वह जोर-जोर से सुबकता हुआ बोला- "और फिर उस हरामजादे उदय प्रताप ने मेरे सामने ही, मेरी इन्हीं आंखों के सामने ही अनुपमा जोशी की इज्जत लूट ली। वह बेचारी चीखती रही । चिल्लाती रही । उस महापापी से रहम की भीख मांगती रही। लेकिन नहीं, उस वहशी के कान पर जूं तक न रेंगी । उसने उसे नहीं बख्शा ।"

कमांडर भी अब बहुत उदास नजर आ रहा था ।

उसने एक 'डनहिल' निकालकर सुलगा ली और फिर उसके छोटे-छोटे कश लगाये ।

"फिर ?" कमांडर धीरे से बोला ।

"फिर उसने मुझे उठाकर चलती हुई ट्रेन से बाहर फैंक दिया । लेकिन मेरी किस्मत शायद अच्छी थी कमाण्डर, मैं बजरी पर काफी दूर तक लुढ़कता चला गया, लेकिन फिर भी बच गया । तभी रात के उस घनघोर अंधेरे में मैंने उदय प्रताप को अनुपमा जोशी को भी उस तेजरफ्तार ट्रेन से बाहर फैंकते देखा । मगर अनुपमा जोशी की किस्मत तेज न निकली । वह दूसरी पटरी पर जाकर गिरी। मैं दौड़कर उसे बचा पाता, उससे पहले ही पीछे से आती एक दूसरी ट्रेन उसके टुकड़े-टुकड़े करती चली गयी । वह मर गयी ।"

जगदीश नरूला के कण्ठ से पुनः तेज हिचकी उबलीं ।
उसकी आंखो में दूर-दूर तक गहरी उदासी के सांये थे ।
ऐसा लग रहा था, जैसे उसके अन्दर कुछ जल रहा है ।
कुछ सुलग रहा है ।
कमांडर ने पीछे से जाकर धीरे से उसके कंधे पर सात्वंना का हाथ रखा ।
''अपने आंसू साफ करो ।''
जगदीश नरूला फिर भी सुबकता रहा ।
''तुम यहां तक पहुंचे कैसे ?'' कमांडर ने 'डनहिल' का एक कश और लगाया ।
''मैंने वहीं नजदीक के टैक्सी स्टैण्ड पर जाकर किसी तरह एक टैक्सी चुराई और फिर अनुपमा जोशी के शव को लेकर यहां पहुंचा । अब काफी देर से मैं आपके ही यहां आने की प्रतीक्षा कर रहा था ।''
''तुम्हें यहां आये हुए कितना समय हो गया ?''
''डेढ़ घण्टा !''

□□□

शाम घिर आयी थी ।
रात्रि का गहन अंधकार वहाँ चारों तरफ फैला था ।
मेंशन में लाइट की व्यवस्था नहीं थी ।
अलबत्ता वहाँ कुछ मोमबत्ती के पैकिट जरूर थे । नीलू चूंकि उस मेंशन में पहले भी कई मर्तबा आ चुकी थी, इसलिये वहाँ का सारा इन्तजाम उसे मालूम था। उसने मेंशन के ड्रांइगहॉल में दो मोमबत्तियां जला दीं, जिससे मोमबत्तियों का पीला प्रकाश वहाँ चारो तरफ फैल गया ।
मेंशन का ड्राइंगहॉल काफी बड़ा था ।
वहाँ हॉल के बीचो-बीच एक मेज और चार बहुत खस्ताहाल सी कुर्सियां पड़ी हुई थीं । दीवारों पर कुछ जंगली जानवरों की खालें टंगी थीं, जिनका धूल-धक्कड़ के कारण बुरा हाल हो गया था । एक भैंसे का सिर भी बाकायदा स्टील के फ्रेम में कसा हुआ वहीं दीवार पर फिट था ।
वह तीनों मेज के इर्द-गिर्द कुर्सियों पर बैठे थे ।
कमांडर करण सक्सेना पहले की तरह 'डनहिल' के छोटे-छोटे कश लगा रहा था और शान्त था ।
जगदीश नरूला और नीलू भी कोई बहुत ज्यादा नहीं बोल रहे थे ।
''मुझे तो लगता है, आप लोग खामख्वाह अपना कीमती समय बर्बाद कर रहे है ।'' नीलू उस मौन को भंग करते हुए बोली- ''उदय प्रताप यहां आने वाला नहीं है ।''

‘‘वह जरूर आयेगा ।’’ जगदीश नरूला दृढ़ स्वर में बोला ।

‘‘फिर भी टाइम की कुछ लिमिट तो होगी ।’’ नीलू बोली- ‘‘कि आप लोगों ने कब तक इस मेंशन में उदय प्रताप का इन्तजार करना है ।’’

‘‘मैं तो कहता हूं ।’’ जगदीश नरूला बोला- ‘‘हमने तभी तक उसका यहां इन्तजार करना चाहिये, जब तक वो आ नहीं जाता । क्योंकि यही एक जगह ऐसी है, जहां उदय प्रताप कभी-न-कभी जरूर आयेगा ।’’

‘‘और जब वो मर ही गया होगा, तो फिर आयेगा कहां से ?’’

‘‘वो मरा नहीं है ।’’ जगदीश नरूला गुर्राया- ‘‘मैंने खुद उसे अपनी आंखो से देखा है । मेरी यह बद्तर हालत उसी ने बनायी है और अनुपमा जोशी को भी उसी ने मौत के दरवाजे तक पहुंचाया । और यह सब कोई कहीं सुनी बातें नहीं है मैडम ! मैं चूंकि खुद इस पूरी घटना का चश्मदीद गवाह हूं, तो फिर इस बात पर कैसे यकीन कर लूं कि उदय प्रताप मर चुका है ।’’

नीलू ने बेचैनी के साथ पहलू बदला ।

वो काफी व्यग्र दिखाई पड़ रही थी ।

‘‘आप इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहेंगे कमाण्डर ?’’ नीलू ने कमांडर की तरफ देखा ।

कमांडर फिर भी कुछ देर खामोश रहा और उसने ‘डनहिल’ की राख नीचे झाड़ी ।

‘‘मैं तो सिर्फ इतना ही कहूंगा ।’’ कि वह बोला- ‘‘कि हमें जल्दबाजी में केई कदम नहीं उठाना चाहिये ।’’

क्या मतलब ?

‘‘कम से कम आज की रात हम और गुजरने का इन्तजार करे, फिर कल सुबह बैठकर फैसला करेंगे कि हमने अब क्या करना है ?’’

‘‘यानि आज की रात आप इसी मेंशन में ठहरेंगे ?’’ नीलू बोली ।

‘‘हां ।’’

‘‘लेकिन यहां तो बिजली वगैरा का कैसा भी कोई प्रबन्ध नहीं है ?’’

‘‘तो क्या हुआ !’’ कमांडर ने ‘डनहिल’ का एक कश और लगाया- ‘‘आज मौसम काफी खुशगवार है और ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही है । मैं समझता हूं, बिना बिजली के भी हमें यहां नींद आ जायेगी । क्यों मिस्टर नरूला !’’

‘‘ठीक है ।’’

‘‘यहां रात गुजारने के लिये कुछेक बिस्तर वगैरा तो होंगे ?’’ कमांडर ने नीलू की तरफ देखा ।

नीलू हिचकिचाई ।

‘‘हां।’’ फिर उसने कहा- ‘‘कुछ दरियां और तकिये हैं, जो सन्दूक में रखे है ।’’

“ठीक है, तो तुम रात गुजारने का इन्तजाम करो। तब तक मैं मेंशन के कम्पाउण्ड में थोड़ा टहलकर आता हूं।”

कमांडर कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया और फिर बाहर की तरफ बढ़ा ।

□□□

‘रेड मेंशन’ में गुजारी गयी रात एक हंगामे भरी रात साबित हुई ।

नीलू ने अलग-अलग कमरों में बिस्तर लगा दिये थे, जहां जाकर वह लेट गये। मेंशन का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया गया था और वेक्सल भी अब बाहर से मेंशन के लम्बे-चौड़े ड्राइव वे पर लाकर खड़ी कर ली गयी थी।

तब तक वहाँ पूरी तरह सकून था और ऐसा लग नहीं रहा था कि उस रात वहाँ कुछ होगा ।

कमांडर करण सक्सेना अपने बिस्तर पर लेटा था ।

वह अंधेरा था ।

घुप्प अंधेरा ।

ऐसा कि हाथ को हाथ भी न सुझाई दें ।

वह एक काफी पुराना तख्त था, जिस पर दरी बिछाई गयी थी । हालांकि तख्त काफी जर्जर हालत में था, लेकिन फिर भी रात गुजारने के लिये बुरा नहीं था ।

बिस्तर पर लेटते ही अभी तक जितनी घटनायें घटी थी, उन सबकी रील कमांडर के दिमाग में चलने लगी ।

सचमुच !

वो एक हंगामाखेज मिशन था ।

एक के बाद एक चौंका देने वाली घटनायें घटती रही थी। और अभी क्या होने वाला था, यह किसी को भी मालूम न था ।

लेटे-लेटे कमांडर को कब नींद आ गयी, पता न चला ।

जगदीश नरूला और नीलू भी सो गये ।

□□□

फिर सबसे पहले जगदीश नरूला की एकाएक भक्क् से आंख खुली ।

वह जोर से चौंका ।

आधी रात का वक्त था ।

उसने बड़ी अजीबोगरीब सी आहट सुनी, जो मेंशन के गलियारे में से उभर रही थी । जगदीश नरूला ने आवाज ध्यान से सुनी तो उसके जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया । वह किसी के लंगड़ाकर चलने की आवाज थी ।

ऐसा लग रहा था, जैसे कोई धीरे-धीरे चल रहा हो ।

आहिस्ता-आहिस्ता ।

शायद वो नहीं चाहता था कि उसके चलने की वह आवाज कोई सुने ।

मगर मेंशन में इस कदर सन्नाटा था कि अगर वहाँ कोई सुई भी गिरती, तो उसकी आवाज भी सुनाई पड़ती ।

फिर उसकी जोर से खांसी के ठसके की आवाज सुनाई पड़ी ।

जगदीश नरूला बिस्तर पर लेटा-लेटा पसीनों में लथपथ हो उठा ।

उदय प्रताप !

वो उदय प्रताप ही था ।

वह लंगड़ाकर चलता हुआ उसी तरफ आ रहा था ।

जगदीश नरूला को अपने दिल की धड़कन रूकती महसूस हुई । वह जल्दी से बिस्तर छोड़कर उठा। कमरे में इतना घुप्प अंधेरा था कि कुछ भी दिखाई नहीं पड़ रहा था और कोई मोमबत्ती बगैरा भी वहाँ नहीं थी, जिसे वो जलाता ।

अब कदमों की पद्चाप बिल्कुल उसी कमरें के सामने आकर ठहर गयी, जिसमें जगदीश नरूला था । जगदीश नरूला को अपने गले में कांटे चुभते अनुभव हुए ।

उसी क्षण आगन्तुक ने कमरे के दरवाजे को आहिस्ता से धक्का दिया ।

दरवाजा किर्र-किर्र करता हुआ कोई छः इंच खुला ।

अन्दर से कुण्डा लगा हुआ नहीं था ।

थोड़ा रूककर उसने पुनः दरवाजे को अन्दर धकेला। दरवाजा अब पूरा खुलता चला गया और एक साये ने अन्दर कदम रखा ।

“कौन हो तुम?” जगदीश नरूला तुरन्त हकलाये स्वर में बोला- “कौन हो?”

खांसी का फिर एक जोरदार ठसका उठा और ऐसा लगा, जैसे साये ने ‘अस्थलीन इन्हेलर’ निकालकर उसकी गैस अपने मुंह में स्प्रे की हो ।

“क्यों ?” साया हंसा- “अपने साथी को नहीं पहचाना तुमने, इतनी जल्दी भूल गये ।”

“उदय प्रताप !” जगदीश नरूला के मुह से तीव्र सिसकारी छूटी ।

“वहीं ।”

“नहीं नहीं ! तुम उदय प्रताप नहीं हो सकते। उदय प्रताप तो मर चुका है ।”

हंसा ।

साया जोर से हंसा ।

उसकी हंसी में मखौल उड़ाने जैसा अंदाज था ।

“अगर उदय प्रताप मर चुका है मेरे दोस्त!” साया बोला- “तो फिर तुम इतनी रात को इस खौफनाक मेंशन में ठहरकर किसका इन्तजार कर रहे हो, उसके भूत का ?”

जगदीश नरूला को अपने हाथ-पैर बर्फ की तरह ठण्डे पड़ते महसूस हुए ।

“जबाव दो, किसका इन्तजार कर रहे हो तुम ?”

“मैं कुछ नहीं जानता ।” जगदीश नरूला पागलों की तरह बोला- “मैं सिर्फ इतना जानता हूं, तुम उदय प्रताप नहीं हो । उदय प्रताप जिन्दा नहीं हो सकता ।”

“क्यो, यह बात इतने विश्वास के साथ कैसे कह रहें हो तुम ?”

“क्योंकि, क्योंकि ।”

“क्या क्येंकि ?”

“क्योंकि कल रात तो मैंने खुद उदय प्रताप को चलती ट्रेन से नीचे धक्का दिया है । जगदीश नरूला एक झटके के साथ बोला- “इतनी सुपर फास्ट स्पीड से दौड़ती ट्रेन से नीचे गिरने पर सवाल ही नहीं उठता कि कोई जिन्दा बच जाये ।”

“तुमने उदय प्रताप को चलती ट्रेन से नीचे धक्का दिया ?”

“हां, मैंने धक्का दिया ।”

“सिर्फ उदय प्रताप को ?”

“नहीं ।” जगदीश नरूला ने एक और रहस्योद्घाटन किया- “तुम्हारे बाद मैंने अनुपमा जोशी को भी चलती ट्रेन से नीचे फैंक दिया । वह भी मर गयी । अलबत्ता कमाण्डर के सामने मैंने ऐसा ‘शो’ जरूर किया, जैसे अनुपमा जोशी को तुमने मारा हो । तुमने उसे चलती ट्रेन से नीचे फैंका हो ।”

“कमाण्डर से यह झूठ क्यों बोला तुमने ?”

“झूठ!” जगदीश नरूला ठठाकर हंसा- “यह कोई एक झूठ थोड़े ही था, जो इस पूरे मिशन के दौरान मैंने कमाण्डर से बोला। ऐसे तो मैंने और भी कई झूठ कमाण्डर से बोले । बल्कि शुरू से आखिर तक मैं सारे इल्जाम तुम्हारे सिर मढ़कर झूठ ही तो बोलता आ रहा हूं ।”

“कैसे इल्जाम ?”

“जैसे सबसे पहले मैंने उस नेवीगेटर कैप्टन को मारा, जिसने 10 टन सोने तक पहुंचने का नक्शा बनाया था, लेकिन उसकी हत्या...... सुलतान को मारा । फिर पवन मल्होत्रा, गंजा उस्मान, मार्क, अनिल मोटा तथा अब अनुपमा जोशी को । सबको मैंने मारा । लेकिन कमाण्डर तथा अपने साथियों के सामने ऐसा शो किया, जैसे यह सारी हत्यायें 10 टन सोने के लालच में तुम कर रहे हो। तुम्हीं वह गद्दार हो....जिसके कारण यह सारा मिशन फेल हुआ है। इतना ही नहीं, कल रात तुम्हें भी चलती ट्रेन से नीचे फैंककर मैंने यह समझा था कि सारा किस्सा खत्म हो गया । लेकिन नहीं, बड़ा अफसोस है कि तुम किस्मत के तेज हो उदय प्रताप ! जो फिर भी बच गये ।”

उदय प्रताप कमरे में अब थोड़ और अन्दर आ गया ।

उसे पुनः खांसी का तेज ठसका उठा ।

"मुझे चलती ट्रेन से नीचे धक्का देना तुम्हारी जिन्दगी की सबसे बड़ी भूल थी नरूला !" उदय प्रताप संजीदगी के साथ बोला ।

"क्यो ?" जगदीश नरूला चौंका ।

उदय प्रताप की उस बात ने उसे हैरान किया था ।

"क्योंकि मैं आज भी तुम्हारा दुश्मन नहीं, दोस्त हूं ।"

"क्या कह रहें हो ?" जगदीश नरूला के दिल-दिमाग पर भीषण बिजली सी गड़गड़ाकर गिरी- "यह जानते हुए भी कि मैंने इतने लोगों की हत्यायें की, तुम मुझे अपना दोस्त कह रहे हो ?"

"हां, इसलिये मैं तुम्हें अपना दोस्त कह रहा हूं ।"

"क्यो?"

"क्योंकि जिस तरह तुम्हारी उस 10 टन सोने पर निगाह थी" उदय प्रताप ने एक और जबरदस्त रहस्योद्घाटन किया- "उसी तरह मेरी भी शुरू से ही उस 10 टन सोने पर निगाह थी। इसीलिये मैंने अपने एक्सीडेण्ट का झूठा नाटक रचकर खुद को मरा हुआ साबित कर दिया। लेकिन अफसोस, वह नक्शा चुराकर ओर नेवीगेटर कैप्टन की हत्या करके इस दिशा में मुझसे पहले तो बाजी तुम मार ले गये थे ।"

"यानि तुम्हारा वह जो एक्सीडेण्ट हुआ, वह नाटक तुमने खुद रचा था उदय प्रताप ?"

"हां, वह नाटक मैंने खुद रचा था ।"

"हे भगवान ।" जगदीश नरूला को अपने शरीर में एक बार फिर तेज सिहरन दौड़ती हुई अनुभव हुई ।

"लेकिन मैं समझता हूं, अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है नरूला । अभी भी हम दोनों के बीच एक सौदा हो सकता है । ऐसा सौदा जिससे हम दोनों को ही काफी फायदा होगा ।"

"कैसा सौदा ?"

"ध्यान से सुनो, तुम्हारे पास अटलांटिक महासागर का वह नक्शा है, जिसके द्वारा 10 टन सोने तक पहुंचा जा सकता है । लेकिन न्यूयार्क की पुलिस हाथ धोकर तुम्हारे पीछे पड़ी हुई है । अखबारो में और टी0वी0 पर बार-बार तुम्हारी तस्वीर ब्रॉडकास्ट की जा रही है । ऐसी हालत में तुम उस 10 टन सोने को समुद्र से बाहर नहीं निकाल सकते । जबकि यह काम मैं बखूबी कर सकता हूं । मेरे पीछे न तो पुलिस ही पड़ी है । इसके अलावा मेरे पास ऐसे आदमियों की भी एक बड़ी सक्षम टीम है, जो समुद्र में से वह सारा सोना बाहर निकाल लेंगे । अगर हम दोनो हाथ मिला लें, तो सारा काम आसानी से निपट जायेंगा ।"

"इस सौदे में तुम्हारा हिस्सा कितना होगा ?"

"फिफ्टी-फिफ्टी !"

“सवाल ही नहीं है ।” जगदीश नरूला तुरन्त बोला- “शुरू से आखिर तक उस सोने को हासिल करने के लिये तमाम मेहनत मैंने की है । अब सिर्फ मामूली से काम के लिये मैं आधे-आधे का बंटवारा नहीं कर सकता ।”

“यह मामूली काम नहीं है नरूला !” उदय प्रताप बोला- “अगर तुम दिमाग का इस्तेमाल करके सोचेगे, तो तुम्हें महसूस होगा कि इन हालातों में तुम्हारे लिये उस सोने को समुद्र में से बाहर निकालना मुश्किल ही नहीं, बल्कि नामुकिन है। सोच लो, कहीं ऐसा न हो कि तुम इस प्रस्ताव को ठुकराकर आधे सोने से भी हाथ धो बैठो ।”

कमरे में कुछ पल के लिये सन्नाटा छा गया ।

“और कमाण्डर का क्या होगा ?” जगदीश नरूला सस्पैंसफुल स्वर में बोला-“ इस वक्त मेरे लिये सबसे बड़ी मुश्किल कमाण्डर करण सक्सेना बने हुए है ।”

“उस मुश्किल का भी आज रात ही निपटारा कर दिया जायेगा ।” उदय प्रताप ने बड़े दृढ़ अंदाज में कहा- “हम दोनों मिलकर आज रात ही कमाण्डर और नीलू को समाप्त कर देंगे । उनकी लाश भी ‘रेड मेंशन’ से बाहर नहीं जा सकेगी ।”

“क्या कमाण्डर को मारना इतना ही आसान होगा ?”

“शेर कितना ही खूंखार क्या न हो नरूला, लेकिन जब वो सो रहा होता है, तो कोई भी उसका शिकार कर सकता है ।”

उदय प्रताप की बात सुनकर जगदीश नरूला की आंख चमक उठीं ।

“ठीक है ।” नरूला उत्साहपूर्वक बोला- “अगर तुम कमाण्डर को भी समाप्त करने के लिये तैयार हो, तो मुझे यह सौदा मंजूद है ।”

“वैरी गुड ! तुम ने यह प्रस्ताव स्वीकार करके अक्लमंदी का परिचय दिया है । नक्शा कहां है ?”

“नक्शा मैं हमेशा अपने साथ लेकर घूमता हूं । इस वक्त भी वो मेरे दायें पैर के मोजे में रखा है ।” जगदीश नरूला ने अपने पेण्ट की दांयी मोहरी ऊपर करके नक्शा बाहर निकाल लिया ।

“वैलडन ! वैरी वैलडन !” तभी एक बिल्कुल नई आवाज कमरे के अन्दर गूंजी और किसी ने बहुत जोर-जोर से ताली बजाते हुए वहाँ ऐण्ट्री ली- “सचमुच आपने कमाल कर दिया कमाण्डर ! आपकी चाल कामयाब हो गयी। जगदीश नरूला अब तुम्हारा खेल खत्म होता है ।”

फिर खट् से माचिस की तीली जलने की आवाज हुई तथा उसके बाद मोमबत्ती जली । वह नीलू थी, जो जोर-जोर से ताली बजाते हुए अन्दर आयी थी ।

जगदीश नरूला हक्का-बक्का रह गया ।

उसने उदय प्रताप की तरफ देखा ।

अगले पल उसके दिमाग पर और ज्यादा भीषण बिजली गड़गड़ाकर गिरी ।

जिस आदमी को वह अभी तक उदय प्रताप समझ रहा था, वह वास्तव में कमांडर था।

कमाण्डर करण सक्सेना था।

□□□

जगदीश नरूला ने एकदम बड़ी तेजी के साथ झपटकर अपनी पतलून की जेब से पिस्टल बाहर निकालनी चाही, परन्तु उससे पहले ही बेपनाह फुर्ती के साथ कमांडर करण सक्सेना हरकत में आ गया। उसके दिमाग में मांसपेशियों ने हरकत दिखाई, तो उसके क्लेंसी हैट की ग्लिप में फंसी रिवाल्वर निकलकर तुरन्त उसके हाथ में आ गयी और उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमकर नरूला की खोपड़ी की तरफ तन गयी।

''बस !'' कमांडर ग गुर्रा उठा- ''बस ! अब कोई हरकत नहीं।

जगदीश नरूला के हाथ-पैर तत्काल फ्रीज हो गये।

नीलू ने आगे बढ़कर जेब में रखी पिस्टल निकाल ली और उसे अपने कब्जे में कर लिया।

इतना ही नहीं, उसके हाथ में मौजूद नक्शा भी नीलू ने झपट लिया।

जगदीश नरूला अब लुटा-पिटा सा खड़ा रह गया।

''यह तुम थे कमाण्डर?''

''हां, यह मैं था।'' कमांडर बोला- ''मैं ही उदय प्रताप की तरह लंगड़ाकर चलता हुआ और खांसी के ठसके लगाता हुआ यहां तक आया था। मुझे शुरू से ही शक था कि यह सारा खेल उदय प्रताप का नहीं है, बल्कि उदय प्रताप की आड़ में कोई और इस गेम को खेल रहा है। और आखिरकार मेरा शक ठीक ही निकला।''

''शुरू से शक था ?''

''हां।'' कमांडर ने अपनी कोल्ट रिवाल्वर पुनः उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घुमाई- ''दरअसल इसमें कोई शक नहीं कि तुमने पत्ते बहुत बढ़िया बिछाये थे जगदीश नरूला, लेकिन फिर भी तुम मात खा गये। तुम शुरू से ही उदय प्रताप को निशाना बनाकर सारा, खेल खेल रहे थे और सब समझ भी यह रहे थे कि यह सारी हत्यायें उदय प्रताप कर रहा है। सबके शक का केन्द्र बिन्दु उदय प्रताप बना था। जबकि उदय प्रताप का इस पूरे सिलसिले से कोई वास्ता न था। उदय प्रताप तो एक निहायत देशभक्त आदमी था। तुम्हारी योजना में सारी गड़बड़ मेरे न्यूयार्क आने की वजह से पैदा हुई। दरअसल 10 टन सोने को लेकर तुम्हारे दिमाग में लालच तभी आ गया था, जब तुम्हें हिन्दुस्तान से न्यूयार्क इस मिशन पर भेजा गया। तुम तभी से किसी ऐसे मौके की तलाश में थे, जिससे वह 10 टन सोना तुम्हारे हाथ लग जाये। और इस दिशा में तुम्हें पहला अवसर तब मिला, जब उदय प्रताप, दिलीप मेहरा, नेवीगेटर कैप्टन से नक्शा बनवाकर हाइडोन में लेकर आये। तुम्हें

लगा, यह नक्शा उस 10 टन सोने तक पहुंचने की पहली सीढ़ी है, जो तुम्हें हासिल करना चाहिये । इसलिये तुमने उसी रात हाइडोन में से न सिर्फ वह नक्शा चुरा लिया, बल्कि उस नेवीगेटर कैप्टन की भी हत्या कर दी, जिसने वह नक्शा तैयार किया था । ताकि उदय प्रताप और दिलीप मेहरा उससे दूसरा नक्शा न तैयार करा सकें ।''

जगदीश नरूला अपनी 'योजना' के पत्ते कमांडर करण सक्सेना की ......

''अब उदय प्रताप के बारे में बताता हूं ।'' कमांडर बोला- ''दरअसल जिस रात हाइडोन में से नक्शा गायब हुआ उसी रात उदय प्रताप को इस बात का शक हो गया था कि जो छः जासूस हिन्दुस्तान से उस मिशन पर भेजे गये हैं, उन्हीं में से कोई गद्दार है । उन्हीं में से किसी ने वह नक्शा चुराया है । क्येंकि उदय प्रताप से बेहतर भला इस बात को कौन जान सकता था कि नक्शे की वह चोरी उसने नहीं की है । इसके अलावा उदय प्रताप के सामने बाद में यह बात एक और तरह से भी साबित हो गयी कि उन छः भारतीय जासूसों में से ही कोई एक गद्दार है ।''

''यह बात किस तरह साबित हुई ?'' जगदीश नरूला बोला ।

''तुम्हें मालूम ही है,'' कमांडर 'डनहिल' सुलगाता हुआ बेला- ''कि जिस रात नक्शा चोरी हुआ और जिस रात नेवीगेटर कैप्टन की हत्या हुई, उसी रात उदय प्रताप हाइडोन में से नेवीगेटर कैप्टन की लाश को देखने गया था ।''

''बिल्कुल गया था ।'' जगदीश नरूला ने कबूल किया ।

''बस उसी रात नेवीगेटर कैप्टन की लाश को देखते ही उदय प्रताप समझ गया कि उसे भी उन भारतीय जासूसों में से किसी एक ने मारा है ।''

''उदय प्रताप यह बात कैसे समझा ?'' जगदीश नरूला चौंका ।

''दरअसल तुमने नेवीगेटर कैप्टन की हत्या यूं तो उसके पेट में चाकू घोंपकर की थी। ठीक ?''

''बिल्कुल ठीक ।''

''लेकिन अगर तुम्हें यादव हो, तो नेवीगेटर को चाकू द्वारा मारने से पहले तुमने अपनी पिस्टल से एक फायर भी उसके ऊपर किया था और उसे गोली से मारने की कोशिश की थी। परन्तु इत्तफाकन तुम्हारा वह निशाना चूक गया।''

जगदीश नरूला के नेत्र अब बुरी तरह फट पड़े ।

''तुम्हें यह बात कैसे मालूम कमाण्डर ?''

''सिर्फ 'हां' या 'ना' में जवाब दो, तुमने नेवीगेटर कैप्टन के ऊपर गोली चलायी थी या नहीं ?''

''हां, चलायी थी ।''

''और तुम्हारा वह निशाना चूक भी गया था ।''

''यह भी सच है ।''

‘‘दरअसल उदय प्रताप जब नेवीगेटर कैप्टन की लाश के पास घटनास्थल पर पहुंचा तो उसे खाली बुलेट का कवर सड़क पर पड़ा मिला था और उस कवर पर ‘इण्डियन मेक’ की मुह थी। उदय प्रताप उस मुहर को देखते ही भांप गया कि नेवीगेटर कैप्टन की हत्या भी उन्हीं छः जासूसों में से किसी एक न की है । इससे उसका शक और भी पक्का हुआ, कोई उस 10 टन सोने को हड़पने के लिये यह तमाम प्रपंच रच रहा है । उसके बाद उदय प्रताप ने हाइडोन पर पुलिस की रेड भी पड़ गयी । पुलिस को जासूसों के हाइडोन में होने की टिप भी तुम्हीं ने दी थी और सभी के फोटोग्राफ भी तुम्हीं ने सर्कुलेट किये। अपनी फोटोग्राफ भी तुमने पुलिस को इसलिये भेजा, ताकि तुम्हारे साथी तुम्हारे ऊपर शक न कर सकें । बाद में उदय प्रताप हाइडोन पर गया था, लेकिन तुममें से कोई भी उसे वहाँ न मिला । तब उदय प्रताप ने सोचा भी, कि वह क्यों न भारत सरकार तक यह सूचना पहुंचा दे कि उन्होंने छः जासूस उस मिशन पर न्यूयार्क भेजे थे, उनमें से कोई एक गद्दार हो गया है। लेकिन फिर उदय प्रताप ठिठका ।’’

‘‘वह ठिठका क्यो ?’’

‘‘क्योंकि उदय प्रताप पागल नहीं था ।’’ कमांडर ने ‘डनहिल’ का एक कश और लगाया- ‘‘वो जानता था कि उसकी छवि अपराधियों वाली है । भारत सरकार उसकी बात पर आसानी से ऐतबार नहीं कर पायेगी । उल्टे एक और बड़ा खतरनाक काम होने की उसे आंशका थी ।’’

‘‘क्या ?’’

‘‘उसे डर था, कहीं भारत सरकार उसके ऊपर ही शक न करने लगे कि वही उस 10 टन सोने को हड़पने की कोशिश कर रहा है । ऐसी हालत और भी ज्यादा नुकसानदेह साबित होती। तब उदय प्रताप ने खुद ही अपराधी को ढूंढ निकालने का फैसला किया। नेवीगेटर कैप्टन ने जो नक्शा बनाया था, उसे चूंकि उदय प्रताप एक बार देख चुका था, इसलिये उसे थोड़ा बहुत आइडिया था कि ‘सिल्वर स्टार’ नाम का वो जहाज समुद्र के किस जगह डूबा है । उदय प्रताप ने सबसे पहले अपने दो आदमी समुद्र के उस हिस्से की निगरानी के लिय तैनात कर दिये, ताकि अगर अपराधी मौका पड़ने पर समुद्र में से 10 टन सोना निकालने का प्रयास करें, तो उसे फौरन इस बात की जानकारी हो सके । बहरहाल उदय प्रताप के जासूसों तक न पहुंच पाने का सबसे बड़ा लाभ तुमने उठाया ।’’

‘‘मैंने कैसे उठाया ?’’ जगदीश नरूला बोला ।

‘‘आखिर इसी कारण तो तुमने सारा शक उदय प्रताप के ऊपर डाल दिया कि वही गद्दार हो गया है । वही सारा प्रपंच रच रहा है । अलबत्ता उदय प्रताप ने असली अपराधी तक पहुंचने के लिये अपनी मौत का जो झूठा ड्रामा स्टेज किया, उसकी जानकारी तुम्हें फौरन न हो सकी । वरना उस झूठे ड्रामें का भी बड़ा उम्मीद से भरा रिजल्ट निकलता । बाद में जब पवन मेल्होत्रा, उदय प्रताप को ढूंढने गया, तो तुम्हें डर था कि कहीं वो उदय प्रताप

तक न पहुंच जाये । क्योंकि अगर वो उदय प्रताप तक पहुंच जाता और उदय प्रताप उसके सामने यह साबित कर देता कि यह सारा खेल वो नहीं खेल रहा है, तो तुम्हारी तमाम योजना का बेड़ा गर्क हो जाना था । फिर तो यह भी सम्भव है कि जासूस तभी थोड़ी मेहनत मशक्कत के बाद इस बात को भांप जाते, यह सब किया धरा तुम्हारा है। इसी कारण तुमने फौरन पवन मल्होत्रा को मार डाला । इसी वजह से तुमने गंजे उस्मान की भी हत्या की । तुम्हारा उद्देश्य एक-एक करके सब जासूसों को खत्म करना था और फिर बड़े इत्मीनान के साथ समुद्र में से 10 टन सोना बाहर निकालना था ।''

जगदीश नरूला के चेहरे पर अब पसीनें की नन्हीं-नन्हीं बूंदे चुहचुहा उठीं ।

मोमबत्ती के पीले प्रकाश में उसका व्यक्तित्व बड़ा रहस्यमयी दिखाई पड़ रहा था ।

''यहां तक तुम्हारी योजना बिल्कुल ठीक-ठाक चल रही थी ।'' कमांडर 'डनहिल' का कश लगाते हुए बोला- ''लेकिन अनिल मोटे ने गड़बड़ कर दी । अनिल मोटे ने रूखसाना सुलतान की जो मदद हासिल की और उसी मार्फत भारत सरकार तक मिशन की नाकामयाबी की जो सूचना पहुंचवाई, उसके कारण तुम्हारे ऊपर संकट के बादल मंडराने शुरू हुए । तुम बिल्कुल नहीं चाहते थे कि किसी जासूस को हिन्दुस्तान से मदद के लिये यहां बुलाया जाये। खासतौर पर उस वक्त तो तुम्हारे पैरों के नीचे से धरती ही खिसक गयी, जब तुमने मददगार के तौर पर मुझे न्यूयार्क में देखा । इसीलिये तुमने रूखसाना सुलतान को जान से मार डाला, क्योंकि रूखसाना सुलतान ही मुझे जासूसों के दल तक पहुंचा सकती थी । वह तो रूखसाना सुलतान करने से पूर्व अपने खून से जासूसी उपन्यासकार के कॉटेज का फोन नम्बर लिख गयी, जिसके कारण मैंने तमाम लोगों से सम्पर्क स्थापित कर लिया । वरना रूखसाना सुलतान को मारकर एक तरह से तुम तो अपने प्रयास में कामयाब हो ही गये होते । ----------- लिखकर न जाती तो मैं कभी भी जासूसों के दल से सम्पर्क स्थापित न कर पाता ।''

''फिर तुम्हें यह शक किस प्रकार हुआ,'' जगदीश नरूला बोला- ''कि यह हत्यायें उदय प्रताप नहीं कर रहा है ?''

''मैं जब जासूसी उपन्यासकार के कॉटेज में पहुंचा ।'' कमांडर करण सक्सेना बोला- ''और मुझे सारी कहानी सुनाई गयी, मुझे तभी शक हो गया था कि इस पूरे प्रकरण के पीछे उदय प्रताप का दूर-दूर तक कोई हाथ नहीं है । क्योंकि अगर उदय प्रताप की निगाह 10 टन सोने पर होती, तो वह अपने दोस्तों नेवीगेटर कैप्टन से नक्शा बनवाने के बाद उसे दिलीप मेहरा के हाथों में ही क्यों लाकर सौंपता ? यह काम तो वह तमाम जासूसों को भनक लगे बिना ही खुद भी कर सकता था। इसी एक बात ने मुझे इस बात का पुख्ता यकीन दिलाया कि यह काम उदय प्रताप का नहीं हो सकता । मैं अच्छी तरह भांप गया कि कोई इन जीवित बचे जासूसों में से ही सारा खेल, खेल रहा है और उदय प्रताप की तरह

लंगड़ाकर चलने और खांसी के ठसके लगाने जैसा अभिनय कर रहा है, ताकि हर कोई यही समझे कि यह काम उदय प्रताप का है ।''

जगदीश नरूला की आंखो में आश्चर्य के भाव अब और भी बढ़ गये ।

वह कमांडर के असीम बुद्धि पराक्रम पर हत्बुद्ध था। नीलू भी बड़ी हैरान निगाहों से उसे देख रही थी ।

''इस बीच मेरा डर तुम्हारे दिल-दिमाग पर निरन्तर बना हुआ था ।'' कमांडर ने 'डनहिल' का एक कश और लगाया- ''यही वजह है कि मेरे कॉटेज में पहुंचने के बाद भी तुमने पहली ही रात उदय प्रताप बनकर मुझे मार डालने का प्रयास किया। लेकिन इत्तफाकन गोली सिर्फ कंधे में लगी और मैं बच गया । फिर तुमने कॉटेज के फ्रीज और गैस की पाइप लाइन बगैरा इसलिये खराब की, ताकि हम वहाँ लम्बे टाइम तक न टिककर रह सकें । ओरियन्टल रेस्टोरण्ट के बेयरे मार्क को भी तुमने इसीलिये मार डाला ।''

''अनिल मोटे को इसने क्यो मारा?'' नीलू बोली ।

''जहां तक मैं समझता हूं,'' कमांडर बोला- ''अनिल मोटा जरूर इसके इस राज से वाकिफ हो गया होगा कि यही सारा खेल खेल रहा है, इसलिये इसने अनिल मोटे को भी रास्ते से हटा दिया । क्या मैं कुछ गलत कह रहा हूं नरूला ?''

''नहीं ।'' जगदीश नरूला ने बड़े कठिन अंदाज में अपने शुष्क होंठो पर जबान फिराई-''यह सच है ।''

''यानि अनिल मोटा वाकई तुम्हारे राज से वाकिफ हो गया था ?''

''हां ।''

''वो किस तरह ?''

''बस, उसने मेरे पास नक्शा देख लिया था ।'' जगदीश नरूला ने बताया- ''इसी से वो भांप गया था कि मैं ही सारे फसाद की जड़ हूं ।''

''और अनिल मोटा यह बात किसी और को बता पाता,'' कमांडर ने एक-एक शब्द चबाते हुए कहा- ''उससे पहले ही तुमने उसे मार डाला और उसकी हत्या का इल्जाम भी उदय प्रताप के सिर मढ़ा । इतना ही नहीं, तुमने कॉटेज की पिछली खिड़की भी इसलिये खोल दी, ताकि सब यही समझें कि उदय प्रताप उसी रास्ते से कॉटेज में घुसा और अनिल मोटे की हत्या करके भाग निकला। सच पूछते हो, तो तुम्हारे खिड़की खोलने वाली हरकत ने भी मेरे इस शक को और भी बुलंद किया कि यह काम उदय प्रताप का नहीं है बल्कि जासूसों में से ही किसी का है। तुम्हें सुनकर आश्चर्य होगा नरूला, कॉटेज की जिस खिड़की को तुमने उदय प्रताप के आने- जाने का रास्ता 'शो' किया था, उस खिड़की को मैं एक दिन पहले ही देख चुका था और वो तब अन्दर से बन्द थी। यानि इस बात का प्रश्न ही नहीं उठता था कि कोई उस खिड़की के रास्ते कॉटेज में घुसे ।''

जगदीश नरूला अब कमांडर से साफ-साफ भयभीत दिखाई पड़ने लगा ।

"अब आगे की दास्तान और सुनो !" कमांडर एक-एक करके उसकी योजना के तमाम पत्ते खोलता हुआ बोला- "फिर तुमने जासूसों के कॉटेज में छिपे होने की गुमनाम टिप भी न्यूयार्क पुलिस को दे दी और मेरे बारे में भी पुलिस को बता दिया कि मैं भी जासूसों की मदद के लिये न्यूयार्क पहुंच चुका हूं। तुम्हारी उसी टिप के कारण हम सब कॉटेज छोड़कर भी भागना पड़ा । अलबत्ता इस बीच तुम्हें एक संतोषजनक खबर जरूर मिली ।"

"क्या ?"

"उदय प्रताप के मरने की खबर । यह कि उदय प्रताप का महीने भर पहले ही एक्सीडेण्ट हो गया था । लेकिन फिर भी तुम्हारे मन में कहीं-न-कहीं संशय जरूर था कि कहीं उदय प्रताप जिन्दा न हो। कहीं उसने अपने एक्सीडेण्ट का नकली ड्रामा स्टेज न किया हो । इसलिये तुमने नीलू के फ्लैट पर पहुंचते ही पुलिस को वहाँ के बारे में भी टिप दे दी । लेकिन अभी तक मेरे कारण तुम्हारे एक-एक करके सारे पत्ते पिट रहे थे। इस बीच तुम्हें एक बड़ा तगड़ा झटका और लगा । जब तुम और अनुपमा जोशी उस नई बन रही इमारत के चौथे तल पर छिपे हुए थे और वहाँ जब अनुपमा जोशी ने तुम्हें यह बताया कि उसने अभी-अभी वहाँ किसी के लंगड़ाकर चलने की आवाज सुनी है तो तुम चौंके । तुम्हारे कान खड़े हुए । क्योंकि लंगड़ाकर चलने और खांसी के ठसके लगाने का अभी तक वह सारा ड्रामा तो खुद तुम्हीं कर रहे थे । तुम फौरन भांप गये कि उदय प्रताप जिन्दा है और लंगड़ाकर चलने की जो आवाज इस बार अनुपमा जोशी ने सुनीं, वह असली उदय प्रताप की थी । तुम जल्दी ही वह इमारत छोड़कर भागे। अलबत्ता ट्रेन में तुम्हारी उदय प्रताप से जरूर मुठभेड़ हो गयी । जहां इत्तफाक से तुम उदय प्रताप पर भारी पड़े और तुमने उसे चलती ट्रेन से नीचे फेंक दिया जगदीश नरूला !" कमांडर ने 'डनहिल' का एक लम्बा कश लगाया और राख नीचे झाड़ी-"तुमने अनुपमा जोशी और उदय प्रताप से सम्बन्धित जो इतनी लम्बी चौड़ी ट्रेन हादसे वाली फ्लैश बैक हमें सुनायी, वह सिरे से मनगढ़त थी। बिल्कुल झूठी थी । सच्चाई ये है कि तुमने न सिर्फ उदय प्रताप को चलती ट्रेन से नीचे धक्का दिया, बल्कि अनुपमा जोशी को भी मारा । उस अनुपमा जोशी को तुमने मारा, जो लड़की तुमसे सच्ची मोहब्बत करती थी । दिली मौहब्बत करती थी । लेकिन तुम्हारी आंखो पर 10 टन सोना हासिल करने की ऐसी काली पट्टी चढ़ी थी कि तुम्हें कुछ नजर ही नहीं आ रहा था । तुमने दौलत के लालच में अंधे होकर किसी भी अपने को नहीं बख्शा। तुम्हें सुनकर हैरानी होगी, उदय प्रताप ने रेल की पटरियों पर दम तोड़ने से पहले मोबाइल पर फोन करके नीलू को अपने पास बुलाया था । तब मैं नीलू के साथ जाकर उस फरिश्ता इन्सान से मिला, जिसे शुरू से आखिर तक तुमने खलनायक बनाया हुआ था । उसने जो-जो रहस्योद्घाटन मेरे सामने किये, उन रहस्योद्घाटन ने एक ही झटके में सारी हकीकत मेरी आंखो के सामने ला दी। मिस्टर नरूला, जिस उदय प्रताप का इन्तजार करने के लिये तुमने

मुझे और नीलू को इस मेंशन में रोका, उस उदय प्रताप की लाश रात से ही हमारी कार की डिक्की में रखी हैं ।''

जगदीश नरूला की अब और भी ज्यादा बुरी हालत हो गयी ।

उसे ऐसा लगा, उसने शुरू से आखिर तक 'येजना' के वह पत्ते बिछाये जरूर थे, लेकिन वह उस पूरे प्रकरण में कमांडर जैसे महारथी के सामने सिर्फ मूर्ख ही बना था ।

''मिस्टर नरूला !'' कमांडर उसे हिकारत भरे अंदाज में देखता हुआ बोला-''आज मुझे तुमसे जितनी सख्त नफरत हो रही है, उतना ही गर्व मुझे उदय प्रताप पर हो रहा है । वह सही मायनों में हिन्दुस्तानी था । इस मिशन को कामयाब बनाने के लिये अगर सबसे ज्यादा मेहनत किसी ने की, तो उदय प्रताप ने की। आज से एक महीने पहले अपनी मौत का नकली ड्रामा स्टेज करने के बाद वो पूरे तन-मन से गद्दार तक पहुंचने के लिये कार्य कलाप में जुट गया था । सिर्फ नीलू जानती थी कि उदय प्रताप जिन्दा है। नीलू के अलावा किसी को उसके बारे में मालूम न था । उस फरिश्ता इन्सान ने जब पवन मेल्होत्रा और गंजे उस्मान की मौत की खबर अखबार में पढ़ी, तो वे तभी समझ गया था कि उन्हें गद्दार ने ही मारा है । लेकिन उसकी सबसे बड़ी मुश्किल ये थी कि वो जासूसों तक नहीं पहुंच पा रहा था । फिर मैं जब नीलू से जाकर मिला...तो नीलू ने इस बात की खबर तुरन्त उदय प्रताप तक पहुंचा दी। दरअसल उदय प्रताप ने नीलू से कहा, तुम कमाण्डर की हर मुमकिन मदद करो । जैसा कि बाद में नीलू ने इस पूरे अभियान के दौरान अपनी जान पर खेलकर मदद की भी। इसके अलावा एक जानकारी मैं तुम्हें और दे दूं नरूला ।''

''क्या ?''

''अब यह नक्शा बेकार हो चुका है ।''

कमांडर करण सक्सेना ने नीलू के हाथ से नक्शा ले लिया और फिर उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में बेदर्दी के साथ फाड़ने लगा ।

''क्यों !'' जगदीश नरूला बुरी तरह चौंका-''यह नक्शा क्यों बेकार हो गया ?''

''क्योंकि रात उदय प्रताप ने मरने से पहले मुझे बताया कि 'सिल्वर स्टार' नाम का जो जहाज समुद्र में डूब गया था, उस जहाज के मलबे को निकालने की कार्यवाही अब अमरीकन सरकार ने शुरू कर दी है ।''

''क्या कह रहें हो ?'' जगदीश नरूला की आंखो में आतंक की प्रतिक्रिया दौड़ी ।

''यह सच है ।'' कमांडर ने तब तक सारा नक्शा फाड़कर नीचे फर्श पर फैंक दिया था ।

''फिर तुम अब अमरीकन सरकार के कब्जे से वह 10 टन सोना कैसे हासिल करोगे ?''

''उसका कोई-न-कोई तरीका मैं सोच लूंगा ।'' कमांडर करण सक्सेना ने 'डनहिल' नीचे फैंकी और फिर उसे जूते से मसला-''लेकिन एक बात कन्फर्म है ।''

“क्या ?”

“यह कमांडर करण सक्सेना बलदेवराज दीवान की दौलत को किसी भी हालत में अमरीका के खजाने के अन्दर जमा नहीं होने देगा। बलदेवराज दीवान की इच्छा हर हालत में पूरी की जायेगी और उसका सारा धन भारत के ‘गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों’ में ही लगेगा।”

“मैं देखता हूं।” जगदीश नरूला एकाएक फुंफकार कर बोला-“कि वह सारा धन कैसे भारत के गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों में लगता है।”

कोई कुछ समझ पाता उससे पहले ही जगदीश नरूला बड़े अप्रत्याशित ढंग से बिजली जैसी फुर्ती के साथ नीलू के ऊपर झपट पड़ा और उसने उसके हाथ से अपनी पिस्टल छीन लेनी चाही।

मगर !

बेवकूफी कर गया जगदीश नरूला !

वो भूल गया था कि कमांडर करण सक्सेना भी वहाँ है।

वह अपनी पिस्टल को छू भी पाता, उससे पहले ही कमांडर बेपनाह फुर्ती के साथ टाइगर क्लान के एक्शन में आ गया और उसने स्नेक हैण्ड का बड़ा जबरदस्त प्रहार उसकी पसलियों पर जड़ा।

नरूला के हलक से मर्मभेदी चीख निकल गयी।

तभी कमांडर ने रेसलिंग के शोल्डर थ्रो का दांव इस्तेमाल किया। जगदीश नरूला अब चारो खाने चित्त धड़ाम से नीचे जाकर गिरा।

उसी क्षण कोल्ट रिवाल्वर एक बार फिर कमांडर की उंगलियों के गिर्द फिरकनी की तरह घूमी और धांय-धांय दो गोलियां चलीं।

जगदीश नरूला हकलाये कुत्ते की तरह डकराता हुआ वहीं ढेर हो गया।

उसकी खोपड़ी और सीने में से थुल-थुल करके खून निकल रहा था।

“किस्सा खत्म !” कमांडर रिवाल्वर की नाल में से निकलते धुएं पर इत्मीनान से फूंक मारता हुआ बोला-“शैतान का अंत हुआ। दौलत की हवस ने जिसे अपने ही देश और अपने खून का दुश्मन बना दिया था।”

□□□

फिर कई काम और आनन-फानन निपटे।

जैसे उदय प्रताप की लाश कमांडर करण सक्सेना ने उसी ‘रेड मेंशन’ के लॉन में दफन कर दी।

जो मेंशन कभी उदय प्रताप ने इसलिये खरीदा था कि वो वहाँ अपने रहने के लिये आलीशान घर बनायेगा, वही मेंशन अब उसका मकबरा बन गया।

अलबत्ता जगदीश नरूला की लाश को कमांडर ने नहीं दफनाया ।

उसने उसे मेंशन के कम्पाउण्ड में फैंक दिया ।

चील-कव्वों ने अब उसे ठिकाने लगा देना था । ऐसे आदमी की लाश का यही हश्र मुनासिब था ।

10 टन सोना हासिल करने में भी कमांडर करण सक्सेना को कोई ज्यादा दुश्वारी पेश नहीं आयी ।

अमरीकन सरकार ने 'सिल्वर स्टार' नामक जहाज का जितना भी मलबा समुद्र में से निकाला, उस सबकी नीलामी करके के लिये उसे वहीं बन्दरगाह पर रख दिया । कमांडर करण सक्सेना ने उस मौके पर एक बार फिर डाक्टर राघवन का सहयोग लिया । डाक्टर राघवन को उन खिलौनों को नीलामी में छुड़ाने के लिये बंदरगाह पर भेजा गया, जिनमें 10 टन सोना था ।

10 टन सोने की वह नीलामी सबसे अद्भुत नीलामी साबित हुई ।

वह सबसे कम दामों में छूटी ।

सिर्फ पांच हजार डॉलर में !

इससे भी ज्यादा करिश्माई बात यह थी, उन प्लास्टिक के खिलौनों की बोली लगाने वाला दूसरा कोई शख्स पूरे बन्दरगाह पर नहीं था ।

बहरहाल उन खिलौनों को फौरन ही नई पेटियों में भरकर एक दूसरे जहाज से भारत के लिये रवाना कर दिया गया ।

डाक्टर राघवन और नीलू ने भी अमरीका छोड़ दिया ।

वह अपने-अपने वतन वापस लौट गये ।

उस पूरे मिशन के दौरान कमांडर की वही सबसे बड़ी जीत थी । वही उसका सबसे बड़ा मेहनताना था कि वह कुछ लोगों के अन्दर देशभक्ति का जज्बा पैदा कर सका और उन्हें इस बात का अहसास दिला सका कि अपना वतन, अपना वतन है ।

अपने वतन जैसा सुख कहीं और नहीं है ।

जैसे इन्सान के बच्चे को अपने झोपड़ें में सबसे ज्यादा सकून मिलता है, सबसे ज्यादा आनन्द आता है ।

ऑल वैल दैट एण्ड्स वैल !

कमांडर करण सक्सेना भी हिन्दुस्तान के लिये रवाना हुआ ।

समाप्त